

**TEXT PROBLEM
WITHIN THE
BOOK ONLY**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182531

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H₂ 83.1 Accession No. G. H 2643

Author C 89N

Title

ज्ञान विद्यान
नववधू का ज्ञान - प्रवेश

This book should be returned on or before the date
last marked below.

नववधू का ग्राम-प्रवेश

(The Bride Comes to Yellow Sky — By Stephen Crane)

मूल लेखक
स्टिफन क्रेन

अनुवादक
श्रीमती मालिनी बिसन



पल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड,
बम्बई-१

मूल्य : ७५ नये पैसे

अनुवाद के समस्त अधिकार पर्ल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा सुरक्षित

मूलग्रन्थ का प्रथम हिन्दी अनुवाद

पुनर्मुद्रण के समस्त अधिकार प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

इस पुस्तक के मुखपृष्ठ पर प्रयुक्त मूल चित्र का उपयोग अगस्त पब्लिकेशन्स
इनकारपोरेशन, न्यूयार्क के सौजन्य से किया गया है।

प्रथम संस्करण : १९५८

मुद्रक : पी. एच. रामन, असोसिएटेड एडवर्टाइजर्स एन्ड प्रिन्टर्स
५०५, आर्थर रोड, ताड़देव-बम्बई ७.

प्रकाशक : जी. एल. मीरचंदानी, पर्ल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड
१२, वाटरलू मेन्शन्स (रीगल सिनेमा के सामने),
महात्मा गांधी रोड, बम्बई-१

अनुक्रमणिका

१	नववधू का ग्राम-प्रवेश	...	७
२	खुली नाव	...	२०
३	नीला होटल	...	४७
४	छोटी पलटन	...	८०
५	ग्लानि	...	१०२
६	दानव	...	११०
७	भूरी आस्तीन	...	१७४
८	मृत्यु और बालक	...	१९०
९	वीरता का रहस्य	...	२०८

सहानुभूति थी और बाद में एक मिथ्यापवाद में फँस जाने और उन अभागों में से एक को पुलिस की निर्दयता का शिकार होने से बचाने के कारण उन्हें अंत तक पुलिस का कोपभाजन बनकर रहना पड़ा। वे यद्यपि अधिक सशक्त नहीं थे; किंतु शारीरिक साहस का उनमें अभाव नहीं था। वे स्वयं ही कहते थे कि ३५ वर्षों से पहले ही उनका जीवन समाप्त हो जायगा।

उनकी प्रथम पुस्तक 'मैगी' एक बाउरी लड़की की कथा है, जो उन्होंने तब लिखी, जब वे बीस वर्ष के थे। इस पुस्तक में ऐसी भयानक यथार्थता चित्रित की गयी है कि पहले कोई भी प्रकाशक इस पर ध्यान देने को तैयार नहीं हुआ। क्रेन ने इसे सन् १८९२ में अपने खर्च से छपवाया—पीले कागज की जिल्द और लेखक के स्थान पर एक छद्मनाम; किंतु तीन वर्षों बाद प्रकाशित होने वाले उनके दूसरे उपन्यास "द' रेड बैज आव करेज" ने उन्हें प्रसिद्धि प्रदान की। यह पुस्तक इंग्लैंड में भी छपी और इसकी इतनी प्रशंसा हुई कि अमरीकी आलोचकों और आंग्ल सम्यता के प्रशंसकों को अपने बीच के इस व्यक्ति की प्रतिभा को स्वीकार करना पड़ा। उस वक्त इस पुस्तक ने सर्वत्र एक उत्तेजना प्रवाहित कर दी और इसे अधिक-से-अधिक व्यक्तियों ने खरीदा। "द' रेड बैज" गृह-युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास है। काफी समय तक लोगों ने यह विश्वास ही नहीं किया कि इस पुस्तक का लेखक एक कम उम्र का व्यक्ति है और उसे युद्ध का कोई अनुभव नहीं, बल्कि गृह-युद्ध के समाप्त होने के कुछ वर्षों बाद तो उसका जन्म हुआ है।

इस सफलता के बाद, क्रेन में जिस अनुभव का अभाव था, उसे प्राप्त करने के लिए वे निकल पड़े। इसके बाद का उनका जीवन एक अद्भुत कहानी के समान ही है। उन्होंने पश्चिम की यात्रा की और इस यात्रा ने उन्हें कई कहानियों की सामग्री प्रदान की। 'नीला होटल' और 'नववधू का ग्राम-प्रवेश' भी उनकी इसी यात्रा की देन हैं। १८९५ में वे मेक्सिको गये। सन् १८९६ में उन्होंने क्यूबा जाकर वहाँ की क्रांति की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया, किंतु फ्लोरिडा से आगे उनके जहाज 'कमोडोर' के डूब जाने से उन्हें अपने इस प्रयास में सफलता नहीं मिली, किंतु यह असफलता भी उनके लिए जैसे वरदान बन गयी। इस दुर्घटना ने ही उन्हें 'खुली नाव' शीर्षक कहानी लिखने की प्रेरणा दी। यह कहानी सम्भवतः उनकी सर्वश्रेष्ठ कहानी है और उनके स्वयं के डूबने के अनुभवों पर आधारित है। बाद में, कोरा टेलर नामक एक स्त्री से उन्हें प्यार हो गया था। उसके साथ वे इंग्लैंड गये और बाद में वहीं से

परिचय के दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक १९-वीं सदी के एक महान अमरीकी कथाकार की नौ सर्वाधिक स्मरणीय कथाओं का संग्रह है। अपने २८ वर्षों के अल्पकालीन जीवन में, जो सन् १९०० में समाप्त हुआ, स्टिफेन क्रैन ने दो उपन्यास और कोई एक दर्जन कहानियाँ लिखीं। कुछ कविताएँ भी उन्होंने लिखीं और उनकी सभी कृतियों ने हमारे साहित्य में स्थायी स्थान बना लिया है। उनकी सर्वोत्कृष्ट कृति “द’ रेड बैज आव करेज” (१८९५) एक कल्पनात्मक कृति है; किंतु युद्ध का जितना सजीव और उल्लेखनीय चित्रण इस पुस्तक में मिलता है, उतना शायद अन्य किसी पुस्तक में नहीं मिलता। उनका पहला उपन्यास “मैगी : ए गर्ल आव द’ स्ट्रीट्स” एक यथार्थवादी उपन्यास है। उसका चरित्र-चित्रण इतना सशक्त और तीव्र है कि उसने अमरीकी कथा-साहित्य की परम्पराओं में एक प्रकार की क्रांति ला दी। ‘खुली नाव’, ‘नीला होटल’, ‘दानव’ और ‘नववधू का ग्राम-प्रवेश’ उनकी सर्वोत्कृष्ट कहानियाँ हैं। ‘नीला होटल’ एक भयभीत स्वीडनवासी की कहानी है, ‘दानव’ में सामाजिक अन्याय का भयानक चित्रण है और ‘नववधू का ग्राम-प्रवेश’ सुख-संतोष से सम्बंधित कहानी है। इन कहानियों और अपनी दूसरी रचनाओं में क्रैन ने बड़ी कुशलतापूर्वक एक नवीन लेखन-पद्धति का प्रयोग किया है। यह नयी पद्धति यथार्थता के इतनी निकट और प्रभावोत्पादक है कि बीसवीं सदी के कई लेखकों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। ऐसे लेखकों में अर्नेस्ट हेमिंग्वे का नाम सबसे पहले आता है।

सन् १८७१ में न्यू जर्सी के नेवार्क नामक स्थान में स्टिफेन क्रैन का जन्म हुआ। उनके पिता एक मेथोडिस्ट पादरी थे। क्रैन का पालन-पोषण न्यू जर्सी में हुआ। दो वर्षों तक कालेज में पढ़ने के बाद, उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और न्यूयार्क चले गये। कहानियाँ उन्होंने वहीं लिखनी प्रारम्भ कीं। कुछ काल तक उन्होंने एक संवाददाता का काम किया, किन्तु बाद में एक स्वतंत्र लेखक के रूप में ही किसी-न-किसी प्रकार ज़िंदगी बसर की। उस समय के क्रैन के मित्रों का कहना है कि वे एक ठिगने कद के और दुबले-पतले व्यक्ति थे। उनका व्यवहार बड़ा नम्र था और वे बहुत कम बोलते थे। उनके बर्ताव में कुछ व्यंग्य भी निहित रहता था। बच्चों, घोड़ों और कुत्तों से उन्हें अत्यधिक स्नेह था। न्यूयार्क के निम्न अंचलों के निवासियों के प्रति भी उन्हें

‘हर्स्ट’ के लिए यूनान-तुर्की-युद्ध का समाचार प्राप्त करने वे यूनान चले गये । वहीं उन्हें अपनी ‘मृत्यु और बालक’ शीर्षक कहानी के लिए भी सामग्री मिल गयी । ‘न्यूयार्क वर्ल्ड’ और ‘हर्स्ट’ को बाद में, उन्होंने स्पेन-अमरीका-युद्ध के भी समाचार भेजे । इन समाचारों को प्राप्त करने के लिए उन्होंने कई बार स्वयं को खतरे में डाला । फिर वह इंग्लैंड लौट आये । इंग्लैंड में ही वे स्थायी रूप से बस गये और एकांत रूप से लिखने की ओर अपना ध्यान लगाया । उस समय के महान साहित्यिकों से उनकी मुलाकात हुई और उन लोगों ने उन्हें यथोचित सम्मान दिया । उन साहित्यिकों में हेनरी जेम्स, जोसेफ कानराड और एच. जी. वेल्स भी शामिल थे । प्राचीन काल के एक मकान में, स्थायी रूप से लिखने में वे व्यस्त रहे । अपनी कई उत्कृष्ट रचनाएँ उन्होंने यहीं लिखीं, किंतु अब तक वे बुरी तरह थक चुके थे और उनका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा था । सन् १९०० में बेडेनवेइलर (जर्मनी) में क्षय रोग से उनकी मृत्यु हो गयी और एलिजाबेथ (न्यू जर्सी) में उन्हें दफनाया गया ।

— सम्पादकगण

नववधू का ग्राम-प्रवेश

ग्रेट पुलमैन गाड़ी ऐसी शानदार गति से चक्कर काटती हुई आगे बढ़ती जा रही थी कि खिड़की के बाहर झाँकते ही ऐसे लगता था कि टैक्सास के मैदान पूर्व की ओर बढ़ते आ रहे हैं। हरी घास के विस्तृत खंड, मेस्किवट एवं नागफणि के मटमैले झुरमुट, मकानों के छोटे-छोटे समूह, हल्के-नन्हें पेड़ों के जंगल, सभी पूर्व की ओर तेजी से बढ़ते, फिर क्षितिज की ओर भागते और अंत में मानो एक खाई में विलीन हो जाते थे !

सान एंटोनियो स्टेशन पर इस गाड़ी में एक नव-विवाहित जोड़ा चढ़ा था। कई दिनों तक धूप और हवा में रहने के कारण उस पुरुष का चेहरा लाल हो गया था और उसकी नयी काली पोशाक का स्पष्ट परिणाम यह दिखता था कि उसके ईंट के रंग के हाथ अत्यन्त सजगतापूर्वक निरन्तर कार्य कर रहे थे। अपनी पोशाक पर प्रायः वह एक सम्मानभरी नजर डाल लेता था। वह अपने घुटने पर हाथ रखे ऐसे बैठा था, जैसे कोई व्यक्ति नाई की दूकान में प्रतीक्षा कर रहा हो। वह चोरी-छिपी और लजायी हुई दृष्टि से दूसरे यात्रियों को भी देखता जाता था।

वधू सुन्दर नहीं थी, न वह बहुत जवान ही थी। उसने नीले पश्मीने का वस्त्र पहन रखा था, जिसमें यहाँ-वहाँ मखमली बुंदकियां थीं तथा लोहे के बटनों की भरमार थी। वह अपनी गर्दन बार-बार घुमाकर अपने फ्राक की ऊँची-तंग बाँहों को देख लेती थी। वे उसे सुखद नहीं लग रही थीं। उसके हाथों की ओर देखने से साफ लग रहा था कि वह खाना पकाती रही थी और भविष्य में भी उसे नियमित खाना पकाने की आशा थी। जिस समय वह गाड़ी पर सवार हुई थी, उस समय कुछ यात्रियों के लापरवाही के साथ देखने पर उसके चेहरे पर लाज की जो लाली छा गयी थी, वह इस सीधे-सादे, साधारण, शान्त तथा प्रायः भावहीन चेहरे पर विचित्र दिखायी देती थी।

स्पष्टतः वे दोनों ही खुश थे।

हर्ष-विभोर होकर पुरुष ने पूछा—“ऐसी बड़ी शानदार गाड़ी में पहले भी कभी सफर किया है तुमने ?”

“नहीं तो !”—उसने प्रत्युत्तर में कहा—“किन्तु बहुत अच्छी है यह गाड़ी, है न ?”

“क्या कहने इसके ! और फिर थोड़ी देर बाद हम लोग खाने के डिब्बे में जायेंगे । जरा वहाँ खाने की मेज की सजावट देखना । दुनिया का बेहतरीन खाना वहाँ मिलता है और बिल आता है एक डालर !”

“एक डालर !”—वधू ने आश्चर्य-विस्फारित मुख से कहा—“यह तो बहुत ज्यादा होता है ।”

“खैर ! इस यात्रा में तो पैसे का कोई प्रश्न ही नहीं है ।”—उसने शेखी के स्वर में कहा—“इस बार तो हम लोग यहाँ की प्रत्येक सुख-सुविधा का लाभ उठायेंगे ।”

थोड़ी देर बाद उसने अपनी पत्नी को रेलगाड़ियों के बारे में समझाना शुरू किया । “देखो, टेक्सास के एक कोने से लेकर दूसरे तक, एक हजार मील के सफर में, यह ट्रेन चार ही जगह रुकती है ।”—स्वयं उस रेलगाड़ी का स्वामी होने के दर्पपूर्ण स्वर में उसने कहा । फिर उसने डिब्बे की चमकीली ‘फिटिंग’ दिखलायी । उसकी पत्नी आश्चर्य से मुग्ध होकर हरे रंग के मखमल, चमकते हुए पीतल, चाँदी और शीशे की चीजें और तेल की सतह-जैसी चमचमाती हुई काली लकड़ी को देख रही थी । एक कोने में कांसे की बनी हुई एक प्रतिमा बड़ी दृढ़ता से डिब्बे के एक भाग को दूसरे से अलग करती थी और जगह-जगह छत पर चाँदी और जैतून के रंग के भित्ति-चित्र अंकित थे ।

इस नव विवाहित जोड़े की निगाह में, सान एंटोनियो में सम्पन्न उनके विवाह की गरिमा और उल्लास उस समस्त वातावरण पर प्रतिबिम्बित था । विशेषतः पुरुष का चेहरा गर्व और खुशी से चमक उठा था, किन्तु हब्सी कुली को वह बड़ा हास्यास्पद लगा । वह कुली समय-समय पर दूर से उन दोनों की ओर बड़ी व्यंगभरी वक्रता से देख लेता था । कई बार तो वह उन लोगों को इस सफाई से अपमानित करता था कि वे समझ ही नहीं पाते थे । बड़प्पन के आडम्बर को एक अजीब कुटिलता के साथ प्रदर्शित करते हुए वह उन्हें काफी सता रहा था ।

किन्तु उन्हें इसका तनिक भी ज्ञान नहीं था और वे इस बात को तुरन्त भूल गये कि कभी-कभी कुछ यात्री उन्हें व्यंग्यपूर्वक घूर-घूर कर देखते थे । वास्तव में उनकी जैसी स्थिति में हास्य-उपहास की काफी गुंजाइश थी !

“३ बजकर ४२ मिनट पर हम लोग यलो स्काई पहुँच जायेंगे ।”—पुरुष ने वधू की आँखों में सुकुमार भाव से देखते हुए कहा ।

“सच ?”—वधू ने अजाने भाव से कहा । पति ने जो कहा, उस पर आश्चर्य

दिखलाना उसका पत्नी-सुलभ सौजन्य था। उसने अपनी जेब से चाँदी की एक छोटी घड़ी निकाली और जब एकाग्रता के साथ वह उसे देखने लगी, तब पति का चेहरा चमक उठा।

“एक मित्र से सान एंटोनियो में मैंने इसे खरीदा है।”—उसने आह्लाद के साथ कहा।

“बारह बजकर सतरह मिनट हुए हैं।”—लजीले, किंतु भद्दे प्रणयाभिनय के साथ वधू ने कहा। एक यात्री ने यह नाट्य देखा, तो एक तीव्र उपहास उसके चेहरे पर उमड़ आया और गाड़ी में लगे कई शीशों में से एक में वह अपने आप को ही आँख मारने लगा।

अंत में वे खाने के डिब्बे में गये। सफेद पोशाकों में सुसज्ज हब्शी बैरों की दो कतारें वहाँ खड़ी थीं। इस दम्पति के प्रवेश पर उन्होंने ऐसी दिलचस्पी और संतुलन दिखलाया, जैसे उन्हें पहले से ही सचेत कर दिया गया हो। एक बैरे ने दोनों को खाना खिलाया। उसकी आवभगत में बुजुर्गों-जैसी उदारता थी और वह उसके चेहरे पर स्पष्टतः प्रतिबिम्बित थी, किंतु बैरे का किंचित् आदर-मिश्रित अभिभावकों-जैसा यह व्यवहार इस नवदम्पति की समझ में नहीं आया। अतः जब वे अपनी गाड़ी में वापस लौटे, तब उन्होंने छुटकारे की साँस ली।

बायें तरफ, मीलों दूर नीचे एक लम्बा बैंगनी रंग का ढलाव था, जिसमें कुहरे की पट्टी के उस पार रायो ग्रांडे था। ट्रेन एक कोण से उसकी ओर बढ़ी जा रही थी। यलो स्काई ठीक उसकी चोटी पर था। ज्यों-ज्यों यलो स्काई नजदीक आता जा रहा था, त्यों-त्यों इस नये पति की अस्थिरता बढ़ती जा रही थी। उसके ईंट के रंग के हाथ अपनी चेष्टा में और भी तेज हो गये थे। जब उसकी पत्नी उसकी तरफ झुकती और उससे कुछ कहने लगती, तब वह प्रायः खोया-खोया, काफी दूर, तल्लीन-जैसा प्रतीत होता था।

सत्य तो यह था कि जैक पाटर के मन पर अपने एक कार्य की छाया सीसे जैसी बोझिल होती जा रही थी। वह यलो स्काई का ‘टाउन मार्शल’ था। वहाँ उसका बड़ा नाम था; लोग उसे चाहते थे और उससे डरते भी थे। वह वहाँ का एक प्रमुख व्यक्ति था। वह अपनी प्रेमिका से मिलने के लिए सान एंटोनियो आया था और काफी मिन्नतों के बाद उसे अपनी पत्नी बनाने में सफल हो गया था, किंतु यह सब उसने यलो स्काई के निवासियों की राय लिए बिना ही किया था और आज वह अपनी वधू को उन्हीं भोले-भाले एवं विश्वासी

नागरिकों के सम्मुख ले जा रहा था !

साधारण तौर पर यलो स्काई में लोग अपने इच्छानुसार ही विवाह किया करते थे; किंतु पाटर के मन में मित्रों के प्रति कर्तव्य-परायणता की भावना इतनी सक्रिय थी या मित्रों का उसकी मैत्री में इतना विश्वास था अथवा यों कहिये कि पाटर के दिमाग में एक ऐसी अव्यक्त रस्म की उपेक्षा घूम रही थी कि वह अपने को घृणा का पात्र समझने लगा था, मानो उसने एक भारी अपराध कर दिया हो। सान एंटोनियों में इस लड़की के सान्निध्य में कई तीव्र भावनाओं में बह कर वह कई सामाजिक मर्यादाओं का उल्लंघन कर बैठा था। सान एंटोनियो में वह अंधेरे में छिपे आदमी-जैसा था। मित्रों के प्रति कर्तव्य-भावना और रस्मो-रिवाज के बंधनों को काटने की सामर्थ्य इस दूर शहर में उसे अनायास ही प्राप्त थी। और, अब सुबह की उस घड़ी के साथ-साथ यलो स्काई नजदीक आता जा रहा था !

वह अच्छी तरह जानता था कि उसके गाँव के लिए उसकी शादी का विशेष महत्व है। अवश्य ही उसकी मित्रमंडली उसे क्षमा नहीं करेगी। शादी के दरम्यान कई बार उसने सोचा था कि वह तार द्वारा अपने मित्रों को सूचित कर देगा; किंतु एक अजीब-सी कायरता के वशीभूत होकर वह यह भी नहीं कर सका था। कुछ भय भी उसके भीतर पैदा हो गया था और अब वह ट्रेन उसे बड़ी तेजी से आश्चर्य, आह्लाद और तिरस्कार के उस मंच की ओर ले जा रही थी। इन्हीं भावनाओं में उलझ उसने खिड़की में से बाहर झाँका, कुहरे की एक रेखा-सी ट्रेन की ओर बढ़ती आ रही थी।

यलो स्काई में एक बैंड भी था, जिसके बजने में प्रायः आर्तभाव ही रहा करता था। उसी बैंड से लोगों का मनोरंजन होता था। बैंड का खयाल आते ही उसने एक रूखी हँसी हँस दी। यदि वधू-सहित उसके आगमन का पता नागरिकों को होता, तो वे स्टेशन पर ही उसका स्वागत करते और बैंड बजाते हुए हर्षोल्लास के साथ उसे घर तक पहुँचाते।

स्टेशन से घर तक जल्दी से पहुँचने के लिए उसने तेज-से-तेज सवारी लेने का इरादा किया। अपने घर में पहुँच कर तो वह कोई भी जबानी घोषणा कर देगा और जब तक लोगों का उत्साह शिथिल नहीं पड़ जायेगा, तब तक उनके पास नहीं जायेगा।

वधू ने चिंतित भाव से उसकी ओर देखा—“ जैक ! कौन-सी परेशानी है तुम्हें ? ” वह फिर हँस दिया—“ नहीं, ऐसी कोई परेशानी नहीं—यलो स्काई

का खयाल आ गया था।" वह कुछ झेंप-सी गयी।

एक सम्मिलित अपराध का भाव उन दोनों के मानस पर छा गया और एक हल्की सुकुमारता उन पर बिंबित हो गयी। इस मीठी भावुकता में उज्ज्वल आँखों से उन्होंने एक-दूसरे को देखा, लेकिन पाटर की वह दुर्बल हँसी भी रह-रह कर उमड़ आती थी... हाँ, वधू के चेहरे पर लज्जा की आभा वैसी ही स्थायी थी।

विश्वासघात की भावना से त्रस्त, जैक पाटर तेजी से भागती दृश्याबली को देखता जा रहा था। वह बोला—"बस अब हम पहुँच ही गये हैं।"

इसी बीच कुली आया और उसने पाटर को घर के निकट आने की सूचना दी। उसके हाथ में एक ब्रश था और अपना सारा दिखावटी बड़प्पन भूल कर वह पाटर के कपड़ों को झाड़-झाड़ कर साफ कर रहा था। अन्य यात्रियों की देखादेखी पाटर ने भी उसे बख्शीस दी। काफी भारीभरकम काम था वह, जसे कि कोई अपने पहले घोड़े की नाल बाँधता हो।

कुली ने उसका बैग उठाया और ज्योंही ट्रेन धीमी होने लगी, वह गाड़ी के प्लेटफार्म की तरफ बढ़ा। इतने में गाड़ी के दोनों इंजिन और डिब्बों की लम्बी कतार भी यलो स्काई के स्टेशन पर आ लगी।

"यहाँ इंजिनों को पानी लेना पड़ता है।"—पाटर ने ऐसे रुद्ध कंठ से और खेद-खिन्न स्वर में कहा, मानो वह किसी की मृत्यु की सूचना दे रहा हो। ट्रेन के रुकने के पहले ही उसकी आँखें सारे प्लेटफार्म को माप गयी थीं। उसे आश्चर्य के साथ-साथ प्रसन्नता भी थी कि उस समस्त लम्बे प्लेटफार्म पर स्टेशन-एजेंट के सिवाय और कोई नहीं था और वह भी चिंतातुर भाव से पानी की टंकियों की तरफ जा रहा था। गाड़ी रुकी, तो कुली पहले नीचे उतरा।

"चलो भई, नीचे उतरो।"—पाटर ने भरपूर आवाज में कहा। जैसे ही उसने वधू को उतारा, दोनों ही एक कृत्रिम हँसी हँसे। उसने हल्की के हाथ से बैग ले लिया और अपनी पत्नी को हाथ के सहारे चलने को कहा। जब वे तेजी से जा रहे थे, तब उसने एक तिरछी तेज दृष्टि से देखा कि लोग उसके दो बक्सों को उतार रहे हैं और वह स्टेशन-एजेंट, जो असबाब की गाड़ी से काफी दूर था, तरह-तरह की मुद्राएँ बनाता हुआ उसकी ओर दौड़ा चला आ रहा है। अपने वैवाहिक आनंद का यलो स्काई पर यह भाव देखकर वह हँसा और बड़बड़ाया। उसने अपनी पत्नी की बाँह दृढ़ता से पकड़ ली और वे तेजी से भाग चले। कुली पीछे छूट गया।

दक्षिणी रेलवे की केलिफोर्निया एक्सप्रेस इक्कीस मिनट में ही यलो स्काई पहुँचनेवाली थी। वीयरी जेंटिलमैन सराय की 'बार' में उस समय छः आदमी थे। उनमें से एक ढोल बजाने वाला था, जो बड़ा बातूनी था। उसकी जबान तेजी से चलती ही रहती थी। तीन आदमी टैक्सास के निवासी थे, जो उस समय बातें करने के लिए विशेष उत्सुक नहीं थे। दो मेक्सिकन गड़रिये थे, जो, जैसा कि नियम था, वीयरी जेंटिलमैन में बातें करना उचित नहीं समझते थे। सराय का मालिक दरवाजे के सामने की जमीन पर लेटा पड़ा था। वह अपने पंजों पर सिर रखे ऊँघता हुआ इधर-उधर सतर्कता से देख लेता था—उस कुत्ते की तरह, जो प्रायः ठोकरें खाया करता है। उस रेतीली गली के पार हरी-हरी घास के कुछ टुकड़े थे, जो चिलचिलाती धूप में धधकती रेत के बीच बड़े सुहावने लगते थे और मन में कुछ शंका भी जाग्रत करते थे। दरअसल, वे उन घास की चटाइयों से लगते थे, जिन्हें 'लान' के रूप में नाटक के मंच पर इस्तेमाल किया जाता था। रेलवे स्टेशन के उस दूरस्थ सिरे पर एक व्यक्ति झुकी हुई कुर्सी पर बैठ पाइप पी रहा था। रायो ग्रांडे नदी का किनारा कस्बे को घेरे हुए था और वहाँ से वह दूरस्थ मेस्किवट का मैदान स्पष्ट नजर आता था।

उस ढोल-वादक एवं उसके साथियों के सिवाय सारा यलो स्काई उँघ रहा था। वह नवागंतुक आहिस्ते से डंडे को पकड़ कर झुका और उस चारण की भौंति कई कहानियाँ सुनाने लगा, जो अपने नये यजमान के पास आया हो। वह कह रहा था :—

“और जिस वक्त वह बूढ़ा अपनी बाहों में मेज लिए ही नीचे सीढ़ियों पर गिर पड़ा, उस वक्त वह बुढ़िया कोयलों की दो डलियाँ लेकर ऊपर चढ़ रही थी। और सचमुच. . . !”

उस ढोल-वादक की यह कहानी दरवाजे में अचानक एक नवयुवक के आ जाने के कारण आगे न बढ़ी। वह नवयुवक चिल्लाया—“स्फ्रेची विल्सन शराब के नशे में चूर, काबू के बाहर हो गया है।” दोनों मेक्सिकनों ने तत्काल अपने गिलास रख दिये और वे सराय के पिछले दरवाजे से अंतर्धान हो गये।

उस भोले-भाले, दिलचस्प ढोली ने कहा—“अरे भाई, पी ली तो हो क्या गया ? आप भी आइये और थोड़ी पी लीजिये।”

किंतु इस सूचना ने सारे कमरे में एक ऐसा आतंक उत्पन्न कर दिया था कि

ढोल-वादक को भी उस वातावरण का अनुभव हुए बिना न रहा। सहसा सर्वत्र स्तब्धता छा गयी।

वह रहस्य में पड़ गया और पूछ बैठा—“आखिर माजरा क्या है, बताओ तो?” उसके तीनों साथियों ने इस बात को और भी कौशल से कहने का भाव प्रकट किया, किंतु दरवाजे पर खड़े नवयुवक ने उन्हें बीच में ही रोक दिया। सराय में अंदर घुसते हुए उसने कहा—“इसका मतलब यह है कि अगले दो घंटे शहर में निरापद नहीं बीतेंगे।”

सराय के मालिक ने दरवाजा बंद करके ताला लगाया और खिड़की से बाहर निकल कर लकड़ी के भारी ‘शटर’ द्वार पर लगा दिये। एकदम सर्वत्र गिरजाघर-जैसी निःशब्द शांति छा गयी। ढोल-वादक एक से दूसरे चेहरों को ताक रहा था।

फिर उसने पूछा—“मगर आखिर यह सब होने क्या जा रहा है? क्या यहाँ आपस में गोलियाँ चलेंगी?”

“पता नहीं, गोलियाँ चलेंगी या नहीं,”—एक व्यक्ति ने थोड़ी उग्रता से कहा—“मगर एक अच्छी-खासी निशानेबाजी जरूर हो जायेगी।”

सूचना देने वाले नवयुवक ने हाथ हिलाते हुए कहा—“कोई चाहे तो लड़ाई भी अच्छी-खासी हो सकती है। जिसे लड़ने की हविश हो, वह उस गली में चला जाये। वहाँ लड़ाई बस इंतजार ही कर रही है।”

ढोल-वादक बड़ी दुविधा में पड़ गया। क्या करे? आत्मरक्षा करे या उस विदेशी के हित का खयाल रखे।

उसने पूछा—“तुमने उसका क्या नाम बताया था?”

“स्क्रैची विल्सन!”—सब ने एक साथ कहा।

“क्या वह किसी को मारेगा? आप लोग क्या करेंगे तब? क्या ऐसा अकसर होता है? क्या हफ्ते में एक-दो बार उसे ऐसा जुनून सवार होता है? क्या वह दरवाजा तोड़कर अंदर घुस सकता है?”

सरायवाले ने कहा—“नहीं, वह दरवाजा नहीं तोड़ सकता। तीन बार उसने कोशिश की है; मगर जब वह आये, तब बेहतर है, तुम फर्श पर लेट जाना। यह निश्चय है कि वह गोली चलायेगा और शायद गोली अंदर भी आ जाय।”

इस चेतावनी ने ढोला-वादक को सतर्क कर दिया और वह बड़ी सजगता से दरवाजे पर निगाह गड़ाये रहा। उसके फर्श पर लेटने का वक्त अभी नहीं आया था, किंतु एहतियात के तौर पर वह दीवार के पास तिरछा हो गया।

“क्या वह किसी को मारेगा भी ?”—उसने फिर एक सभीत प्रश्न किया ।

उपस्थित व्यक्ति इस प्रश्न पर एक घृणासूचक भाव से हँस पड़े ।

“वह गोली जरूर चलायेगा; उपद्रव करने के लिए वह तुला बैठा है । उससे उलझने में क्या फायदा ?”

“मगर ऐसी हालत में आप लोग क्या करते हैं ?”

एक ने जवाब दिया—“क्यों ? वह और जैक पाटर. . . .”

“मगर जैक पाटर तो सान एंटोनियो में है !”—बाकी व्यक्तियों ने बात काटते हुए एक साथ कहा ।

“यह जैक पाटर कौन है ? उसका इस सबसे क्या सरोकार ?”

“सरोकार क्यों नहीं जी ? वह शहर का मार्शल जो ठहरा । जब स्क्रेची ऐसा बदहवाश हो जाता है, तब जैक पाटर उसका मुकाबला करने जाता है !”

“खूब !”—अपनी भौंहें पोंछते हुए ढोला-वादक ने कहा—“क्या काम मिला है उसको भी !”

धीरे-धीरे सबकी बातें फुसफुसाहट में बदल गयीं । भय और शंका से अभिभूत ढोला-वादक ने कुछ और प्रश्न पूछना चाहा ; मगर उपस्थित व्यक्तियों ने चिढ़ और परेशानी जाहिर करते हुए उसे मौन रहने का संकेत किया । आतुर प्रतीक्षा का एक गहन मौन सबके मानस पर छाया हुआ था । गली की आवाजों को सुन-सुनकर उनकी आँखें कमरे की गहरी छाया में चमक उठती थीं । एक व्यक्ति ने सराय के मालिक को तीन इशारे किये और उत्तर में उस मालिक ने प्रेत की तरह चलकर उसे एक गिलास और बोतल दी । उस व्यक्ति ने व्हिस्की का पूरा गिलास उड़ेला और आहिस्ते से बोतल नीचे रख दी । एक ही घूंट में वह गिलास खाली कर गया और फिर अचल शांति के साथ दरवाजे की तरफ चला गया । नजर पड़ी, तो ढोला-वादक ने देखा कि सराय के मालिक ने ‘बार’ के नीचे से बिना शब्द किये एक विंचेस्टर निकाली है और वह उसे इशारे से बुला रहा है । घुटने के बल सरकते हुए वह कमरे के उस पार गया ।

“बेहतर है कि तुम बार के पीछे से मेरे पास आओ !”

“नहीं भाई ! मैं वहीं खड़ा रहना चाहता हूँ जहाँ से भागने पर मुझे दरवाजा मिल सके ।”—पसीने में तर-बतर ढोल-वादक ने कहा ।

तब सराय के मालिक ने बड़ा अनुरोध जताते हुए उसे आने का संकेत किया । उसकी बात मान कर ढोल-वादक बार के नीचे रखे एक बाक्स पर बैठ गया । वहाँ उसने जब जस्ते और ताम्बे की पट्टियाँ और सामान देखा, तब उसे इस

आसन्न भय से जैसे मुंह-मौगी राहत मिली। पास ही पड़े एक और बाक्स पर वह शराबखाने का मालिक बैठ गया।

फिर फुसफुसाते हुए उसने कहा—“सुनो, यह स्क्रेची विल्सन गजब का निशाने-बाज है। जब वह गोली चलाने पर उतारू हो जाता है तब चूहों की भाँति बिलों में शरण लेने के सिवाय हम कुछ भी नहीं कर सकते। बारबाटियों की उस मशहूर टोली का वह आखिरी आदमी है, जो नदी के किनारे आफत ढाया करती थी। शराब के नशे में तो वह बस शैतान ही है। मगर जब नहीं पीता है, तब उसके जैसा संजीदा और उदार कोई व्यक्ति ही नहीं—ऐसा निर्दोष और दयालु कि मक्खी तक पर हाथ नहीं उठाता। लेकिन जब पी लेता है, तब बस, वह नहीं या दुनिया नहीं !”

थोड़ी देर शांति—अटल शांति में बीती। “क्या ही अच्छा होता कि जैक पाटर सान एंटोनियो से वापस लौट आता !”—शराबखाने के मालिक ने उकताते हुए कहा—“उसने एक बार विल्सन को पैर में गोली मारी थी। उसका सामना तो बस जैक पाटर ही कर सकता है।”

इसी समय उन्होंने काफी दूर पर गोली की आवाज सुनी और उसके ठीक बाद तीन भयंकर चीखें भी ! उस अंधेरे कमरे में बैठे व्यक्तियों का धीरज जैसे अकस्मात् टूट गया। वे इधर-उधर भागने-छिपने लगे और सभीत दृष्टि से एक-दूसरे को देखने लगे—“वह आ गया !”

— ३ —

एक व्यक्ति भूरे-लाल रंग की ऊनी कमीज पहने, जो सजावट के लिए ही शायद खरीदी गयी थी और न्यूयार्क के पूर्व में रहने वाली यहूदी औरतों ने जिसे बनाया था, यलो स्काई की बड़ी सड़क के बीच में आया। उसके दोनों हाथों में दो वजनी नीले रिवाल्वर थे। वह प्रायः जोर से चिल्ला उठता था और उसकी यह बकझक उस मरुस्थल-जैसे गाँव में घरों की छतों के ऊपर से गूँजती हुई चारों ओर के वातावरण को झकझोर देती थी। ऐसा लगता था मानो वह सारी आच्छादित निस्तब्धता उसके ऊपर अवस्थित एक मकबरे की मेहराब हो। लड़ाई की चुनौती की ये खूँखार आवाजें उस मौन स्तब्धता से टकरा-टकरा कर भीषण रूप में प्रतिध्वनित हो उठती थीं। उसके बूटों पर लाल नोकें मुलम्मे से जड़ी थीं और वे ऐसे लगते थे जैसे कि सर्दियों में न्यू इंग्लैंड की घाटियों में बर्फ पर फिसलनेवाले लड़के पहना करते हैं।

इस व्यक्ति का चेहरा व्हिस्की के उन्माद में क्रोध से तमतमाया हुआ था। उसकी आँखें घूम रही थीं; मगर अपने लक्ष्य की तलाश में बड़ी सतर्क थीं और वह बंद खिड़कियों और दरवाजों को बड़े गौर से खोज रहा था। रात में शिकार की टोह में चलनेवाली बिल्ली की भौंति वह दबे पाँव चल रहा था। वह रह-रह कर क्रोध में गरज भी पड़ता था। हाथों में पकड़े रिवाल्वर ऐसे दिखते थे जैसे वह दो तिनके अपने हाथों में पकड़े हुए हो और बिजली की-सी गति से वे यहाँ-वहाँ घूम जाते थे। उसके प्रत्येक हाथ की कनिष्ठा उंगलियाँ कभी-कभी कुशल वादक की उंगलियों की भौंति चलने लगती थीं। उसकी गरदन की नसें कालर के बाहर क्रोध में दबती-उभरती साफ नजर आ रही थीं। लड़ाई की चुनौतियों के सिवाय उसके मुँह से और कोई आवाज नहीं निकल रही थी—सारी निस्तब्धता में बस उसकी ये ललकारें ही गूँज रही थीं। यलो स्काई के वे कच्ची ईंटों के घर सड़क के बीच से गुजरते हुए इस व्यक्ति की हरकतों से जैसे एकदम अविचल थे।

विल्सन से लड़ने के लिए कोई सामने नहीं आया—किसी ने उसकी चुनौती स्वीकार नहीं की। बेसन्नी में उसने आसमान को ललकारा—मगर वहाँ से भी क्या जवाब मिल सकता था? वह गरजा और क्रोध में फुँफकारता हुआ अपने रिवाल्वरों को चारों दिशाओं में घुमाता रहा।

वीयरी जैटिलमैन शराबखाने का कुत्ता इस सबको पसंद नहीं करते हुए भी वहीं अपने स्वामी के दरवाजे पर पड़ा हुआ ऊँघता रहा। कुत्ते को देखकर विल्सन ने विनोद के साथ अपना रिवाल्वर ताना। कुत्ता उछला और गुर्राता हुआ सीधा भागा। विल्सन चिल्लाया; कुत्ता छलांग मार कर भागा, किंतु जैसे ही वह गली में घुसने वाला था कि उसने शोर सुना, कोई सीटी भी बजा रहा था और तत्काल ही ठीक उसके सामने कुछ गिरा भी! कुत्ते ने एक चीख भरी और जान छोड़ कर दूसरी तरफ भागा। फिर आवाज आयी, सीटी बजी और रेत उछल कर उस पर गिरी। भयभीत कुत्ता नांद के पशु की भौंति इधर-उधर मंडराने लगा। रिवाल्वरों को कमर पर रखे वह व्यक्ति हँसता हुआ खड़ा था।

जब विल्सन वीयरी जैटिलमैन के पास आया, तब सराय के बंद दरवाजों ने उसके ध्यान को आकृष्ट किया। वह दरवाजे तक गया और रिवाल्वर से उसे खटखटाते हुए शराब माँगने लगा।

मगर दरवाजा अंचल रहा। तब उसने एक कागज का टुकड़ा उठाकर

चाकू से दरवाजे पर टांगा। फिर हिकारत से वापस लौटते हुए इधर-उधर मंडरा कर उस कागज के टुकड़े पर गोली चलायी। आधे इंच से निशाना चूका। उसने अपने को ही कोसा और आगे चल दिया। तत्पश्चात् उसने अपने एक मित्र के घर की खिड़कियों को ही अपनी गोली का निशाना बनाया। क्या विडम्बना थी। एक व्यक्ति सारे गाँव के साथ खेल रहा था !

मगर इतनी देर के बाद भी लड़ाई के लिए कोई तैयार नहीं हुआ। कुछ देर के बाद उसके पुराने विरोधी, जैक पाटर का नाम उसके दिमाग में आया और उसने निश्चय किया कि वह पाटर के घर जाकर उसे लड़ाई के लिए उकसायेगा। गाने की एक धुन अलापता हुआ वह पाटर के घर की दिशा में चला।

जब वह वहाँ पहुँचा, तब उसने वहाँ भी अन्य घरों की-सी शान्ति पायी। उसने अनुकूल जगह पर खड़े होकर पाटर को ललकारा, किंतु घर के भीतर कोई हलचल उसे महसूस नहीं हुई। कुछ रुककर उसने फिर पाटर को ललकारा, साथ में उसने गालियों की भी वर्षा कर दी।

इस बार भी जब उसकी चुनौती विफल गयी, तब वह क्रोधानल में जलते हुए दैत्य-जैसा उस अचल-अटल मकान पर बरस पड़ा। मकान के प्रति उसकी यह क्रुद्ध बकझक ऐसी लग रही थी जैसे सर्दों की आंधी ने उत्तर के किसी मैदान में स्थिर कमरे पर हमला किया हो। और इस सुनसान में दूर तक यह आवाज जब पहुँची होगी, तब लगा होगा, जैसे दो सौ मेक्सिकन तुमुल युद्ध में संलग्न हों। काफी थक जाने पर वह विश्राम के लिए रुका और अपने रिवाल्वरों को फिर से भरने लगा।

पाटर और उसकी वधू चुपके-चुपके तेजी से चल दिये। कभी-कभी वे लज्जित भाव से धीरे-धीरे हँस भी लेते थे।

“बस, वहाँ उस मोड़ तक और चलना है !”—उसने अंततः कहा। दोनों पति-पत्नी झुके हुए-से ऐसे चले जा रहे थे, मानो तेज हवा के विरुद्ध जा रहे हों। सामने दिखायी दिये नये घर की ओर पाटर उंगली से संकेत करने ही वाला था कि मोड़ पर एक व्यक्ति से जैसे उसकी मुठभेड़ ही हो गयी हो। यह आगंतुक भूरे-लाल रंग की कमीज पहने हुए था और एक बड़े रिवाल्वर में बेतहाशा कारतूस भर रहा था। सामना होते ही उसने रिवाल्वर नीचे गिरा दिया और विद्युत्गति से एक दूसरा रिवाल्वर बाहर निकालकर पाटर की छाती का निशाना साधा।

हठात् वातावरण में एक सन्नाटा छा गया। पाटर एकदम निःशब्द था, मानों

उसकी जबान ही निर्जीव हो गयी हो। उसने अपनी बाँह को अपनी पत्नी की पकड़ से तत्काल छुड़ा लिया और उसने वह थैला नीचे रेत पर डाल दिया। बधू का मुख भी भय से रंगहीन एक पुराने पीले कपड़े-जैसा हो गया था। साक्षात् मृत्यु अपनी सम्पूर्ण भयंकरता में उसके सामने मुँह बाये, खड़ी थी।

केवल तीन ही कदमों के फासले पर, वे दोनों व्यक्ति एक-दूसरे के सामने खड़े थे। रिवाल्वर वाला व्यक्ति मुस्करा उठा। उसकी इस मुस्कराहट में एक नयी भयंकरता थी।

“तुम मुझे पर चोरी से वार करना चाहते थे — मुझे पर चोरी से वार करना चाहते थे ?” उसकी आँखें और भी आतंकपूर्ण हो गयीं और इसी बीच जब पाटर जरा हिला, तो विल्सन ने अपना रिवाल्वर तान कर कहा—“नहीं, यह कोशिश न करो जैक पाटर ! बंदूक की तरफ एक उंगली तक मत ले जाओ। आँख की एक भौंह तक न हिलाओ। तुम्हारे साथ निपट लेने का वक्त आज आ गया है और मैं अपने तरीके से निपटाना चाहता हूँ। तुम्हें खत्म करके मैं स्वच्छंद—जैसा मैं चाहूँ, करना चाहता हूँ। इसलिए अगर तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें अपनी गोली का निशाना न बनाऊँ, तो जैसा मैं कहता हूँ करते जाओ !”

पाटर ने अपने शत्रु की तरफ देखा और कहा—“स्क्वेची ! मेरे पास कोई बंदूक नहीं है।” पाटर में दृढ़ता एवं धैर्य आता जा रहा था। साथ ही, उसके दिमाग की उस पार्श्वभूमि में पुलमेन का वह दृश्य भी न-जाने कहाँ से झलक उठा था—नीली मखमल, चमकीली पीतल, चाँदी, कांच और पानी की सतह पर तैल-जैसी अपनी स्याही में झलमलाती वह लकड़ी—और शादी की सारी गरिमा एवं उल्लास और नयी जमींदारी का वह वातावरण ! “तुम जानते हो, स्क्वेची विल्सन कि जब लड़ना होता है, तब मैं लड़ने से मुकरता नहीं हूँ, लेकिन आज तो मेरे पास हथियार नहीं है—बस सारी गोलियाँ अकेले तुम्हें ही चलानी होंगी।”

विल्सन का चेहरा स्याह पड़ गया। वह आगे बढ़ा और उसने अपना रिवाल्वर इधर-उधर घुमाते हुए पाटर की छाती पर ताना। “झूठ क्यों बोलते हो ? क्या तुम्हारे पास बंदूक नहीं है। मुझे ही धोखा देना चाहते हो ? इस सारे टेक्सास में क्या कोई कह सकता है कि उसने तुम्हें कभी बिना बंदूक के देखा है ?” उसकी आँखें प्रज्वलित हो उठीं और उसका कंठ धौंकनी जैसा चल रहा था। वह बोला—“क्या मुझे तुमने बच्चा समझ रखा है, जो यों बहकाते हो ?”

“बच्चा नहीं, मैं तुम्हें महामूर्ख समझता हूँ।”—पाटर ने बिना पीछे हटते हुए सीधे तनकर कहा—“सचमुच विल्सन, मेरे पास आज बंदूक नहीं है। अगर

तुम मुझे मारना चाहते हो, तो मारना शुरू कर दो। ऐसा मौका फिर कभी हाथ नहीं आयेगा।”

इस बलात् तर्क का असर विल्सन के क्रोध पर दिखायी पड़ने लगा। वह शांत होने लगा था। “तुम्हारे पास बंदूक नहीं है, क्यों नहीं है? क्या रविवार की पाठशाला में गये थे?”—उसने हिकारत के साथ कहा।

“मेरे पास बंदूक नहीं है; क्योंकि मैं अभी-अभी सान एंटोनियो से अपनी पत्नी के साथ आ रहा हूँ। मैंने ब्याह कर लिया है।”—पाटर ने उत्तर दिया—“और अगर मुझे मालूम होता कि पत्नी के साथ वापस घर लौटते समय तुम्हारे जैसे बदमाश यहाँ-वहाँ चक्कर काटते मिलेंगे, तो मैं बंदूक जरूर लाता। और मेरी बंदूक को तुम जानते ही हो!”

“ब्याह कर लिया तुमने?”—स्क्रेची ने समझने की कोशिश करते हुए कहा।

“हाँ, मैंने ब्याह कर लिया है।”—पाटर ने और स्पष्ट करते हुए जवाब दिया।

“ब्याह कर लिया?”—स्क्रेची के मुख से फिर निकला और इसी समय पाटर की बगल में भय से दुबकी एक नारी उसे दिखायी दी। “नहीं!”—उसने फिर कहा। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था। वह एक कदम पीछे हटा और उसका रिवाल्वर वाला हाथ शिथिल होकर बगल पर आ गया। “क्या यही वह महिला है?”—उसने पूछा।

“हाँ, यही मेरी पत्नी है!”—पाटर ने उत्तर दिया।

क्षण भर फिर खामोशी रही।

“अच्छा पाटर! तो अब सब खत्म हो गया।”—विल्सन ने धीमे स्वर में कहा।

“अच्छा स्क्रेची! तुम ऐसा कहते हो तो मैंने भी मान लिया कि तुम्हारे-हमारे बीच अब कुछ भी निपटने को शेष नहीं रहा।”—पाटर ने मस्तक उठाते हुए कहा।

“ठीक है जैक! अब सब समाप्त हो गया।”—विल्सन ने कहा। वह ज़मीन की तरफ विनम्र-सा देख रहा था। “तुमने ब्याह कर लिया!” वह शीर्ष्य का हामी नहीं था। ऐसी शिक्षा-दीक्षा उसे कहीं नहीं मिली थी; किंतु वस्तुस्थिति की महज प्रेरणा थी कि उन मैदान के निवासियों की स्वभावगत विशेषता का उसके भीतर उद्रेक हो गया था। उसने अपना रिवाल्वर उठाया और दोनों को कमर में डालकर वहाँ से चल दिया। उस भारी रेत में उसके कदम गहरे चिह्न बनाते जा रहे थे!

खुली नाव

उनमें से कोई भी आकाश के रंग से परिचित न था। उनकी दृष्टि अपनी ओर उमड़ती हुई लहरों पर गड़ी हुई थी। उन लहरों का रंग स्लेटी था, केवल उनके शिखर पर श्वेत झाग दिखायी दे रहा था। वे सभी लोग समुद्र के रंगों से सुपरिचित थे। क्षितिज संकीर्ण और विस्तृत होता रहता था, वह नीचे गिरता था और ऊपर उठता था और उसका किनारा हर समय चट्टानों की भाँति ऊपर उठती हुई लहरों से छिन्न-भिन्न होता रहता था।

जिस नाव में वे लोग सवार थे, उससे कहीं अधिक बड़ा कुछ लोगों का स्नान करने का 'टब' होता है। लहरें दूर तक फैली होने के अलावा काफी तीव्र और भयोत्पादक थीं और उनकी हर उछाल उस छोटी-सी नाव के सवारों के लिए एक समस्या का रूप धारण कर लेती थी।

नाव के मध्य में रसोइया बैठा हुआ था और उसकी आँखें नाव की ६ इंच मोटी लकड़ी पर, जो कि उसको समुद्र के अथाह पानी से अलग किये हुई थी, जमी हुई थीं। उसने कमीज की आस्तीनें ऊपर चढ़ा रखी थीं और जाकेट के बटन खुले हुए थे, और जिस समय वह पानी उलीचता था, उस समय जाकेट की दोनों परतें हवा के साथ उड़ने लगती थीं। 'ओह! बाल-बाल बच गये!' कभी-कभी वह इस वाक्य को भी कह उठता था और कहने के साथ ही उसकी दृष्टि पूर्व की ओर उफनते हुए समुद्र पर जा टिकती थी।

'आयलर' (यंत्र में तेल देने वाला), जो नाव के दो चप्पुओं में से एक को चला रहा था, उछलते हुए पानी से बचने के लिए कभी-कभी अचानक थोड़ा ऊपर की ओर उठ जाता था। चप्पू बड़ा पतला और छोटा था और ऐसा लगता था कि वह शीघ्र ही टूट जायेगा।

संवाददाता, जो दूसरे चप्पू को चला रहा था, आश्चर्य के साथ लहरों को निहारता हुआ अपने मन में सोच रहा था कि वह वहाँ पर क्यों आया?

नाव में लेटे हुए घायल कप्तान पर गहन निराशा ने अधिकार जमा रखा था, एक ऐसी निराशा ने जिसका अनुभव चाहे थोड़ी देर के लिए भी हो लेकिन होता जरूर है, जिसके प्रभाव से बड़े-बड़े साहसी और धैर्यवान व्यक्ति भी नहीं बच पाते, जिसका अनुभव कम्पनी के फेल हो जाने या सेना के परास्त हो जाने पर अथवा जहाज के डूब जाने-जैसे अवसरों पर होता है।

चाहे कोई किसी जहाज़ पर एक दिन के लिए कप्तान बने या वर्षों के लिए, उसका मन उसके साथ पूरी तरह उलझ जाता है। इस समय इस कप्तान के मन पर भी उस दृश्य का पूरा प्रभाव पड़ रहा था, जब कि उसके जहाज़ का मस्तूल, जिस पर एक श्वेत गेंद टंगी हुई थी, समुद्र की लहरों के साथ इधर-से-उधर हो रहा था और फिर धीरे-धीरे नीचे गिर गया था। उसके बाद उसकी आवाज़ विचित्र हो गयी थी। यद्यपि उसमें कम्पन न था, तथापि उसकी गहनता में शोक व्याप्त था और वह इस प्रकार की थी, जिसे शब्दों और आंसुओं द्वारा प्रदर्शित नहीं किया जा सकता।

“विली, इसे जरा और दक्षिण की ओर ही रखो।”—उसने कहा।

“जरा और दक्षिण की ओर साहब!”—‘आयलर’ ने नाव के पिछले भाग में से कहा।

नाव में बैठने का स्थान छोड़े की काठी से भिन्न न था और उसी पैमाने पर एक घोड़ा भी बहुत छोटा नहीं होता। नाव एक जानवर की भाँति ही उछल-कूद रही थी। प्रत्येक लहर के साथ वह ऊपर उठ जाती थी और ऐसा लगता था, जैसे कोई घोड़ा कूद रहा हो। पानी की इन दीवारों के ऊपर नाव किस तरह उठती-गिरती है, यह भी एक रहस्यपूर्ण बात होती है, और वह भी तब, जब कि लहरों के शिखर पर श्वेत झाग उत्पन्न हो रहा हो और लहरें बार-बार हवा में उठ-उठ कर गिर रही हों।

समुद्र में सब से बड़ी असुविधा यह होती है कि एक लहर पर पूर्णतया अधिकार कर लेने के पश्चात् आपको यह ज्ञात होता है कि अभी उसके पीछे एक और लहर है जो नाव को बहा ले जा सकती है। दस फुट की डोंगी में बैठ कर एक आदमी समुद्र के बारे में जितना जान सकता है, उतना और कहीं नहीं। पानी की स्लेटी रंग की दीवार जब उभरती है, तब मनुष्य की दृष्टि से अन्य सब-कुछ ओझल हो जाता है और उसे अनुभव होने लगता है कि वही लहर समुद्र का अंतिम फैलाव है अथवा जल का अंतिम भयानक प्रयास।

पीली रोशनी में उनके चेहरों का रंग भूरा रहा होगा। उनकी आँखों में विचित्र प्रकार की चमक उभर रही होगी, जबकि उन्होंने पीछे की ओर गौर से देखा। ‘बालकनी’ में से यह दृश्य बड़ा अपूर्व दिखायी दे सकता था, परन्तु नाव में सवार आदमियों को यह सब सोचने का समय न था और यदि उनके पास समय होता भी, तो और भी बहुत सी बातें उनके मस्तिष्क में उत्पन्न हो सकती थीं। सूरज ऊपर चढ़ आया था और समुद्र का रंग भी स्लेटी

से मरकत के रंग का हो गया था। उसका झाग भी उछलती हुई बर्फ के समान हो रहा था। दिन किस प्रकार उगा, इससे वे अपरिचित थे। अपनी ओर आने वाली लहरों के रंग पर पड़ने वाले इस प्रभाव को ही केवल वे जानते थे।

कुछ ही समय पूर्व, रसोइये और संवाददाता में असम्बद्ध वाक्यों में जीवन-रक्षक-केंद्र और शरणगृह के अन्तर को लेकर चर्चा हुई थी। रसोइये ने कहा था—“मासक्विटो इनलेट लाइट के ठीक उत्तर में एक शरणगृह है और जैसे ही वे लोग हमें देखेंगे, नाव लेकर हमारी सुरक्षा के लिए आ पहुँचेंगे।”

“लेकिन वहाँ देखेगा कौन?”—संवाददाता ने कहा।

“वहाँ के कर्मचारी।”—रसोइये ने कहा।

“शरणगृहों में कर्मचारी नहीं होते।”—संवाददाता ने बताया—“जहाँ तक मैं समझता हूँ, इन स्थानों पर जहाज-दुर्घटना-ग्रस्त लोगों के लिए भोजन और वस्त्र ही संग्रहीत रहते हैं। वहाँ कर्मचारी नहीं रहते।”

“पर मैं कहता हूँ कि रहते हैं।”—रसोइये ने कहा।

“नहीं ऐसी बात नहीं है।”—संवाददाता ने कहा।

“अच्छा, अभी हम वहाँ तक पहुँचे नहीं हैं।”—‘आयलर’ ने पिछले भाग में से कहा।

रसोइये ने कहा—“मासक्विटो इनलेट लाइट के पास, मैं जिस स्थान को समझ रहा हूँ, वह शायद शरण-गृह नहीं, बल्कि जीवन-रक्षक केन्द्र है।”

“खैर, अभी हम वहाँ पहुँचे नहीं हैं।”—‘आयलर’ ने पिछले भाग में से कहा।

— २ —

उनकी नाव लहरों के शिखर पर तैर रही थी और हवा उनके बालों के साथ खेल रही थी। पानी की बौछार भी बार-बार उनके ऊपर पड़ रही थी। हर लहर का आकार पहाड़ी के समान था, जिसके शिखर पर से वे क्षण भर के लिए विस्तृत और भयंकर विस्तार को देख लिया करते थे। यह विस्तार चमकदार था और हवा की तेजी से बिखरा जा रहा था। स्वतन्त्र समुद्र का यह खेल बड़ा अद्भुत और मनोहर था, साथ ही वीभत्स भी, जिस पर मरकती श्वेत तथा आसमानी प्रकाश पड़ रहा था।

“किनारे की ओर की हवा भी कितनी विलक्षण होती है!”—रसोइये ने कहा—“नहीं तो हम न जाने कहाँ होते और कुछ-का-कुछ हो जाता।”

“बिलकुल ठीक बात है।”—संवाददाता ने कहा।

‘आयलर’ ने व्यस्त होने पर भी अपनी सहमति प्रकट की।

कप्तान मुस्करा उठा। उसकी मुस्कराहट में एक साथ व्यंग, घृणा और विषाद परिलक्षित हो रहे थे। “क्या तुम लोग समझते हो कि अब भी कोई कसर बाकी है?”—उसने कहा।

और वे तीनों चुप हो गये, लेकिन दबी बातचीत का स्वर अब भी उभर रहा था। इस समय किसी प्रकार की आशा प्रकट करना उन्होंने मूर्खतापूर्ण और बाल-मुलभ समझा, लेकिन उनके मन में यह बात बनी जरूर रही। ऐसे अवसरों पर एक नवयुवक निश्चयात्मक तरीके से सोचता है। उस समय स्पष्टतया वे निराशा भरी बातों के विरुद्ध थे। इसलिए वे लोग चुप रहे।

“अब हम शीघ्र ही किनारे पर पहुँच जायेंगे।”—कप्तान ने उन्हें प्रसन्न करने के अभिप्राय से कहा।

लेकिन उसके स्वर में कुछ ऐसी बात थी, जिसने उन्हें सोचने को विवश कर दिया। “हाँ, यदि हवा का रुख ऐसा ही रहा!”—‘आयलर’ ने कहा।

रसोइया नाव का पानी उलीच रहा था। “हाँ, यदि लहरों के बीच में ही समाधि न बन गयी तो!”—उसने कहा।

समुद्री चिड़ियाँ उनके आस-पास उड़ रही थीं। कभी-कभी वे लहरों के ऊपर बहते हुए झाड़-झंखाड़ के पास पानी के ऊपर बैठ जाती थीं, इस तरह जैसे हवा की तीव्रता के साथ वहाँ गलीचे बिछा दिये गये हों। वे समूह म उतरती थीं, समुद्र की भीषणता से उन्हें तनिक भी भय न था। बहुधा वे उन लोगों के पास आ जाती थीं और अपनी गोल-गोल आँखों से उन्हें घूरने लगती थीं। उनका इस तरह घूरना बड़ा कुटिल और विलक्षण था और वे लोग शोर मचाकर बार-बार उन्हें भगा रहे थे। उन में से एक ने तो कप्तान के सिर पर ही बैठ जाना चाहा। वह नाव के समानान्तर उड़ी और घूमी नहीं, बल्कि मुर्गे की भाँति उसने हवा में कुदान ली। उसकी काली-काली आँखें कप्तान के सिर पर जमी हुई थीं। “बदतमीज!”—‘आयलर’ ने चिड़िया के लिए कहा—“बिलकुल छुरी की तरह लगती है।” रसोइया और संवाददाता उस पर बुरी तरह झट्ला उठे। कप्तान ने चाहा भी कि मोटी रस्सी मार कर उसे भगा दे, लेकिन उसने ऐसा किया नहीं, क्योंकि नाव तो पहले से ही डगमगा रही थी और ऐसा करने से संतुलन और भी बिगड़ सकता था। अतः वह केवल अपने हाथों से ही उन समुद्री चिड़ियों को भगाता रहा और जब उनसे पीछा छूटा, तब कप्तान ने अपने

बालों को सलामत पाकर संतोष की साँस ली और अन्य लोगों ने भी भयंकर अपशकुन टल जाने के कारण संतोष की साँस ली।

इस बीच 'आयलर' और संवाददाता नाव खेते रहे, बस खेते ही चले गये। वे एक ही सीट पर साथ-साथ बैठे थे और एक-एक चप्पू चला रहे थे। फिर 'आयलर' ने दोनों चप्पू संभाल लिये और उसके बाद संवाददाता ने। बाद में 'आयलर' ने और फिर संवाददाता ने। वे नाव को खेते ही चले गये; बस खेते ही चले गये। कठिनाई तब उपस्थित हुई, जब उन्होंने अपने स्थान बदलने चाहे, परन्तु सच देखा जाय, तो मुर्गी के नीचे से अंडा चुरा लेना आसान होता है लेकिन डोंगी में स्थान का बदलना आसान नहीं होता। पिछले भाग में से चप्पू चलाने के लिए आना बड़ा कठिन हो गया था। पहले एक आदमी ने अपना हाथ आगे को खिसकाया और बड़ी सतर्कता के साथ आगे बढ़ा और तब नाव खेनेवाले व्यक्ति ने अपना हाथ आगे खिसकाया। यह सब असाधारण सतर्कता के साथ किया गया और जब वे दोनों अपना स्थान बदल रहे थे तब और लोग आने वाली लहर की ओर ध्यान दे रहे थे और कप्तान कहता जा रहा था—“देखो, हौं, संभल कर !”

जब-तब दिखायी पड़नेवाले झाड़-झंखाड़ टापुओं की भौंति लग रहे थे, जैसे धरती के टुकड़े हों। न वे इधर हिल रहे थे और न उधर। इससे नाव में सवार लोगों को ज्ञात हो रहा था कि उनकी नाव धीरे-धीरे धरती की ओर खिसक रही है। जब डोंगी चढ़ाव पर पहुँची, तब कप्तान ने सतर्कता से बीच में खड़े होकर कहा कि उसने मासक्विटो इनलेट स्थित प्रकाश-स्तम्भ देख लिया है। तभी रसोइये ने कहा कि उसने भी देख लिया है। उस समय संवाददाता चप्पुओं को चला रहा था। वह भी प्रकाश-स्तम्भ देखने का इच्छुक था, किन्तु उसकी पीठ सुदूर तट की ओर थी और लहरों की बात प्रमुख थी। इसलिए कुछ समय तक वह अपना सिर घुमाने का अवसर न पा सका; लेकिन अंत में एक मामूली लहर आयी और तब पश्चिमी क्षितिज पर उसकी दृष्टि पड़ी।

“देखा ?”—कप्तान ने कहा।

“नहीं,”—संवाददाता ने धीरे से उत्तर दिया—“मुझे कुछ भी दिखायी नहीं दिया।”

“दुबारा देखो,”—कप्तान ने कहा और संकेत करते हुए बताया—“वह ठीक उस तरफ है।”

दूसरी लहर के निकल जाने पर संवाददाता ने संकेत की दिशा की ओर निहारा और इस बार उसकी दृष्टि विस्तृत क्षितिज के अंचल पर सूक्ष्म और स्थिर बिन्दु पर जा टिकी। वह पिन की नोंक की तरह का था। इतने छोटे प्रकाश-स्तम्भ को खोजने के लिए बड़ी तेज आँखों की आवश्यकता थी।

“हम वहाँ तक पहुँच जायेंगे, कप्तान ?”

“यदि हवा थमी रही और नाव बह न गयी तो। हम इससे अधिक कुछ नहीं कर सकते।”—कप्तान ने कहा।

छोटी-सी नाव लहरों पर झूलती हुई आगे बढ़ती जा रही थी। तभी श्वेत लपटों की भाँति पानी की बौछार नाव पर हुई।

“रसोइये, पानी उलीच दो।”—कप्तान ने आवेग के साथ कहा।

“बहुत अच्छा कप्तान।”—प्रसन्नचित्त रसोइये ने कहा।

- ३ -

जिस बन्धुत्व-भावना की स्थापना समुद्र के बीच उन लोगों में हो गयी थी, उसका वर्णन करना कठिन ही होगा। उनमें से किसी ने यह बात प्रकट न की थी। किसी ने जिक्र न किया था, परन्तु नाव पर वह विद्यमान थी और हरेक को प्रफुल्लित कर रही थी। उनमें एक कप्तान, एक ‘आयलर’, एक रसोइया और एक संवाददाता था और वे एक दूसरे के मित्र थे। साधारण तौर पर नहीं, बल्कि अन्यतम। घायल कप्तान, जो नाव में पानी के बर्तन के बराबर ही लेटा हुआ था, बड़ी धीमी और शान्त आवाज में बोलता था, किन्तु नाव पर सवार भिन्न प्रकृति के लोगों से अधिक तत्परतापूर्वक आज्ञापालन करने वाले व्यक्तियों का नेतृत्व करने का अवसर उसे कभी नहीं मिल सकता था। सब की सुरक्षा के लिए क्या उत्तम हो सकता था, यह उन्होंने आपस में समझ लिया था। उस समझौते में सचमुच ही विशेषता थी, जो हृदय को छू लेती थी। कप्तान के प्रति इस निष्ठा के अतिरिक्त उनमें इतना भ्रातृत्व था कि संवाददाता जिसे मनुष्य मात्र की आलोचना करना ही सिखाया गया था, जीवन में इसको सर्वोत्तम अनुभव समझ रहा था, परन्तु किसी ने उस सम्बंध में कुछ कहा नहीं, किसी ने भी कुछ प्रकट नहीं किया।

“मैं सोचता हूँ कि हम लोग पाल तान दें।”—कप्तान ने सुझाव पेश किया—
“भेरे ओवरकोट का इस्तेमाल एक चप्पू के छोर पर किया जा सकता है और

तुम में से दो व्यक्ति आराम कर सकते हैं।” अतः रसोइये और संवाददाता ने पाल को तान दिया और ओवरकोट को फैला दिया, ‘आयलर’ स्टीयरिंग चक्के पर बैठा रहा और वह छोटी-सी नाव इस नयी अवस्था में सरलता से आगे बढ़ती रही। कभी-कभी ‘आयलर’ को सतर्कता बरतनी पड़ती थी, जिससे नाव में पानी न भर जाये; फिर भी, यह व्यवस्था काफी सफल रही।

इस बीच प्रकाश-स्तम्भ का आकार और भी बढ़ गया। अब उसका रंग भी दिखायी देने लगा था और वह आकाश पर भूरी छाया के समान लग रहा था।

अंत में लहरों के शिखर को चीरकर उन्हें धरती दिखायी देने लगी। जिस प्रकार प्रकाश-स्तम्भ आकाश पर छाया के समान था, उसी प्रकार यह धरती भी समुद्र पर लम्बी काली छाया-सी लग रही थी। सचमुच ही वह कागज से भी पतली थी। “ऐसा लगता है कि हम न्यू सिमरना की विपरीत दिशा में पहुँच रहे हैं।”—रसोइये ने, जो पहले भी इधर आ चुका था, कहा—“कप्तान, शायद उन्होंने उस जीवन-रक्षक-केन्द्र को एक वर्ष पूर्व त्याग दिया था।”

“सच!”—कप्तान ने कहा।

हवा धीरे-धीरे बंद हो गयी। रसोइये और संवाददाता को चप्पू ऊँचा उठाने में परेशानी नहीं हो रही थी, लेकिन लहरें अभी तक डोंगी से टकरा रही थीं और उस छोटी नाव को अब संघर्ष नहीं करना पड़ रहा था। कभी ‘आयलर’ और कभी संवाददाता चप्पुओं को संभाल लेते थे।

टूटे हुए जहाज किसी काम के नहीं रहते। यदि आदमी अम्यस्त हो सकता और दुर्दशा होने से पूर्व ही संभल सकता, तो डूबने की घटनाएँ कम ही होतीं। डोंगी में सवार चारों व्यक्तियों में से कोई भी इतना न सो पाया था कि यह कहा जा सके कि उसने सो लिया था और पिछली दो रातें तथा दो दिन डोंगी पर ही कट गये थे। इस बात की उत्सुकता में कि शायद कोई खोज करने वाला जहाज उधर आ निकले, वे भोजन करना तक भूल गये थे।

इन कारणों से या फिर अन्य कारणों से, न तो ‘आयलर’ को ही और न संवाददाता को ही इस समय नाव खेने में आनंद आ रहा था। संवाददाता मन-ही-मन सोच रहा था कि स्वास्थ्य के नाम पर लोग नाव खेना आनंदप्रद क्यों समझते हैं। यह तो एक पैशाचिक दंड है और कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति उसके अलावा और कुछ निर्णय नहीं दे सकता कि यह मांसपेशियों के लिए भयंकर भय और पीठ के लिए गुस्तर अपराध है। उसने अपने इस आनंद की बात अन्य लोगों को भी बतायी। सुनकर ‘आयलर’ ने सहानुभूति के रूप में मुस-

करा दिया। उसके चेहरे से थकान का आभास हो रहा था और जहाज़ डूबने से पहले वह जहाज़ के इंजन कक्ष में लगातार चौबीस घंटे काम करता रहा था।

“दोस्तो, आराम के साथ नाव को चलाओ।”—कप्तान ने कहा—“अपनी सारी शक्ति मत लगा दो। यदि हमको तैरना पड़ गया, तो शक्ति की पूरी आवश्यकता पड़ेगी। बारी-बारी से चलाते चलो।” समुद्र से धीरे-धीरे धरती उभर रही थी। अब काली रेखा के स्थान पर काली सफेद रेखा हो गयी थी, जो वृक्षों और बालू के सम्मिलित रूप जैसी थी। अंत में कप्तान ने कहा कि अब मैं किनारे पर एक मकान देख सकता हूँ। “वह विश्राम-गृह ही होगा,” रसोइये ने कहा—“वे लोग शीघ्र ही हम को देख लेंगे और खोजने के लिए चल पड़ेंगे।”

दूर का प्रकाश-स्तम्भ भी बड़ा दीखने लगा था। “रखवाला यदि दूरबीन से देख रहा होगा, तो जल्दी ही उसकी दृष्टि हम लोगों पर पड़ जायेगी,” कप्तान ने कहा—“वह जीवन-रक्षक दल को सूचना दे देगा।”

“दूसरी नावों में से शायद कोई भी इस जहाज़ के डूबने की सूचना देने के लिए किनारे तक नहीं पहुँच सकी”—‘आयलर’ ने धीमे से कहा—“अन्यथा जीवन-रक्षक नाव हमें खोजने आ पहुँची होती।”

धीरे-धीरे सुन्दरता के साथ धरती स्पष्ट होती जा रही थी। हवा दुबारा बहने लगी थी। वह उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पूर्व को मुड़ रही थी और तब नाव में सवार लोगों को एक नया स्वर सुनायी दिया। वह किनारे पर गरजती हुई लहरों का स्वर था। “अब हम प्रकाश-स्तम्भ तक कभी न पहुँच सकेंगे”—कप्तान ने कहा—“नाव का मुँह थोड़ा उत्तर की ओर मोड़ दो, बिली।”

“थोड़ा उत्तर की ओर श्रीमान्!”—‘आयलर’ ने कहा। तत्पश्चात् उस छोटी नाव की दिशा हवा के साथ एक बार फिर बदल दी गयी। अब केवल चप्पू चलानेवालों को छोड़कर अन्य लोग बढ़ते हुए किनारे को देख रहे थे। इसके प्रभाव के अन्तर्गत उन लोगों के मस्तिष्क में शंका और भय ने स्थान ग्रहण कर लिया था। नाव की व्यवस्था अभी तक सुन्दर थी और उन लोगों के हृदय में मौन आह्लाद की मात्रा कम न हुई थी। शायद एक घंटे के बाद वे लोग किनारे पर हों !

उनकी रीढ़ की हड्डियाँ नाव का संतुलन कायम रखने की अभ्यस्त हो गयी थीं और वे अब सरकस के आदमियों की तरह नाव रूपी घोड़े को चला रहे थे। संवाददाता ने मन में सोचा कि उसकी पूरी त्वचा भीगी हुई है और तभी

उसे याद हो आया कि उसके कोट की ऊपरी जेब में आठ सिगार हैं। उनमें से चार समुद्री पानी से भीग गये थे, लेकिन बाकी चार ठीक दशा में थे। काफी खोज-बीन के बाद उन में से एक व्यक्ति ने तीन सूखी सलाइयाँ पेश कर दीं और तब वे चारों लावारिस लोग अपनी नाव में मजे के साथ सफर करने लगे। उनकी सिगारों से धुआँ उठ रहा था, उनकी आँखों में जीवन प्राप्त करने की चमक थी। यद्यपि उनके शरीर क्लान्त थे, परन्तु विवेक साथ था; और तब प्रत्येक ने थोड़ा-थोड़ा पानी पिया।

- ४ -

“रसोइये !”—कप्तान ने अचानक कहा—“तुम्हारे विश्राम-गृह में तो जीवन के लक्षण ही नहीं दिखायी देते।”

“नहीं।”—रसोइये ने उत्तर दिया—“आश्चर्य है कि वह हमको नहीं देख पा रहे हैं।”

उन लोगों की आँखों के सामने नीचे किनारे का चौड़ा फैलाव था। वह बालू की छोटी-छोटी पहाड़ियों जैसा था, जिन पर हरियाली छायी हुई हो। लहरों में अधिक गर्जना थी और कभी-कभी लहर के छोर की सफेदी भी उन्हें दिखायी दे जाती थी। एक छोटा मकान, आकाश पर काले धब्बे-सा लग रहा था। दक्षिण की ओर छोटे प्रकाश-स्तम्भ की लम्बाई तनिक बढ़ गयी थी।

लहरें और हवा डोंगी को उत्तर की ओर ठेल रही थीं। “आश्चर्य है कि वे हमको नहीं देख रहे हैं !”—उन्होंने कहा।

यहाँ लहरों का गर्जन धीमा हो गया था, परन्तु उनकी शक्ति और भयानकता पूर्ववत् ही थी। जब नाव पानी के बड़े-बड़े गोलों पर बह रही थी, तब वे लोग बैठे हुए उसकी गर्जना को सुन रहे थे। “हम लोग अवश्य ही बह जायेंगे।”—उनमें से प्रत्येक ने कहा।

यह कहना उचित ही है कि बीस मील तक किसी भी दिशा में वहाँ कोई जीवन-रक्षक-केन्द्र न था, लेकिन उन आदमियों को यह बात मालूम न थी और इसीलिए उन्होंने राष्ट्र के जीवन-रक्षकों की कड़ी आलोचना कर डाली। नाव में बैठे चारों लावारिस आदमियों ने भद्दी बात कहने में भी सीमा तोड़ दी।

“आश्चर्य है कि वे हमको देख नहीं रहे हैं !” कुछ समय पूर्व जो हृदय का हल-कापन अनुभव हो रहा था, वह तिरोहित हो गया। उनके तीक्ष्ण मस्तिष्कों के लिए

अक्षमता, अन्धेपन, और कायरता के सभी प्रकार के चित्र बनाना सरल था। सामने ही घनी आबादी वाला तट था और यह उनके लिए कड़वे अनुभव की बात थी कि वहाँ से कोई भी संकेत नहीं मिल रहा था।

“अच्छा,”—कप्तान ने निर्णयात्मक ढंग से कहा—“मैं समझता हूँ कि अब हमको स्वयं ही प्रयत्न करके देखना पड़ेगा। यदि हम यहाँ अधिक समय तक रुके रहे, तो हम में से किसी में भी तैरने-योग्य शक्ति शेष न रह जायेगी। हाँ, यदि नाव उलट गयी ?”

और तब ‘आयलर’ ने, जो चप्पुओं को चला रहा था, नाव को किनारे की ओर मोड़ दिया। तभी उसने अपनी मांसपेशियों में तनाव अनुभव किया, जिसने उन्हें कुछ सोचने को विवश कर दिया।

“यदि हम लोग किनारे तक न पहुँच सके,”—कप्तान ने कहा—“तो मेरे विचार से तुम लोग जानते हो कि मेरे अंत का समाचार कहाँ भेजा जायेगा ?”

तत्पश्चात् उन्होंने अपने-अपने पते बदल लिये और आवश्यक चेतावनी भी दे दी। आदमियों के विचारों के प्रति उनके हृदयों में अत्यधिक रोष था। सम्भवतया उसे इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है—“यदि मैं डूबने जा रहा हूँ, यदि मैं डूबने जा रहा हूँ, यदि मैं डूबने जा रहा हूँ, तो समुद्र पर शासन करने वाले सातो पागल देवताओं की कसम, मुझे इस तरह यहाँ वृक्ष और बालू निरखने के लिए क्यों आने दिया गया ? क्या मुझे केवल इसीलिए यहाँ लाया गया कि मेरी नाक को उस समय दूर हटा दिया जायेगा, जब कि मैं जीवन रूपी पवित्र पनीर को चखने जा रहा होऊँगा। यह अन्याय है। अगर यह बूढ़ी औरत, किस्मत, इससे उत्तम कुछ नहीं कर सकती, तो उसके हाथों से मनुष्यों के भाग्य की व्यवस्था छीन लेनी चाहिए। इस बुढ़िया को भला आता ही क्या है ? और यदि उसने मुझे डुबो देने का निश्चय ही कर लिया है, तो पहले ही क्यों न ऐसा कर दिया ? इस दुःख के लिए जीवित क्यों रखा ? सब कुछ बकवास है ; लेकिन नहीं। वह मुझे डुबो नहीं सकती। उसका अभिप्राय यह हो ही नहीं सकता। कम-से-कम इस सारी मुसीबत के बाद ऐसा नहीं हो सकता। इसके बाद आदमी मुट्ठी बाँध कर आकाश की ओर हाथ हिला कर कह सकता है, तुम मुझे डुबो कर देखो और सुनो कि तब मैं तुम्हें क्या कह कर पुकारता हूँ ?”

इस समय जो लहरें उठ रही थीं, बड़ी भयंकर थीं। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उस छोटी नाव को वे चकनाचूर कर देंगी और उसके ऊपर से निकल

जायेंगी। उनकी तेज गर्जना स्पष्ट सुनायी दे रही थी। जिसको समुद्री अनुभव नहीं है, वह सोच भी नहीं सकता कि समय रहते नाव इन लहरों के होते हुए भी चढ़ाव की ओर बहती जायेगी; परन्तु किनारा अब भी दूर था। 'आयलर' बड़ा जीवट वाला था। "दोस्तो!"—उसने तेजी से कहा—"अगले तीन मिनटों में सब कुछ समाप्त हो जायेगा। तैरने के लिए दूरी भी कम नहीं है।" और फिर उसने कप्तान से पूछा—"कप्तान! क्या नाव को फिर से समुद्र के बीच ले चलूं?"

"हाँ, बड़े चलो।"—कप्तान ने कहा।

'आयलर' ने सावधानी के साथ चप्पू चलाते हुए नाव को लहर के बीच में कर लिया और उसे समुद्र की ओर ले चला।

जिस समय नाव गहरे पानी की ओर जा रही थी, थोड़ी शांति छा गयी थी। तभी नाव में से विषादपूर्ण स्वर सुनायी दिया—"शायद अब किनारे पर से उन्होंने किसी प्रकार अवश्य हमें देख लिया होगा।"

चिड़ियाँ हवा के साथ सीधी उड़ान भरती हुई भूरे और सुनसान पूर्व की ओर चली गयीं। डोंगी पर से दक्षिण-पूर्व की ओर थोड़ा कोलाहल और इमारतों में से उठता हुआ धुआँ देखा गया।

"तुम्हारा इन जीवन-रक्षक लोगों के बारे में क्या विचार है? क्या वे सुयोग्य नहीं हैं।"

"आश्चर्य है कि उन्होंने हमको नहीं देखा।"

"हो सकता है कि वे समझ रहे हों कि हम लोग सैर के लिए आये हैं। शायद वे सोच रहे हों कि हम मछलियों का शिकार कर रहे हैं। हो सकता है कि वे लोग हम को मूर्ख समझ रहे हों।"

दोपहर हो चुकी थी। एक लहर ने उन्हें दक्षिण की ओर ठेल दिया, परन्तु हवा और अन्य लहरों ने उन्हें उत्तर की ओर ही रखा। दूर पर, जहाँ आकाश और समुद्र कोण बना रहे थे, एक नगर के स्थित होने का आभास हो रहा था।

"सेंट आंगस्टिन?"

कप्तान ने अपना सिर हिला दिया। "मासक्विटो इनलेट काफी पास है।"

और तब 'आयलर' ने नाव का चप्पू थाम लिया और फिर संवाददाता ने। बाद में आयलर ने चप्पू चलाया। यह थका देने वाला काम था। किसी सैन्य दल के समस्त व्यक्तियों के दर्द और पीड़ा को मिलाकर भी इतना दर्द नहीं हो सकता था, जितना दर्द कि उनकी पीठ में हो रहा था। यद्यपि पीठ सीमित

क्षेत्र है, परन्तु यह अनगिनती ऐंठनों, गाठों तथा मांसपेशियों से सम्बन्धित व्याघातों का रंगमंच भी हो सकता है।

“बिली, क्या तुम्हें नाव खेना पसंद है ?”—संवाददाता ने पूछा।

“नहीं,”—‘आयलर’ ने कहा—“भाड़ में जाये ऐसा काम !”

जब एक व्यक्ति नाव खेने के स्थान से, उसके मध्य में जाता था तब उसका सारा शरीर क्लान्त होता था। समुद्र का ठंडा पानी नाव में इधर-उधर बहता था, लेकिन वह वहीं लेट जाता था। उसका सिर नाव की किनारी को ही तकिया बना लेता था, जो कि लहरों के शिखर से केवल एक इंच इधर ही रह जाती थी। कभी-कभी समुद्र का पानी अन्दर आ जाता था और उसे पूरा भिगो जाता था, परन्तु इससे उसे क्रोध न आता था, क्योंकि यह तय था कि यदि नाव डूब जाती, तो वह भी समुद्र में आराम कर रहा होता, ठीक इस तरह जैसे कि मुलायम गलीचे पर लेटा हो।

“वह देखो। एक आदमी किनारे पर खड़ा है !”

“कहाँ ?”

“वहाँ। देखा ? देखा ?”

“हाँ, सचमुच। वह इधर-उधर टहल रहा है।”

“अब वह रुक गया है, देखो, वह हम को देख रहा है।”

“वह हमारी ओर संकेत कर रहा है।”

“अरे हैं, भगवान-कसम !”

“ओह, अब सब ठीक हो गया। सब ठीक हो गया। आधे घंटे के अंदर ही नाव हम को लेने आ पहुँचेगी।”

“वह जा रहा है, वह दौड़ रहा है। वह उस मकान में जा रहा है।”

दूरस्थ किनारा, समुद्र से नीचा लग रहा था और उस काली आकृति को देखने में बड़ा प्रयत्न करना पड़ रहा था। कप्तान की दृष्टि तभी एक बहती हुई लकड़ी पर जा पड़ी और उन्होंने नाव को उधर ले जाकर उसे उठा लिया। संयोग से नाव में एक तौलिया भी था, अतः कप्तान ने तौलिये को लकड़ी पर बाँध कर हवा में हिलाया। चप्पू चलाने वाले को उधर देखने का साहस न हो रहा था। इसलिए उसने प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिये।

“अब वह क्या कर रहा है ?”

“वह पुनः चुपचाप खड़ा है। मैं समझता हूँ कि वह देख रहा है। अब वह मकान की ओर दुबारा जा रहा है। अब वह फिर रुक गया है।”

“क्या वह हमारी ओर संकेत कर रहा है ?”

“नहीं अब नहीं, पहले। यदि.....।”

“देखो। एक और आदमी आ गया है। वह दौड़ रहा है।”

“कह जाता हुआ दिखायी दे रहा है। तुम देखोगे ?”

“अरे, वह तो साइकिल पर सवार है। अब वह दूसरे आदमी से जा मिला है। वे दोनों ही हमारी ओर संकेत कर रहे हैं। देखो।”

“अब तट पर कोई वस्तु उभर रही है।”

“वह वस्तु क्या है ?”

“शायद नाव लगती है।”

“शायद नाव ही है।”

“नहीं, उसमें तो पहिये लगे हैं।”

“हाँ, ऐसा ही है,। अच्छा तो फिर जीवन-रक्षक नाव होगी और वह लोग गाड़ी में खींचकर लाये होंगे।”

“वह जीवन-रक्षक नाव ही है, सच।”

“नहीं भगवान-कसम, वह... वह तो मोटर गाड़ी है।”

“मैं तुम से कहता हूँ कि जीवन-रक्षक नाव है।”

“नहीं, वह तो मोटर-गाड़ी है। मुझे साफ-साफ दिखायी दे रही है। देखो किसी होटल की मोटर-गाड़ी है।”

“सचमुच, तुम ठीक कहते हो। वह मोटर-गाड़ी ही है। बिलकुल किस्मत की तरह सत्य, लेकिन तुम्हारे विचार में वे लोग मोटर-गाड़ी के साथ क्या कर रहे हैं ? हो सकता है कि दल को इकट्ठा कर रहे हों, हाँ।”

“यह भी सम्भव है। देखो। एक व्यक्ति काला झंडा हिला रहा है। वह मोटर-गाड़ी की सीढ़ियों पर खड़ा है। वह देखो, दो व्यक्ति और आ गये। अब वे लोग आपस में बातें कर रहे हैं। उस झंडेवाले को देखो, शायद अब वह उसे नहीं हिला रहा।”

“वह झंडा नहीं दीखता। क्या वह झंडा है ? वह उसका कोट है। हाँ, सचमुच ही वह उसका कोट है।”

“हाँ, वह कोट ही है। उसने उसे उतार लिया है और सिर के चारों ओर घुमा रहा है, लेकिन क्या तुम उसे हिलाते हुए देखना चाहोगे ?”

“तब यों कहो कि वहाँ कोई जीवन-रक्षक केन्द्र नहीं है। वह कोई होटल की मोटर-गाड़ी है, जो कुछ किरायेदारों को हमें डूबता हुआ दिखाने के लिए

ले आयी है।”

“लेकिन उस कोटवाले गधे का क्या मतलब है ? वह संकेत किस बात का कर रहा है ?”

“ऐसा लगता है कि वह लोग हम से उत्तर की ओर जाने के लिए कह रहे थे। वहाँ कोई जीवन-रक्षक केन्द्र अवश्य होगा।”

“नहीं, वह समझ रहा है कि हम मछलियों का शिकार कर रहे हैं। बस यों ही खुशी जाहिर कर रहा है। देखो उधर देखो, बिली।”

“काश। मैं उन संकेतों का कोई अर्थ निकाल सकता। तुम्हारे विचार में उसका क्या मतलब हो सकता है ?”

“उसका कोई मतलब नहीं है। वह तो बस मखौल कर रहा है।”

“लेकिन यदि उसने फिर से प्रयत्न करने का संकेत किया हो या फिर समुद्र की ओर जाकर इंतजार करने या उत्तर की ओर जाने या दक्षिण की ओर जाने या नर्क में जाने का संकेत किया हो। उसका कुछ तो कारण होना ही चाहिए। जरा उसको देखो तो। वह खड़ा-खड़ा कोट को पहिये की भाँति घुमा रहा है। गधा कहीं का!”

“कुछ और भी आदमी आ रहे हैं।”

“अब तो खासी भीड़ जमा हो गयी है। क्या वह नाव नहीं है ?”

“किधर ? ओह, मैं समझा। नहीं, वह नाव नहीं है।”

“वह व्यक्ति अभी तक कोट हिला रहा है।”

“वह समझ रहा होगा कि हमें वह पसंद है। वह बंद क्यों नहीं कर देता ? उसका मतलब भी कुछ नहीं है।”

“मैं नहीं जानता। मैं सोचता हूँ कि वह हम लोगों से उत्तर की ओर जाने के लिए कह रहा है। हो सकता है कि वहाँ कहीं जीवन-रक्षक केन्द्र हो।”

“अभी तक वह थका नहीं है। हिला ही रहा है।”

“आश्चर्य है। कब तक वह ऐसा कर सकता है। जब से उसने इधर दृष्टि की है, बराबर उसे घुमा रहा है। वह पागल है। एक नाव को निकालने के लिए उन्हें आदमी क्यों नहीं मिल रहे ? मछली का शिकार करनेवाली नाव या लड़ाई लड़नेवाली नाव, यहाँ तक आसानी से आ सकती है। वह कुछ करता क्यों नहीं ?”

“ओह! अब सब ठीक हो गया।”

“अब वे लोग जल्दी ही इधर नाव भेज देंगे। उन्होंने हमें देख लिया है।”

आकाश पर कुछ पीलापन छा गया था। समुद्र में पड़ते हुए प्रतिबिम्ब गहरे हो गये थे। हवा में नमी आ गयी थी और वे लोग कौपने लगे थे।

“हमारी समाधि बन जायेगी”— एक ने कहा— उसकी आवाज में गहन निराशा का पुट था—“यदि हम इसी प्रकार भटकते रहे, तो।”

“हम रात भर यहाँ नहीं भटकेंगे। तुम चिंता न करो। उन्होंने हमें देख लिया है और खोजते हुए आने में अब देर नहीं लगेगी।”

किनारे पर कुछ धूल छा गयी और जो व्यक्ति कोट को हिला रहा था, वह उसमें छिप गया और धीरे-धीरे मोटर गाड़ी और अन्य सभी आदमी भी उसमें अदृश्य हो गये। और जब पानी की बौछार पड़ी, तब नाव में सवार लोग थर-थर कांप उठे।

“मैं उस मूर्ख को पकड़ना चाहता हूँ, जो कोट को हिला रहा था। मैं उसको पीटना चाहता हूँ, बस यों ही।”

“क्यों? उसने क्या किया है?”

“कुछ भी नहीं। वह बड़ा खुश दिखायी दे रहा था।”

इस बीच ‘आयलर’ ने चप्पू चलाया, फिर संवाददाता ने और फिर ‘आयलर’ ने। कलांत मुख और झुके हुए शरीर के साथ ठीक एक यंत्र की तरह बारी-बारी से वे लोग लकड़ी के चप्पुओं को चला रहे थे। दक्षिणी क्षितिज पर प्रकाश-स्तम्भ की छाया लुप्त हो गयी थी। और तब एक पीला सितारा उग आया, समुद्र से तनिक ऊपर। पश्चिमी आकाश की लालिमा अंधकार में मिल गयी थी और पूर्व का समुद्र काला लगने लगा था। धरती भी दिखायी न दे रही थी और केवल लहरों की मंद-मंद टकराहट का ही आभास मिल रहा था।

“यदि मैं डूबने जा रहा हूँ, यदि मैं डूबने जा रहा हूँ, यदि मैं डूबने जा रहा हूँ, तो समुद्र पर शासन करने वाले सातों देवताओं की कसम मुझे को इस तरह वृक्ष और बालू निरखने के लिए आने ही क्यों दिया गया था? क्या मुझे केवल इसलिए यहाँ लाया गया था कि मेरी नाक उस समय दूर हटा दी जायेगी जब कि मैं जीवनरूपी पवित्र पनीर को चखने जा रहा होऊँगा।”

बीमार कप्तान पानी के बर्तन पर थोड़ा झुक गया। वह कभी-कभी चप्पू चलानेवालों से बातें भी करता जाता था।

“उसका मुँह ऊपर रखो, उसका मुँह ऊपर रखो।”

“उसका मुँह ऊपर रखूँ, श्रीमान्?” आवाज बड़ी धीमी और थकी हुई थी।

वह शाम बड़ी शांत थी। चप्पू चलानेवाले को छोड़कर बाकी सब नाव

के तल में थके और भारी मन से लेटे थे। उनकी आँखें अपनी ओर धीरे-धीरे उमड़ती हुई लहरों को देखने में समर्थ थीं, जिनके शिखरों से कभी-कभी गर्जना का स्वर उठ रहा था।

रसोइये का सिर, नाव की किनारी पर था और वह बेमन से अपनी नाक के नीचे बहते हुए पानी को देख रहा था। उस समय वह और ही विचारों में डूबा हुआ था। अंत में वह बोला— “बिली” ! बिलकुल इस तरह जैसे स्वप्न में बोल रहा हो— “तुम्हें किस प्रकार की कचौड़ी सबसे अधिक पसंद है ?”

“कचौड़ी ?”— ‘आयलर’ और संवाददाता ने व्याकुलता के साथ कहा।

“उन चीजों के बारे में चर्चा मत करो, मूर्ख कहीं के !”

“अच्छा !”—रसोइये ने कहा— “मैं तो अभी सूअर के मांस की सैंडविच के बारे में सोच रहा था, और... ”

समुद्र में खुली नाव पर बैठकर रात बड़ी लम्बी लगती है। जब पूर्ण रूप से अन्धकार व्याप्त हो गया, तब दक्षिण की ओर से समुद्र में से उभरती हुई रोशनी का रंग पूर्णरूपेण सुनहला हो गया। उत्तरी क्षितिज पर पानी के छोर पर मंद प्रभा का उदय हुआ। ये दोनों रोशनियाँ संसार की शोभा थीं, अन्यथा लहरों के अतिरिक्त वहाँ और कुछ न था।

दो आदमी नाव के पिछले भाग में जमे हुए थे और उनके बीच का फासला इतना कम था कि नाव को चलानेवाला व्यक्ति अपनी टांगों को अपने साथियों के बीच में फैला कर कुछ-कुछ गरम रख सकता था। वास्तव में उनकी टांगें चप्पू चलानेवाले व्यक्ति की सीट के नीचे तक फैली हुई थीं और कप्तान के पैरों को छू रही थीं। प्रयत्न करने के उपरान्त भी लहरें आ-आ कर चप्पू चलाने वाले व्यक्ति को भिगो जाती थीं। लहरें बर्फ की तरह ठंडी थीं और वह कांप-कांप जाता था। सभी लोगों के शरीर अकड़ जाते और पीड़ा होने लगती। फिर भी, जब कि नाव में पानी भर रहा था, वे लोग खरटि भरने लगते।

‘आयलर’ और संवाददाता ने योजना बनायी कि जब तक एक आदमी पूरी तरह थक न जाय, नाव को खेता रहे और तब दूसरा नाव की पानी भरी जगह से उठकर उसका स्थान ग्रहण कर ले।

‘आयलर’ तब तक चप्पू चलाता रहा, जब तक उसका सिर बिलकुल ही आगे को न झुक गया और नींद उस पर पूरी तरह हावी न हो गयी, लेकिन बाद में भी उसने नाव को चलाया। तब उसने नाव के तल में लेटे हुए एक व्यक्ति को छूते हुए कहा— “तुम थोड़ी देर के लिए मुझे आराम करने दोगे ?” उसके

स्वर में नम्रता का आभास था।

“क्यों नहीं, बिली!”—संवाददाता ने कहा और अपने-आप को बैठने के लिए सचेत करने लगा। उन्होंने सतर्कता के साथ अपने स्थान बदल लिये और ‘आयलर’ रसोइये के पास ही पानी में गिरकर तुरंत सो गया।

समुद्र का उपद्रव अब लगभग शांत हो गया था। लहरों में भी तीव्रता न रही थी। चप्पू चलानेवाले को केवल इस बात का ध्यान रखना था कि पानी का उठान नाव को अपने आप में छुपा न ले और उसमें पानी न भर जाय। काली लहरें शांत थीं और अंधकार में उनका देखना कठिन था। चप्पू चलानेवाले के संभलने से पूर्व ही कोई न कोई लहर नाव तक आ पहुँचती थी।

धीमे स्वर में संवाददाता ने कप्तान को सम्बोधित करते हुए कहा—यद्यपि वह लौह पुरुष प्रतिक्षण जागृत रहता था, फिर भी उसे विश्वास न था कि वह जाग रहा होगा—“कप्तान, क्या उत्तर के उस प्रकाश की ओर चलता रहूँ?”

उसे उसी प्रकार संयत स्वर में उत्तर मिला—“हाँ, थोड़ा-सा हट कर ही चलते रहो।”

रसोइये ने अपने चारों ओर ‘लाइफ बैल्ट’ को कस लिया था, जिससे उसे गरमाहट मिलती रहे। जिस समय उसने स्थान बदला था, उसके दाँत बुरी तरह बज रहे थे और अब वह नींद में गाफिल हो गया था।

संवाददाता ने चप्पू चलाने में पैरों के पास सोये हुए दोनों आदमियों की ओर देखा। रसोइये की बाँह ‘आयलर’ की गरदन में पड़ी हुई थी और वे अपने अपूर्ण वस्त्रों तथा थके चेहरों से समुद्र के बीच छोड़ दिये गये बालकों की भाँति लग रहे थे, ठीक इस तरह जैसे कि जंगल में दोनों बालकों को छोड़ दिया गया था।

और बाद में वह थोड़ा गड़बड़ा गया होगा, क्योंकि तभी पानी में जोर का ज्वार उठा और एक लहर गरजती हुई आयी और नाव में पानी भर गया और आश्चर्य की बात यह हुई कि रसोइया अपनी ‘लाइफ बैल्ट’ के साथ बह नहीं गया। रसोइया रोता ही रहा, लेकिन ‘आयलर’ उठकर बैठ गया। वह अपनी आँखें मल रहा था और ठंड के मारे उसके हाथ काँप रहे थे।

“मुझे सचमुच बड़ा दुःख है, बिली!”—संवाददाता ने पश्चात्ताप के स्वर में कहा।

“ठीक है, मेरे भाई!”—‘आयलर’ ने कहा और पुनः सो गया।

उस समय कदाचित् कप्तान भी झपकी ले रहा था और संवाददाता अपने मन में सोचने लगा कि शायद वही अकेला व्यक्ति विशाल सागर के वक्ष पर

तैर रहा था। हवा भी आवाज कर रही थी और वह मृत्यु के क्षणों से भी अधिक वेदनायुक्त थी।

लहरें नाव से टकरा रही थीं और पानी पर फास्फोरस की तरह की नीली रोशनी उभर रही थी। वह शायद किसी खूंखार चाकू द्वारा बनी होगी। और तब नीरवता व्याप्त हो गयी। संवाददाता ने जम्भाई ली और समुद्र की ओर ताका।

और तभी यकायक वहाँ दुबारा नीली रोशनी उभरी और अब वह नाव के समीप थी और चप्पू की सहायता से वह ऊपर भी पहुँच सकती थी। संवाददाता ने पानी में तेज चलती हुई छाया को देखा, जिसके चलने से पानी में उछाल पैदा हो रही थी और पीछे धार-सी बनती जा रही थी।

संवाददाता ने मुड़कर कप्तान की ओर देखा। उसका चेहरा ढका हुआ था और वह सोया हुआ प्रतीत हो रहा था। उसने फिर उन लोगों को देखा, जो समुद्र में लावारिस बालकों की भाँति छोड़ दिये गये थे। वे भी सोये हुए थे। इसलिए थोड़ी सहानुभूति दिखाते हुए वह एक ओर को सरक गया और समुद्र पर आँखे गड़ा दीं।

लेकिन वह वस्तु अभी तक नाव के आसपास ही थी। आगे या पीछे, इस ओर या उस तरफ, थोड़ी-थोड़ी देर ठहर कर उसकी चमक दिखायी दे रही थी और उसके गहरे पंखों की आवाज भी सुनायी दे रही थी। उसकी गति और शक्ति सचमुच ही सराहना-योग्य थी, वह पानी को किसी भीषण और तेज वस्तु की तरह काट रही थी।

इस वस्तु की उपस्थिति से उसको इतना अधिक भय अनुभव न हुआ जितना कि सैर करनेवाले को हो सकता था। उसने उपेक्षा से समुद्र की ओर देखा और उसके मुँह से हल्की-सी आवाज निकल गयी।

इतना तय है कि उस समय वह उस वस्तु के साथ अकेला नहीं रहना चाहता था। उसने चाहा कि उसका कोई साथी जाग जाय और उसका साथ दे, परन्तु कप्तान पानी के बर्तन के पास पड़ा हुआ था, बिलकुल निश्चेष्ट और 'आयलर' तथा रसोइया नाव के तल में गहरी नींद में पड़े हुए थे।

तो समुद्र पर शासन करनेवाले सातो देवताओं की कसम, मुझे इस तरह वृक्षों और बालू को निरखने के लिए आने ही क्यों दिया गया ?”

इस विषादपूर्ण रात में, इतना कहा जा सकता है कि, एक आदमी यही निष्कर्ष निकालेगा कि सातों पागल देवताओं का अभिप्राय सचमुच ही उसे डुबो देने का था, इसके उपरांत भी कि वह अन्यायपूर्ण बात थी क्योंकि उस आदमी को डुबो देना वास्तव में ही अन्यायपूर्ण बात थी, जिसने इतना परिश्रम किया था, असीम परिश्रम । उसने अनुभव किया कि वह एक महान अपराध होगा और अप्राकृतिक भी । वैसे प्राचीन काल से लोग समुद्र में डूबते चले आ रहे थे, लेकिन अभी तक ...

जब मनुष्य को यह पता चलता है कि प्रकृति उसको महत्व नहीं देती और ऐसा अनुभव करती है कि उसके संसार से उठ जाने से कोई विशेष बात न होगी, तब वह सर्वप्रथम मन्दिर पर ईंटें फेंकने की इच्छा करता है और वह इस तथ्य से घृणा करता है कि न ईंटें हैं और न मन्दिर है । फिर वह किसी भी दृश्य वस्तु का उपहास करने से नहीं चूकता ।

और यदि अवहेलना के लिए कोई वस्तु न हुई, तो वह बनावट द्वारा सामना करने की इच्छा अनुभव करता है और तर्क में फँस जाता है और फिर घुटने टेक कर प्रार्थना करता है और कहता है—“हाँ, लेकिन मुझे स्वयं से प्यार है ।”

शरद की रात में ऊँचाई पर उगा सितारा देख कर वह महसूस करता है कि वह रात द्वारा उससे कहा हुआ एक शब्द है और तब वह अपनी परिस्थिति की दयनीयता को समझता है ।

डोंगी में बैठे हुए आदमियों ने इन बातों पर चर्चा न की थी, परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि उनमें से प्रत्येक ने शांति के साथ अपने-अपने मतानुसार विचार कर लिया था । उनके चेहरों पर शायद ही कोई चिह्न प्रकट हो रहा हो, सिवाय इसके कि वे बेहद थक चुके थे । केवल नाव से सम्बंधित विषय पर ही उन्होंने बातें की थी ।

अपनी भावनाओं से सम्बंधित एक कविता संवाददाता को अचानक ही याद हो आयी । वह तो वैसे यह भी भूल गया था कि वह उस कविता को भूल गया है, किन्तु यकायक ही वह उसके मस्तिष्क में उभर आयी ।

एलजियर्स में ‘लीजियन’ का एक सैनिक मृत्यु-शय्या पर पड़ा है, वहाँ किसी नारी की सेवा का अभाव था और किसी नारी के आंसुओं का अकाल था; लेकिन उसके पास उसका एक साथी खड़ा था और उसने उस साथी का हाथ अपने हाथ में ले लिया ।

और उसने कहा—“अब मैं अपना देश कभी न देख सकूंगा।”

अपने बचपन में संवाददाता ने सुना था कि एलजियर्स में ‘लीजियन’ का एक सैनिक मृत्यु शैथ्या पर पड़ा था, लेकिन उसने उसकी ओर कभी ध्यान नहीं दिया था। उसके हजारों साथियों ने उस सैनिक की दशा के बारे में बताया था, परन्तु उसने कोई चिंता न की थी। उसके लिए वह पेंसिल की नोंक टूटने जैसी बात थी।

लेकिन अब वह उसकी आँखों में मनुष्य के रूप में उभर आया था। अब वह कवि का खींचा हुआ चित्र मात्र न था।

संवाददाता को वह सैनिक स्पष्ट दिखायी दे रहा था। बालू पर उसके पैर फँसे हुए थे और वह शांत था। उसका पीला बाँया हाथ छाती पर इस तरह रखा था, जैसे प्राणों को रोकने का प्रयास कर रहा हो। उसकी उंगलियों में खून उतर आया था। साथ ही आकाश में अल्जीरिया की दूरी का—सा एक नगर भी, जो कि सूरज के छिप जाने पर धुंधला—सा था, उभर आया था। संवाददाता के मन में उस सैनिक के लिए दुःख उत्पन्न हो गया।

जो वस्तु नाव का पीछा और इंतजार कर रही थी, शायद देरी होने पर थक गयी। अब पानी को काटने या छपाके का स्वर सुनायी न दे रहा था और न पूँछ की लपट ही दिखायी दे रही थी। उत्तर दिशा की रोशनी अभी भी टिमटिमा रही थी और नाव के पास तो वह थी ही नहीं। कभी-कभी लहर की गर्जना संवाददाता के कानों में पड़ जाती थी और वह तब नाव का रुख समुद्र की ओर कर देता था और परिश्रम के साथ नाव खेता था। दक्षिण की ओर किसी ने तट पर पुआल जला रखा था। वह बहुत नीचा और बहुत दूर था। हवा तेज हो गयी थी और कभी-कभी पहाड़ी बिल्ली की भँति झपट रही थी। बिखरती हुई लहरों की चमक भी कभी-कभी दिखायी दे जाती थी।

कप्तान ने करवट बदली और सीधा बैठ गया। “बड़ी लम्बी रात है!” —उसने संवाददाता से कहा और किनारे की ओर देखा।

“ये जीवन-रक्षक लोग बड़ा समय लेते हैं।”

“तुमने उस शार्क को चारों ओर घूमते हुए देखा था?”

“हाँ, वह बहुत बड़ी थी।”

“काश, मैं जान पाता कि तुम जगे हुए हो।” तत्पश्चात् संवाददाता ने नाव के तल में आवाज दी—“बिली!” और फिर आवाज स्पष्ट हो गयी—“बिली, क्या तुम मुझे कुछ समय आराम करने दोगे?”

“अवश्य !” ‘आयलर’ ने कहा ।

और जैसे ही संवाददाता ने ठंडे, आरामदायक समुद्री पानी को नाव के तल में छुआ और रसोइये की ‘लाइफ बैल्ट’ के पास लेटा वैसे ही झट से उसे नींद आ गयी और ऐसी दशा में भी, जब कि उसके दाँत बज रहे थे और जब उसकी आँख खुली, तब उसने सुना—“अब तुम अपनी बारी लोगे ?” आवाज में असीमित थकान का पुट था ।

“निश्चय ही, बिली ।”

उत्तर दिशा की रोशनी लुप्त हो गयी थी, लेकिन संवाददाता कप्तान से मार्ग पूछता रहा ।

रात के अन्तिम प्रहर में वे लोग नाव को समुद्र में और आगे ले गये । कप्तान ने रसोइये से एक चप्पू पीछे के भाग में ले जाने को कहा और साथ ही लहरों का मुकाबला भी करते रहने का आदेश दिया और यह भी बता दिया कि यदि वह लहरों की गर्जना सुने, तो पुकार ले । इस योजना ने ‘आयलर’ और संवाददाता को अवकाश का अवसर दे दिया । “हम इन लोगों को दम लेने के लिए अवसर देंगे ।”—कप्तान ने कहा । वे लोग लेट गये और कुछ ही देर की बातचीत के बाद निद्रा के वशीभूत हो गये । उन्होंने यह भी न जाना कि वे रसोइये के नाम किसी दूसरी शार्क या उसी शार्क के साथ की वसीयत कर चले हैं ।

नाव लहरों पर नाच रही थी और कभी-कभी बौछारें नाव में पड़ रही थीं, परन्तु इससे उनकी शांति में खलल न पड़ा । हवा और पानी का प्रभाव उन पर इस प्रकार हो रहा था जिस प्रकार मृतकों पर होता है ।

“मित्रो !”—रसोइये ने कहा—उसकी आवाज में गहरी अनिच्छा का पुट था—“वह बहुत ही निकट बह रही है । मेरा अनुमान है कि तुम में से एक उसे दुबारा समुद्र में ले जाता, तो अच्छा होता ।” संवाददाता उठ बैठा । उसने ऊँची-ऊँची लहरों के टकराने की आवाज सुनी ।

जब वह नाव खे रहा था, तब कप्तान ने उसे थोड़ी पानी मिली व्हिस्की दी, जिसने उसके शरीर की सारी ठंड दूर कर दी । “यदि मैं किसी तरह किनारे तक पहुँच गया और वहाँ कोई व्यक्ति किसी चप्पू का चित्र भी दिखाये तो मैं . .”

अंत में थोड़ी बातचीत हुई ।

“बिली, बिली, अब तुम बारी लोगे ?”

“निश्चय ही ।”—‘आयलर’ ने कहा ।

: ७ :

जब संवाददाता ने दुबारा आँखें खोलीं, तब अरुणोदय हो रहा था और आकाश तथा समुद्र का रंग भूरा था। सुबह अपनी पूरी शान से चमक रही थी। आकाश साफ और नीला था। सूर्य की किरणें लहरों के शिखरों पर नाच रही थीं।

दूर पर बालू के टीलों के पास झोपड़ियाँ काली दिखायी दे रही थीं और एक लम्बी सफेद हवा-चक्की उनसे ऊपर उठी हुई थी। वहाँ तट पर न कोई आदमी दीख रहा था, न कोई कुत्ता और न कोई बाइसिकिल ही। झोपड़ियों से सुनसान स्थान का बोध हो रहा था।

नाव पर सवार लोगों ने तट की सूक्ष्म परीक्षा की। नाव में चर्चा होने लगी। “अच्छा!”—कप्तान ने कहा—“यदि सहायता नहीं आती, तो हम को ही लहरों को चीर कर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। यदि हम यहाँ अधिक देर तक रहे, तो थक कर चूर हो जायेंगे और अपन लिए फिर कुछ भी न कर सकेंगे।” औरों ने चुपचाप सहमति प्रकट कर दी। नाव का मुँह किनारे की ओर कर दिया गया था। संवाददाता को आश्चर्य हो रहा था कि कभी किसी ने हवा-मीनार पर चढ़ने की कोशिश की होगी और तब उन्होंने समुद्र की ओर देखा तक नहीं। यह मीनार दैत्य की तरह खड़ी हुई थी। कुछ सीमा तक उसने संवाददाता को वैयक्तिक संघर्ष के बीच प्रकृति की शांति का आभास दिया क्योंकि हवा में भी प्रकृति होती है और मनुष्य की दृष्टि में भी। उस समय उसे वह क्रूर न दीखी और न दानशील ही, न विश्वासघाती और न बुद्धिमान ही। वह बिलकुल ही भिन्न थी। यह कदाचित् सत्य ही है कि संसार की उदासीनता से प्रभावित इस परिस्थिति में फँसे मनुष्य को अपने जीवन के अनेक पहलुओं को देखना चाहिए। उसके मस्तिष्क में सब-कुछ घूमने लगता है और एक और अवसर की चाह होने लगती है। बुरे और भले का अंतर उसके लिए एकदम स्पष्ट हो जाता है और इस अज्ञान के वशीभूत हो कर वह समझता है कि यदि उसे दूसरा अवसर मिल जाता, तो वह अपने चरित्र में और वाणी में परिवर्तन कर देता और परिचय या चाय पर बैठते समय वह बड़ा ही सम्य और मधुर होता।

“मित्रो!”—कप्तान ने कहा—“अब यह डूबने ही वाली है। हम केवल इतना ही कर सकते हैं कि जितना आगे निकल सकें, निकल जायें और जब यह डूब

जाय, तब किनारे की ओर तैरने का प्रयत्न करें। संतुलन खोने की आवश्यकता नहीं है और जब तक नाव डूब न जाय, कूदना भी नहीं।”

‘आयलर’ ने चप्पुओं को थाम लिया। उसके कंधों से लहरें टकराने लगीं। “कप्तान!”—उसने कहा—“मेरे विचार में तो इसका मुँह समुद्र की ओर मोड़ देना चाहिए और इस तरह अन्दर ले चलना चाहिए।”

“अच्छी बात है, बिली!”—कप्तान ने कहा—“अन्दर ले चलो।” ‘आयलर’ ने नाव को मोड़ा और पिछले भाग में बैठ गया। रसोइया और संवाददाता मुड़कर तट की ओर, जो सुनसान और अजीब लग रहा था, देख रहे थे।

किनारे के पास ही लहरें नाव को ऊपर उठा देती थीं। “हम अधिक समीप न पहुँच सकेंगे।”—कप्तान ने कहा। हर बार जब लहर पर से दृष्टि हटती थी तब किनारे पर जा टिकती थी और उनके इस ध्यान में बड़ी विलक्षणता थी। संवाददाता दूसरों को ध्यानपूर्वक देख रहा था। वह जानता था कि वे डर नहीं रहे थे, लेकिन उनकी दृष्टि का पूरा-पूरा अर्थ अस्पष्ट था।

जहाँ तक उसका प्रश्न था, वह कुछ भी सोचने के लिए बहुत थका हुआ था। उसने कई बार बलपूर्वक सोचना चाहा, परन्तु उसके मस्तिष्क की मांसपेशियाँ तनी हुई थीं और कह रही थीं कि उनको किसी बात की परवाह नहीं है। हाँ, उसको बस इतना अनुभव हो रहा था कि यदि वह डूब गया, तो बड़ी लज्जा की बात होगी।

उन लोगों में किसी तरह की भी चर्चा न हो रही थी। सब की दृष्टि तट पर लगी हुई थी। “अब इतना याद रखना कि जब कूदो, तब संभल कर और नाव से हट कर कूदना।”—कप्तान ने कहा।

एक लहर समुद्र की ओर बड़ी तेजी के साथ गरजती हुई बड़ी और उसका श्वेत फैला हुआ झाग नाव पर पड़ा।

“अब संभलना।”—कप्तान ने कहा। वे लोग चुप थे। उनकी दृष्टि तट से हट कर लहर पर जा टिकी थी और वे लोग इंतजार करने लगे थे। नाव ढाल पर फिसल गयी और शिखर पर डगमगा गयी, उस पर नाचने के बाद लम्बी लहर की पीठ की ओर बह गयी। नाव में कुछ पानी भर गया था, उसे रसोइये ने उलीच दिया।

लेकिन दूसरी लहर भी टकरायी। उसका नाचता, उबलता श्वेत पानी आगे बढ़ा और नाव को उसने लपेट में ले लिया और उसे लम्बवत् घुमा दिया। उसमें चारों ओर से पानी भर गया। संवाददाता ने नाव के ऊपरी भाग को

पकड़ रखा था और जब वहाँ पानी पड़ा, तब उसने अपनी अंगुलियों को इस तरह खींच लिया, जैसे उन्हें भीगने न देना चाहता हो।

छोटी-सी नाव अपने भीतर भर गये पानी के वजन के साथ चक्कर खाती हुई समुद्र में बैठने लगी।

“रसोइये, पानी को उलीच दो ! पानी को उलीच दो !”—कप्तान ने कहा।

“अच्छी बात है, कप्तान !”—रसोइये ने कहा।

“अब मित्रो, अगली बार सचमुच ही हम समाप्त हो जायेंगे।”—‘आयलर’ ने कहा—“नाव से हट कर ही कूदने की कोशिश करना।”

तीसरी लहर आगे बढ़ी। वह बड़ी आकृति की और भयानक थी। उसने नाव को बिल्कुल निगल ही लिया और सभी लोग समुद्र में कूद पड़े। नाव के तल में ‘लाइफबल्ट’ का एक टुकड़ा पड़ा हुआ था और जैसे ही संवाददाता ऊपर उठा, उसने अपने बाँयें हाथ की सहायता से उसे अपनी छाती से सटा लिया।

जनवरी का माह था और पानी बरफ के समान हो रहा था। उसको ऐसा लगने लगा कि वह फ्लोरिडा के तट से भी अधिक ठंडा था। इस समय भी उसके शिथिल मन को यह तथ्य लिख लेने योग्य लगा। पानी का ठंडापन कष्टदायक और करुण था।

जिस समय वह ऊपर आया, उसे शोर करते पानी का स्मरण था। बाद में उसने समुद्र में अपने साथियों को देखा। ‘आयलर’ दौड़ में सब से आगे था। वह पूरी ताकत और तेजी के साथ तैर रहा था। संवाददाता की बायीं ओर रसोइये की सफेद और रबड़-बँधी पीठ दिखायी दे रही थी। पीछे कप्तान अपने एक स्वस्थ हाथ के साथ नाव की शहतीर पकड़े लटका हुआ था।

तट में स्थिरता की विशेषता होती है और संवाददाता समुद्र में गड़बड़ी के उपरान्त भी उस पर आश्चर्य प्रकट करने लगा।

उसमें कुछ आकर्षण भी था, लेकिन संवाददाता जानता था कि यात्रा लम्बी है और इसीलिए वह आराम से तैरता रहा। ‘लाइफ बल्ट’ का टुकड़ा उसके नीचे था और कभी-कभी वह लहर के ढाल पर इस प्रकार फिसलता था, जैसे कि बरफ पर गाड़ी फिसलती है।

लेकिन अंत में समुद्र में वह एक ऐसे स्थान पर पहुँच गया, जहाँ उसकी यात्रा में विघ्न पड़ गया। उसने यह जानने के लिए कि किस प्रकार की लहरों में वह घिर गया था, तैरना बंद न किया, लेकिन वहाँ उसका आगे बढ़ना थम गया।

किनारा रंगमंच के मामूली दृश्य की भाँति लग रहा था। उसने उसकी ओर देखा और अपनी आँखों की सहायता से उसकी समस्त बारीकियों को समझ लिया।

जब कि रसोइया बायीं ओर दूर पर जा रहा था, तब कप्तान ने उससे कहा— “पीठ के बल हो जाओ, रसोइये ! पीठ के बल हो जाओ और चप्पू का उपयोग करो।”

“अच्छी बात है, श्रीमानजी !” रसोइया पीठ के बल हो गया और चप्पू चलाता हुआ लम्बी पतली डोंगी की भाँति आगे निकल गया। तभी नाव भी, जिसके शहतीर को पकड़कर कप्तान लटक रहा था, उसके पास से निकल गयी। उस समय वह ऐसा लग रहा था जैसे जहाज की आड़ को देखने के लिए ऊपर की ओर उठ रहा हो। संवाददाता को कप्तान की इस पकड़ को देखकर बड़ा अचरज हुआ।

वे लोग किनारे के समीप पहुँचने लगे। ‘आयलर’, रसोइया, कप्तान और उनके पीछे-पीछे पानी का बर्तन भी प्रसन्नता के साथ उछलता हुआ बहा चला जा रहा था।

लेकिन संवाददाता उस नये शत्रु लहर के चंगुल में ही फँसा रहा। किनारा अपनी सफेद बालू के ढाल और छोटी शांत झोपड़ियों के साथ, जिनके शिखर हरे सूखे से-थे, एक चित्र की भाँति उसकी आँखों के सामने फैला हुआ था। हालांकि वह तब उसके अत्यंत समीप था, परन्तु उसे ऐसा लग रहा था, जैसे कि बड़ी दूर से देख रहा हो।

उसने सोचा—“मैं डूबने वाला हूँ ? क्या यह सम्भव है ? क्या यह सम्भव है ? क्या यह सम्भव है ? कदाचित् एक आदमी अपनी मृत्यु को प्रकृति का अन्तिम चमत्कार ही समझेगा।”

लेकिन तभी एक दूसरी लहर ने उसे उस घेरे से बाहर कर दिया और उसने अनुभव किया कि अब वह किनारे की ओर बढ़ सकता है। उसे ज्ञात था कि कप्तान, जो एक हाथ से डोंगी को पकड़े हुआ था, उसे पुकार रहा था— ‘नाव पर आ जाओ। नाव पर आ जाओ।’

कप्तान और नाव तक पहुँचने के संघर्ष के बीच उसे इतना और ज्ञात हो गया कि जब मनुष्य डूबने लगता है, तब आरामदायक व्यवस्था हो जाती है और मुक्ति की दशा में शत्रुतापूर्ण समस्त कार्यों की इति हो जाती है और उसे इस बात की प्रसन्नता थी क्योंकि कुछ समय तक उसके मस्तिष्क में क्षणिक कष्ट

का भय व्याप्त रहा था। वह नहीं चाहता था कि उसे नुकसान पहुँचे।

तभी उसने एक आदमी को किनारे पर दौड़ते हुए देखा। वह अपने कपड़े बड़ी तेजी के साथ उतार कर फेंक रहा था। कोट, पायजामा, कमीज — हर कपड़ा उसने फुर्ती के साथ उतार फेंका।

“नाव पर आ जाओ।” — कप्तान ने पुकारा।

“बहुत अच्छा।” जैसे ही संवाददाता ने आगे बढ़ने के लिए पैर चलाये, उसने देखा कि कप्तान के हाथ से नाव छूट गयी और वह नीचे गिर पड़ा और तब संवाददाता ने कौशल के साथ तैरना आरम्भ कर दिया। एक बड़ी लहर ने उसको अपने चंगुल में फँस लिया और बड़ी सरलता और तेजी के साथ नाव से परे, बहुत दूर फेंक दिया। वह उसको व्यायाम की एक क्रिया और समुद्र के चमत्कार-सा लगा। कोई उलटी हुई नाव किसी तैरनेवाले के लिए खेल की वस्तु नहीं होती।

संवाददाता अब कमर तक पानी में पहुँच गया था, लेकिन उसकी दशा ऐसी न थी कि वह एक क्षण को भी खड़ा रह सकता। हर लहर का थपेड़ा उसे ढेर किये दे रहा था और उसके पैर उखड़े जा रहे थे।

तब उसकी दृष्टि उस आदमी पर पड़ी, जो कपड़े उतार रहा था, भाग रहा था और कपड़े उतार रहा था और अब पानी में उतर रहा था। उसने रसोइये को पानी के बाहर खींच लिया और तब कप्तान की ओर बढ़ा; लेकिन कप्तान ने हाथ हिलाकर मना कर दिया और संवाददाता की ओर जाने को इशारा किया। वह बिलकुल नग्न था, ठीक शरद के वृक्ष की तरह, लेकिन उसके मुख पर तेज था और वह किसी साधु-जैसा प्रतीत हो रहा था। उसने उसे कस कर पकड़ लिया और खींचा। फिर हाथ को झटक दिया। संवाददाता ने धीमे से उसे धन्यवाद दिया, लेकिन यकायक वह आदमी चीख उठा। वह क्या है? उसने उंगली से संकेत किया। संवाददाता बोला— “जाओ।”

छिछले पानी में ‘आयलर’ उलटे मुँह पड़ा हुआ था। उसका सिर बालू को छू रहा था और लहर बार-बार उस पर से निकल जाती थी।

बाद में क्या हुआ, संवाददाता को कुछ भी पता न चला। जब वह धरती पर पहुँचा, तब चारों खाने चित गिर गया और उसके शरीर का हर भाग बालू पर फैल गया, ठीक इस तरह जैसे वह छत पर से गिर पड़ा हो; लेकिन गिरने से उसे चोट नहीं आयी।

और तभी किनारे पर आदमियों की भीड़ जमा हो गयी। उनके हाथों में

कम्बल, कपड़े और गिलास थे। औरतों के हाथों में काफी के बर्तन और वे तमाम दवाइयाँ थीं, जिन्हें वे जानती थीं। उनका स्वागत खूब हुआ, लेकिन तभी एक शांत और ऐसी आकृति जिससे पानी टपक रहा था, किनारे पर लायी गयी और उसका स्वागत बिलकुल ही भिन्न हो सकता था, जो कि सहानुभूति-पूर्वक दफना देना था।

और जब रात हुई और श्वेत लहरें इधर-उधर नाचने लगीं और हवा के साथ समुद्र की आवाज किनारे पर केलोगों को सुनायी देने लगी, तब उन्होंने अपने मन में सोचा कि वे तब दुभाषिये का काम कर सकते थे।

नीला होटल

फोर्ट रांम्पर का पैलेस होटल हल्के नीले रंग से रंगा हुआ था। वह रंग ठीक वैसा ही था, जैसा हेरन (एक प्रकार का सारस) के पैरों में पाया जाता है और जिसकी वजह से किसी भी पृष्ठभूमि में उस पक्षी की मौजूदगी खिल उठती है। पैलेस होटल में सदा इस प्रकार का शोर-गुल और चीख-पुकार होती रहती थी, जिससे नेब्रास्का की शरत्कालीन चकाचौंध उत्पन्न कर देने वाली दृश्यावली भूरे रंग की दलदल वाली जमीन की निस्तब्धता मात्र प्रतीत होती थी। दूर तक फैले घास के उस वृक्षविहीन मैदान में यह अकेला होटल था और जब बर्फ गिरती रहती थी, तब वहाँ से २०० गज की दूरी पर बसा शहर बिलकुल नहीं दिखायी देता था; लेकिन वहाँ के रेलवे-स्टेशन पर उतरनेवाले किसी भी मुसाफिर को छोटे-छोटे मकानोंवाले फोर्ट रांम्पर में प्रवेश करने के पहले पैलेस होटल के सामने से होकर गुजरना पड़ता था और उधर से गुजरनेवाला कोई भी मुसाफिर पैलेस होटल की ओर देखे बिना आगे बढ़ जाय, यह सम्भव नहीं था। एक कुशल ब्यूह-निर्माता के समान ही होटल के मालिक पैट स्कली ने होटल के लिए रंग का चुनाव करने में अपने को माहिर साबित कर दिया था। यह सच है कि जब मौसम साफ रहता और सोनेवाले डब्बों की लम्बी कतार-वाली ग्रेट ट्रांसकंटीनेंटल एक्सप्रेस फोर्ट रांम्पर से होकर गुजरती, तब मुसाफिर उसे देखकर विचलित हो उठते थे और पूर्व के भूरे लाल रंग के निवासियों तथा गहरे हरे रंग के सब डिविजनों को भलीभाँति जाननेवाला सम्प्रदाय हँसकर लज्जा, दुःख और भय प्रकट करता, किंतु घास के इस बड़े मैदानवाले शहर के निवासियों और वहाँ ठहरनेवालों के बीच पैट स्कली ने अपना स्थान बना लिया था। नित्यप्रति रेलगाड़ियों में रांम्पर से होकर गुजरनेवाले विभिन्न धर्मों, वर्गों और मान्यताओंवाले लोगों का साधारणतः इस ऐश्वर्य और वैभव से कोई सामंजस्य नहीं था। इस नीले होटल की बाहरी सजावट वैसे काफी सुंदर और लुभावनी नहीं थी, इसलिए स्कली की यह आदत-सी थी कि वह प्रति दिन सबेरे-शाम रांम्पर में ठहरनेवाली गाड़ियों को देखने जाता था और जिन्हें भी अनिश्चित अवस्था में या किकर्त्तव्य-विमूढ़ देखता, उन्हें अपने प्रलोभनों के जादू में फँसा लेता।

एक दिन प्रातः जब बर्फ से ढंका हुआ इंजिन लम्बी मालगाड़ी को, जिसमें

एक डिब्बा यात्रियों का भी था, लेकर स्टेशन पर रुका, तब स्कली ने तीन व्यक्तियों को फँसाने का श्रेय प्राप्त किया। उनमें से एक चंचल और जल्दी-जल्दी देखनेवाला स्वीडनवासी था, जिसके पास सस्ता, पर बड़ा-सा चमकता हुआ बैग था। दूसरा एक लम्बा-सा हट्टा-कट्टा चरवाहा था, जो डकोटा लाइन के पास के एक बाड़े में जा रहा था और तीसरा बहुत ही शान्त स्वभाव का व्यक्ति था। वह सम्भवतः पूरब का रहनेवाला था, पर देखने-सुनने में वैसा नहीं लगता था। स्कली ने उन्हें अपने वाक्-जाल में करीब-करीब फँसा लिया। वह इतना दयालु, खुशदिल और चालाक था कि सम्भवतः सभी ने यही सोचा कि उससे बचकर निकलने की कोशिश करना परले दज की नृशंसता होगी। वे उस उतावले छोटे आइरिश के पीछे-पीछे रास्ते के किनारे-किनारे चरचराती हुई पटरियों पर पैर घसीटते हुए चल पड़े। स्कली ने सिर पर बहुत ही कसी हुई रोयेंदार टोपी पहन रखी थी। इससे उसके लाल-लाल कान कड़े होकर फैले हुए थे, जैसे टीन के बने हों।

अन्ततः स्कली बड़े प्रयास के साथ उनकी आवभगत करता हुआ उन्हें नीले होटल में ले गया। जिस कमरे में वे अंदर घुसे, वह बहुत छोटा था। वह एक बहुत बड़े स्टोव का, जो बीचवाले कमरे में किसी बड़े देव के तुल्य क्रोध में आवाज कर रहा था, ढक्कन-सा लगता था। इसकी धरन पर का लोहा आग से गर्म होकर कई स्थानों पर पीला हो गया था। स्टोव के अतिरिक्त स्कली का लड़का जानी खिले भूरे रंग के गलमोच्छावाले बूढ़े किसान के साथ 'हाई फाइव' खेल रहा था। वे आपस में झगड़ रहे थे। बहुधा बूढ़ा किसान स्टोव के पीछे पड़े हुए, तम्बाकू से भूरे पड़ गये कूड़ा फेंकने के बक्स की ओर मुँह घुमाकर असहिष्णुता और चिढ़ के साथ थूक देता। जोरों से झिड़कते हुए स्कली ने उनके ताश के खेल को बिगाड़ दिया और नये मेहमानों के कुछ सामान के साथ अपने बेटे को ऊपर भेज दिया। वह स्वयं ही उन्हें तीन बर्तनों के पास ले गया, जिनमें ठंडा जल भरा था, ऐसा ठंडा जल, जैसा सम्भवतः संसार में अन्यत्र उपलब्ध नहीं हो। चरवाहे और पूरबवासी ने उससे अपने बदन को रगड़-रगड़ कर चमकाया, ठीक किसी धातु पर की गयी पालिश के समाद। फिर भी, स्वीडनवासी ने सावधानी तथा घबराहट से सिर्फ उंगलियाँ ही डुबायीं। यह मार्क की बात थी कि इन छोटे-मोटे सभी कामों के अवसरों पर यात्रियों ने महसूस किया कि स्कली उनका बहुत ही शुभचिन्तक है और वह उनकी बहुत सेवा कर रहा है। उसने लोक सेवक की तरह एक-के बाद दूसरे की ओर तौलिया बढ़ाया।

उसके बाद वे पहले कमरे में गये और स्टोव के पास बैठ कर स्कली के उस अति कृपालु उपदेश को सुनते रहे, जो वह दिन का भोजन बना रही अपनी बेटियों को दे रहा था। उन्होंने शान्तिपूर्वक अपना मन्तव्य प्रकट किया, जैसे कि नये लोगों के बीच आये हुए लोग सावधानीपूर्वक करते हैं। इस पर भी बूढ़ा किसान स्टोव के सब से गर्म भाग के पास अजेय की तरह अपनी कुर्सी में बैठा बहुधा अपना चेहरा कूड़ेदान की ओर से हटा कर नये आगन्तुकों से साधारण बातें करता रहा। उसकी बातों का उत्तर संक्षिप्त, किन्तु उचित रूप से चरवाहा या पूरबवासी दे देते थे। स्वीडनवासी ने कुछ नहीं कहा। वह कमरे में उपस्थित हर व्यक्ति के विषय में विशेषरूप से कुछ सोचता जान पड़ता था। किसी ने यह भी सोचा होगा कि वह शक्की मिर्जाज का है, जो मन में छिपे पाप के कारण होता है। वह बहुत ही डरा हुआ लग रहा था।

सिर्फ स्कली से ही वह बाद में भोजन के समय कुछ-कुछ बातें करता रहा। उसने स्वयं ही बताया कि वह न्यूयार्क से आ रहा है, जहाँ वह दस वर्षों तक दर्जी का काम कर चुका है। इन बातों में स्कली ने बहुत रुचि ली और बाद में उसने बताया कि वह राम्पर में १४ वर्षों से रह रहा है। स्वीडनवासी ने अनाज के भाव और मजदूरी की दर के विषय में पूछताछ की। स्कली के विस्तृत उत्तर को वह कठिनता से सुनता जान पड़ता था। उसकी आँखें एक-एक कर सभी व्यक्तियों को देखती रहीं।

अन्त में उसने कनखी मारते हुए हँस कर कहा कि पश्चिमी समुदाय के चन्द लोग बहुत ही खतरनाक होते हैं और यह कहने के बाद उसने अपना पॉव टेबुल के नीचे फँला दिया, सर घुमाया और एक बार फिर जोरों से हँसा। यह साफ जाहिर था कि उसकी ये बातें दूसरों के लिए निरर्थक थीं। वे उसकी ओर चुपचाप आश्चर्य से देखते रहे।

— २ —

जब वे लोग गम्भीर मुद्रा में सामने के कमरे में वापस आये, तब कमरे की दोनों छोटी-छोटी खिड़कियाँ गरजते हुए बर्फानी समुद्र का दृश्य उपस्थित कर रही थीं। हवा की विशाल बाहें बर्फ के टुकड़ों को अपने सीने में लपेटने की निरर्थक कोशिश कर रही थीं। प्रकृति के इस असंयमित क्रोध का सामना करता हुआ बाहर एक 'गेट पोस्ट' किसी भयभीत व्यक्ति के समान स्थिर खड़ा था।

उल्लसित आवाज में स्कली ने इस बर्फानी तूफान की घोषणा की। नीले होटल के मेहमानों ने पाइप जलाते हुए आलसी व्यक्तियों की तरह असंतोषपूर्वक इसका समर्थन किया। उस छोटे-से कमरे में जलते हुए स्टोव से उत्पन्न उष्णता में कोई भी सागरीय द्वीप अछूता नहीं रह सकता था। स्कली के लड़के जानी ने भूरे बाल-दाढ़ीवाले बूढ़े किसान को ताश के खेल में अपनी योग्यता का प्रदर्शन करते हुए 'हाई फाइव' नामक ताश का खेल खेलने को ललकारा। किसान घृणा और तिरस्कार का प्रदर्शन करते हुए तैयार हो गया। वे स्टोव के नजदीक आकर बैठ गये। मेज के नीचे उनके पाँव एक-दूसरे से सटकर एक वर्ग बना रहे थे। चरवाहा और पूरबवासी रुचिपूर्वक खेल देखने लगे। स्वीडनवासी अकेला खिड़की के नजदीक खड़ा रहा, लेकिन उसकी मुखाकृति पर एक अवर्णनीय उत्तेजना के लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे थे।

फिर से झगड़ा हो जाने के कारण जानी और किसान का खेल रुक गया। बूढ़ा किसान जानी को कड़ी निगाहों से देखता हुआ उठ खड़ा हुआ। उसने धीरे-धीरे अपने कोट का बटन लगाया और बड़प्पन में ऐंठता हुआ कमरे के बाहर चला गया। सब लोगों की निस्तब्धता देख स्वीडनवासी हँस पड़ा। उसकी हँसी से कुछ-कुछ लड़कपन प्रकट होता था। अब सभी उसे जिज्ञासु दृष्टि से देख रहे थे और यह जानना चाहते थे कि वह हँसा क्यों?

विनोदी भाव से दूसरा खेल आरम्भ हुआ। चरवाहा अपनी इच्छा से जानी का भागीदार बनने को तैयार हो गया। फिर सबों ने स्वीडनवासी को पूरबवासी का भागीदार बन अपना कौशल दिखाने को कहा। उसने पहले खेल के विषय में चन्द प्रश्न पूछे और फिर यह जानने पर कि इस खेल के कई नाम हैं तथा वह इसे किसी और नाम से खेल भी चुका है, खेलने का निमंत्रण स्वीकार कर लिया। ऐसा भाव दर्शाते हुए कि उसकी बेइज्जती हो जायगी, वह डरते-डरते कदम रखता उनकी ओर बढ़ा। अन्त में अपना आसन ग्रहण कर एक-एक कर सब को धूरते हुए वह कर्कश हँसी हँसा। यह हँसी इतनी विचित्र थी कि पूरबवासी जल्दी-जल्दी उसे देखने लगा, चरवाहा मुँह बाये एकटक उसकी ओर ताकने लगा और जानी की उंगलियों में फँसे ताश के पत्ते जहाँ के तहाँ रह गये।

इसके बाद क्षण भर शान्ति रही। फिर जानी ने कहा—“अच्छा अब हम लोग अपना खेल शुरू करें। अब शुरू करो।” सबों ने अपनी-अपनी कुर्सी आगे की ओर खींच ली और टेबुल के नीचे उनके पैरों का एक घेरा-सा बन गया। वे

खेलने लगे। खेल में उनकी रुचि इतनी बढ़ गयी कि स्वीडनवासी की हरकतों को वे भूल गये।

चरवाहा बार-बार बोर्ड को पीटता था। जब भी उसके पास अच्छे पत्ते आते, वह उन्हें एक-एक कर ताश-बोर्ड पर जोरों से पटकता और बड़े पत्तों को इस गर्व और पराक्रम के साथ उठाता कि उसके विरुद्ध खेलनेवालों का हृदय क्रोध से कांप उठता था। बोर्ड पीटनेवाले के साथ खेलने में खेल निश्चय ही उत्तेजक हो जाता है। जब भी चरवाहा जोरों से अपने इक्के और बादशाह पटकता, स्वीडनवासी और पूरबवासी के चेहरे का रंग फीका पड़ जाता और जानी आँखों में खुशी की चमक लिए मुस्कराता जाता।

खेल में फँसे रहने के कारण किसी ने भी स्वीडनवासी की विचित्र हरकतों की ओर ध्यान नहीं दिया। वे एकदम खेल में ही उलझे रहे। अन्ततः नये सिरे से पत्ते बँटते वक्त की शांति के क्षण में स्वीडनवासी ने एकाएक जानी से कहा—“मेरा अनुमान है कि इस कमरे में कई व्यक्तियों का खून किया गया है।” सब के जबड़े लटक गये और वे उसे देखने लगे।

“तुम क्या अनाप-शनाप बक रहे हो?”—जानी ने कहा।

स्वीडनवासी फिर झूठे साहस और निर्भयता से भरपूर कर्कश हँसी हँस पड़ा। “तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं क्या कहना चाहता हूँ।”—उसने कहा।

“जो जाने, वह झूठा!”—जानी ने विरोध किया। ताश के पत्ते जहाँ के तहाँ पड़े रहे और सभी स्वीडनवासी को घूरने लगे। जानी ने यह महसूस किया कि होटल-मालिक के लड़के के नाते उसे सीधी पूछताछ करनी चाहिए। “तुम यह क्या फितूर बाँध रहे हो, मिस्टर?”—उसने पूछा। स्वीडनवासी ने उसे कनखी से देखा। यह कनखी चालाकी से भरी थी। उसकी उंगलियाँ बोर्ड के किनारे से खेलती रहीं। “ओह, शायद तुम यह समझते हो कि मैं कहीं नहीं गया हूँ या यह सोचते हो कि मैं कमजोर हूँ।”

“मैं तुम्हारे बारे में कुछ नहीं जानता”—जानी ने कहा—“और न मैं इसी की परवाह करता हूँ कि तुम कहाँ-कहाँ गये हो। मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूँ कि तुम क्या कहना चाहते हो, यह मेरी समझ में नहीं आ रहा है। इस कमरे में कभी किसी का खून नहीं हुआ है।”

चरवाहा, जो अब तक स्वीडनवासी को एकटक घूर रहा था, बोला—“तुम्हें क्या तकलीफ है, मिस्टर?”

स्वीडनवासी को ऐसा भास हुआ कि उसे नीचा दिखाने की कोशिश की जा

रही है। उसे सिहरन-सी महसूस हुई और उसका चेहरा थोड़ा सफेद पड़ गया। पूरबवासी की ओर उसने सहायतार्थ निगाह डाली। इसी बीच वह अपनी शक्ति बटोरना भी नहीं भूला। “मैं क्या कहना चाहता हूँ, इन्हें पता ही नहीं ह !”—उसने पूरबवासी से मजाक के रूप में कहा। पूरबवासी ने बहुत देर बाद सचेत हो कर कहा—“मैं भी तुम्हारे कहने का मतलब नहीं समझ रहा हूँ।” स्वीडनवासी ने कुछ ऐसा हाव-भाव प्रकट किया, जिससे यह पता लगता था कि जिससे उसे यदि सहायता की नहीं तो कम से कम सहानुभूति की आशा थी, वह भी धोखा ही दे रहा है। “आह, मैं देखता हूँ कि तुम सभी मेरे विरुद्ध हो। मैं देखता हूँ.”

चरवाहा बिलकुल स्तब्ध खड़ा रहा। फिर वह जोरों से बोर्ड को उलटते हुए चिल्लाया—“बोलो ! बोलो ! आखिर तुम्हारा मतलब क्या है ?” जैसे लोग जमीन पर पड़े सौंप को देखकर बचने के लिए उछल पड़ते हैं, उसी तरह स्वीडनवासी जोरों से उछला। “मैं लड़ना नहीं चाहता !”—वह जोरों से चिल्लाया—“मैं लड़ना नहीं चाहता !” चरवाहे ने अपने लम्बे पैरों को जानबूझकर इतमीनान के साथ फैलाया। उसके हाथ अपनी जेब में थे। कूड़ेदान में उसने थूका। “अरे कौन कहता है कि तुम लड़ाई करना चाहते हो ?”—उसने पूछा।

स्वीडनवासी द्रुतगति से कमरे के एक कोने में पीछे हट गया। रक्षा के हेतु उसके हाथ सीने के सामने चले आये, लेकिन वह अपने भय पर नियंत्रण प्राप्त करने का जी-जान से प्रयत्न कर रहा था। “सज्जनों !”—लटपटाती हुई जुबान में उसने कहा—“मुझे ऐसा भास होता है कि इस घर को छोड़ने के पहले ही मैं मार दिया जाऊँगा। मुझे ऐसा भास होता है कि इस घर को छोड़ने के पहले ही मैं मार दिया जाऊँगा !” उसकी आँखों में मरते हुए हंस की झलक थी। खिड़कियों से गोधूलि की छाया में बर्फ नीली होती नजर आ रही थी। हवा मकान से टकरा रही थी और कोई हल्की-सी चीज दरवाजे से टकराकर ऐसे आवाज कर रही थी, जैसे कोई भूत दरवाजा खटखटा रहा हो।

एक दरवाजा खुला और स्कली ने स्वयं प्रवेश किया। स्वीडनवासी की विचित्र हालत देख वह ताज्जुब के साथ रुक गया। फिर उसने कहा—“यहाँ क्या हो रहा है ?”

स्वीडनवासी ने उत्सुकतापूर्वक तेजी से कहा—“ये लोग मेरी जान लेने जा रहे हैं।”

“तुम्हारी जान लेने जा रहे हैं ?”—स्कली बोल उठा—“तुम्हारी जान लेने

जा रहे हैं ! क्या बोल रहे हो तुम ?”

स्वीडनवासी ने शहीदों का-सा हाव-भाव प्रकट किया ।

स्कली गुस्से के साथ अपने पुत्र की ओर मुड़ा । “यह क्या है, जानी ?”

जानी रंज से भरा हुआ था । “मैं नहीं जानता, यह क्या कहना चाहता है ।”

—उसने उत्तर दिया—“मेरी समझ में कुछ नहीं आता ।” उसने क्रोधित रूप में ताश के पत्ते फेटने शुरू कर दिये । “वह कहता है कि इस कमरे में बहुत से आदमी मार डाले गये हैं या ऐसा ही कुछ बोलता है । और कहता है कि वह भी यहाँ मार डाला जायगा । मैं नहीं जानता कि उसे क्या तकलीफ है । वह पागल है । मुझे ताज्जुब नहीं करना चाहिए ।”

स्कली ने जानकारी के लिए चरवाहे की ओर देखा, लेकिन चरवाहे ने सिर्फ कंधा हिला दिया ।

“तुम्हारी जान लेने जा रहे हैं ?”—फिर स्कली ने स्वीडनवासी से कहा—“तुम्हारी जान लेने जा रहे हैं ? मिस्टर तुम अपने आप में नहीं हो ।”

“आह, मैं जानता हूँ !”—स्वीडनवासी चिल्ला पड़ा—“मैं जानता हूँ कि क्या होगा । हाँ, हाँ मैं पागल हूँ । हाँ ठीक है, मैं पागल हूँ, हाँ । लेकिन मैं एक बात जानता हूँ ।” उसके चेहरे पर भय और विवशता के पसीने की बूँदें दिख रही थीं । “मैं जानता हूँ कि यहाँ से जीवित मैं बाहर नहीं निकल सकता ।”

जानी की आवाज दुःख के बोझ के कारण ऊँची थी । “हे भगवान् ! मैंने तो इसे कुछ भी नहीं कहा ।”

स्वीडनवासी बीच में ही बोल पड़ा—“सज्जनो, आप लोग व्याकुल नहीं हों । मैं इस घर को छोड़ दूंगा । मैं दूर चला जाऊँगा क्योंकि,”—उसने नाटकीय रूप में अपनी नजरों से उन्हें दोषी करार दिया—“क्योंकि मैं मारा जाना नहीं चाहता ।” स्कली अपने पुत्र पर बहुत ही नाराज था । “बदमाश, बता ? क्या बात है ? बोल ! क्या बात है ? बोल ।”

“दे लो दोष !”—विवशता के साथ जानी ने चिल्लाकर कहा—“कहता हूँ न कि मैं नहीं जानता ! वह, वह कहता है कि हम उसे मार डालना चाहते हैं । बस यही मैं जानता हूँ । मैं समझ नहीं पाता कि उसे क्या कष्ट है ।”

स्वीडनवासी अपनी बात दुहराता रहा—“कोई बात नहीं, मिस्टर स्कली, कोई बात नहीं, मैं इस घर को छोड़ दूंगा । मैं चला जाऊँगा क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मैं मार डाला जाऊँ । हाँ, ठीक है, मैं पागल हूँ, हाँ । लेकिन मैं एक बात जानता हूँ । मैं दूर चला जाऊँगा । मैं इस घर को छोड़ दूंगा । कोई बात

“नहीं है, मिस्टर स्कली कोई बात नहीं है। मैं दूर चला जाऊँगा।”

“आप यहाँ से नहीं जायेंगे!”—स्कली ने कहा—“जब तक मैं इसका कारण नहीं जान लूँ, आप यहाँ से नहीं जायेंगे। यदि किसी ने आपको कष्ट दिया है, तो मैं उसकी खबर लूँगा। यह मेरा घर है। आप मेरे घर में हैं और मैं यहाँ किसी भी शान्तिप्रिय व्यक्ति को कष्ट होते नहीं देख सकता।” उसने जानी, चरवाहा और पूरबवासी को कड़ी नजरों से देखा।

“कोई बात नहीं मिस्टर स्कली, कोई बात नहीं। मैं दूर चला जाऊँगा। मैं मारा जाना नहीं चाहता।” स्वीडनवासी सीढ़ियों की ओर खुलनेवाले दरवाजे की ओर बढ़ा। उसकी इच्छा शीघ्र ही जाकर अपना सामान बांध लेने की थी।

“नहीं, नहीं।”—स्कली ने आज्ञा के स्वर में कहा। लेकिन स्वीडनवासी उसकी बगल से निकलकर गायब हो गया। स्कली ने गुस्से से कहा—“क्या मतलब है इसका?”

जानी तथा चरवाहे ने एक साथ चिल्लाकर कहा—“क्यों, हम लोगों ने तो कुछ नहीं किया!”

स्कली की निगाहें ठंडी थीं। “नहीं,”—उसने कहा—“तुमने कुछ नहीं किया!” जानी ने बहुत बड़ी कसम खायी। “ऐसा जंगली आदमी मैंने नहीं देखा। हम लोगों ने कुछ नहीं किया। हम लोग यहाँ बैठे ताश खेल रहे थे और वह...”

स्कली अचानक ही पूरबवासी से बोला। “मिस्टर ब्लांक!”—उसने पूछा—“ये लड़के यहाँ क्या कर रहे थे?”

पूरबवासी ने फिर अपना विचार दुहराया। “मुझे तो कुछ भी अनुचित नहीं लगा।”—उसने अन्त में धीरे से कहा।

स्कली बड़बड़ाने लगा। “लेकिन इसका मतलब क्या है?”—उसने अपने पुत्र को क्रोधित नजरों से घूरा—“इसके लिए मैं तुमको बहुत बड़ी सजा दूँगा, मेरे बेटे!”

जानी बहुत ही उत्तेजित था। “आखिर, क्या किया है मैंने?”—अपने पिता से उसने गुस्से में पूछा।

“मालूम पड़ता है कि तुम लोग जुबान नहीं खोलोगे।”—अन्त में स्कली ने

अपने पुत्र, चरवाहे और पूरबवासी से कहा और इस घृणापूर्ण वाक्य के समाप्त होते ही कमरे के बाहर चला गया।

ऊपर स्वीडनवासी तेजी के साथ अपना बिस्तर बाँध रहा था। एक बार जब उसकी पीठ दरवाजे की तरफ थी, वहाँ हल्ला सुनते ही वह जोरों से चिल्लाते हुए धूमकर उछल पड़ा। स्कली जिस छोटे से प्रदीप को लिए चला आ रहा था, उसकी रोशनी में उसका झुर्रीदार चेहरा बहुत ही कठोर दिखता था। ऊपर की ओर बढ़ती इस हल्की पीली रोशनी में सिर्फ उसके उभरे अंग ही दिख रहे थे और उसकी आँखें गहन छाया में छिप गयी थीं। वह खूनी जैसा लग रहा था।

“अरे ! अरे !”—वह चीखा,—“क्या तुम पागल हो गये हो ?”

“नहीं नहीं।”—स्कली ने उत्तर दिया।—“संसार में ऐसे लोग भी हैं, जो जितना तुम जानते हो, उतना वे भी जानते हैं, समझे ?”

क्षण भर खड़े वे एक-दूसरे को घूरते रहे। स्वीडनवासी के मुर्दनी छाये पीले गालों पर बहुत ही नुकीले और चमकते गहरे लाल रंग के दो दाग थे, जो देखने में ऐसे लगते थे कि उन्हें सावधानी से रंग दिया गया हो। स्कली ने प्रदीप को मेज पर रख दिया और स्वयं बिछावन के एक किनारे पर बैठ गया। वह मुँह चलाते हुए बोला,—“खुदा-कसम, जिन्दगी में मैंने ऐसी बात कभी नहीं सुनी। यह तो एकदम ही अजीब बात है। मेरा हृदय जानता है, मैं यह सोच भी नहीं सकता कि क्योंकर ऐसी बात तुम्हारे दिमाग में आयी।” फिर, उसकी ओर देखते हुए उसने पूछा—“क्या तुम बिल्कुल ठीक समझते हो कि वे तुम्हें मार डालने जा रहे थे।”

स्वीडनवासी ने उस बूढ़े व्यक्ति को अच्छी तरह समझने के लिए परखा। “हाँ, मैं ऐसा ही सोचता हूँ।”—उसने अन्त में कहा। उसने अनुमानतः आशा की कि इस उत्तर से हो सकता है कि वह फूट पड़े। बिस्तर का फीता कसने के लिए जब उसने खींचा, उसकी बाँहें काँप रही थीं और भवें कागज के टुकड़े की तरह कम्पित हो रही थीं।

स्कली ने बिस्तर के पैताने प्रभावशाली ढंग से अपना हाथ टिका दिया। “अरे साहब, अगली बसन्त ऋतु में इस शहर की सड़कों पर बिजली से चलने वाली गाड़ियाँ चलने को हैं।”

“सड़कों पर बिजली से चलनेवाली गाड़ियाँ।”—बेवकूफ की तरह स्वीडनवासी ने दुहराया। “और”—स्कली ने कहा—“ब्रोकेन आर्म से यहाँ तक एक नयी रेल-सड़क बनायी जायेगी। चार गिरजाघर और ईंटों के उस बड़े स्कूल-घर की तो

बात ही छोड़ दो। फिर एक बड़ा कारखाना भी बनने को है। दो वर्ष में राम्पर प्रमुख नगर हो जायगा।”

बिस्तर बांधना समाप्त करने के बाद स्वीडनवासी खड़ा हो गया। “मिस्टर-स्कली”—अचानक ही कुछ बड़े स्वर में उसने कहा—“मेरे यहाँ आपका क्या हिसाब निकलता है?”

“आपके यहाँ मेरा कुछ भी बाकी नहीं है।”—बूढ़े सज्जन ने क्रोधित हो कर कहा।

“हाँ, आपका बाकी है।”—स्वीडनवासी ने दुहराया। उसने अपनी जेब से ७५ सेंट निकाले और स्कली की ओर बढ़ा दिये, लेकिन स्कली ने तिरस्कार के साथ इनकार करते हुए अपना हाथ खींच लिया। फिर भी, दोनों ही विचित्र अवस्था में खड़े हो स्वीडनवासी की खुली हथेली में पड़े चाँदी के तीन टुकड़ों को घूरते रहे।

“मैं, तुम्हारे रुपये नहीं लूंगा।”—अन्ततः स्कली ने कहा। “अभी जो यहाँ हो रहा है उसके बाद तो एकदम नहीं।” इतने ही में उसे एक सूझ आयी। “आया!”—वह चिल्लाया और प्रदीप अपने हाथ में ले दरवाजे की ओर बढ़ते हुए उसने कहा—“एक मिनट मेरे साथ आओ।”

“नहीं।”—स्वीडनवासी ने व्यग्रता प्रकट करते हुए कहा।

“हाँ।”—बूढ़े ने मिन्नत की—“आओ मेरे साथ। मैं तुम्हें एक तस्वीर दिखाना चाहता हूँ। ‘हाल’ के बाद वाले मेरे कमरे में।”

स्वीडनवासी निश्चय ही इस निर्णय पर पहुँच गया होगा कि उसकी अन्तिम घड़ी आ गयी है। उसके मुँह खुल गये और दाँत मुर्दों के समान लगने लगे। अन्त में वह बरामदे से होता हुआ स्कली के पीछे-पीछे चला, लेकिन उसके कदम जंजीर पड़े कदमों के समान उठ रहे थे।

स्कली ने अपने कमरे में प्रदीप को एक ऊँचाई पर दीवाल से लटका दिया। वहाँ एक छोटी लड़की की हँसती हुई तस्वीर दिखायी दी। वह एक खूब भड़कीले जंगले के सहारे झुकी हुई थी और उसके अच्छी तरह कटे बाल के गुच्छे बहुत सुन्दर दिख रहे थे। शरीर का आकार उन्नत स्लेड स्टेक की तरह ही सुन्दर और जस्ते के रंग का था। “वह देखो”—स्कली ने स्नेहपूर्वक कहा—“वह मेरी छोटी लड़की की तस्वीर है, जो मर चुकी है। उसका नाम कैरी था। उसके बाल इतने सुन्दर थे कि वैसे बाल तुमने देखे नहीं होंगे। मुझे वे बहुत ही प्यारे लगते थे, वह.....”

धूमकर उसने देखा कि स्वीडनवासी तस्वीर को एकदम नहीं देख रहा है, बल्कि इसके बदले बरामदे में छायाी नीरवता की ओर बहुत ही प्रखर निगाहों से देख रहा था। “इधर देखो, मिस्टर”—सहृदयतापूर्वक स्कली बोला—“वह मेरी छोटी लड़की की तस्वीर है, जो मर चुकी है। उसका नाम कैरी था। और यह मेरे सबसे बड़े लड़के माइकल की तस्वीर है। वह लिंकन में वकील है और अच्छा नाम कर रहा है। मैंने उसे खूब पढ़ाया-लिखाया और इसकी मुझे बहुत खुशी है। वह बहुत ही अच्छा लड़का है। अब देखो उसे। कितना बहादुर दीख पड़ता है। लिंकन में वह एक बहुत ही आदरणीय और इज्जतदार व्यक्ति है। आदरणीय और इज्जतदार व्यक्ति!” स्कली ने गर्व-प्रदर्शन करते हुए बात समाप्त की और ऐसा कहते हुए उसने विनोद में स्वीडनवासी के पीठ पर एक धौल जमा दिया।

स्वीडनवासी हल्के मुसकरा दिया।

अब बूढ़े सज्जन ने कहा—“सिर्फ एक चीज और है।” वह झट से फर्श पर बैठ गया और बिछावन के नीचे अपना सिर ले गया। स्वीडनवासी उसकी हल्की आवाज सुन सका। “मुझे अपने लड़के जानी से बचाने के लिए इसे बिछावन के नीचे रखना पड़ता है। फिर वह बुढ़िया भी है। कहाँ रख दिया मैंने? मैं कभी एक स्थान में दो बार नहीं रखता। हाँ, यह रहा। अब बाहर निकल आओ।”

एक पुराने कोट का गोल बंडल खींचते हुए वह धीरे-धीरे बिछावन के नीचे से बाहर निकल आया। “मैं उसको बुलाकर लाया हूँ।”—वह बड़बड़ाया। फर्श पर घुटने टेकते हुए उसने कोट के अन्दर छिपी हुई पीलापन लिए भूरे रंग की शराब की बोतल निकाली।

सब से पहले वह एक अनोखी अदा के साथ बोतल को प्रदीप के पास ले गया। यह निश्चित कर लेने पर कि किसी ने इसको बदल नहीं दिया है, उसने दयालु भाव से इसे स्वीडनवासी की ओर बढ़ा दिया।

कमजोर घुटनोंवाला स्वीडनवासी शक्ति देनेवाली इस चीज को उत्सुकतापूर्वक छीन ही लेने को था, लेकिन झटके के साथ अचानक ही वह अपना हाथ पीछे ले गया और स्कली को भयभीत दृष्टि से देखने लगा।

“पीओ!”—बूढ़े सज्जन ने स्नेहपूर्वक कहा। अब तक वह खड़ा हो गया था और स्वीडनवासी के सामने आ गया था।

क्षण भर शान्ति रही। तब फिर स्कली ने कहा—“पीओ।”

स्वीडनवासी जंगली की तरह हँसा। उसने बोतल छीन कर अपने मुँह से

लगा ली। उसके होंठ बोटल से बुरी तरह चिपके रहे, गला अपना काम करता रहा, और घृणा से जलती निगाहों से वह बूढ़े के चेहरे को देखता रहा।

- ४ -

स्कली के चले जाने के बाद तीनों व्यक्ति काफी देर तक शान्त रहे और 'कार्ड-बोर्ड' उनके घुटनों पर वैसे ही पड़ा रहा। तब जानी ने कहा—“ऐसा रद्दी स्वीडनवासी मैंने कभी नहीं देखा।”

“वह स्वीडनवासी नहीं है।”—चरवाहे ने गाली देते हुए कहा।

“तब फिर वह क्या है?”—जानी चिल्लाया—“फिर वह क्या है?”

“मेरी समझ से”—चरवाहे ने विचारपूर्वक उत्तर देते हुए कहा—“वह कोई डच जान पड़ता है। स्वीडनवासी के बाल हल्के होते हैं तथा आवाज भारी होती है। यह उस देश की आदरणीय संस्कृति है।” चरवाहे की बात इसे देखते हुए निराधार नहीं थी। “हाँ, महोदय”—उसने दुहराया—“मेरा विश्वास है कि यह लकड़हारा कोई डच है।”

“लेकिन, वह तो कहता है कि वह स्वीडनवासी है, खैर!”—जानी उदासीनता से बड़बड़ाया। पूरबवासी की ओर मुड़ते हुए उसने पूछा—“आपकी क्या राय है, मिस्टर ब्लॉक?”

“अजी, मैं नहीं जानता”—पूरबवासी ने उत्तर दिया।

“आपके विचार से वह ऐसा क्यों करता है?”—चरवाहे ने पूछा।

“क्यों, वह डरा हुआ है।”—पूरबवासी ने अपनी तम्बाकू की पाइप को स्टोव की रीम से ठोंकते हुए कहा।—“साफ पता लगता है कि वह बहुत अधिक डरा हुआ है।”

“आखिर क्यों?”—जानी और चरवाहा दोनों एक साथ चिल्ला उठे।

पूरबवासी ने अपने उत्तर पर विचार किया।

“आखिर क्यों?”—वे फिर चिल्लाये।

“ओह, मैं नहीं जानता, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि यह आदमी गंदे उपन्यास पढ़ रहा था और उस उपन्यास में गोली चलाने और छुरेबाजी आदि के जो दृश्य थे, वे इसके मस्तिष्क में चक्कर काट रहे हैं।”

“लेकिन”—चरवाहे ने गहरे आक्षेप से कहा—“यह न तो व्योमिंग है और न उन स्थानों में ही है। यह नेब्रास्का है।”

“हाँ।”—जानी ने कहा—“पश्चिम की ओर पहुँचने तक वह इंतजार क्यों नहीं करता है ?” दूर देश घूमा हुआ पूरबवासी हँसा। “इन दिनों वहाँ भी कोई भिन्नता नहीं है, लेकिन वह सोचता है कि वह नर्क में फँस गया है।”

जानी और चरवाहा देर तक सोचते रहे।

“यह तो बहुत ही अजीब बात है।”—अन्त में जानी ने कहा।

“हाँ।”—चरवाहे ने कहा—“यह अजीब तमाशा है। अच्छा हुआ जो, हम इस में नहीं फँसे, नहीं तो सभी समय हम लोगों को यह तमाशा देखना पड़ता और यह अच्छा नहीं होता।”

“अच्छा होता पिताजी उसे घर से बाहर निकाल देते।”—जानी ने कहा।

इसी समय उन्होंने सीढ़ियों पर बहुत जोर-जोर से उतरने की आवाज सुनी। साथ ही स्कली की मजाक से भरी आवाज और स्वीडनवासी के हँसने की आवाज भी सुन पड़ी। स्टोव के चारों ओर बैठे लोगों ने एक-दूसरे को खाली नजरों से देखा। “आफत !”—चरवाहे ने कहा। दरवाजा खुला और बूढ़े स्कली ने प्रसन्न मुद्रा में कमरे में प्रवेश किया। वह अपने पीछे चले आ रहे स्वीडनवासी से मजाक कर रहा था और स्वीडनवासी भी मजे में हँसता जा रहा था। यह भोजन कर चले आ रहे दो बातूनियों का प्रवेश था।

“आओ अब।”—स्कली ने तीनों बैठे हुए व्यक्तियों से तेजी से कहा—“खिसको हमें भी गर्म होने दो।” चरवाहे और पूरबवासी ने आजानुसार नवागन्तुक को जगह देने के लिए अपनी-अपनी कुर्सियाँ थोड़ी खिसका लीं, लेकिन जानी ने निरुपयोगी भाव से बैठे-बैठे ही थोड़ी जगह बना दी और फिर शान्त बैठ रहा।

“आओ, बैठो वहाँ !”—स्कली ने कहा।

“स्टोव की उस ओर बहुत जगह है।”—जानी ने कहा।

“क्या तुम समझते हो कि हम लोग हवा के झोंके में बैठना चाहते हैं ?” पिता ने गरजते हुए कहा। लेकिन स्वीडनवासी ने पूर्ण विश्वास का प्रदर्शन करते हुए उन्हें बीच में ही रोक दिया। “नहीं-नहीं। जहाँ वह लड़का बैठना चाहता है, वहीं बैठने दो उसे।”—स्कली को उसने चिढ़ाते हुए जोरों से कहा। “ठीक है।”—स्कली ने आदरपूर्वक कहा। चरवाहे और पूरबवासी ने एक-दूसरे को ताज्जुब के साथ देखा।

स्टोव की एक ओर पाँचों कुर्सियाँ अर्द्ध चन्द्राकार रूप में सज गयीं। स्वीडनवासी ने बोलना शुरू किया और वह उदंडता, भ्रष्टता और गुस्से में बातें

करता रहा। जानी, चरवाहा और पूरबवासी रक्षता से शान्त रहे जब कि स्कली उसकी बातें उत्सुकतापूर्वक सुनता रहा और रस लेता रहा और बीच-बीच में सहानुभूति प्रदर्शन करने के लिए कुछ-कुछ बोलता रहा।

अन्ततः स्वीडनवासी ने कहा कि मुझे प्यास लगी है। अपनी कुर्सी को थोड़ा-सा खिसकाते हुए उसने कहा कि मैं पानी पीने जा रहा हूँ।

“मैं तुम्हारे लिए पानी ला देता हूँ।”—स्कली एकाएक बोल पड़ा।

“नहीं।”—स्वीडनवासी ने तिरस्कार से कहा—“मैं स्वयं ही ले लूंगा।” वह उठा और मालिक की तरह भाव प्रदर्शित करता हुआ होटल के दूसरे भाग में चला गया।

जैसे ही स्वीडनवासी इतनी दूर चला गया कि वह कुछ सुन ही नहीं सके, स्कली ने खड़े होकर फुसफुसाते हुए दूसरों से कहा—“ऊपर जब हम लोग थे तब वह सोच रहा था कि मैं उसे जहर देने की कोशिश कर रहा हूँ।”

जानी ने कहा—“यह मुझे बहुत ही खराब लगता है। उसे आप होटल के बाहर क्यों नहीं कर देते?”

“क्यों, अब यह बिल्कुल ठीक है।”—स्कली ने घोषणा की—“बात इतनी ही है कि वह पूरब से आया है और सोचता है कि यह जगह बहुत ही नीरस है। बस इतनी-सी तो बात है। अब वह बिल्कुल ठीक है।”

पूरबवासी ने चरवाहे को प्रशंसा की नजरों से देखा। “तुम ठीक कहते थे।”—उसने कहा—“तुम ठीक समझते थे कि वह डच है।”

“अच्छा।”—जानी ने पिता से कहा—“हो सकता है अब वह बिल्कुल ठीक हो, लेकिन मुझे ऐसा नहीं जान पड़ता। पहले वह डरा हुआ था, लेकिन अब वह हरा नजर आता है।”

स्कली जब भी बोलता था, तब उसकी भाषा में आइरिश ब्रोग और मुहावरे, पश्चिमी झंकार और मुहावरे और कहानी की किताबों और समाचार-पत्रों का पुट रहता था। अब उसने अजीब भाषा में अपने पुत्र पर प्रहार किया। “जानते हो, मैं क्या करता हूँ? क्या करता हूँ मैं आखिर?”—उसने कड़ी आवाज से पूछा। उसने अपने घुटने पर बहुत ही प्रभावोत्पादक ढंग से हाथ मारा, जिससे यह समझ में आता था कि वह स्वयं ही उत्तर देने जा रहा है और सभी उसे गौर से सुनें।

“मैं होटल चलाता हूँ!”—वह चिल्लाया—“होटल, समझे तुम! होटल में रहनेवाला मेहमान देवता के समान है। किसी को उसे तंग नहीं करना चाहिए

न उससे कोई ऐसी बात ही कही जानी चाहिए, जिससे वह होटल छोड़ कर चला जाय। मैं इसे सहन नहीं कर सकता। इस शहर में ऐसा कोई नहीं है जो यह कह सके कि मेरे मेहमान को उसने इसलिए शरण दी है कि वह यहाँ रहने में डरता है।” चरवाहे और पूरबवासी को संकेत करते हुए उसने जोरों से पूछा— “ठीक कहता हूँ मैं ?”

“हाँ, मिस्टर स्कली !”—चरवाहे ने कहा—“मेरी समझ से आप ठीक कहते हैं।”

“हाँ, मिस्टर स्कली !”—पूरबवासी ने कहा—“मेरी समझ से आप ठीक ही कहते हैं।”

— ५ —

६ बजे सायंकालीन भोजन के समय स्वीडनवासी किसी इंजिन के चक्के की तरह फूटकार रहा था। कभी-कभी ऐसा लगता था कि वह जोर-जोर से गाने लगेगा और उसके पागलपन को बूढ़ा स्कली प्रोत्साहित करता था। पूरबवासी एकदम खामोश बैठा रहा। चरवाहा खाना-पीना भूल आश्चर्य से मुँह खोले देखता रहा और जानी भोज्य सामग्री से भरी बड़ी-बड़ी प्लेटों को साफ करता गया। घर की लड़कियों को जब बिस्कुट लाने को कहा गया, तब वे भारतीय लड़कियों की तरह सहमी-सहमी आयीं और बिस्कुट देने के साथ ही प्रत्यक्ष भय के साथ भाग खड़ी हुई। इस भोज में स्वीडनवासी ही प्रमुख दिखता था और वह यूनान के किसी क्रूर देवता की तरह नजर आ रहा था। ऐसा लगता था कि वह अचानक ही और लम्बा हो गया है। उसने पूर्ण तिरस्कृत दृष्टि से सभी व्यक्तियों को घूरा। उसकी आवाज कमरे में गूँजती रही। एक बार जब उसने बिस्कुट लेने के लिए अपने कांटे को बिस्कुट में गड़ाया, तब पूरबवासी का हाथ जल्मी होते-होते बच गया क्योंकि उसी बिस्कुट के लिए पूरबवासी धीरे-धीरे अपना हाथ बिस्कुट के पास ले जा चुका था।

भोजन के बाद जब सब लोग दूसरे कमरे की ओर जाने लगे, तब स्वीडनवासी ने स्कली के कंधे पर एक जोर का धाप दिया। “बूढ़े मियाँ, खाना बहुत ही लाजवाब था।” जानी ने आशा भरी नजरों से अपने पिता को देखा। वह जानता था कि बहुत पहले एक बार गिर जाने के कारण उसका (पिता का) कंधा कमजोर हो गया है और वास्तव में एक क्षण ऐसा लगा भी कि स्कली इस पर उखड़ पड़ेगा ; लेकिन अन्त में वह कमजोर हँसी हँसकर खामोश रह

गया। उसके हाव-भाव से दूसरों ने इस बात को समझा कि वह स्वीडनवासी के नये विचारों की जिम्मेदारी को स्वीकार करता है।

जानी अपने पिता को एक तरफ ले जाकर बोला— “आप किसी को उसे सीढ़ी से नीचे धकेल देने की ही अनुमति क्यों नहीं देते?” उत्तर में स्कली ने क्रोधपूर्ण आकृति बना ली।

जब वे फिर स्टोव के पास आकर जम गये, तब स्वीडनवासी ने फिर से ‘हाई फाइव’ खेलने पर जोर दिया। स्कली ने सर्वप्रथम बहुत ही नम्र शब्दों में ऐसा करने को मना किया, जिस पर स्वीडनवासी ने भेड़िये की तरह उसे देखा। बूढ़ा बिचारा शान्त हो गया और स्वीडनवासी दूसरों से खेलने के लिए आग्रह करने लगा। उसके कहने में बहुत बड़ी धमकी का आभास था। चरवाहे और पूरबवासी ने अनमने भाव से खेलना स्वीकार कर लिया। स्कली ने कहा कि अभी उसे ६.५८ बजे की ट्रेन देखने जाना है। अतः स्वीडनवासी ने धमकी भरी दृष्टि से जानी की ओर देखा। एक क्षण उनकी नजरें तेज चाकुओं की तरह भिड़ गयीं। फिर जानी ने मुस्कराकर कहा— “हाँ, मैं खैलूंगा।”

उन्होंने वर्ग-सा चौकोर बना लिया और बोर्ड को अपने घुटनों पर टिका लिया। पूरबवासी और स्वीडनवासी फिर से भागीदार बन गये। खेल चलता रहा, लेकिन इस बार चरवाहा हमेशा की तरह बोर्ड पर बार-बार मुक्का नहीं मारता था। इस बीच स्कली रोशनी के नजदीक बैठा अपना चश्मा लगाये समाचार-पत्र पढ़ता रहा। अभी देखने में वह बूढ़े पुजारी की तरह लग रहा था। समय होने पर वह ६.५८ बजे की ट्रेन देखने के लिए बाहर चला गया। जाते समय बहुत बचाव के बाद भी दरवाजा खोलते समय ध्रुवीय हवा का एक झोंका कमरे में फैल गया। इस झोंके से ताश के पत्ते तो तितर-बितर हो ही गये, खिलाड़ी लोग भी ठंड से काँप उठे। स्वीडनवासी ने बुरी तरह श्राप दिया। जब स्कली लौटा, तब उसके आगमन से सुखद और मित्रतापूर्वक वातावरण में थोड़ी बाधा उपस्थित हो गयी। स्वीडनवासी ने फिर शाप दिया, लेकिन अभी वे अपने खेल में बहुत ही मग्न थे, उनके सिर आगे की ओर झुके हुए थे और उनकी उँगलियाँ बहुत तेजी से चल रही थीं। अब स्वीडनवासी ने बोर्ड पर मुक्का मारने का तरीका अपना लिया था।

स्कली अपने समाचार-पत्र से बहुत देर तक उलझता रहा। रोशनी तेजी से जल रही थी। इसलिए बीच में वह एक बार उसकी बत्ती ठीक करने के लिए उठा। समाचारपत्र के पन्ने जब-जब वह उलटता था, उससे बहुत ही धीमी

और सहमी हुई खरखराहट की आवाज होती थी। तभी अचानक ही उसने ये भयंकर शब्द सुने—“तुम बेईमानी कर रहे हो।”

इस तरह के दृश्य प्रायः यह साबित करते हैं कि इस वातावरण में नाटकीयता का पुट बहुत कम है। कोई भी कमरा किसी दुखद घटना का कारण बन सकता है, कोई भी कमरा सुखद घटना का क्रीड़ास्थल भी बन सकता है। यह छोटा-सा गंदा कमरा अब यातनादायक कमरे की तरह डरावना लगता था। इस घटना से तत्काल ही सभी व्यक्तियों के चेहरे पर एक नया ही रंग आ गया। स्वीडनवासी जानी के सामने मुक्का ताने खड़ा था और जानी अपने को दोषी करार देनेवाले को एकटक देख रहा था। पूरबवासी पीला पड़ गया था, चरवाहे के जबड़े आश्चर्य से उसी प्रकार लटक गये थे, जैसा कि उसके साथ हमेशा होता था। उन शब्दों के बाद कमरे में पहली आवाज स्कली के अखबार की हुई, जो उसके हाथों से छूटकर पाँव पर गिर गया। उसका चश्मा भी उसकी नाक से खिसक पड़ा, लेकिन हवा में ही पकड़ लेने के कारण वह फूटने से बच गया। चश्मे को अच्छी तरह पकड़े हुए उसका हाथ कंधे के पास अजीब तरह से रुका हुआ था। उसने ताश खेलने वालों को घूर कर देखा।

शायद एक सेकंड तक शान्ति छाई रही। फिर यदि उस समय उन व्यक्तियों के नीचे से अचानक ही जमीन खिसक जाती, तो भी वे जल्दी नहीं खिसक सकते थे। पाँचों व्यक्तियों की दृष्टि एक ही ओर थी। घटना यह हुई कि जानी स्वीडनवासी पर उछलने के लिए जब उठ रहा था, ताश और बोर्ड की ओर से लापरवाह रहने के कारण थोड़ा लड़खड़ा गया। इसी थोड़े से क्षण में स्कली नजदीक आ पहुँचा और स्वीडनवासी को जोर से धक्का देने का चरवाहे को मौका मिल गया, जिससे वह भी लड़खड़ाते हुए पीछे जा गिरा। सभी ने एक साथ ही बोलना शुरू कर दिया। उनकी आवाजों में गुस्से की रूखी चिल्लाहट, शान्ति की अपील या भय सम्मिलित थे। चरवाहे ने जोरों से स्वीडनवासी को धक्का देकर पीछे हटाया और पूरबवासी तथा स्कली अच्छी तरह जानी को पकड़े रहे, लेकिन शान्त करनेवालों के पकड़े रहने पर भी दोनों ही बहादुर की भाँति अपना सिर निकाले उबलती नजरोँ से एक-दूसरे को ललकारते रहे।

बोर्ड तो उलट ही चुका था और ताश के पत्ते फर्श पर बिखरे पड़े थे। बेबकूफों की तरह अपने ऊपर हो रही लड़ाई को देख रहे मोटे और रंगे राजाओं और रानियों को लोगों के जूते उन्हें अपने तले से घिसते जा रहे थे।

स्कली इस हल्ले-गुल्ले में सबसे अधिक जोरों से बोल रहा था—“अब एक

भी जाओ। मैं कहता हूँ ठहरो। ठहरो, अब.....”

जानी स्कली और पूरबवासी द्वारा बनाये गये किले को तोड़ने का प्रयास करते हुए चिल्ला रहा था—“वह कहता है, मैंने बेईमानी की। वह बोलता है, मैंने बेईमानी की। कोई मुझे बेईमान कहे, इसे मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। यदि वह कहता है कि मैंने बेईमानी की तो वह एक.....”

चरवाहा स्वीडनवासी से कह रहा था—“छोड़ो भी अब। शान्त हो जाओ, सुनते हो तुम।” स्वीडनवासी का चिल्लाना जारी ही रहा—“उसने बेईमानी की। मैंने देखा है। मैंने देखा है।” पूरबवासी कुछ धीमी, परन्तु कड़ी आवाज में कह रहा था—“अरे, क्षण भर ठहरो भी।”

इस हल्ले-गुल्ले में कोई भी वाक्य पूरा सुनायी नहीं दे रहा था। “बेईमान, छोड़ो...वह कहता...” उस हल्ले-गुल्ले में ये ही शब्द अधिक तेज थे, जो सुनायी दे रहे थे। सब से मार्क की बात थी कि बिला शक सब से ज्यादा हल्ला स्कली कर रहा था, लेकिन इस झगड़े में सबसे कम उसी की आवाज सुन पड़ती थी।

तभी अचानक गम्भीर शान्ति छा गयी, जैसे सभी साँस लेने को रुक गये हों, जब कि कमरे में अभी भी लोग गुस्से से भरे खड़े थे। ऐसा जान पड़ता था कि जल्द ही कोई संघर्ष नहीं होगा और तभी जानी जोर लगाता हुआ आगे बढ़कर स्वीडनवासी के आमने-सामने होने में सफल हो गया। “तुमने क्यों कहा कि मैंने बेईमानी की? तुमने क्यों कहा कि मैंने बेईमानी की? मैं बेईमानी नहीं करता।”

स्वीडनवासी ने कहा—“मैंने देखा है, मैंने देखा है।”

“जो भी मुझे बेईमान कहेगा, मैं उससे लड़ाई करूँगा।”—जानी चिल्लाया।

“नहीं, तुम नहीं लड़ सकते।”—चरवाहे ने कहा—“यहाँ लड़ाई नहीं कर सकते।”

“ओह, चुप रहो, नहीं रहोगे चुप तुम?”—उनके बीच आते हुए स्कली ने कहा।

पूरबवासी की आवाज अच्छी तरह सुनी जा सकती थी। वह दुहरा रहा था—“ओह, क्षण भर रुको भी, नहीं रुकोगे? ताश के खेल में झगड़ने से क्या फायदा है? क्षण भर रुको भी।”

जानी ने क्रोध से जलता अपना लाल चेहरा अपने पिता के कंधे से ऊपर लाते हुए फिर स्वीडनवासी से पूछा—“तुमने मुझे बेईमान कहा?”

फिर, स्वीडनवासी ने दौत दिखाते हुए कहा—“हाँ”,

फिर जानी ने कहा—“हमारी जरूर लड़ाई होगी।”

“हाँ, हाँ लड़ो।”—स्वीडनवासी गरजा। उस पर जैसे भूत सवार हो गया था।

“हाँ लड़ो, मैं तुम्हें दिखा दूँगा कि मैं कैसा आदमी हूँ। मैं तुम्हें दिखा दूँगा कि तुम किससे लड़ना चाहते हो। तुम सोचते हो कि मैं नहीं लड़ सकता। तुम सोचते हो कि मैं नहीं लड़ सकता। मैं तुम्हें दिखा दूँगा, चमरचिट्ट, बेईमान! हाँ, तुमने बेईमानी की। तुमने बेईमानी की। तुमने बेईमानी की।”

हमला रोकने की चेष्टा में चरवाहे के माथे से पसीना छूट रहा था। उसने नैराश्य भाव से स्कली से कहा—“अब तुम क्या करने जा रहे हो?”

बूढ़े के सेल्टिक चेहरे पर एक परिवर्तन नजर आया। वह बहुत ही उत्सुक दीख पड़ता था, उसकी आंखें जल रही थीं।

“लड़ने दो इन्हें!”—साहस से उसने उत्तर दिया—“मैं और अधिक इसको सहन नहीं कर सकता। मैं इस स्वीडनवासी की बदतमीजी सहते-सहते परेशान हो गया हूँ। हम उन्हें लड़ने देंगे।”

— ६ —

लोग बाहर जाने को तैयार हो गये। पूरबवासी इतना अधिक घबड़ा गया था कि उसने चमड़े का जो नया कोट पहन रहा था, उसमें उसके हाथ जल्दी घुस ही नहीं रहे थे। चरवाहे ने जब अपनी रोयेंदार टोपी अपने कान के नीचे खींची, तब उसका हाथ काँप गया। वास्तव में सिर्फ जानी और स्कली ने ही कोई भय प्रकट नहीं किया। ये सब प्रारम्भिक तैयारियाँ बिना एक शब्द बोले ही हो गयीं।

स्कली ने दरवाजा खोल दिया। “अच्छा, आ जाओ।”—उसने कहा। हवा का एक गहरा झोंका आया, जिसके कारण प्रदीप की रोशनी अपनी बत्ती से लड़ती नजर आ रही थी और चिमनी के ऊपर से काले धुएँ का गुब्बारा निकल रहा था। स्टोव हवा के झोंके की मध्य धार में था और उसकी आवाज आंधी की आवाज की बराबरी कर रही थी। आंधी की चपेट में फर्श पर इधर-उधर पड़े ताश के चन्द पत्ते आ गये और बेबस-से दूसरी तरफ की दीवाल से जा टकराये। सभी व्यक्ति सिर नीचा किये तूफान में निकल पड़े, जैसे समुद्र में चल पड़े हों।

बर्फ नहीं गिर रही थी, लेकिन तेज हवा के कारण बर्फ के टुकड़े जमीन से उड़ कर बादल की तरह हवा में तैरते हुए गोली की तेजी के साथ दक्खिन की

ओर बहते जा रहे थे। बर्फ से ढँकी जमीन अपार्थिव साटीन की प्रभा के कारण नीली लग रही थी और सिवाय नीचे की ओर के काले रेल्वे स्टेशन को छोड़कर, जो अविश्वनीय रूप से बहुत दूर लग रहा था और जहाँ एक छोटे हीरे की तरह एक रोशनी चमक रही थी, कोई दूसरा रंग नहीं दिखायी दे रहा था। जब सभी लोग जाँघ तक बर्फ की कीचड़ में धँसते-से चल रहे थे, तब स्वीडन-वासी कुछ बकता जा रहा था। स्कली उसके पास गया और उसके कंधे पर अपना एक हाथ रख अपना कान उसकी ओर बढ़ा दिया। “तुम क्या कह रहे हो?”—वह चिल्लाया।

“मैं कहता हूँ”—स्वीडनवासी फिर बड़बड़ाया—“मैं इस दल के सामने अधिक देर तक टिक नहीं सकता। मैं जानता हूँ कि तुम सभी मुझ पर टूट पड़े हो।”

स्कली ने सांत्वना देते हुए उसकी बांहें सहलायीं। “धत्, बेवकूफ।”—वह चिल्लाया। हवा ने स्कली के होठों से निकले शब्दों को तोड़ दिया और उन्हें चारों ओर बहुत दूर तक फैला दिया।

तुरन्त ही सभी ने अपनी पीठ हवा की ओर मोड़ दी और होटल की सुरक्षित दिशा की ओर एक कोने में ठहर गये। इस बर्फानी विनाश के समय वे बड़ी-बड़ी घासों को, जो अंग्रेजी के ‘बी’ अक्षर की तरह जमीन में बेतरतीबी से उगी थीं और पैरों के नीचे चरमरा उठती थीं, सुरक्षित रखना मानो इस छोटे-से घर की जिम्मेदारी थी। कोई भी यह भली भाँति समझ सकता था कि हवा का रुख किस ओर था, उधर बर्फ का ढेर बढ़ता जा रहा था। दल जब इसकी अपेक्षा कुछ शांतिपूर्ण स्थल पर पहुँचा, तब स्वीडनवासी अभी भी चिल्लाता जा रहा था।

“ओह, मैं जानता हूँ, यह क्या चीज है। मैं जानता हूँ कि तुम सभी मुझ पर टूट पड़ोगे। मैं तुम सब को नहीं हरा सकता।”

स्कली चीते के समान उसकी ओर घूमा। “तुम्हें हम सब से लड़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी। तुम्हें सिर्फ मेरे लड़के जानी से ही लड़ना होगा और इस बीच तुम्हें जो छेड़ेगा, उसे पहले मुझसे भुगतना पड़ेगा।”

तेजी से तैयारी हो गयी। स्कली की कठोर आज्ञा से, जिसका चेहरा हल्की-सी रोशनी में चित्रों में रोम के बहादुरों के चेहरे के समान दिखायी दे रहा था, दोनों व्यक्ति आमने-सामने हो गये। पूरबवासी के दाँत कटकटा रहे थे और वह यांत्रिक खिलौने की तरह ऊपर-नीचे हो रहा था। चरवाहा पत्थर की भाँति खड़ा था।

लड़नेवालों ने अपने कपड़े नहीं निकाले थे। प्रत्येक साधारण वस्त्र में था। उनके मुँह के तने हुए थे और दोनों ने एक-दूसरे को ठंडी नजरों से देखा, जिनमें सिंह के समान क्रूरता भरी हुई थी।

इसी विराम-काल में पूरबवासी के मस्तिष्क में तीन व्यक्तियों के चेहरों का अमिट भाव फिल्म की भाँति अंकित हो गया—कठोर और शांत इस उत्सव का सर्वेसर्वा; पीला, हलचल-रहित और भयानक स्वीडनवासी; और शान्त लेकिन भयानक उग्र पशु के समान बहादुर जानी। इस समूचे शांत उपक्रम में बहुत बड़ा शोकान्त नाटक था, जो हलचल से भी बड़ा था और जिसे इस भयानक बर्फीले तूफान की लम्बी और रसमय गूंज, जैसे-जैसे हवा में उड़ते बर्फ के टुकड़े दक्खिन के गहन अन्धकार में बहते चले जा रहे थे, और भी मजबूत बनाती जा रही थी।

“अब !”—स्कली ने कहा।

दोनों लड़ाकू आगे बढ़े और सांड की तरह आपस में टकरा गये। घूसेबाजी की हल्की-हल्की आवाज के साथ किसी के मुँह से दाँत पीस-पीसकर बोलने की आवाज भी सुन पड़ती थी।

दर्शकों में पूरबवासी ने प्रारम्भिक तैयारियों में गर्म हो गये वातावरण से छुटकारा पाने के कारण एक लम्बी साँस ली। चरवाहा हवा में ही भूंकता रहा। स्कली एक जगह खड़ा इस लड़ाई की भयानकता को घोर आश्चर्य और भय से देख रहा था, जिसकी आज्ञा और व्यवस्था उसने स्वयं ही की थी।

अन्धकार में हो रही लड़ाई में कुछ समय तक सिवाय तेजी से घूम रहे हाथों के और कुछ दिखायी ही नहीं दे रहा था और ऐसा लग रहा था कि कोई चक्र तेजी से घूम रहा है। कभी-कभी कोई प्रेत-तुल्य और खून के दागों से चिन्हित चेहरा चमक जाता था। एक क्षण के बाद यदि रह-रह कर फुसफुसाहटों के बीच उनके कसमें खाने की आवाजें नहीं सुनायी देतीं, तो आकृतियाँ-सी नजर आने लगतीं।

अचानक ही चरवाहे में लड़ाई के प्रति चेतना जागृत हुई और वह बाँको की गति से छलांग लगाकर आगे आया। “शाबास जानी। शाबास। मार दो उसको। मार दो।”

स्कली उसके सामने आ गया। “पीछे रहो !”—उसने कहा और उसकी दृष्टि देखकर ही चरवाहा समझ गया कि यह जानी का पिता बोल रहा है।

पूरबवासी एक ही तरह की लड़ाई देखते-देखते नीरसता और घृणा महसूस

करने लगा। उसकी समझ से ये अस्पष्ट उलझे विचार आन्तरिक थे, जो इस बेकार की लड़ाई को समाप्त होते देखने के इच्छुक थे। एक बार जैसे ही वे लड़ते-लड़ते उसके पास आये, वह जल्दी से पीछे हट गया। उसने उन्हें यंत्रणा पाये हुए मनुष्य की भाँति हाँफते देखा।

“मार डालो, जानी। मार डालो। मार डालो।” चरवाहे का चेहरा संग्रहालय में रखी ऐंठी हुई बनावटी शकल की तरह लग रहा था।

“चुप रहो।”—स्कली ने शान्तिपूर्वक कहा।

तभी अचानक अधूरी, छोटी, लेकिन तेज गुराँहट सुनायी पड़ी और जानी का शरीर स्वीडनवासी के शरीर से अलग होकर घास पर दुर्बल अवस्था में गिर पड़ा। उन्मत्त स्वीडनवासी अपने गिरे हुए प्रतिद्वंद्वी के शरीर पर जैसे ही चढ़ बैठने को था कि चरवाहे ने उसे रोक दिया। “नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते।”

स्कली अपने बेटे के पास था। “जानी। जानी, मेरे बेटे।” उसकी आवाज ममता और दुःख से भरी हुई थी। “जानी। क्या तुम और लड़ सकते हो?” उसने चिंतित हो अपने बेटे के फूले और खून लगे चेहरे को देखा।

एक क्षण शान्ति रही और अब जानी ने साधारण आवाज में उत्तर दिया—“हाँ, मैं....लड़....हाँ।”

अपने पिता की सहायता से वह उठ खड़ा हुआ। “अब थोड़ी देर रुक कर सुस्ता लो।”—बूढ़े स्कली ने कहा।

कुछ कदम की दूरी पर चरवाहा स्वीडनवासी को लेक्चर दे रहा था—“नहीं तुम ऐसा नहीं कर सकते। एक सेंकड रुक जाओ।”

पूरबवासी स्कली की बाँहें पकड़ कर खींच रहा था। “ओह, बहुत हो गया”—उसने सिफारिश की—“बस, काफी है। जैसे है वैसे ही जाने दो। यही काफी है।”

“बिल!”—स्कली ने कहा—“हट जाओ रास्ते से।” चरवाहा एक ओर हट गया। अब लड़ाकू जब टकराने के लिए आगे बढ़े, तब वे नवीन रूप से उत्तेजित और सावधान थे। दोनों ने एक-दूसरे को क्रोधभरी निगाहों से देखा और स्वीडनवासी ने अपनी पूरी ताकत लगाकर उस पर तेजी से मुक्के का निशाना लगाया। कमजोरी के कारण जानी अपनी आधी बुद्धि खो चुका था, लेकिन वह चमत्कृत रूप में एक ओर हट गया और संतुलन खो चुके स्वीडनवासी को ऐसा मुक्का मारा कि वह दूर जा गिरा।

चरवाहा, स्कली और पूरबवासी विजयी सिपाहियों की तरह खुलकर हँस पड़े, लेकिन हँसी बंद होने के पहले ही स्वीडनवासी जल्दी से उठकर खड़ा हुआ और तेजी से अपने दुश्मन पर टूट पड़ा। फिर से हवा में सिर्फ बाहें उड़ती दीख पड़ीं और फिर जानी का शरीर हवा में झूलकर ऐसे गिरा, जैसे छत से कोई गट्ठर जमीन पर गिर पड़ा हो। स्वीडनवासी हवा के झोंके से झूल रहे पास के वृक्ष के तने का सहारा लेकर खड़ा हो इंजिन की तरह साँस लेने लगा और जानी के ऊपर झुके हुए लोगों को एक-एक कर जलती निगाहों से देखने लगा। वह उस समय बिलकुल असहाय और अकेला प्रतीत हो रहा था। जब पूरबवासी ने जमीन पर पड़े व्यक्ति की ओर से निगाहें हटाकर एक बार इंतजार कर रहे उस विचित्र और अकेले व्यक्ति को देखा।

“क्या अब भी तुम में कुछ शक्ति है जानी?”—स्कली ने टूटी आवाज में पूछा।

बेटे ने साँस ली तथा थोड़ी-सी आँखें खोलीं। एक क्षण के बाद उसने उत्तर दिया—“नहीं...मैं अब नहीं लड़ सकता...मैं ठीक नहीं हूँ...बिलकुल...ठीक नहीं हूँ।” फिर लज्जा और कमजोरी से वह रोने लगा और आँसू चेहरे पर के खून के दाग से घुलते-मिलते नीचे गिरने लगे। “वह मेरे लिए बहुत...बहुत... भारी था।”

स्कली तनकर खड़ा हो गया और इंतजार कर रहे स्वीडनवासी की ओर मुखातिब हो शांत स्वर में बोला—“अजनबी, हम लोग हार गये।” फिर उसकी आवाज में बहुत ही तेजी से परिवर्तन हुआ, जैसा साधारणतः बहुत ही असाधारण और गम्भीर धोषणाओं में हुआ करता है। “जानी हार गया।”

बिना कोई उत्तर दिये विजयी स्वीडनवासी होटल के सामनेवाले रास्ते की ओर चल पड़ा। चरवाहा दुरूह और नयी-नयी गालियाँ बक रहा था। पूरबवासी यह देख चकित था कि वे ऐसी हवा में बाहर निकले थे, जो सीधे उत्तरी ध्रुव से आती जान पड़ती थी। उसने महसूस किया कि इतनी देर से बराबर उसे ठंड लग रही है और यह देख ताज्जुब हुआ कि अभी तक वह मरा नहीं है। पराजित व्यक्ति के प्रति वह बिलकुल उदासीन था।

“क्या तुम चल सकते हो जानी?”—स्कली ने पूछा।

“क्या मैंने उसे चोट पहुँचायी है? उसको चोट लगी है?”—बेटे ने पूछा।

“क्या तुम चल सकते हो बेटे? क्या तुम चल सकते हो?”

जानी की आवाज अचानक ही दृढ़ हो गयी। वह बहुत ही अधीर था।

“मैं पूछता हूँ, क्या मैंने उसे चोट पहुँचायी है?”

“हाँ, हाँ, जानी।”—चरवाहे ने सांत्वना देते हुए उत्तर दिया—“उसे बहुत

चोट लगी है।” उन्होंने उसे जमीन से उठाया और जैसे ही वह उठ खड़ा हुआ, सहायता देनेवालों की कोशिशों को बेकार करते हुए उन्हें झटक दिया। जब वह दल उस कोने से निकल कर आया, तब बर्फ के टुकड़ों के कारण सभी अंधे-से हो गये थे। इससे उनका चेहरा आग के समान जल रहा था। चरवाहा जानी को ढोता हुआ होटल के दरवाजे के अन्दर ले गया। जैसे ही उन्होंने भीतर प्रवेश किया, फिर कुछ ताश के पत्ते फर्श पर से उड़कर दीवाल से जा टकराये।

पूरबवासी जल्दी से स्टोव की ओर बढ़ा। उसे इतनी अधिक ठंड लग गयी थी कि वह करीब-करीब जलते लोहे को अपने सीने से लगाने की हिम्मत कर सकता था। स्वीडनवासी कमरे में नहीं था। जानी कुर्सी पर बैठ गया और बाहों को घुटनों से टेक अपना मुंह उसमें छिपा लिया। स्कली स्टोव से एक के बाद दूसरा पैर सेंकते हुए स्वयं से ही बातें करता रहा। चरवाहे ने अपनी रोयेंदार टोपी उतार ली थी और उदासी तथा घबड़ाहट में एक हाथ से अपने सिर को सहला रहा था। स्वीडनवासी अपने कमरे में इधर-उधर चहलकदमी कर रहा था, जिसकी आवाज लोग सुन सकते थे।

रसोईघर की ओर खुलनेवाले दरवाजे के अचानक ही खुलने से वहाँ छाया हुई शांति भंग हो गयी। इसके तुरन्त बाद औरतों की एक भीड़ आ गयी। सभी एक साथ ही जानी की हालत पर विलाप करने लगीं। जानी को रसोई-घर से वापस ले जाने के पहले, जहाँ वे उसे सहानुभूति और गालियों से पुचकारतीं तथा जोर-जोर से औरतों की आदत के अनुसार भाषण देतीं, उसकी माँ तनकर खड़ी हो गयी और स्कली को कड़ी निगाहों से एक टक घूरती हुई बोली—“तुम्हारे लिए बहुत शर्म की बात है, पैट्रिक स्कली।” वह चिल्लायी—“तुम्हारे अपने लड़के को ही। शर्म करो तुम!”

“चुप भी रहो अब।”—बूढ़े ने कमजोर आवाज में कहा।

“शर्म की बात है, तुम्हारे लिए पैट्रिक स्कली।” लड़कियों ने काँप रहे चरवाहे और पूरबवासी को क्रोध से देखते हुए यही नारा लगाया। फिलहाल वे जानी को साथ लेकर अंदर चली गयीं और तीनों पुरुषों को उदासीन अवस्था में छोड़ गयीं।

“मैं उस डच से स्वयं ही लड़ना चाहता था।”—चरवाहे ने गहरी शांति

को भंग करते हुए कहा।

स्कली ने दुःखी हो सिर हिलाया— “नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। यह ठीक नहीं होगा। यह ठीक नहीं होगा।”

“क्यों, क्यों अच्छा नहीं होगा?”— चरवाहे ने जिरह की— “मैं इसमें कोई नुकसान नहीं देखता।”

“नहीं।”— बहादुर दुःखी की तरह स्कली ने उत्तर दिया— “यह ठीक नहीं होगा। यह जानी की लड़ाई थी और हमें उसे सिर्फ इसलिए नहीं मारना चाहिए क्योंकि उसने जानी को मारा है।”

“हाँ, यह बिलकुल ठीक है।”— चरवाहे ने कहा— “लेकिन वह मुझ से नये सिरे से लड़ ले। मैं उसे अधिक नहीं सह सकता।”

“तुम उससे एक शब्द भी नहीं कहोगे।”— स्कली ने आज्ञा देते हुए कहा और तभी उन्होंने सीढ़ियों से स्वीडनवासी के उतरने की आवाज सुनी। उसने नाटकीय रूप से कमरे में प्रवेश किया। दरवाजे को उसने शेखी से पीट दिया और कमरे के बीच में आ खड़ा हुआ। किसी ने भी उसकी ओर नहीं देखा। “अच्छा!”— स्कली से जोर से बोलते हुए उसने कहा— “मेरा अनुमान है, अब तुम बता सकोगे कि मुझे कितने पैसे तुम्हें देने हैं?”

बूढ़ा शांत रहा। “तुम्हारे यहाँ मेरा कुछ भी बाकी नहीं है।”

“हूँ!”— स्वीडनवासी ने कहा— “हूँ, कुछ भी बाकी नहीं है।”

चरवाहे ने स्वीडनवासी से कहा— “अजनबी, मैं समझ नहीं पाता कि तुम यहाँ इतने खुश नजर क्यों आते हो?”

बूढ़ा स्कली तुरन्त ही सावधान हो गया। “ठहरो।”— अपना खुला हाथ आगे बढ़ाते हुए उसने कहा— “बिल, चुप रहो तुम।”

चरवाहे ने लापरवाही के साथ कूड़ा डालने के बक्स में थूक दिया। “मैंने कुछ भी नहीं कहा, कहा है मैंने कुछ?”— उसने पूछा।

“मिस्टर स्कली”— स्वीडनवासी ने पुकारा— “कितने पैसे बाकी हैं आपके?” वह वहाँ से रवाना होने को बिलकुल तैयार था और उसका चमकता बेग उसके हाथ में था।

“तुम्हारे यहाँ मेरा कुछ भी बाकी नहीं है।”— स्कली ने पहले की तरह ही दुहराया।

“हूँ।”— स्वीडनवासी ने कहा— “शायद तुम ठीक कहते हो। जहाँ तक मैं

समझता हूँ, यदि कुछ होगा भी, तो मेरा ही तुम्हारे यहाँ। शायद यही बात है।” वह चरवाहे की ओर मुड़ा। “मार डालो। मार डालो।”—उसने उसकी नकल उतारी और विजयी की तरह अट्टहास किया—“मार डालो।” वह व्यंगात्मक हँसी से हिल उठा।

लेकिन शायद वह मुर्दों से मजाक कर रहा था। तीनों व्यक्ति बिना हिले-डुले चुपचाप अपनी स्थिर नजरों से स्टोव को घूर रहे थे।

स्वीडनवासी ने दरवाजा खोला और खामोश दल को एक बार धूमकर उपहास की दृष्टि से देखता हुआ आंधी में चला गया।

जैसे ही दरवाजा बंद हुआ, स्कली और चरवाहा कूद कर खड़े हो गये और गालियाँ देने लगे। वे हवा में मुक्का चलाते हुए आगे-पीछे घूमते रहे। “ओह, बहुत ही बुरा समय था। उसका व्यंग और उपहास तो और भी। उस समय उसकी नाक पर एक घूँसा मारना मेरे लिए चालीस डालर के बराबर था। तुमने इसे कैसे सहन किया, बिल?”

“मैंने कैसे सहन किया?”—चरवाहा काँपती आवाज में चिल्लाया—“मैंने कैसे सहन किया! ओह!”

बूढ़ा अचानक ही प्रलाप करने लगा—“मैं उस स्वीडनवासी को अच्छी तरह पीटता। उसे पत्थर पर पटक कर बेंत से मार-मार कर उसकी चटनी बना देता।”

चरवाहे ने सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा—“मैं उसकी गर्दन पकड़ कर तोड़ देता।” उसने कुर्सी पर बहुत जोरों से हाथ पटका, जिससे गोली की आवाज की तरह हल्ला हुआ।

“जब तक वह मर नहीं जाता, तब तक उसे पीटता ही रहता।”

“मैं उसे तब तक पीटता, जब तक.....”

“मैं उसे बह दिखाता.....”

और तब वे एक साथ ही उन्मत्त होकर चिल्ला पड़े—“ओह, ओ...ओ...ह... अगर हम सिर्फ.....कर सकते।”

“हौ.....”

“हौ.....”

“और तब मैं.....”

“ओह...ओ...ओह...ह।”

- ८ -

स्वीडनवासी मजबूती से अपना बैग पकड़े आंधी का सामना करते ऐसे चलता गया, जैसे वह जहाज चला रहा हो। वह कुछ कुछ नंगे वृक्षों की पंक्तियों के सहारे यह समझ कर चला जा रहा था कि निश्चय ही उन्हें सड़क के किनारे होना चाहिए। जानी के मुक्के की मार के कारण चेहरे में चोट लगी रहने पर भी वह इस हवा और बर्फ में दर्द के बदले आनंद पा रहा था। अन्त में उसे कई वर्गिकार आकार दिखायी दिये और वह समझ गया कि वे मुख्य शहर के अन्दर के मकान हैं। उसने एक गली देखी और उसी में घूमता चलता गया और जब किसी मुकड़ पर हवा का तेज झोंका आता, तब वह झुकता हुआ निकल जाता।

हो सकता है कि वह एक उजाड़ गांव में रहा हो। हम मत्त और विजयी मानवों से भरे विश्व का चित्रण करते हैं, लेकिन यहाँ बिगुल की-सी तीव्र आवाज में अपनी उपस्थिति की सूचना देनेवाले तूफान में मनुष्यों से भरे किसी भूमिखंड की कल्पना बड़ी कठिन थी। तब किसी भी मनुष्य के अस्तित्व को कोई भी चमत्कार मानता और इन कीड़ों को, जो किसी घुमाव भ्रमण के प्रति चिपके धुएँ से काले पड़े बर्फ में बंद बीमारी से पीड़ित उजड़े पौधों से लगे थे, सुन्दर चमत्कार स्वीकार करता। इस तूफान ने यह जाहिर कर दिया कि मनुष्य का अहंकार ही मनुष्य को चलाता है। कोई भी व्यक्ति अपना अहंकार नहीं छोड़ता। फिर भी, स्वीडनवासी को एक सैलून मिल गया।

इसके आगे एक दुर्जेय लाल रोशनी जल रही थी और उसके इर्द-गिर्द चक्कर लगाते हुए बर्फ के टुकड़े खून के रंग में रंगे दीख रहे थे। स्वीडनवासी ने सैलून के दरवाजे को धक्का देकर खोला और अन्दर घुस गया। उसके सामने निर्जन विस्तार था और इसके अन्तिम सिरे पर एक टेबुल के चारों ओर बैठे चार व्यक्ति शराब पी रहे थे। कमरे की एक ओर एक शराबखाना था, जो प्रकाश से जगमगा रहा था और उसका मालिक अपनी कुहनी पर झुका टेबुल पर बैठे लोगों की बातें सुन रहा था। स्वीडनवासी ने अपना बैग फर्श पर गिरा दिया और शराबखाने के मालिक से हँसते हुए कहा— “मुझे थोड़ी ह्विस्की दोगे ?” मालिक ने ‘बार’ पर शराब की एक बोतल, शराब पीने का एक ग्लास और एक ग्लास बर्फ से भरा पानी रख दिया। स्वीडनवासी स्वयं ही आवश्यकता से अधिक शराब उड़ेल कर उसे तीन घूंट में पी गया। “बहुत ही खराब रात रही।”—

शराब बेचने वाले ने अनमने भाव से कहा। उसकी आँखें करीब-करीब बंद थीं। वह अंधा होने का बहाना कर रहा था, जैसा कि उसके वर्ग के लोगों की खासियत होती है, लेकिन वह स्वीडनवासी के चेहरे पर मिटाये जाने के बाद भी बच गये खून के दागों को बहुत ही गौर से देख रहा था।
“बुरी रात!”— उसने फिर कहा।

“आह, यह मेरे लिए बहुत ही अच्छी रात है!”— ग्लास से थोड़ा शराब उड़ेलते हुए स्वीडनवासी ने बड़े कड़े शब्दों में कहा। शराबखाने के मालिक ने अपने पैसे लिये और चमकते हुए गल्ले में डाल दिया। एक घंटी बजी और २० सेंट छपा एक कार्ड बाहर निकल आया।

“नहीं,”— स्वीडनवासी ने कहना जारी रखा— “यह मौसम ज्यादा खराब नहीं है। मेरे लिए बहुत ही अच्छा है।”

“ऐसा?”— शराबखाने के मालिक ने शिथिलता से धीरे-धीरे कहा।

शराब के नशे में उसकी आँखें तैरने लगीं और उसने एक गहरी साँस ली।

“हाँ, मुझे यह मौसम पसन्द है। मुझे पसन्द है। मुझे यह अच्छा लगता है।” इन शब्दों का महत्व बढ़ाने के लिए यह उसका एक विशेष भाव था।

“ऐसा?”— शराबखाने के मालिक ने फिर कहा। वह ‘बार’ के पीछे शीशे पर साबुन से सजावट के लिए बनी चिड़ियों या चिड़ियों से की गयी सजावट को, स्वप्निल नजरों से कुछ देर देखने के लिए घूमा।

“देखो, सोचता हूँ थोड़ा और पीऊँ।”— स्वीडनवासी ने तभी कहा— “लो कुछ तुम भी पीओ।”

“जी नहीं, धन्यवाद। मैं नहीं पीऊँगा।”— शराबखाने के मालिक ने उत्तर दिया। उसके बाद उसने पूछा— “आप के मुँह पर चोट कैसे लगी?”

तुरन्त ही स्वीडनवासी अपना गुण-गान करने लगा— “क्यों, एक लड़ाई में। स्कली के होटल में मैंने एक आदमी का मार-मार कर कचूमर निकाल दिया है।”

टेबुल के चारों ओर बैठे उन चारों व्यक्तियों को भी अब आनन्द आने लगा।
“कौन था वह?”— एक ने पूछा।

“जानी स्कली।”— स्वीडनवासी गरजा— “होटल के मालिक का लड़का। मैं कहता हूँ, कुछ सप्ताह तो मुर्दों की तरह वह बिछावन पर पड़ा रहेगा। मैंने उसका भरता बना दिया है। खूब पीटा। वह उठ नहीं सका। लोग उसे ढोकर घर के अन्दर ले गये। आओ पीओ।”

तत्काल ही उन्होंने बहुत ही चालाकी के साथ अपने को संयत कर लिया। “जी नहीं, धन्यवाद।”— एक ने कहा। इस दल का गठन बहुत ही विचित्र था। दो व्यक्ति स्थानीय प्रमुख व्यापारी थे। एक जिला प्रतिनिधि था और एक ‘स्क्वायर’ की तरह का पक्का जुआड़ी, किन्तु यदि कोई दल के लोगों को अलग-अलग पहचानने की कोशिश करता, तो इन प्रख्यात व्यक्तियों में से जुआड़ी को पहचान लेना मुश्किल था। वास्तव में जब वह अच्छे वर्ग के लोगों के बीच होता, तब उसका व्यवहार इतना नम्र रहता और अपने शिकार के चुनने में वह इतना सिद्धहस्त था कि शहर के पुरुषों का उसके प्रति बहुत ही अधिक विश्वास था और वे उसकी बहुत ही इज्जत करते थे। लोग उसे बहुत ही संभ्रांत व्यक्ति कहते थे। डर और घृणा से ही उसकी कला की कद्र की जाती थी और निश्चित ही इसी कारण से उसकी कद्र सीधे-सादे टोप बनाने वाले, बिलियर्ड मार्कर या किरानियों से अधिक होती थी। कभी-कभी रेल से आनेवाले अनजाने यात्री के अलावा यह जुआरी मुख्यतः असावधान या वृद्ध किसानों को, जो अच्छी फसल हो जाने के नशे में गर्व और घमंड से भरे निरंकुश बेवकूफ की तरह शहर में आते, अपना शिकार बनाता। ऐसे किसान के लुट जाने का समाचार सुन रांपर के प्रमुख लोग शिकार की बेवकूफी पर जोर से ठहाका लगाते और यदि कभी वे भेड़िया के बारे में सोचते भी, तो इस प्रकार का गर्व करते हुए कि वह उनकी बुद्धि और साहस पर हमला करने की कभी हिम्मत कर ही नहीं सकता। इसके अतिरिक्त यह मशहूर था कि इस जुआड़ी की एक शादीसुदा पत्नी है तथा दो बच्चे हैं, जो उपनगर के एक साफ-सुथरे झोंपड़े में रहते हैं और वह आदर्श जीवन व्यतीत करता है। यदि कभी कोई इसके चरित्र के विरुद्ध कुछ आभास भी देता, तो लोग तुरन्त ही इसके आदर्श पारिवारिक जीवन का जोर-जोर से वर्णन कर उसे टाल जाते। तब आदर्श पारिवारिक जीवन व्यतीत करने वाले तथा जो आदर्श पारिवारिक जीवन व्यतीत नहीं करते, सभी यह कहते हुए कि अब कुछ और कहने लायक नहीं है, इकट्ठे ही शान्त हो जाते।

फिर भी, जब उस पर रोक लगा दी जाती, उदाहरणस्वरूप न्यू पौलीवम क्लब के मजबूत विरोधी दल के सदस्यों ने उसे क्लब के कमरे में दर्शक की हैसियत से भी आने पर रोक लगा दी, तब उसने जिस सरलता और भद्रता से उनका निर्णय स्वीकार कर लिया, उसे देख उसके बहुत से दुश्मन निरस्त्र हो गये और उसके मित्र और अधिक उसके पक्षपाती हो गये। उसने अचल रूप में अपने तथा एक इज्जतदार रांपरवासी के बीच के अंतर को इतनी जल्द

और साफ-साफ स्पष्ट कर दिया कि उसके हाव-भाव देखने से सारी बातें साफ-साफ नजर आ रही थीं।

राम्पर में उसका आधारभूत स्थान क्या था, इसे भी जान लेना चाहिए। यह निर्विवाद है कि अपने व्यापार के बाहर आदमी-आदमी के बीच होनेवाली आंतरिक और साधारण बातों में ताश के खेल में बेइमानी करनेवाला व्यक्ति इतना दयालु, न्यायी और नैतिक था कि राम्पर के निवासियों में से दस में से नौ की इसके सामने कोई गिनती ही नहीं थी।

और इस तरह वह सैलून में स्थानीय दो प्रमुख व्यापारियों और जिला-प्रतिनिधि के साथ बैठा हुआ था।

स्वीडनवासी खालिस शराब पीता गया और बीच-बीच में शराबखाने वाले पर बड़बड़ाता रहा तथा उसे शराब पीने को उकसाता रहा। “आओ, आओ पीओ। पीओ। क्या नहीं? अच्छा फिर थोड़ी-सी पीओ। खुदा-कसम, आज की रात मैंने एक आदमी को खूब पीटा है और मैं उसकी खुशी मनाना चाहता हूँ। मैंने उसकी खूब अच्छी तरह मरम्मत की है। सज्जनो!”—टेबुल के चारों ओर कई लोगों से स्वीडनवासी ने चिल्लाकर कहा—“पीओ!”

“श... श...”—शराबखाने के मालिक ने कहा।

टेबुल के इर्द-गिर्द बैठे लोगों का ध्यान इधर था। फिर भी, वे बातों में डूबे रहने का बहाना करते जा रहे थे, लेकिन अब एक व्यक्ति ने स्वीडनवासी की ओर देखते हुए शीघ्रता से कहा—“धन्यवाद हम अब अधिक पीना नहीं चाहते।”

इस उत्तर पर स्वीडनवासी ने व्याकुल हो अपना सीना मुर्गे की तरह निकाल लिया। “अच्छा!”—वह गरजा—“ऐसा लगता है कि इस शहर में मेरे साथ पीनेवाला कोई व्यक्ति नहीं मिल सकता। ऐसा ही लगता है, नहीं? अच्छा।”

“श... श!”—शराबखाने के मालिक ने कहा।

“बोलो,”—स्वीडनवासी गुस्सा हो कर बोला—“क्या तुम मेरा मुंह बंद करने की चेष्टा कर रहे हो? मैं चुप नहीं रहूँगा। मैं भला आदमी हूँ और चाहता हूँ कि लोग मेरे साथ पियें और मैं चाहता हूँ कि वे अभी मेरे साथ पियें। इसी वक्त, समझे तुम?” उसने ‘बार’ पर ज़ोरों से मुक्के का प्रहार किया।

वर्षों के अनुभव ने मदिरालय के मालिक को कठोर बना दिया था। वह कुछ क्रुद्ध-सा हो गया। “मैं सुन रहा हूँ।”—उसने उत्तर दिया।

“अच्छा!”—स्वीडनवासी चिल्लाया—“तो अच्छी तरह सुनो। वहाँ बैठे उन

आदमियों को देखो। वे पीने में मेरा साथ देंगे, इसे भूलो मत। अब देखो तुम।”

“अजी, ऐसा नहीं हो सकता।”—शराबखाने के मालिक ने चिल्लाकर कहा।

“क्यों नहीं हो सकता?”—स्वीडनवासी ने पूछा। वह टेबुल की ओर बढ़ा और संयोग से जुआड़ी के कंधे पर अपना हाथ रख दिया। “क्या विचार है?”—उसने रुखे स्वर में पूछा।

“मैंने तुम्हें अपने साथ पीने को कहा था।”

जुआड़ी ने सिर्फ अपनी गर्दन घुमा दी और कंधे से ऊपर देखते हुए बोला—“दोस्त मेरे, मैं तुम्हें नहीं जानता।”

“बकवास छोड़ो।”—स्वीडनवासी ने उत्तर दिया—“आओ, पीओ।”

“देखो मिस्टर!”—जुआड़ी ने दयालुता से समझाते हुए कहा—“मेरे कंधे पर से अपना हाथ हटा लो और जाओ अपना काम करो।” वह एक दुबला-पतला छोटा आदमी था और उसे मोटे-तगड़े स्वीडनवासी को बहादुरी के साथ ऐसा कहते देख अजीब-सा लगता था। टेबुल के इर्द-गिर्द बैठे अन्य व्यक्तियों ने कुछ नहीं कहा।

“क्या? तुम मेरे साथ नहीं पीओगे, मेरे छैला? तब तो मैं तुम्हें पिलाकर रहूँगा। मैं तुम्हें पिलाकर रहूँगा।”—स्वीडनवासी ने जोरों से जुआड़ी का मला पकड़ लिया और कुर्सी से खींचने लगा। अन्य व्यक्ति उठ खड़े हुए। शराबखाने का मालिक शराबखाने के एक कोने में भाग खड़ा हुआ। एक जोरों की हलचल हुई और फिर जुआड़ी के हाथ में एक लम्बा छुरा दिखायी पड़ा। छुरा आगे बढ़ा और एक मानव-शरीर में, जो सदाचार, बुद्धिमत्ता और शक्ति का दुर्ग-सा है, इस आसानी से घुस गया, जैसे वह तरबूज हो। स्वीडनवासी घोर आश्चर्य-चकित हो, चिल्लाता हुआ गिर पड़ा।

प्रमुख व्यापारी और जिला प्रतिनिधि निश्चित ही जल्दी से पीछे की ओर से भाग गये होंगे। शराबखाने का मालिक कुर्सी की बाँह पर अपने को झूलता पा रहा था तथा एक खूनी की आँखों को घूर रहा था।

“हेनरी!”—जुआड़ी ने ‘बार’ के नीचे लटक रहे तौलियों में से एक से छुरा पोंछते हुए कहा—“तुम उन्हें बता देना कि मैं कहाँ मिलूँगा। मैं घर पर उनका इन्तजार करूँगा।” फिर वह गायब हो गया। एक क्षण बाद शराबखाने का मालिक तूफान में सड़क पर खड़ा मदद के लिए चिल्ला रहा था और मदद से भी अधिक किसी के साथ के लिए।

सैलून में स्वीडनवासी की लाश अकेली पड़ी हुई ‘कैश मशीन’ की ओर

देखते हुए यह कहावत दुहराती नजर आ रही थी—“यह तुम्हारी खरीद की रकम को रजिस्टर करता है।”

— ९ —

महीनों बाद डेकोटा लाइन के पास एक छोटी पशुशाला के स्टोव के ऊपर चरवाहा सूअर का मांस भूज रहा था। तभी बाहर खुरों की आवाज हुई और तत्काल ही पूरबवासी ने चिट्ठियों और अखबार के साथ प्रवेश किया।

“देखो!”—पूरबवासी ने तुरन्त ही कहा—“जिस व्यक्ति ने स्वीडनवासी को मार डाला था, उसे तीन वर्ष की सजा हुई है। यह बहुत अधिक नहीं है, क्यों?”

“उसे सजा हो गयी? तीन वर्ष?”—चरवाहे ने समाचार को दुहराते वक्त मांस भूजना रोक दिया—“तीन वर्ष। यह ज्यादा नहीं है।”

“नहीं, यह हल्की सजा है।”—पूरबवासी ने घुड़सवारी के जूते खोलते हुए कहा—“मालूम पड़ता है कि राम्पर में उसके प्रति लोगों की सहानुभूति बहुत ज्यादा है।”

“यदि शराबखाने का मालिक थोड़ा भी अक्लमंद होता”—चरवाहे ने विचार-पूर्वक बोलते हुए कहा—“तो वह उस डच के सिर पर शुरू में ही बोतल पटक देता और खून नहीं होने देता।”

“हाँ, ऐसी हजारों चीजें हो सकती थीं।”—पूरबवासी ने तीखे स्वर में कहा।

चरवाहा अपने मांस का बर्तन फिर आग पर ले गया, लेकिन उसका दर्शन-शास्त्र जारी रहा। “कितनी अजीब बात है, क्यों है न? यदि वह नहीं कहता कि जानी बेइमानी कर रहा है, तो अभी वह ज़िंदा रहता। वह बहुत बड़ा बेवकूफ था। खेल आनंद के लिए होता है, रुपये के लिए नहीं। मैं तो समझता हूँ कि वह पागल था।”

“मुझे उस जुआड़ी के लिए दुःख है।”—पूरबवासी ने कहा।

“ओह, दुःख मुझे भी है।”—चरवाहे ने कहा—“उसका खून कर देने के लिए सजा नहीं मिलनी चाहिए।”

“यदि सभी चीजें ठीक रहतीं, तो स्वीडनवासी नहीं मारा जाता।”

“नहीं मारा जाता?”—चरवाहे ने आश्चर्य प्रकट किया—“सब ठीक होता? तो फिर उसने क्यों कहा कि जानी बेइमानी कर रहा है और गधे की तरह व्यवहार करने लगा और फिर सैलून में वह दूसरे को चोट पहुँचाने के लिए

आगे क्यों बढ़ा ?” इन तर्कों का सहारा लेते हुए चरवाहे ने पूरबवासी पर जो कटाक्ष किया, उसने पूरबवासी को क्रुद्ध कर दिया।

“तुम बेवकूफ हो।”—पूरबवासी दुष्टता से चिल्लाया—“तुम स्वीडनवासी से भी दस लाख गुना बड़े बेवकूफ हो। एक बात बताता हूँ तुम्हें। मुझे कहने दो, सुनो। जानी बेईमानी कर रहा था।”

“जानी !”—चरवाहे ने भावशून्य हो कहा। एक मिनट शान्ति रही, फिर वह धृष्टता से बोला—“नहीं, खेल सिर्फ आनन्द के लिए था।”

“आनन्द के लिए हो या नहीं”—पूरबवासी ने कहा—“जानी बेईमानी कर रहा था। मैंने देखा है। मैं इसे जानता हूँ। मैंने उसे देखा है। मैं इससे इनकार कर गया और इंसानियत से गिर गया। मैंने स्वीडनवासी को अकेले ही लड़ने को छोड़ दिया और तुम सिर्फ प्रशंसा कर करके नाच रहे थे और लड़ना चाहते थे और फिर बूढ़ा स्कली स्वयं भी। हम सभी इसमें दोषी हैं। हरेक पाप एक संयुक्त क्रिया का परिणाम होता है। स्वीडनवासी की हत्या में हम पाँचों व्यक्तियों ने सहायता दी है। साधारणतया हर हत्या में एक दर्जन से लेकर चालीस औरतें फँसी रहती हैं, लेकिन इस घटना में तो सिर्फ पाँच पुरुष ही दिखायी पड़ते हैं—तुम, मैं, जानी, बूढ़ा स्कली और वह दुर्भाग्य का मारा बेवकूफ जुआड़ी मात्र पराकाष्ठा के रूप में आया, मानवीय गतिविधि की चरम परिणति बनकर और सारी सजा उसे ही मिली। वह गरीब जुआड़ी तो इसका कर्त्ता भी नहीं है, वह तो मात्र पूरक है।”

आहत और विद्रोही चरवाहा इस रहस्यमय सिद्धान्त के धुंधलके में चिल्ला उठा—“मैंने कुछ नहीं किया, कुछ किया मैंने ?”

छोटी पलटन

कुहरे के कारण टुकड़ी के सैनिकों के कपड़े चमकदार किस्म के लग रहे थे । पैदल सेना के भारी भरकम लबादों को इससे एक नया रंग मिल गया था । यह रंग एक प्रकार का नीला रंग था, जो इतना अस्पष्ट था कि फौजी टुकड़ी कुहरे में एक लम्बी नीची छाया मात्र लग रही थी । फौजियों के झुंड से एक हिस्सा खिजलाहट और तीन हिस्सा हँसी मिली हुई फुसफुसाहट हवा में मंडराती हुई धीरे-धीरे एक धीमी गरज बनकर विलीन हो रही थी ।

छोटी नदी के दक्षिणी किनारे पर बसा हुआ नगर भयावह दिखायी देता था, मानो धीरे-धीरे सरकते हुए बादलों के मटमैले झुण्डों के ऊपर कोई धुंधली सी आकृति खींच दी गयी हो । फौजियों के पैरों से निकलनेवाली आवाज तथा शस्त्रास्त्रों की जोरदार खड़खड़ाहट से पता चलता था कि कोई भीषण तैयारी हो रही है । रह-रह कर दूर उँचाई पर लगी हुई तोपों के दगने के स्वर कभी एकाएक इस तरह सुनाई पड़ते, जैसे वह शान्ति को बरदाश्त न कर पाने पर फूट पड़ते हों । पास और दूर की ये सब आवाजें युद्ध-स्थल की व्याख्या करती थीं और बताती थी कि इस नाटक का क्षेत्र कितना लम्बा-चौड़ा है । थोड़े-थोड़े समय बाद तोपों की आवाजें होती रहती थीं । उनकी चुनौतियों और चेतावनियों में कोई उत्तेजना नहीं थी और वे हवा में गूँजनेवाले शब्द के अकथनीय प्रवाह को नष्ट नहीं कर सकती थीं । इसका अर्थ था कि संवर्ष सन्निकट है, जिससे सांस होठों पर आकर रुक जाती थी ।

मार्ग में पड़ी हुई फौजी टुकड़ी घुटनों तक कीचड़ में थी । सैनिक दिल खोल-खोल कर वर्षा को गालियाँ दे रहे थे क्योंकि उसके कारण उन्हें विवश होकर बहुत तनकर खड़ा होना पड़ रहा था, जिससे बूंदें उनके कोट के कालर के अंदर न पहुँच जायँ । कुहरा गीले कपड़ों की तरह ही सर्द था । सैनिक अपने हाथों को पूरी तरह से जेब में ठूसे हुए, पिस्तौल को रगड़ रहे थे । आज्ञाओं के यंत्र ने इन सैनिकों को ठीक उसी तरह गहरे कीचड़ में जमा दिया था, जिस प्रकार सर्वशक्तिमान प्रकृति 'मलीन' वृक्ष की जड़ों को गाड़ देती है ।

नदी के उस पार के धुंधले नगर से युद्ध की आवाजों को सुनसुन-कर वे अंदाज लगाया करते । जब कुछ समय के लिये आवाज रुक जाती, तब वे पुनः अपने कीचड़ का वर्णन करने लग जाते और जितने घण्टों से उन्हें प्रतीक्षारत

रखा गया था, उनकी संख्या को बहुत ही बढ़ा-चढ़ाकर बताते । उनके 'डिविजन' का सेनापतित्व करनेवाला जनरल घोड़े पर सवार हो कर गुजरा और उन्होंने प्रशंसा एवं प्रेम के साथ हर्षध्वनि की तथा हर्षित मन से आनेवाले युद्ध के सम्बन्ध में भविष्यवाणियाँ कीं । प्रत्येक व्यक्ति एक विचित्र प्रबल व्यक्तिगत रुचि से उसको देखता था और बाद में उसके सम्बन्ध में असन्दिग्ध वफादारी और विश्वास के साथ बात करता था तथा ऐसी कहानियाँ कहता था, जो मुख्यतः असल होती थीं ।

जब विदूषक अपने स्वाभाविक तीखे स्वरों को उँचा करते और अपने सहयोगियों को मज़ाक की बातें सुनाते, तब एक जोरदार हँसी के स्वर एक सैनिक से दूसरे सैनिक तक पहुँच जाते और जो सैनिक उनको न सुन सकते, वे पुनः उन्हें दोहराने के लिए आग्रह करते । जब उनके पास से होकर मटमैले और रक्त-रंजित चेहरोंवाले तथा अत्यधिक पीड़ा से असहाय होकर सहायता के लिए आँखों को आकाश की ओर उठाये हुए कुछ घायल ले जाये जाते, तब कीचड़ में खड़े सैनिक उन्हें उत्सुकता के साथ देखने लगते और समय-समय पर वाहकों से घटना का हवाला पूछते । रह-रह कर वे अपने डिविजन, अपने कोट, अपनी ब्रिगेड और अपनी रेजिमेंट की बातें जोर-जोर से करते, फिर जल्दी ही वे कीचड़ और सर्द वर्षा की बातें करने लगते । संक्षेप में मृत्यु के इस भयानक दृश्य के किनारे खड़े वे घटनाओं की विशालता की अवहेलना इस शानदार लापरवाही के साथ कर रहे थे, जो लापरवाही केवल मंजे हुए सैनिकों में ही पायी जाती है ।

“लकड़ी के सैनिकों की तरह वर्षों से कीचड़ में खड़े हैं ।”— बिली डेम्पस्टर ने अपने पैरों को घने कीचड़ में से हटाते हुए और अनिश्चित रूप से प्रतिशोधात्मक दृष्टिसे देखते हुए कहा ।

“ओह, चुप भी रहो !”—उसके भाई डान ने बुदबुदा कर कहा । उसके कहने का तरीका बता रहा था कि जो आवाज अभी उसके निकट हुई थी, वह इतनी नीरस थी कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता ।

“क्यों चुप रहूँ ?”— बिली ने पूछा ।

“क्यों कि तुम बेवकूफ हो ।”— डान चिल्लाया और बहस के लिए समय न देते हुए कहता गया —“सारी फौज में सबसे बड़े बेवकूफ !”

वहाँ उनके बीच में केवल एक ही व्यक्ति था और वह इसका अभ्यस्त हो चुका था । दो दीर्घकालीन युद्धों के बीच दोनों भाई अनेक बार इस प्रकार

एक दूसरे का अपमान कर चुके थे। इस अवसर पर उसने केवल एक भाई की ओर और फिर दूसरे भाई की ओर देखकर मुँह बिगाड़ दिया।

इन भाइयों का यह तरीका रेंजिमेंट की गपशप के लिए कोई अनजाना विषय नहीं था। वे एक साथ ही एक दूसरे को गालियाँ देते हुए भर्ती हुए थे। वे अपना छोटा-सा शहर छोड़कर एक दूसरे के विरुद्ध निरन्तर संदेह प्रकट करते हुए फौज में शामिल हो गये थे। कैम्प के जीवन में तो यह बहस इतनी खुलकर होने लगी थी कि जब यह न होती तब आसपास के लोग खोज कर ऐसा मौका खड़ा कर ही देते कि वह फिर शुरू हो जाती।

दोनों लम्बे-चौड़े, तगड़े जवान थे और यदि एक भाई दूसरे भाई के मामले में हस्तक्षेप करने के लिए पास न होता, तो वे अक्सर दोस्तों से लड़ा करते थे। एक भाई दूसरे भाई के मामले में हस्तक्षेप किया ही करता था क्योंकि डान किसी भी तरह के झगड़े के लिए तैयार रहता था और वह बिली को झगड़ा करते देख कर बहुत अधिक डरता था और बिली, जो स्वयं भी झगड़े के लिए तैयार ही रहा करता था, डान को अपनी कमीज निकाले हुए और घूसा ताने हुए कभी नहीं देख सकता था। उन दोनों में यह विचित्र बात थी और इससे वे षड्यंत्रों के लक्ष्य बन जाते थे।

जब कभी उत्सुक सैनिकों के घेरे से हो कर डान कूद पड़ता और अपने भाई की बाँह पकड़ कर उसे खींच लाता, तब जिस बात की भविष्यवाणी बहुधा की जाती थी, वह होते-होते रह जाती थी। इसी प्रकार जब बिली डान के साथ ऐसा ही बर्ताव करता, तब फिर भविष्यवाणी सच होते-होते रह जाती, लेकिन वे कभी वास्तव में झगड़ते नहीं थे, यद्यपि वे सदा झगड़े के किनारे पर ही रहा करते थे। वे इस प्रकार के संघर्ष की इच्छा व्यक्त करते थे। वास्तव में एक बार उन्होंने झगड़े की पूरी तैयारी कर ली थी, किन्तु आधी रेंजिमेंट के प्रोत्साहन और रुचि के बावजूद किसी प्रकार उनकी टक्कर बच ही गयी।

यदि कभी डान को पुलिस की ड्यूटी दे दी जाती, तो उसके लिए कोई भी व्यंग्य बिली की बातों से अधिक तीखा नहीं होता था। अगर बिली को मुख्य कार्यालय में उपस्थित होने की आज्ञा मिलती, तो उसके विनाश की भविष्यवाणी कोई भी उतनी उदारता से नहीं कर पाता, जितनी उदारता से डान करता। सच तो यह है कि एक भाई के छोटे-से दुर्भाग्यों का भी स्वागत दूसरा भाई सदा उत्साहपूर्वक करता था क्योंकि उनसे उसके मत की अत्यधिक पुष्टि होती हुई प्रतीत होती थी।

सैनिकों की हैसियत में वे एक दूसरे के प्रति प्रचंड, विस्फोटक घृणा प्रदर्शित करते, पर किसी एक युद्ध के बाद बिली को जब कार्पोरल बना दिया गया और यह बात डान को मालूम हुई, तब वह आश्चर्य व क्रोध से मानो मूक बन गया। वह मौन होकर देखता ही रहा। अन्त में उसकी वाक्शक्ति लौटी और उसने कहा—“ठीक है, मैं नीचे फेंक दिया गया हूँ।” अगर वह सुनता कि सेना का कोई गधा कोर का कमांडर बना दिया गया है, तो भी उसके स्वर में इतना व्यंग न होता। फिर उसने अपने कारपोरल की आज्ञाओं का उलंघन करने की नीति अस्तित्व की, जिससे हर क्षण झगड़े की स्थिति निकट आ जाती थी।

अन्त में यहाँ इस बात का उल्लेख कर देना है कि डान, जिसकी बोली भयंकर रूप से तीखी थी, अपने भाई की उपस्थिति में मुश्किल से गालियाँ देता था। और बिली, जिसके मुंहसे गालियाँ उसी तेजी से निकलती थीं, जैसे गिरते हुए पत्थर, अपने भाई डान की उपस्थिति में बहुत कम इस तरह का बर्ताव करता था।

अन्त में दोपहर ढलकर साँझ हो आयी। सैनिक टुकड़ी के एक छोर से दूसरे छोर तक चीख-पुकार मच गयी। कीचड़ में देर तक जमे हुए पैर उठे। लोगों में एक गर्मी आयी और सब ने नदी के दूसरे ओर घूरकर देखा और एक क्षण में वह भूरी छाया की पंक्ति नदी की ओर बढ़ने लगी। अब नगर से तीव्र युद्ध और हर्ष-ध्वनि की टक्कर को सुना जा सकता था। गहन हवा से होकर आनेवाली गोली-चालन की आवाज में उसकी तीव्रता नहीं होती थी और वह आवाज उसी प्रकार की होती थी, जिस प्रकार किसी भारी चीज के जमीन पर गिरने से आवाज होती है।

नौकाओं से बने पुल के ऊपर सब लोग किनारे पर आये। जब सैनिकों की पंक्ति गोलाकार होकर ढलान की ओर गयी और पुल पर पहुँची, तब कुहरा बहुत-कुछ समाप्त हो चुका था और गोधूलि की बेला अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट हो गयी थी, जिसमें दूर चोटी पर लगी हुई तोपें पुल पार किया जाना देख सकती थीं। दूर से आनेवाली गोलों की आवाजें सैनिकों के ऊपर हवा में गूँज रही थीं। कभी-कभी कोई गोला नदी में आकर गिर पड़ता था, जिससे एक आकस्मिक सीधी लहर उठ जाती थी। गहरी आवाज करनेवाली तोपों से निकलने वाली रोशनी से सारा स्थान प्रकाशमय हो गया था। एक-एक करके उत्तरी किनारे की तोपें जग गयीं और असंख्य गोले दूरस्थ चोटी पर क्रोधपूर्वक गरजने लगे। गर्जन के स्वर टकराते और प्रकम्पित होते थे, जिस प्रकार ढलान की ओर

बहने वाले जंगली नाले का गर्जन रात की नीरवता में सुनायी देता है और इस संगीत के स्वरों के साथ सैनिक टुकड़ी नावों के पुल को पार करने लगी। भयानक और मनहूस नदी का जल खिलखिलाता हुआ, बड़ी-बड़ी नावों के सिरों से टकरा कर तल्लों के नीचे से तेजी के साथ बह रहा था। नगर की काली और छिदी हुई दीवारें सैनिकों को दिखायी देने लगीं। इन प्रहार-ग्रस्त और धराशयी घरों के छिपे क्षेत्र से एक दीर्घकालीन और जोरदार संघर्ष की चीख-पुकार और गोलियों की आवाजें निरन्तर आ रही थीं।

जब डान ने अपने भाई को बेवकूफ की संज्ञा दी, तब उसका स्वर इतना निश्चयात्मक और आश्वासनपूर्ण था कि दूसरे सैनिक बरबस हँस पड़े थे, क्योंकि उन लोगों ने सोचा कि इन परिस्थितियों में यह बहुत बड़े मजाक की बात है। इस घटना से बिली को आन्तरिक आघात हुआ। यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं थी कि उसके भाई ने उसे बेवकूफ कहा था। वास्तव में वह अक्सर बड़े जनसमुदाय के बीच उसी तीखेपन से उसे बेवकूफ कह बैठता था। बिली मन-ही-मन आश्चर्य कर रहा था कि उसने इस मामले में इतने अधिक अपमान का अनुभव कैसे किया, किन्तु, कुछ भी हो, जब वह किनारे से पुल पर अपनी रेजिमेंट के साथ जा रहा था, तब वह कोई ऐसी बात कहने के लिए भी सोच रहा था, जिससे डान की हर्षात्फुल्लता को वह समाप्त कर सके; परन्तु इस समय वह ऐसी कोई भी बात नहीं सोच पाया और उसने अपने भाई को जिस दृष्टि से देखा, वह उसकी इस असमर्थता के कारण और भी अधिक दुर्भावनापूर्ण हो गयी।

दूर और नजदीक की तोपें गरज-गरज कर मृत्यु के रंगमंच पर अग्रसर होनेवाली इस टुकड़ी का भयंकर और शानदार परिचय करा रही थी। बिली ने इसका अनुभव किया, किन्तु केवल मूक रूप से। उसका हृदय उस विचित्र धातु से ढला हुआ था, जो ऐसे अवसरों पर मनुष्य की भावनाओं को छिपा लेता है। पहाड़ियों पर से आनेवाली भयंकर आवाजों ने उसे बताया कि इस व्यापक संघर्ष में उसका जीवन एक महत्वहीन तथ्य है तथा उसकी मृत्यु भी एक महत्वहीन तथ्य होगी।

वे आवाजें उस झंझावात की सूचना दे रही थीं, जिसके लिए उसकी आवश्यकता उतनी ही होगी जितनी कि एक तितली के फैले हुए पंखों की। इसकी गंभीरता और दुख उसके इतने निकट आ गये कि वह आश्चर्य करने लगा कि मैं क्यों न तो गंभीर हूँ और न दुखी हूँ। जब उसके मस्तिष्क ने उसके समक्ष

अस्पष्ट रूप से घटनाओं को उनके महत्व के अनुसार रख दिया, तब उसके लिए यह तथ्य सबसे बढ़कर प्रतीत हुआ कि युद्ध के समय और अनेक साथियों के सामने उसके भाई ने उसे मूर्ख कह कर पुकारा था। डान विशेष रूप से प्रसन्न था। जब गोलों की जादूगरिनियों जैसी लम्बी फुसफुसाहट हवा में आयी, तब उसने कहा—“जल्दी करो ! देखो, वे गोलियाँ चला रहे हैं।” बिली ने जब अपने अन्दर के छोटे कोंटे को महमूस किया और साथ ही साथ यह देखा कि उसका भाई इसको पूर्ण रूप से भूल गया है, तब वह क्रुद्ध हो उठा।

सैनिक टुकड़ी पुल से उतर कर और गहरे कीचड़ में चली गयी। उस दक्षिणी सिरे पर जोर-जोर से आज्ञाएँ और आदेश दिये जा रहे थे, जिससे बड़ी अव्यवस्था फैली हुई थी। जमीन पर अंधकार छा रहा था और रेजिमेंट जल्दी-जल्दी ढलाने किनारे से उतर रही थी। जैसे ही बिली भीड़ के साथ कीचड़ में धँसा, उसने विचार किया कि डान को कष्ट देने के लिए यदि उसे विषय नहीं मिल रहा है, तो न सही, उसको चाहिए कि वह उसकी ओर न देखे, उससे बोले नहीं और उसकी उपस्थिति का ही अनुभव न करे। उसने कल्पना की कि इस तरह उसके भाई की स्थिति दुखद हो जायगी।

नदी-किनारे सैनिक टुकड़ी रुकी और पुनः अपना संगठन किया; ठीक उसी तरह जैसे एक आदमी चढ़ने के बाद अपने कपड़े को सँवारता है।

सौजन्य इतनी शीघ्रता से आ गयी थी कि दूर नगर की सीमा पर होनेवाले युद्ध का संकेत लपट के क्षीण प्रकाश से मिलता था। कुछ मकानों में आग लग गयी थी और आकाश पर उसका प्रतिबिम्ब हल्की गुलाबी रंग की गोलाकार लपटों के रूप में पड़ रहा था।

— २ —

उस छोटे से नगर की समस्त ग्राम्य पवित्रता तोपों और उससे होकर गुजरने वाले सैनिकों द्वारा बुरी तरह से नष्ट की जा चुकी थी। युद्ध ने इस गाँव को एक क्षण में ही खण्डहरों के रूप में परिणत कर दिया था। वह एक भयंकर भूकम्प से ग्रसित स्थान के समान लग रहा था। खिड़कियाँ ऐसे छेदों के समान लग रही थीं, जिनकी ओर देखने की इच्छा नहीं होती और उनके कारण धरा-शायी और कालिमायुक्त घर ठठरी मात्र लग रहे थे। दरवाजे चूर-चूर होकर पड़े थे। चिमनियों की ईंटें प्रत्येक स्थान पर बिखरी हुई थीं। तोपों की गोलाबारी से सड़कों के किनारे कोमल छायादार वृक्षों की पंक्तियाँ भी नहीं बची थीं। डालें और मोटे-मोटे तने कीचड़ में पड़े हुए थे, जबकि गोलों की मार से छिन्न-भिन्न

हुए कुछ वृक्ष निराशा, शोक के साथ सीधे खड़े थे। वे एक ऐसी निर्दोषता और असहायावस्था को व्यक्त कर रहे थे, जिससे बरबस उनके युद्ध की इस नरकामिनी में पड़ जाने पर सहानुभूति उत्पन्न हो रही थी। इसके अतिरिक्त पांवों के नीचे तरह-तरह की अनेक चीजें पड़ती थीं, जिनसे युद्ध और पलायन की याद हो आती थी। वहाँ बक्स और मिट्टी से भरे पीपे थे, जिनके पीछे रायफलधारी सैनिक छिपे हुए थे और इन छोटी-छोटी खाइयों में भूरी वर्दी वाले सैनिकों के साथ नीली वर्दी वाले सैनिक मरे हुए पड़े थे। मरे हुए सैनिकों की यह स्थिति नगर पर अधिकार करने के लिए हुए युद्ध का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत कर रही थी। यह युद्ध तब तक होता रहा था, जब तक कि पूरे संघर्ष का इतिहास स्पष्ट रूप से सड़कों पर नहीं लिख गया।

फिर भी, इस छोटे नगर की आत्मा, उसका सुन्दर व्यक्तित्व खण्डहरों के ऊपर हवा में शान के साथ विराजमान था। वह तोपों और गोलों की बौछारों की उपेक्षा कर रहा था, आग की उन लोभी लपटों के प्रति घृणा व्यक्त कर रहा था, जिन्होंने अनेक घरों को अपने आक्रमण का शिकार बनाया था। मिट्टी की कठोर पगड़इयों पर उन खेलों की घोषणाएँ थीं, जो वहाँ वृक्षों की सघन छाया में दीर्घकालीन अवकाश के दिनों में खेले गये थे। एक लम्बे ताम्र-पट पर अस्पष्ट अक्षरों में लिखी गयी “परचूरन की दूकान” को तिरछी नजर से पढ़ना पड़ता था, क्योंकि ताम्र-पट एक सिरे पर लटक गया था, किन्तु पुराने स्टोर का ‘पोर्च’ चौड़े हैट पहने हुए, धूम्र पान करते हुए व्यक्तियों की एक ऐसी गाथा थी, जिसे सहज ही अनुभव किया जा सकता था।

इस अदृश्य तत्व, भूतपूर्व जीवन की इस आत्मा ने अदृश्य पंखों की भाँति नदी से आने वाली तीव्रगामी सैनिक टुकड़ियों के सैनिकों के विचारों को समाप्त कर दिया।

अन्धकार में गलियों में खेमा डालकर पड़ी हुई नीली वर्दी वाले सैनिकों की विशाल भीड़ से एक जोरदार और अन्तहीन आवाज उठ रही थी। समय-समय पर दूरस्थ सैनिक पंक्तियों द्वारा की जाने वाली गोलाबारी की तीव्र ध्वनि इस समवेत गान में प्रवेश कर जाती थी। धधकते हुए खण्डहरों की गन्ध रात की ठण्डी हवा में व्याप्त थी।

डान गोलियों से छिड़े हुए मकान की देहरी पर दुःखित मन से बैठा हुआ यह घोषणा कर रहा था कि अभियान की व्यवस्था ठीक तरह से नहीं की गयी है। ‘कैम्प फायर’ पर प्रतिबन्ध लगाने वाले आदेश जारी किये गये थे।

एकाएक उसने अपनी वक्तृता बंद कर दी और अपने साथियों को देखकर बोला—“जानते हो, बिली कहाँ है?”

“वह आगे पिकेट पर गया है।”

“निकल जाओ ! क्या वह सच चला गया ?”— डान ने कहा— “उसे पिकेट पर जाने की आवश्यकता नहीं थी। वहाँ कोई दूसरा ‘कारपोरल’ क्यों नहीं चला जाता ?”

मकान के अंदर से खींच कर निकाले हुए घोड़े के बाल के ट्रंक पर बैठकर शान्ति से अपना चुस्ट पीते हुए एक दाढ़ीवाले सैनिक ने कहा—

“यह उसकी बारी थी।”

“ऐसी कोई बात नहीं थी।”— डान चिल्लाया। फिर दोनों में बहस हुई और डान का यह प्रबल मत था कि उसके भाई को ‘पिकेट’ पर भेज कर अन्याय किया गया है। उसकी बहस उस समय समाप्त हुई, जब एक दूसरा सैनिक, जिसके कंधे पर दो पहियोंवाला ‘कारपोरल’ का निशान अस्पष्ट रूप से देखा जा सकता था, आ गया। उसे देखकर डान ने कहा— “धत् ! तुम कहाँ थे ?”

कारपोरल ने कोई उत्तर नहीं दिया। डान ने पुनः कहा—“बिली ! तुम कहाँ थे ?”

ऐसा लगा, जैसे उसके भाई ने यह पूछताछ सुनी ही नहीं। उसने सामने मकान की ओर देखा और घोड़े के बाल के ट्रंक पर बैठे व्यक्ति से अनमने भाव से कहा—“यह कितनी विचित्र बात है। इस नगर पर जो प्रहार हुआ, उसके बाद तुम यही सोचते कि एक के उपर दूसरी ईंट नहीं रह गयी होगी।”

“ओह !”— अपने भाई की पीठ की ओर क्रोधपूर्वक ताकते हुए डान ने कहा— “तुम बहुत अधिक चुस्त होते जा रहे हो, है न ऐसी बात ?”

शिविर में अग्नि का अभाव होने के कारण संध्या का अस्पष्ट धवल प्रकाश प्रत्यक्ष हो गया। इस प्रकाश में सैनिकों के नीले कपड़े काले दिखायी देते थे तथा चेहरे सफेद और भावना-विहीन दिखायी देते थे। थोड़ी दूर दरवाजे के निकट सैनिकों के समूह में काफी उत्तेजना थी। एक सैनिक को एक घाघरा मिल गया था और उसे पहन कर वह नृत्य कर रहा था और उसके साथी उसके इस कार्य की सराहना कर रहे थे। बिली तथा अधिकांश सैनिक इस प्रदर्शन को देखने के लिए तत्काल वहाँ पहुँच गये।

“बिली को क्या हो गया है ?”— घोड़े के बाल के ट्रंक पर बैठे हुए सैनिक से डान ने पूछा।

“मुझे क्या मालूम?”—दूसरे व्यक्ति ने हल्के क्रोध के साथ कहा। वह उठा और दूर चला गया। जब वह लौटा, तब उसने एक ऋतु-विशेषज्ञ के—से स्वर में संक्षेप में कहा कि रात में पानी बरसेगा। डान घोड़े के बाल के ट्रंक के एक सिरे पर बैठ गया। उसके सामने नर्तक के चारों ओर एकत्र भीड़ थी, जो अपने उत्साह में इधर-उधर झूम रही थी। रह-रह कर वह कल्पना करता कि वह अपने भाई का चेहरा पहचान सकता है। वह और ट्रंक के दूसरे सिरे पर बैठा हुआ सैनिक विचार-मग्न होकर सेना की स्थिति पर विचार-विमर्श कर रहे थे। उनके अनुसार पदाति सेना और तोपें नगर की गलियों में बुरी तरह फँस गयी थीं, किंतु वे इससे परेशान नहीं हुए क्योंकि वे इस प्रकार सेना को बुरी स्थिति में फँसी हुई सोचने के अभ्यस्त थे। अपनी-अपनी स्थिति में उन सब ने इस तरह के उतार-चढ़ाव का व्यक्तिगत अनुभव किया था। सैनिक होने के नाते यह सब सोचने का काम उनका नहीं था। उनका काम था कि जब भी मौका मिले, तब दुश्मनों को जीतना, सोना और खाना और लड़ते चले जाना, जब तक कि दूसरी आजाएँ न मिलें। यह काम ही काफी था।

वे दूसरी टुकड़ियों के बारे में बातें करते और यह बातचीत गोपनीय होने के कारण उनकी आवाजें धीमी हो जाती, जैसे कोई भय के साथ बोल रहा हो। ‘नवीं—पहली—पाँचवी—छठी—तीसरी’ ये सीधे-सादे अंक वक्तृत्व के प्रवाह से ओतप्रोत थे! इनमें से प्रत्येक का एक विशेष अर्थ था, नगरों के नामों के समान एक व्यक्तित्व था।

स्वयं अपनी टुकड़ी के सम्बंध में वे गहरी श्रद्धा, भक्ति और सर्वोच्च विश्वास के साथ बात करते थे। स्पष्टतः वे इस प्रकार की श्रद्धा और विश्वास प्रत्येक वस्तु के प्रति नहीं रख सकते थे।

यह ऐसी बात थी, मानो दूसरी टुकड़ियों के प्रति उनकी श्रद्धा का आंशिक कारण यह आश्चर्य था कि उनके निजी प्रसिद्ध अंकों से वंचित संगठन भी युद्ध में उनके जैसा रस ले सकता है। वे यह साबित कर सकते थे कि उनकी टुकड़ी और उनकी ब्रिगेड सब में अच्छी है और उनकी रेजिमेंट में यह बात स्पष्ट थी कि जीवन का कोई भी सुख प्रतीक्षा की आधार-शिला स्वरूप इस कमान में जन्म लेने के तुल्य नहीं था।

कभी-कभी डान एक ऐसे अस्पष्ट अनाम जनरल को गालियाँ दिया करता था, जिसने उसके मतानुसार, अपनी मूर्खता और व्यस्तता की भावना के वशीभूत होकर वह आदेश जारी किया था, जिसके कारण गरम काफी का मिलना

असम्भव हो गया था। निश्चित ही डान का कथन था कि आनेवाले युद्ध में विजय है। दूसरा सैनिक तनिक संशयित लगता था। पहाड़ की ऊँची लंबी कतारों को देखकर वह नदी के दूसरे किनारे से ही कहा करता था— “हँ-हँ, क्या है यह ?” सोचते हुए वह नाचनेवाले आदमी के ऊपर उड़ती हुई नजर डालता। इन सब स्वरों के बीच दूर नगर में कभी धड़के सुनायी ही पड़ते थे— न रुकने वाली तोपों के धम-धम करते हुए धड़के।

— ३ —

अंधकार गहरा होता गया और अन्त में रात काले मखमल के रंग की हो गयी। अग्निविहीन शिविर की पंक्तियाँ प्राचीन भित्ति-आवरणों पर खींची गयी धुंधली आकृतियों के समान दिखायी दे रही थीं। राइफल की चमक और बटनों की चमक ऐसी प्रतीत होती थी, जैसे रात की काली चादर पर चांदी और सोने में धागों से किसी ने जरी का काम किया हो। यद्यपि कुछ दिखायी नहीं देता था, तथापि वातावरण में एक रहस्यमय धड़कन जैसी किसी वस्तु का अनुभव हो रहा था, जिससे किसी नवागन्तुक को एक दैत्याकार वस्तु, सोये हुए सैनिकों के समूह और तोपों के समूह की उपस्थिति का पता चल जाता। आग जलाने की मनाही होने के कारण एक सूखे पुराने रसोईघर के फर्श को दिसम्बर महीने की सर्द जमीन की अपेक्षा अधिक पसन्द किया जाता, भले ही उस रसोईघर में गोला गिरा हो और उसका रूप इतना विकृत हो गया हो कि अपने कम्बल में लिपटे हुए व्यक्ति को जागृत अवस्था में अंतिम विचार उस दीवार के सम्बंध में ही आता, जो उसके ऊपर झुकी हुई थी, मानो वह दीवार सैनिकों के ऊपर गिर पड़ने के लिए अत्यंत उत्सुक हो।

बिल ने ईंटों की ओर देखा। ऐसा प्रतीत होता था कि ये ईंटें उसके चेहरे पर गिर ही पड़ने वाली हैं। उसने नगर की सीमा पर अपनी राइफलों को चलाते हुए परिश्रमी गश्ती सैनिकों की आवाजें सुनीं, आगामी युद्ध में होनेवाले शोरगुल की कल्पना की, डान और डान की परेशानी के विषय में विचार किया और संतोष के साथ सोने चला गया।

एक अज्ञात घंटे में पटरों की चरमराहट से उसकी नींद टूट गयी। कुहनी के बल उठते हुए उसने एक साजेंट को सोये हुए आदमियों के मध्य घूमते हुए देखा। साजेंट के हाथ में पीतल के एक पुराने दीपदण्ड में रखी हुई एक मोमबत्ती

थी। यदि उसके चमकते हुए बटन और धारीदार आस्तीनें नहीं दिखायी देतीं, तो वह उस बूढ़े किसान के समान दिखायी देता, जो किसी असाधारण आधी रात को बाहर निकलता है।

जब तक उसके दिमाग से नींद की खुमारी दूर नहीं हो गयी, तब तक बिली मूर्खों की भोंति रोशनी की ओर देखता रहा। सार्जेंट अचेत पड़े हुए सैनिकों के ऊपर झुककर रोशनी को उनके निकट ले जाता और प्रत्येक चेहरे को देखता था।

“हलो हैन्स!”— बिली ने कहा— “छुट्टी?”

“हलो बिली!”— सार्जेंट ने कहा— “स्पेशल ड्यूटी।”

“डान को जाना होगा?”

“जेमसन, हण्टर, मैकारमैक, डी. डेम्पस्टर। हाँ, कहाँ है वह?”

“वहाँ घड़ी के पास।”— बिली ने भाव-भंगिमा के साथ कहा— “ऐसा किसलिए है, हैन्स?”

“तुम ऐसा नहीं सोचते होगे कि मुझे पता है, या तुम ऐसा सोचते हो?”— सार्जेंट ने पूछा। उसने फर्श पर पड़े हुए व्यक्तियों को तेज आवाज में, किंतु प्रसन्नतापूर्वक पुकारना प्रारम्भ किया— “आओ, मैक, उठो। तुम्हारे लिए स्पेशल ड्यूटी का हुक्म है। जेमसन जाओ। आओ डैनी, मेरे बेटे।”

प्रत्येक व्यक्ति ने ड्यूटी पर जाने के आदेश को तत्काल एक व्यक्तिगत अपमान समझा। वे अपने कम्बलों से बाहर निकले, अपनी आँखें मलीं और जो कोई भी इस आदेश के लिए उत्तरदायी था, उसे गालियाँ दी। सार्जेंट चिल्लाया— “उनके लिए आदेश हैं। आओ! यहाँ से निकलो।” एक सैनिक ने, जिसका नाम आदेश में नहीं था, अपना अस्तव्यस्त बालवाला सिर कम्बल से निकाला और उनींदे स्वर में बोला— “चुप रहो हैन्स और घर चले जाओ।”

जिन व्यक्तियों के नाम आदेश था, वे जब रसोईघर से बाहर निकले, तब शेष सैनिकों में से एक के अतिरिक्त सभी पुनः निद्रा-निमग्न हो गये। बिली अपनी कुहनी के बल झुका हुआ अंधेरे में धूर-धूर कर देखने लगा। जब पद-चाप मौन हो गये, तब वह अपने को कम्बल में लपेटकर सो गया।

दिन के शीतल प्रकाश की प्रथम किरण के साथ वह पुनः उठा और अपने सोये हुए साथियों की ओर देखा। एक साथी को जागते हुए देख कर उसने पूछा— “क्या डान वापस आगया?” उस व्यक्ति ने उत्तर दिया— “मैंने उसे नहीं देखा है।” बिली ने अपने दोनों हाथों को सिर के पीछे किया और निराशा के

साथ आकाश की ओर देखने लगा। “रात में इस प्रकार ड्यूटी लगाने का लाभ समझ में नहीं आता।”— उसने अपने अत्यंत तर्कहीन स्वर में कहा — “बड़ी बदतमीजी है। क्यों नहीं वे—?” वह बहुत देर तक और स्पष्ट रूप से बड़बड़ाता रहा। फिर भी, जब डान सैनिक दल के साथ प्रविष्ट हुआ तब बिली निश्चित रूप से सो गया था।

— ४ —

रेजिमेण्ट सड़क के किनारे-किनारे चलने में दूना समय ले रही थी और कर्नल तोपखाने के अनेक अफसरों के साथ इस बात पर झगड़ा करता हुआ प्रतीत हो रहा था कि मार्ग का उपयोग करने का अधिकार किसको है। तोपों कीचड़ में प्रतीक्षा कर रही थीं और तोपखाने के सैनिक इस महत्वाकांक्षी पैदल सेना के शोर-गुल से तंग आकर अपने-अपने स्थान से और गोला रखने की पेटियों पर से हर-तरह की हँसी-मजाक की बात कर रहे थे और अपने-अपने घूसे तान रहे थे। तिरछी रखी हुई तोपें विचारमग्न-सी होकर भूमि की ओर देख रही थीं।

ध्वस्त नगर की बाहरी सीमा पर नीली आकृतियों की एक टुकड़ी कुहरे में गोलियों की वर्षा कर रही थी। रेजिमेण्ट हट कर संघर्ष के लिए पंक्तिबद्ध हो गयी और नीली आकृतियों का समूह पीठ पीछे कर के तथा प्रसन्नतापूर्वक पार्श्व में होकर खाना हो गया।

घने कुहरे में अस्पष्ट रूप से दिखायी देनेवाली एक पहाड़ी की ओर गोलियों की वर्षा प्रारम्भ हो गयी। जब धीरे-धीरे बढ़ती हुई आवाज अपनी चरम सीमा पर पहुँच गयी, तब गोलियों की सनसनाहट की आवाज सिर के हों ऊपर से होकर गुजरने लगी, मानो वह किसी अदृश्य पर्दे को भेद कर आ रही हो। पहाड़ी पर स्थित एक तोप इतने जोर-शोर के साथ गोले बरसा रही थी कि ऐसा प्रतीत होता था, मानो तोपों में आपस में झगड़ा हुआ हो, वे इधर-उधर गिर पड़ी हों और एक-दूसरे की ओर देख कर गुर्गा रही हों। गोले नगर की दिशा में यात्रा करते हुए जोर-जोर की आवाज करते थे। थोड़ी दूरी से एक अदृश्य रेखा से होते हुए तथा नारंगी के रंग के प्रकाश की धुंधली चादरें बनाते हुए हथगोलों की एक बौछार आयी।

नयी संघर्ष-पंक्तियों में कुछ सैनिकों ने कुहरे में दिखायी देने वाली विभिन्न

छायाओं पर गोलियाँ चलाना प्रारम्भ कर दिया था। ये छायाएँ मनुष्यों की आकृतियों के समान थीं और पीछे पड़ गये बादलों के समुद्र से आकस्मिक रूप से प्रकट हो जाया करती थीं। हथगोलों के फूटने की आवाज में शत्रु की गोलियों की आवाज दबने लगी। डान अगली पंक्ति में था। उसने अपनी राइफल को तैयार रखते हुए एक खिलाड़ी के-से भाव से कुहरे में जिज्ञासा-पूर्वक, शुष्कतापूर्वक देखा। उसकी नसें इतनी तनी हुई थीं, मानों उन्हें उसके शरीर से खींच लिया गया हो और वह माँसपेशियों की एक मशीन मात्र रह गया हो, किन्तु उसके हृदय की धड़कन किसी प्रकार युद्ध के शोर-गुल के साथ जारी थी, यद्यपि उसकी अनुभूति की शक्ति समाप्त हो गयी थी।

युद्ध-रत सैनिकों की हिलती हुई पंक्ति कभी पीछे हटती थी, कभी आगे बढ़ती थी, वह कभी इधर दौड़ती थी, कभी उधर दौड़ती थी। आदमी कुहरे में खो जाते थे और फिर मिल जाते थे। एक बार वे उस प्रचण्ड पहाड़ी के अत्यन्त निकट पहुँच गये और वह ऐसे जोर के साथ फूट पड़ी, मानो एक सामान्य आक्रमण का प्रतिकार कर रही हो। एक बार एक दूसरी नीली रेजिमेण्ट उनके ऊपर गोलियों की वर्षा प्रारम्भ करने ही वाली थी कि उसे पकड़ लिया गया। एक बार मित्र पक्ष की ही एक तोप ने विनाश की एक विस्तृत और वैज्ञानिक प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी। सैनिक सदा दलालों की भाँति व्यस्त रहते थे, मैदान में इधर से उधर डोलते रहते थे, शत्रुओं से लड़ते और मित्रों से बचते रहते थे, पीली घास के गीले मैदान में उनकी गतिविधियों का चिह्न अंकित हो जाता था, वे वातावरण को गालियाँ देते थे तथा जब कभी शत्रु को पहचान पाते थे, तभी उस पर गोलियों की बौछार करने लगते थे।

एक बार कुहरे के रहस्यपूर्ण ढंग से बदलने पर, मानो आत्माओं की अंगुलियाँ इन पदों को बगल में खींच रही हों, डान और उसके आसपास के लोगों ने अचानक भूरी वर्दी वाले सैनिकों के एक छोटे-से गुट को देखा। वे मौन और मूर्ति के समान निश्चल खड़े थे। वे इतने स्पष्ट और निकट थे कि उनका प्रकट होना एक प्रकार की असाधारण बात थी।

उन्होंने एक-दूसरे को प्रायः एक सेकण्ड तक घूर-घूर कर देखा। तत्पश्चात् प्रत्येक दल में प्रत्येक राइफल कन्धे पर पहुँच गयी। ज्यों ही डान ने अपने हथियार की नली पर दृष्टिपात किया, त्योंही उसे अचानक एक व्यक्ति की आकृति दिखायी दी, मानो हथगोला एक खुर्दबीन रहा हो। छोटी काली दाढ़ी, आगे निकले हुए हँट, गोली चलाने के लिए निशाना लगाते हुए आदमी

के खड़ा होने के ढंग को देख कर डान के मस्तिष्क में शीघ्रतापूर्वक एक चित्र बन गया। ऐसा प्रतीत हुआ कि उसने उसी क्षण स्वयं अपनी राइफल का घोड़ा दबा दिया और वह आदमी निर्जीव होकर मुह के बल गिर पड़ा। उसकी राइफल से निकली हुई गोली से आकाश में एक तिरछी लाल रेखा बन गयी और हैट लाश के आगे गिर पड़ा। कुहरे की आवाजें इधर-उधर सुनायी दे रही थीं।

“तुमने निश्चय ही उस आदमी को मार डाला।”—एक साथी ने डान से कहा। डान ने अनमने भाव से उसकी ओर देखा।

— ५ —

जब दूसरे दिन प्रातःकाल पुनः कुहरे के दर्शन हुए, तब रेजिमेण्ट के सैनिक खुल कर टीका टिप्पणियाँ करने लगे, किन्तु उन्होंने उसे अधिक गालियाँ नहीं दीं, क्योंकि अब नगर की सड़कें अश्वारोही सेना की तीन सैनिकों की पंक्तियों के लिए काफी थीं और उन्हें इस बात का ज्ञान हो गया था कि वे महान् युद्ध के किनारे पर आ पहुँचे हैं।

डान उस आदमी के साथ बातें कर रहा था, जिसके पास एक समय घोड़े के बाल का ट्रंक था, किन्तु उन्होंने पहाड़ों की पंक्तियों का, जिनके सम्बन्ध में वे अधिक लापरवाही के क्षणों में बातें किया करते थे, जिक्र नहीं किया। वे इस विषय पर उसी प्रकार बातें करने से बच रहे थे, जिस प्रकार फाँसी की सजा पाये हुए व्यक्ति मृत्यु के सम्बन्ध में बातें करने से बचते हैं। फिर भी, जब उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा और जब वे अन्य विषयों पर गम्भीरतापूर्वक बातचीत कर रहे थे, तब उनकी आँखों में इसका विचार छाया हुआ था।

जब गलियों में अनिश्चित काल तक “अपने-अपने स्थान पर खड़े हो जाओ” की तीखी आवाज बार-बार सुनायी पड़ी, तब प्रतीक्षा-रत रेजिमेण्ट ने राहत की एक लम्बी सांस ली। एक खूँखार युद्ध का लड़ा जाना अनिवार्य था और वे इसके विचार को अपने दिमागों से निकाल देना चाहते थे। फिर भी, उनके भाग्य में काफी समय तक कीचड़ में व्यतीत करना लिखा था। उन्होंने अपनी गर्दन उठायी और इस बात पर आश्चर्य करने लगे कि कुछ अन्य रेजिमेण्टें किधर जा रही हैं।

अन्ततोगत्वा कुहरा लापरवाही के साथ दूर हट गया। इस समय प्रकृति ने

ऐसी व्यवस्था कर दी कि शत्रु एक दूसरे को देख सकें और तोपों का गर्जन तत्काल प्रत्येक पहाड़ी में प्रतिध्वनित होने लगा। योद्धाओं की अन्तहीन आवाजें बढ़ कर हथगोलों की तीखी आवाजों में परिणत हो गयीं। घरों पर गोले चीतों के समान गर्जना करते हुए फूट रहे थे। डान ने घोड़े के बाल के टूंक वाले आदमी की ओर देखा और उस आदमी ने कहा—“देखो, वह आ रही है।”

नवयुवक अफसरों की साधारण आवाजें तथा बूढ़े अफसरों की गहरी और रूखी आवाजें सड़कों में गूँज रही थीं। ये आवाजें अंकुश की भाँति चुभ रही थीं। आदमियों के समूहों को जिस आकस्मिकता के साथ युद्ध के लिए तत्पर सैनिकों की स्थिति में डाल दिया गया था, उससे वे कम्पायमान हो रहे थे। इस बात का भावना के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था कि आदेश की आशा बहुत समय से की जा रही थी।

नगर में पड़े हुए ये समस्त व्यक्ति और घोड़े एक साथ ही भागने लगे। दुष्ट पहाड़ी के सामने स्थित सड़कों पर एक के बाद दूसरी रेजिमेण्ट तीव्र गति से आने लगी।

इस निष्क्रमण का स्वरूप नाटकीय था। गम्भीरता के रंग में रंगा हुआ छोटा गाँव उस लबादे की भाँति था, जो नाटक के राजा के लिए छद्मवेश का काम करता है। अब उसे अलग कर दिया गया था और सूर्य के प्रकाश में एक सेना, फौलाद और नीली वर्दियों की एक शानदार वस्तु खड़ी थी।

इस कल्पनातीत दृश्य को देखकर गहरी पंक्तियों के सैनिकों ने भी गहरी साँस ली। शत्रु की मोर्चाबन्दी की ऊँचाई पर एकत्र व्यक्ति किसी जोरदार तमाशे को देखने के लिए आये हुए व्यक्तियों के समान दिखायी दे रहे थे, किन्तु जब सैनिकों की पंक्तियाँ दृढ़तापूर्वक अपनी मोर्चाबन्दियों की ओर बढ़ी, तब बन्दूकों और योद्धाओं की संख्या दूनी हो गयी। गोले आग बरसाते और आवाज करते हुए भीड़ से भरे मैदान पर फूटते। एक गोला रेजिमेण्ट के ऊपर आकर फूटा और जब उसका धुआँ और क्रोध मृत शरीरों को छोड़कर समाप्त हो गये, तब प्रत्येक व्यक्ति अपने शब्द-ज्ञान की सीमा के अनुसार गालियाँ बकने लगा, क्योंकि पुराने सैनिक उस समय मरने से घृणा करते हैं, जब वे व्यस्त न हों।

कभी-कभी ब्रिगेड बगल में अपने साथियों की ओर देख लेती थी। ब्रिगेड में ऐसे सैनिक थे, जो कभी युद्ध में नहीं गये थे, किन्तु मैदान की ओर लगी हुई आँखों के सामने कोई भी जमा हुआ रक्त इस सेना की शान की गर्मी को सहन

नहीं कर सकता था। ये पंक्तियाँ इतनी लम्बी थीं कि पार्श्व भाग छोटी रेखाओं के समान प्रतीत होते थे। इन सैनिकों का एक ही संकल्प था। रंगरूट लापरवाही के साथ चल रहे थे। पीछे एक-एक निष्क्रिय तोप थी और तीन तोपची गोलों की एक पेटी पर मूर्खतापूर्वक एक कतार में बैठे हुए एक दूसरे को कुहनियों से खोद रहे थे और रंगरूटों पर मुँह बिचका रहे थे। उन्होंने पुकार कर कहा—“तुम बहुत शीघ्र सीख जाओगे।” वे निर्व्यक्तिक रूप से प्रसन्न थे, मानो स्वयं उनके भी बहुत शीघ्र सीख जाने की सम्भावना न हो, किन्तु अपने हृदयों में सेना के इस चित्र के साथ नये सैनिक सम्भवतः उस भक्ति-भाव का अनुभव कर रहे थे, जिस भक्ति-भाव का अनुभव बूढ़े लहर के लिए कर सकती हैं; वे इसकी शक्ति और महिमा से बने थे, वे तोपचियों की मूर्खतापूर्ण कतार पर आनन्दपूर्वक मुस्कराये और उन्हें लपटों में चले जाने के लिए कहा।

सैनिक पंक्ति ने कुछ छोटे-छोटे पुलों को पार किया और शीघ्र ही युद्ध की पंक्तियों के रूप में फैल गयी। उनके सामने मैदान का एक टुकड़ा था और मैदान के पीछे पहाड़ी थी। सोच-विचार के लिए समय नहीं रह गया था। सैनिक मैदान की ओर देख रहे थे और आश्चर्य कर रहे थे कि यदि कोई ब्रिगेड गोलियाँ बरसाने लगे, तो वहाँ बाहर रहना कैसा लगेगा। पहाड़ी पर चारों ओर धुआँ ही धुआँ और आग दिखायी दे रही थी।

युद्ध के आतंक में भावनाओं में एक ऐसी उच्चता आ जाती है, जो किसी व्यक्ति के हृदय को ओतप्रोत कर देती है और उसमें ऐसा प्रबल उत्साह प्रज्वलित कर देती है कि उसमें मृत्यु का आलिंगन करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है। भावनाओं की यही उच्चता रंगीन प्रकाश की भाँति सैनिकों के चेहरों पर चमक उठी, जिससे वे बंधे हुए पशुओं के समान उत्सुक, भयंकर और अनायास भयभीत प्रतीत होने लगे। वास्तव में सैनिकों की पंक्ति जोर-जोर से कड़ी आवाज में आदेश दिये जाने के पहले ही गतिमान हो गयी थी।

तत्पश्चात् सैनिकों के मस्तिष्क में निकटस्थ होने का लोभ, जो संगीन-प्रहार की भावना है, व्याप्त हो गया और उसने बढ़ते-बढ़ते पागलपन का रूप धारण कर लिया। मैदान दक्षिणी शीत ऋतु की सूखी घासों से ढका हुआ था और वह इस भयंकरता में मीलों चौड़ा प्रतीत हो रहा था।

धुएँ के ऊँचे, मन्द गति से चलते हुए समूहों ने जलती हुई रई की सुगन्ध के साथ सैनिक पंक्ति को ढंक लिया और अन्त में सैनिक तैराकों की भाँति प्रतीत होने लगे। उनके सामने पहाड़ी, इस मटमैले समुद्र का तट, अस्पष्ट रूप से

दिखायी दे रही थी और लपटों की चादर उसे बार-बार पार कर जाती थी । युद्ध का शोर बढ़कर असंख्य पवन-दैत्यों के शोर के समान हो गया ।

सैनिक सरपट दौड़ते हुए, धक्का-मुक्की करते हुए, घायल घोड़ों के झुण्ड की भांति भागते हुए एक मैदान में पहुँचे, जो लाशों से पटा हुआ था । ये लाशें अन्य युद्धों का प्रमाण प्रस्तुत कर रही थीं ।

काले चेहरे वाले, विजय-गान गाते हुए, इस अग्रगामी अभियान में एक नये प्रकार के राक्षस की भाँति शोर करते हुए डान के ठीक सामने एक घायल व्यक्ति अपनी जर्जर देह को ऊपर उठाये हुए और अपनी ओर आने वाले इन सैनिकों की भीड़ की ओर ताकते हुए दिखायी दिया । ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके दिमाग में कुचल जाने का भय समा गया । उसने बच निकलने का एक निराशापूर्ण, दयनीय प्रयास किया; तत्पश्चात् एक प्रतीक्षा-रत ढेर में जा पड़ा । डान और उसके निकटस्थ सैनिक ने नीचे देखे बिना और घायल व्यक्ति की ओर ध्यान देने का भाव न जताते हुए, अपने बीच की दूरी चौड़ी कर दी । नीले रंग का यह आकृति-विहीन ढेर उनकी बगल में उसी तरह से गिर पड़ा, जिस तरह ट्रेन की बगल में पत्थर के टुकड़े गिरते हैं ।

धुएँ की लहर को चीरते हुए, तीव्र गति से चलने वाले, असंगठित दल अपने पहले आने वाली ब्रिगेड के ध्वंसावशेष के पास पहुँचे । यह ब्रिगेड पहाड़ी से काफी दूर गोलियों की बौछार से धराशायी हो गयी थी ।

ऐसा प्रतीत होता था, मानो किसी जादूगर ने अचानक उन्हें भवितव्य का दर्शन करा दिया हो; किन्तु पंक्ति तीव्र गति से इस ध्वंसावशेष के ऊपर से होती हुई आगे बढ़ गयी, वह तब तक आगे बढ़ती गयी, जब तक सैनिक अन्य आक्रमणों में मारे गये व्यक्तियों की लाशों से न टकराने लगे, जब तक वे उस स्थान पर न पहुँच गये, जहाँ पहाड़ी परसे बरसने वाली आग समाप्त हो गयी थी ।

हाँफते हुए, पसीने से तर, चेहरों पर उतावली का भाव लिये हुए सैनिकों ने उसे ढकेल कर पार कर जाने का प्रयास किया, किन्तु ऐसा लगा जैसे वे किसी दीवार के पास आ गये हों । लहर रुक गयी, अपनी दोनों आकांक्षाओं के शीघ्र संघर्ष से उत्पन्न हुई वेदना से वह काँप उठी, तत्पश्चात् वह लुढ़क कर नीचे आ गिरी और एक ऐसी खंडित वस्तु के रूप में टूट गयी, जिसका कोई नाम नहीं होता ।

अन्ततोगत्वा अब पुराने सैनिकों और रंगरूटों के अन्तर को पहचाना जा

सकता था। नयी रेजिमेण्टें क्षण भर में ही छिन्न-भिन्न और समाप्त हो गयी थीं जैसे उनका अस्तित्व कभी रहा ही न हो, किन्तु पुराने सैनिक आक्रमण व युद्ध की विफलता के कारण अपने कार्य को नहीं भूल सकते थे। दानवों के इस झुण्ड ने एक अन्तिम वेदना के साथ अपने को एकत्र किया और पहाड़ी पर गोलियों की बौछार की। गोलियों की यह बौछार फौलाद के समान सुदृढ़ उन खाइयों के लिए महत्वहीन थी, किन्तु फिर भी, वह उस चरम अन्तिम निराशा को व्यक्त कर रही थी, जो मनुष्यों को मृत्यु-नगर की दीवारों की शांतिपूर्वक उपेक्षा करने की क्षमता प्रदान करती है।

इस घटना के बाद सैनिकों ने अपनी कमान का पुनः नामकरण किया। उन्होंने इसे “छोटी रेजिमेण्ट” की संज्ञा प्रदान की।

- ६ -

“मैंने कल डान को एक आदमी को गोली मारते देखा। हों साहब ! मुझे पूरा विश्वास है कि उसीने ऐसा किया और हो सकता है कि अब वह आदमी के बारे में सोच रहा हो और आश्चर्य कर रहा हो कि शायद वह भी ठीक उसी तरह से लड़खड़ा कर धराशायी हो जाय। ये चीजें आदमी के दिमाग में आ ही जाती हैं।”

पादर्व-मार्गों पर, गलियों में और मैदानों में, खेमों में जलने वाली आग की हिलती हुए लपटें ऊँचे उठ रही थीं, जो पतली लाल अंगुलियों की भाँति गन्दी टूटी हुई दीवारों और गिरी हुई ईंटों के ढेरों का निरीक्षण कर रही थीं। विशाल नीले जन-समुदाय से आवाजों की भनभनाहट पुनः उठी।

खण्डहरों में सूअर का गोश्त तलने की गंध और काफी के छोटे असंख्य पात्रों से निकली हुई महक तैर रही थी। छायाओं में खड़ी की गयी राइफलें से फौलादी प्रकाश की चमक निकल रही थी। जहाँ कहीं कोई झण्डा राइफलों के एक ढेर से दूसरे ढेर तक पट पड़ा हुआ था, वह एक ऐसे बाज की शैय्या थी, जिसने मनुष्य को इस रहस्यमय धुँएँ में पहुँचा दिया था।

एक विशेष आग के चारों ओर बैठे हुए व्यक्ति अपनी हास-परिहास की भावना को नियंत्रण में रखने का प्रयत्न कर रहे थे। वे लपट के चारों ओर कानाफूँसी करते हुए चल रहे थे, यद्यपि वे इसकी ओर उसी प्रकार सन्तोष के साथ देख रहे थे, जिस प्रकार मजदूर दिन भर के कठोर परिश्रम के बाद सन्तोष

की सांस लेते हैं।

एक व्यक्ति अलग बैठा हुआ था। वे जब उससे बोलते थे, तब उनके स्वरों में अकस्मात् परिवर्तन हो जाया करता था। वे उसकी ओर सीधे नहीं, बल्कि सदा कनखियों से देखते थे।

अन्त में दूर की एक आग से एक आदमी इस प्रकाश-वृत्त में आया। उसने थोड़ी देर तक दूर बैठे हुए आदमी का अध्ययन किया। तत्पश्चात् वह हिच-किचाते हुए उसके समीप गया और बोला—“क्या कोई खबर मिली, डान ? ”

“नहीं।”—डान ने कहा।

नवागन्तुक ने अपना पैर हटाया। उसने आग, आकाश, अन्य व्यक्तियों और डान की ओर देखा। उसके चेहरे पर एक विचित्र निराशा का भाव व्यक्त हो रहा था, उसकी जीभ स्पष्टतः विद्रोह कर रही थी। अन्त में उसने किसी तरह कहा—“अब भी कुछ आशा है, डान। तुम जानते ही हो, अनेक घायल व्यक्ति अभी तक वहाँ पड़े हुए हैं। अब भी कुछ आशा है।”

“हाँ।”—डान ने कहा।

सैनिक ने पुनः अपने पांव हटाये और दयनीय भाव से आकाश की ओर देखा। एक और प्रयास के बाद उसने कहा—“डान, अब भी कुछ आशा है।” वह जल्दी से दूर चला गया।

शायद इस उदाहरण से प्रोत्साहित होकर स्क्वाड का एक सैनिक अब उस शान्त मूर्ति के निकट पहुँचा। “हैं, अभी तक कोई खबर नहीं लगी ?”—उसने अपने हाथ के पीछे खांसते हुए कहा। “नहीं।”—डान ने कहा।

उस व्यक्ति ने कहा—“मैं सोच रहा था कि जिस रात को तुम स्पेशल ड्यूटी पर गये थे, उस रात को वह किस प्रकार तुम्हारे बारे में चिन्ता कर रहा था। तुम्हें याद आ रहा है ? हाँ, साहब, मुझे आश्चर्य हुआ। वह इस बारे में अधिक कुछ नहीं कहा सका। मुझे विश्वास नहीं है, तुम्हारे जाने के बाद उसने एक झपकी भी ली हो, किन्तु वह स्पेशल ड्यूटी को बुरा-भला कहता हुआ और चिन्ता करता हुआ जागता रहा। मुझे आश्चर्य हुआ, किन्तु वह बड़बड़ाता हुआ पड़ा रहा। वह—”

डान ने एक विचित्र प्रकार की आवाज की, मानो उसके गले में पत्थर अटक गया हो ! उसने कहा—“चुप रहो, क्या तुम चुप रहोगे ?”

उसके बाद सैनिकों ने उसके सोच-विचार में कोई विघ्न नहीं उपस्थित होने दिया।

“ओह, उसे अकेला छोड़ दो, क्या तुम उसे अकेले नहीं छोड़ सकते ?”

“वहाँ से चले आओ, केसी।”

“क्या तुम उसे छोड़ नहीं सकते ?”

वे उस निश्चल मूर्ति के आसपास, जिसका चेहरा नकाब की भाँति अभेद्य था, सम्मानपूर्वक चलते-फिरते रहे।

जब सूर्य का लाल गोल नेत्र छोटे मैदान और उसकी वस्तुओं पर काफी देर तक घूर-घूर कर देख चुका, तब गहन अन्धकार काले वरदान के रूप में छा गया और मृतकों के अस्पष्ट हाथ अब विचित्र जमी हुई मुद्राओं में नहीं दिखायी देते थे।

मैदान के सामने की चोटियाँ छोटी-छोटी शिविराग्नियों से चमक रही थीं और पृष्ठ भाग में स्थित नगर से शिविराग्नियों से छोटी-छोटी लहरें उठ रही थीं। मैदान में अन्धकार व्याप्त था, जिस पर समय-समय पर प्रकाश के धब्बे, लालटेन, धीरे-धीरे यत्र-तत्र तैरती थीं। ये मैदान बहुत समय से भीषण रहस्य में डूबे हुए थे।

अचानक एक अंधेरे स्थान पर एक हलचल हुई। वहाँ एक विचित्र वस्तु पेट के बल पड़ी हुई कराह रही थी। तत्पश्चात् उसने अचानक अपने को घसीटा और बैठे गयी। फिर वह एक आदमी के रूप में दिखायी देने लगी।

उस आदमी ने एक क्षण मूर्खतापूर्वक पहाड़ पर होने वाली रोशनी की ओर देखा। फिर वह मुड़ा और नगर के अस्पष्ट रंग के विषय में विचार करने लगा। कुछ क्षणों तक वह इसी स्थिति में रहा। वह अपनी धुंधली आँखों से देख रहा था; उसका चेहरा भावहीन काष्ठवत् था।

अन्त में उसने अपने चारों ओर पड़ी हुई लाशों की ओर देखा, जो अस्पष्ट रूप से दिखायी दे रही थीं। इन मनुष्यों का निरीक्षण करने पर उसके चेहरे पर कोई परिवर्तन नहीं दृष्टिगोचर हुआ। ऐसा प्रतीत होता था कि वे लाशें उसे केवल इतना बता रही थीं कि स्वयं अपने सम्बन्ध में उसकी सूचना पूर्ण नहीं थी। उसने अपनी बाहों और सीने पर अपनी अंगुलियाँ दौड़ायीं। वह सदा एक भिक्षुक-गृह के द्वार पर बेंच पर बैठे हुए एक मूर्ख के समान प्रतीत हो रहा था।

जब उसे अपनी बाहों अथवा सीने पर कोई चोट नहीं मिली, तब वह अपना हाथ अपने सिर पर ले गया और उसकी अंगुलियों पर किसी काले तरल पदार्थ का दाग लग गया। इन अंगुलियों को आँखों के नजदीक ले जाकर उसने

उसी प्रकार मूर्खता के साथ उनका निरीक्षण किया, जब कि उसका शरीर धीरे-धीरे कांप रहा था।

सैनिक ने अपनी आँखें पुनः नगर की ओर घुमायीं। जब वह उठा, तब उसके कपड़े जमीन से उसी प्रकार उखड़े, जिस प्रकार कोई भीगा हुआ कागज। इस आवाज को सुनकर वह विचार करने लगा। वह रुका और जमीन की ओर देखने लगा। फिर उसने अपने पायजामे की ओर और फिर जमीन की ओर देखा।

अन्त में वह अपनी हथेलियों को सामने किये हुए और अंधे की भाँति चलते हुए धीरे-धीरे अस्पष्ट छाया की ओर अग्रसर हुआ।

निश्चल डान पुनः कपड़े उतार कर साथियों के बीच बैठ गया, जो जोर से मजाक नहीं करते थे। सामान्य प्रातःकालीन कुहरे की आर्द्रता छोटी-छोटी शिविराग्नियों को क्रोधित करती हुई प्रतीत हो रही थी।

अकस्मात् गलियों में एक शोर, विस्मय और हर्ष का एक शोर उठा। आग पर नाश्ता तैयार करते हुए आदमियों ने शीघ्रतापूर्वक ऊपर देखा। वे जोर के साथ चिल्ला उठे—“कितना आश्चर्य है! डान! देखो कौन आ रहा है! ओह, डान!”

मौन डान ने आँखें ऊपर उठायीं और एक व्यक्ति को देखा। उस व्यक्ति के सिर पर टोप के आकार की पट्टी बँधी हुई थी और कम्पनी जोर-जोर से उसके स्वागत में प्रदर्शन कर रही थी। वह हाथ मिला रहा था, सफाई दे रहा था और उच्च स्वर में भाषण कर रहा था।

डान उठा। उसका भावहीन चेहरा कनपटियों तक लाल हो उठा। ऐसा प्रतीत हुआ कि वह जमीन से कूद पड़ेगा, किन्तु अचानक वह बैठ गया और पुनः निष्क्रिय रूप से देखने लगा।

सैनिक उत्तेजित हो उठे थे। उन्होंने एक के बाद दूसरे की ओर देखा। “डान! देखो! देखो कौन आ रहा है!”—कुछ सैनिक पुनः चिल्ला उठे—“डान! देखो!”

अन्त में वह चिल्लाया और अपने कन्धों को क्रोधपूर्वक हिलाया—“क्या मैं नहीं जानता?”

किन्तु उन्हें इस बात का विश्वास नहीं हो सका कि उसकी आँखें काम दे रही थीं। “डान, तुम देख क्यों नहीं सकते? देखो कौन आ रहा है!”

तब उसने खीझ और क्रोध का भाव व्यक्त किया। “जहन्नुम में जाय!”

क्या मैं नहीं जानता ?”

टोप के आकार की पट्टी बाँधे हुए व्यक्ति आगे बढ़ा। वह हर दम हाथ मिलाता जा रहा था और सफाई देता जा रहा था। कभी-कभी उसकी दृष्टि डान की ओर चली जाती थी, जो आँखें गड़ाये हुए देख रहा था।

कई बार इधर-उधर होने के बाद स्वभावतः ऐसा हुआ कि पट्टी वाला व्यक्ति लपटों की ओर देखने वाले व्यक्ति के अत्यन्त निकट पहुँच गया। वह रुका और थोड़ी देर तक मौन रहा। अन्त में उसने कहा—“कहो, डान।”

“कहो, बिली।”

ग्लानि

“यहाँ आकर मुझे परेशान मत किया करो।”—रसोईदारिन ने निष्ठुरता से कहा—“तुम्हारी माँ नहीं, तुम्हारे पिता के भोजन का समय हो चला है। इतना सारा काम है और यहाँ आकर तुम मेरा सिर खा रहे हो। यह रसोईघर है, बच्चों के खेलने की जगह नहीं, समझा न ? जाओ, अड़चन मत डालो।”

आवेश-पूर्ण मुद्रा में उसने मुँह फेर लिया और काम में इस तरह जुट गयी, जैसे सचमुच बहुत काम बाकी हो। जिमी पर इसका कोई असर नहीं हुआ। वह वहीं खड़ा रहा। “वे... वे सभी लोग पिकनिक पर जा रहे हैं।”—जिमी सहमे हुए स्वर में बोला।

“क्या कहा ?”

“वे सब पिकनिक पर जा रहे हैं।”—उसकी आवाज में बालोचित भय था।

“कौन पिकनिक पर जा रहा है ?”—रसोईदारिन ने अधिकारपूर्ण स्वर में पूछा। पूछने के ढंग से यह स्पष्ट विदित हो रहा था कि यदि पिकनिक पर जाने वाले सम्य व्यक्ति न हुए, तो जिमी के जाने पर प्रतिबन्ध अवश्य लग जायेगा।

फिर भी इस प्रश्न से जिमी विशेष आशान्वित हुआ। उसे खुशी थी कि वह रसोईदारिन को अपने मन्तव्य से सहमत करा सका। बड़ी आतुरता से बोला— “सभी जा रहे हैं... कितने ही लड़के हैं... बहुत-सी लड़कियाँ हैं... और... हाँ... बहुत से लोग हैं।”

“लेकिन ये सब लोग हैं कौन ?”

जिमी कुछ हतोत्साहित हुआ। फिर भी लड़खड़ाते स्वर में बोला—“विली डालजेल और डान अर्ल और एला और वालकौट और रीवज् मार्गैरेट... वाल्टर फेल्लस, होमर और मिनी... और भी बहुत से हैं... उनके साथ उनकी माताएँ भी हैं— बड़ी बहनें भी।” और अन्त में अपने उद्देश्य को उसने बड़ी चतुराई से दुहराया— “ये सभी पिकनिक पर जा रहे हैं।”

“तो जाने दो।”— रसोईदारिन के शब्दों में कोई सहानुभूति न थी।

जिमी कुछ देर विचारों में डूबा रहा। फिर स्नेहपूर्ण शब्दों में बोला—“मैं तो समझता था... तू मुझे जाने की अनुमति दे देगी।”

रसोईदारिन को उलाहना-सा लगा। वह चिढ़-सी गयी— “तो तुम्हें रोकता कौन है ? क्या मैं रोक रही हूँ तुम्हें ?”

“नहीं।”...जिमी सहम गया।

“तब जाते क्यों नहीं?”

“लेकिन...”

“लेकिन क्या?”

“वहाँ तो सभी अपना-अपना खाना लेकर जा रहे हैं और मेरे...” जिमी को हिम्मत ही नहीं हो रही थी। “समझी!”—विजय के गर्व में रसोईदारिन बोली—“इसीलिए तुम अब तक घेरा डाले पड़े थे। अब कुशल इसी में है कि बिना कुछ चू-चपड़ किये यहाँ से अपना रास्ता लो। सारा काम पड़ा है, माँ धूमने गयी है और तुम्हारे पिता के खाने का समय हो रहा है, उस पर यहाँ तुम मेरा दिमाग चाट रहे हो।”

जिमी कुछ न बोला। निराश होकर द्वार की ओर बढ़ा। रसोईदारिन उसी आवेश में बड़बड़ाती रही—“इन लोगों ने समझ रखा है कि मेरे हजार हाथ-पाँव हैं। जरा भी ख्याल नहीं, जिनके यहाँ पहले काम करती थी, वे लोग तो कुछ ख्याल भी रखते थे। मैं कोई गधी थोड़े ही हूँ! पिकनिक...हूँ...!”

जिमी चुपचाप खड़ा सुनता रहा।

“जैसे कि मेरे पास कोई काम ही नहीं, चले आये पिकनिक की बात करने, हूँ! इन लोगों को मेरे काम का कुछ ख्याल नहीं, मुझे क्या पड़ी है इनके सैर-सपाटे से!”

जिमी फिर भी कुछ बोलने का साहस न कर सका। रसोईदारिन का प्रलाप चलता रहा—“माँ घर में नहीं, पिता के खाने का समय हो रहा है और इसे पिकनिक सूझ रही है। ऐसा मैंने कहीं नहीं देखा...मूर्ख...!”

जिमी के धैर्य की सीमा टूट गयी। वह दीवार के सहारे खड़ा होफूटफूट कर रोने लगा। रसोईदारिन को यह बेवक्त की शहनाई अच्छी नहीं लगी। चिढ़कर बोली—“तो रोता क्यों है?”

“कुछ नहीं”—सिसकते हुए जिमी ने कहा।

कुछ देर वह चुप रही। केवल जिमी की सिसकियाँ सुनायी पड़ रही थीं। रसोईदारिन कुढ़ रही थी। चिढ़ कर बोली—“बन्द करो यह नखरा। यह रसोईघर है... तुम्हारे तमाशे की जगह नहीं। चुप रहता है कि नहीं? मेरी बात नहीं मानेगा, तो तुझे साथ ले जाने के लिए कुछ न मिलेगा! समझे?”

बालकों को सहानुभूति की आवश्यकता होती है। इतने बड़े आश्वासन को पाकर वह प्रसन्न हुआ। आँसू बहाते हुये बोला—“तुमने यह पहले कहाँ

बताया था ?”

बालक की यह स्वाभाविकता रसोइदारिन को लांछना-सी लगी। वह फूट पड़ी—“क्यों कहती मैं? जब तुम यहाँ पर तमाशा कर रहे हो... मैं क्यों बताती? इतना ही बहुत है... फिर मुझसे ऐसी उम्मीद कैसे करते हो?... सिखाते हो मुझे?”

“मैं अब कहाँ रो रहा हूँ।”—जिम्मी ने उसे संतुष्ट करने के लिए कहा—“मैं बिल्कुल नहीं रोऊँगा।”

रसोइदारिन समझौते के लिए तैयार नहीं थी। झुंझलाती हुई बोली—“ठीक है... मेरे पास और भी बहुत काम है।” उस समय वह मछली पका रही थी। अनिच्छा से ही उसने रोटी के चार बड़े टुकड़े किये और टुकड़ों के बीच में मछलियों दबा कर उसने सैंडविच बनाये। फिर बोली—“लो— इतना तुम्हारे लिए काफी है, लेकिन रखूँ किस चीज में— अच्छा, हो जायेगा...” उसने एक डिब्बे में रख कर जोर से ढक्कन दबा दिया।

जिमी खुशी से पागल हो रहा था। पिकनिक की सारी तैयारी हो गयी थी। हर्षातिरेक में वह बोल उठा—“तुम कितनी अच्छी हो मेरी!” उसने डिब्बिया उठायी और देखते ही देखते आँखों से ओझल हो गया।

दूसरे लोग कोई आध घंटे पहले ही निकल चुके थे, किन्तु उसे निर्दिष्ट स्थान मालूम था... वह जानता था, उस झील के किनारे ही सब गये हैं। वह दौड़ता चला जा रहा था। अभी कुछ ही देर पहले वह निराश था, लेकिन अब? उस डिब्बिया में पिकनिक का सारा आनन्द लिये वह झील की ओर दौड़ रहा था।

जब वह झाड़ियों को पार कर चुका, तब उसे बहुत शोर-गुल सुनायी पड़ा। छोटे टीले पर चढ़ कर जब उसने देखा, तब उसका मन खिल उठा। वहाँ दो पड़ाव दिखायी पड़े— एक में श्रीमती अर्ल... शायद चाकलेट बना रही थीं... और दूसरे में एक युवती अंडे उबाल रही थी। दूसरे सफेद चादर बिछा कर खाने की चीजें फैला रहे थे। पेड़ों की ठंडी छाया में बच्चे किलकारी भर रहे थे। जिमी अपने दोस्तों की ओर बढ़ा।

होमर फेल्य की निगाह सबसे पहले उस पर पड़ी। “जिमी ट्रेस्काट!”—वह चिल्ला पड़ा—“तुम हम लोगों के दल में आ जाओ।” बच्चे एक खेल के लिए दो दलों में बंट चुके थे। होमर के दल के दूसरे बच्चों ने भी उसका अनुमोदन किया—“हाँ, जिमी... तुम हमारे दल में आ जाओ।” और फिर दोनों दलों

में बातें होने लगीं कि हमारा पक्ष तो बहुत कमजोर है।

“लेकिन हमारा दल भी तो कोई मजबूत नहीं !”

होमर की दृष्टि अचानक जिमी के डिब्बे पर पड़ी। वह बोला—“इसमें क्या है, जिमी ?”

जिमी ने कुछ परेशानी से उत्तर दिया —“ इसमें मेरा खाना है।”

यह सुनते ही शैतान मिनी व्यंग करती हुई चिल्ला उठी—“उसका खाना ह। इस डिब्बिया में !” वह माँ के पास दौड़ी। उसे आश्चर्य हो रहा था। वह बोली—“माँ, जिमी अपना खाना एक डिब्बिया में लाया है।”

अब इस तथ्य में कोई ऐसी बात नहीं थी, जो दूसरों को विशेष रूप से विचलित कर सके — विशेषतः बालकों को, जिनमें इतनी क्षमता नहीं थी कि यदि वह अपना खाना कोयला रखने के डिब्बे में लाता, तब भी कोई परवाह करता; किन्तु बालक-समाज की भावना ऐसी होती है कि सभी उससे दूर हट गये। मित्रता क्षीण हो गयी— सभी उस छोटी डिब्बिया का ताना कसने लगे। फिर किसी ने उसे जिमी कह कर न पुकारा। वह एक निष्कासित-सा हो गया था।

वह हतबुद्धि-सा खड़ा रहा। स्वाभिमान की भावना से बोला—“मैं खाना चाहे जैसे लाऊँ. . . . इससे इनको क्या ?” मन को सन्तुष्ट करने के लिए उसके पास और कोई विचार न था।

इसके पहले भी उसे ऐसे मौकों का सामना करना पड़ा था, किन्तु यहाँ तो चारों तरफ बड़े-बड़े लोग थे। वह कर ही क्या सकता था। अगर केवल बच्चे होते, तो शायद मार्वेट को वह लात घूसों से भी उस डिब्बिया के लिए सम्मान प्रदर्शन करने को बाध्य करता, किन्तु वह बच्चों की दुनिया की बात थी। वह मन मसोस कर रह गया।

उसी समय श्रीमती अर्ल का आदेश सुनायी पड़ा। वे बच्चों को खाने के लिए बुला रही थीं। सभी बच्चे चल पड़े। जाते-जाते उन्होंने देखा, जिमी अपनी डिब्बिया लिए वहीं खड़ा था।

वह समझ न सका कि क्या कहे। वह समझता था कि उस भोज में उसे भी आने का आदेश है, किन्तु उन शैतानों के व्यंग का ख्याल कर सहम गया। फिर भी उसने सोचा. . . हो सकता है वे उसे शामिल कर लें। सचमुच इतनी बड़ी पिकनिक में एक डिब्बिया लेकर आना बड़ी मूर्खता थी।

पर दूसरे ही क्षण उसे लगा कि वे उसे शामिल न करेंगे। वह निराश हो गया। उसकी आँखों में सारे दृश्य दौड़ने लगे। वह कितनी खुशी से दौड़ता

आया था, पर यहाँ उसके लिए कोई स्थान नहीं. . कोई सहानुभूति नहीं । उसे लगा कि वह मर जाय, जिससे कि उन्हें उसके लिए कुछ अफसोस हो ।

दूसरे दल की सफेद कपड़ेवाली युवती उसे देख चुकी थी । फिर अपनी बहन अर्ल से बोली—“देखो तो. . वहाँ कौन खड़ा है ?”

श्रीमती अर्ल ने देखा—“वह तो जिमी ट्रेस्काट है ।” वह बोली—“जिमी. . यहाँ क्यों नहीं आते ?”

उसकी बात समाप्त नहीं हुई थी कि सभी बच्चे फिर चिल्ला पड़े—“वह पिकनिक के लिए डिबिया ले आया है. . डिबिया. . . !”

मिनी बहुत शैतान थी । वह और भी कसती हुई बोली—“माँ, देखो तो ! पिकनिक के लिए डिबिया ! कैसा भद्दा लगता है !”

युवती को बुरा लगा । बोली—“एमिली, ये लड़के कितने शैतान हैं । उस बेचारे का सारा दिन खराब कर रहे हैं । मैं जाकर उससे मिलती हूँ. . . बेचारा !”

श्रीमती अर्ल कुछ सोच कर बोलीं—“जाना ठीक नहीं जचता । सभी कुछ अपने आप ठीक हो जायेगा । इसमें हस्तक्षेप करने से कुछ का कुछ हो सकता है ।”

युवती ने कहा—“एक बार जाकर तो देखूँ ।”

बच्चे चिल्ला उठे । जिमी एक पेड़ की आड़ में इस तरह छिप गया, जिससे कोई उस पर संदेह न करे । किसी के आने की आहट पाकर उसने सिर ऊपर किया । उसने देखा युवती हाथ में थाल लिये खड़ी है । उसने बड़ी सहानुभूति के साथ पूछा—“मैं यहाँ बैठूँ ?”

जिमी कुछ समझ न सका । युवती बोली—“वहाँ बहुत भीड़ है, मुझे भीड़ अच्छी नहीं लगती, इसलिए यहाँ चली आयी । तुम्हें बुरा तो नहीं लगता ?”

जिमी बोल उठा—“मुझे इससे खुशी होगी ।” उसकी बातों से स्पष्ट होता था कि युवती के वाक्य उसके भय को मिटा चुके थे । फिर बड़ी सरलता से उसने पूछा — “यह झील कितनी बड़ी है ?”

जिमी के मनोभावों को बहुत बड़ा सहारा मिला । वह अपने-आप को भूल गया । बोला—“यह कोई बीस मील लम्बी है और करीब चार मील चौड़ी, और गहरी बहुत है । इसमें बड़ी-बड़ी नावें चलती हैं ।”

“तुम भी नाव पर गये होगे न ?”

“हाँ. . .हाँ. . . बहुत बार । तुम्हें मालूम नहीं. . . मेरे पिता के पास अपनी नाव है. . .” वह उस युवती की आँखों में अपनी बातों का प्रभाव आँक रहा था ।

वह बहुत प्रभावित-सी जान पड़ी और विस्मय से बोली—“ सचमुच !”

इस छोटे वाक्य में इतना विस्मय था, जैसे कि आज तक उसे इस तरह की बातों पर विश्वास न था कि किसी के पास नाव भी हो सकती है !

जिमी बोलता गया—“हाँ... यह नाव बहुत बड़ी है... इसमें पाल हैं... सचमुच के पाल... वे मुझे भी कभी-कभी ले जाते हैं। जानती हो... एक बार मैं मछली पकड़ने के लिए गया था... वहाँ अच्छी-अच्छी चीजें खायीं... हाँ—हाँ, बहुत सी... और मेरे पिता ने शराब पी थी... पूरी एक बोतल...।”

उस बच्चे की सरलता से वह बहुत ही प्रभावित हुई। जिमी को भी इसका आभास हो रहा था। सहानुभूति और स्नेह बच्चों को उत्साहित करते हैं। जिमी ने अपना क्रम बनाये रखा—“फिर मैंने बोतल पानी में फेंक दी... वह पानी में डूब गयी... फिर कभी नहीं निकली।” बड़े नाटकीय ढंग से उसने कहना समाप्त किया।

उसका चेहरा खिल उठा। वह डिबिया की बात भूल गया... वह उस युवती से बातें करने में मग्न था... वह युवती, जिसे उसकी बातों में दिलचस्पी थी।

युवती तब तक थाल सामने रख चुकी थी। उसने बड़े स्नेह से कहा—“तुम्हें सैंडविच अच्छे लगते हैं न ? और ये अंडे... मैंने स्वयं ही बनाये हैं।”

“सच ? तुमने बनाये हैं !”—जिमी ने नम्रता से कहा। किन्तु दूसरे ही क्षण उसे अपनी डिबिया की याद आ गयी। फिर भी वह अस्वीकार न कर सका। उसने एक सैंडविच उठा लिया।

“पता नहीं, अंडे तुम्हें कैसे लगें ?”—उस युवती ने कहा—“मुझे ये बहुत अच्छे लगते हैं।” जिमी को सभी चीजें बहुत ही अच्छी लगीं।

यह स्नेहपूर्ण व्यवहार बालक को बहुत ही प्रिय लगा। उसे लगा कि जैसे युवती उसकी सच्ची संगिनी है ; तभी तो वह सभी को छोड़ उसके पास आयी ! वह जो एक निष्कासित था। पहली बार वह नारी के स्नेह से प्रभावित हुआ था।

“तुम कहाँ रहती हो ?”—उसने किसी विचार से प्रेरित होकर पूछा।

“यहाँ से बहुत दूर। न्यूयार्क में।”

“तुम्हारी शादी हो गयी है ?”—उसका यह प्रश्न बहुत ही अप्रत्याशित था। “नहीं तो।”—वह बड़ी गंभीरता से बोली।

जिमी कुछ क्षणों तक चुप रहा। कभी-कभी उसकी आँखें बचा कर उसे देख लेता था। उसकी आकृति बता रही थी कि वह कुछ उद्विग्न था। अन्त में वह

बोला—“जब मैं बड़ा होऊँगा. . .।”

बीच में टोकते हुए युवती बोली—“उसमें अभी बहुत समय है।”

“हाँ,”—वह बोला— “जब मैं बड़ा होऊँगा, तब तुम्हीं से विवाह करूँगा।”

“मुझे इसका खयाल रहेगा।”—वह बोली— “लेकिन यह बहुत आगे की बात है. . .अभी इसकी बात मत करो। मैं नहीं चाहती कि तुम अभी सै बन्धन में बंध जाओ।” वह उसकी ओर देख कर मुस्कायी।

उसने फिर लम्बी-चौड़ी हांकना शुरू किया—“जब मैं बड़ा होऊँगा, तब बहुत-सा धन कमाऊँगा—एक बड़ा घर होगा. . .। और एक घोड़ा भी रखूँगा. . . और एक बंदूक। और हाथी-घोड़े के चित्रोंवाली पुस्तकें। और मेरे बहुत से बच्चे होंगे. . . करीब तीन सौ—लड़कियाँ एक भी नहीं। सभी मेरी तरह लड़के होंगे।”

“सचमुच!”—वह विस्मित स्वर में बोली।

बाल सुलभ लज्जा का लोप हो गया था। खाने की डिबिया विस्मृत हो चुकी थी। उसे लग रहा था, जैसे वह युवती के साथ महीनों आनन्द में रहा है। उसका स्वाभिमान मुखरित हो रहा था।

सहसा बच्चों की आवाज सुनायी पड़ी। सभी घर जाने को तैयार हो रहे थे। बच्चे ज़िमी को चिढ़ाने का मौका देख रहे थे, किन्तु उसे उस युवती के साथ देख कर खामोश रहे।

लौटते समय उसकी सारी चाल-ढाल बदल गयी। चलता तो बड़े सम्य ढंग से। उसका बचपन पता नहीं कहाँ लुप्त हो गया। बोलते समय वह विशेष सतर्क रहता। वह ‘अर्ल-निवास’ तक उस युवती के साथ आया। विदा लेते समय उसने प्रौढ़ की भाँति उससे हाथ मिलाया और जब तक वह आँखों से ओझल न हुई, वह वहीं खड़ा रहा।

घर की ओर मुड़ा, तो मानो स्वप्नावस्था में। बच्चों की दुनिया विचित्र होती है। असत्य को भी सत्य मानने की उनमें अद्भुत शक्ति होती है। वह सोचता. . . यदि यह युवती उसकी पाठशाला की शिक्षिका हो तो. . . ? तो वह कितना अच्छा लड़का बन जाय. . . सभी पाठ उसे कंठस्थ हों। और यदि कोई उस युवती को छोड़े, तो उसका बदला वह घर लौटते समय ले। ऐसा बदला कि जिसकी कल्पना मात्र से ही लोग भीँचके रह जायं। फिर वह युवती उसे और भी चाहने लगे. . . तब. . . ! कल्पना मात्र से उसका मन आल्हादित हो रहा था।

घर के अहाते में आ कर किसी विचार से वह सहम गया। डिबिया का सारा खाना जैसे का तैसा पड़ा था। रसोइदारिन की विशाल काया उसकी आँखों में

छा गयी, जैसे वह धमका रही थी—“तुम्हारे लिए मैंने इतनी तकलीफ उठा कर खाना बनाया और तुम्हारी यह धृष्टता कि तुमने छुआ तक नहीं। वापस लेकर चले आये... बदमाश।”

वह चोर की भाँति घर में घुसा। रसोइघर के पास आकर बड़ी तेजी से अस्तबल की ओर भागा... जहाँ वह अपनी भूल छिपा सके। वहाँ पहुँचा ही था कि सारा अस्तबल गूँज उठा—“जिमी, डिबिया लेकर उधर कहाँ जा रहे हो?”

यह रसोइदारिन की आवाज थी। वह चुप रहा और अस्तबल में तेजी से एक ओर चल पड़ा। जल्दी से उसने ढक्कन खोला और कंबल के नीचे सारी चीजें उड़ेल दी। हॉफता हुआ वह मुड़ा और द्वार की ओर देखने लगा। रसोइदारिन वहाँ नहीं आयी; पर उसकी आवाज सुनायी पड़ रही थी—“जिमी, वहाँ तू क्या कर रहा है?”

डिबिया को हिलाता हुआ वह वापस आया। बड़ी सादगी से उसने कहा—“कुछ तो नहीं।”

“मुझे सब मालूम है।” इतना कह कर उसने उस मनहूस डिबिया को उसके हाथ से छीन लिया।

दूसरे दिन सवेरे ही, जब जिमी अस्तबल के पास खेल रहा था, साईस की आवाज उसके कानों में पड़ी—“जिमी...जिमी।”

“क्या है?”

“यहाँ आओ।”

जिमी अनिच्छा होते हुए भी अस्तबल के दरवाजे तक आया। साईस ने पूछा—“यहाँ ये रोटियाँ और मछलियाँ कैसे आयीं?”

“मुझे क्या मालूम? मेरा इनसे क्या वास्ता?”—जिमी ने उद्वेग में कहा। “मुझे मत बनाओ”—साईस उन रोटियों को फेंकता हुआ बोला—“जैसे कि तुम्हारे पिता या घोड़े ने यहाँ रख दिया हो। अगर फिर ऐसी हरकतें हुईं, तो तुम्हारे पिता से कह दूंगा।”

दानव

छोटा जिम फिलहाल इञ्जिन नम्बर ३६ बना हुआ था और वह साइरेकूज तथा रोचेस्टर के बीच चल रहा था। उसे चौदह मिनट की देर हो गयी थी। इञ्जिन पूरी रफ्तार से जा रहा था। इसलिए जब उसने फूलों की बगारी के पास मोड़ लिया, तब एक लाल फूल उसकी गाड़ी के एक पहिये से कुचल गया। ३६ नम्बर ने फौरन अपनी गति धीमी कर दी और अपराधी की तरह अपने पिता की ओर देखा, जो मशीन से 'लान' की घास काट रहे थे। यह दुर्घटना डाक्टर की पीठ-पीछे हुई थी और इसलिए घास काटने की मशीन को धक्का देते हुए धीरे-धीरे इधर-उधर चलना जारी रखा।

जिम ने गाड़ी को वहीं छोड़ दिया। उसने अपने पिता तथा उस टूटे हुए फूल की ओर देखा। आखिर वह उस फूल के पास गया और उसे फिर से खड़ा करने की कोशिश करने लगा, लेकिन फूल की रीढ़ टूट चुकी थी। इसलिए वह बेजान सा उसके हाथ में लटक कर रह गया। जिम उसका इलाज करने में असमर्थ रहा। उसने फिर अपने पिता की ओर देखा। वह धीरे-धीरे और भारी मन से घास को ठोकर मारते हुए 'लान' पर गया। इतने में उसके पिता अपनी धर्-धर् करती हुई मशीन के साथ वहाँ आये। घास फलों से कट-कट कर इधर-उधर गिर रही थी।

हल्के-से जिम ने आवाज दी—“पिताजी !”

डाक्टर 'लान' को इतनी सावधानी से काट रहे थे, मानो वह किसी पादरी की दाढ़ी हो। मौसम भर डाक्टर ने भोजन के बाद संध्या की शान्ति और ठंडक में 'लान' पर मेहनत की थी। चेरी वृक्षों की छाया में उगी हुई घास भी घनी और स्वस्थ थी। जिम ने अपनी आवाज को जरा ऊँचा करके पुकारा—“पिताजी !”

डाक्टर रुक गये। चूँकि मशीन की घरघराहट भी उनके साथ रुक गयी, इसलिए चेरी के वृक्षों पर बैठी हुई चिड़ियों का चहचहाना स्पष्ट सुनायी देने लगा। जिम ने अपने हाथ पीठ के पीछे बाँध रखे थे और उसकी उँगलियाँ रह-रह कर आपस में कस जाती थीं। उसने फिर कहा—“पिताजी।” बच्चे का गुलाबी और कोमल होंठ नीचे की ओर झुका हुआ था।

डाक्टर ने अपना सिर आगे ले जाकर तथा ध्यानपूर्वक माथे पर बल लाते हुए अपने बेटे को देखा। उन्होंने पूछा—“क्या है जिम्मी ?” लड़के ने पुनः

जोर से कहा— “पिताजी !” और उँगली से फूलों की क्यारी की तरफ इशारा किया—“वहाँ।”

डाक्टर ने माथे पर और बल डालकर कहा— “क्या ? क्या है जिमी ?”

कुछ देर निस्तब्धता छायी रही। उस बीच बालक ने भयंकर मानसिक पीड़ा अनुभव की होगी। फिर उसने अपनी उँगली उठायी और वही एक शब्द दोहराया— “वहाँ !”

पिता ने चुप्पी को भंग न करने की नम्रता दिखायी थी। बाद में उनकी आँखें ध्यान से उधर देखने लगीं, जिधर बालक ने इशारा किया था; किन्तु उन्हें ऐसी कोई चीज़ दिखायी नहीं दी जिससे वे कुछ समझ पाते। उन्होंने कहा— “तुम क्या कहना चाहते हो जिमी ? मैंने कुछ समझा नहीं !” ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो उस घटना के महत्व ने बालक की ज़बान पर ताला डाल दिया हो। उसके मुँह से फिर वही एक शब्द निकाला—“वहाँ।”

डाक्टर ने स्थिति पर तनिक विचार किया, लेकिन वे कुछ मतलब न निकाल सके। आखिर उन्होंने कहा—“चलो, दिखाओ मुझे।”

दोनों ‘लान’ को पार करते हुए फूलों की क्यारी की ओर चले। टूटे हुए फूल से कुछ गज की दूरी पर जिमी के पाँव रुकने लगे। साँस रोककर उसने कहा— “वहाँ !”

“कहाँ ?”— डाक्टर ने पूछा

घ्रास को ठोकर मारते हुए जिमी ने उत्तर दिया—“वहाँ !”

डाक्टर को विवश होकर अकेले ही आगे बढ़ना पड़ा। कुछ खोज के पश्चात् उन्हें उस दुर्घटना का पात्र, वह टूटा हुआ फूल नजर आया। पीछे मुड़कर उन्होंने देखा कि बालक पीछे दुबक कर उनके चेहरे के भाव पढ़ रहा है।

पिता ने जरा सोचा और फिर कहा— “जिमी, यहाँ आओ !” बहुत ही विनम्रता के साथ जिमी आगे बढ़ा।

“जिमी, यह कैसे हुआ ?”

बच्चे ने उत्तर दिया—“मैं—मैं रेलगाड़ी खेल रहा था और... और... गाड़ी उस पर से निकल गयी।”

“क्या कर रहे थे तुम ?”

“रेलगाड़ी खेल रहा था !”

पिता ने फिर कुछ सोचा। उन्होंने धीरे से कहा— “देखो जिमी, मेरा खयाल है कि आज तुम यह रेलगाड़ी का खेल और मत खेलो। क्या खयाल है तुम्हारा ?”

“जी, नहीं खेलूंगा !” — जिमी ने कहा ।

पिता जितनी देर फैसला सुना रहे थे, जिमी की आँखें ऊपर नहीं उठ सकी थीं और फैसले के बाद भी वह सर झुकाये, पैरों को घसीटता हुआ एक ओर चल दिया ।

— २ —

जिमी के आचरण से जान पड़ता था, मानो वह अपने को मिटा देना चाहता था । वह अस्तबल में गया । वहाँ हब्शी हेनरी जानसन, जो डाक्टर के घोड़ों की देखभाल किया करता था, बगधी को धो रहा था । जिमी को आते देखकर वह बंधुभाव से मुस्कराया । दोनों दोस्त थे ।

जीवन की लगभग हर चीज के बारे में दोनों के विचार बिल्कुल एक-से थे । कुछ बातों पर उनमें जबरदस्त विरोध भी था । उदाहरणार्थ, हेनरी की बातों से साफ जाहिर था कि वह बहुत सुन्दर हब्शी था । हब्शियों की बस्ती में उसका बहुत मान था और हेनरी का यह मान स्पष्टतः जिमी की समझ से परे था । फिर भी, कुछ अस्पष्ट रूप से वह इसे स्वीकार करता था और इसके लिए हेनरी का आदर करता था । वास्तव में इसका मुख्य कारण यही था कि हेनरी स्वयं अपनी इस प्रतिष्ठा के कारण अपना आदर करता था । फिर भी डाक्टर से सम्बन्धित आचरण के समस्त विषयों के बारे में उनमें पूर्ण किन्तु अव्यक्त सौमनस्य था । डाक्टर उनके लिए चाँद के समान थे । जब कभी जिमी ग्रहण का शिकार होता, तब वह हेनरी के अपराधों से अपने को सांत्वना देने के लिए अस्तबल में चला जाता । हेनरी अपने जातिगत गुण के अनुसार अपना कोई-न-कोई ऐसा अपराध ढूँढ़ लेता, जिससे दोनों हीनता में समान हो जाते । उसे कदाचित् हाल का वह अवसर याद आ जाता, जब वह घोड़े को खूंट से बाँधने का पट्टा बगधी में साथ लेना भूल गया था, जिस पर उसे डाक्टर की डाँट सुननी पड़ी थी ।

फिर वे अपने चाँद के बारे में कुछ कहे बिना ही विचार-विनिमय करते और एक ही जैसे अपराध करने के कारण एक दूसरे के प्रति सहानुभूति का अनुभव करते । कभी-कभी हेनरी इन विचारों को बिल्कुल अस्वीकार कर देता था और जब जिमी अपनी शर्म में डूबा हुआ उसके पास आता, तब वह दूध का थोया बनकर उसे डाँटता, बड़े विश्वास के साथ डाक्टर के सिद्धान्तों का उपदेश

देता और जिमी के सारे अपराध गिनाने लगता। जिमी अपने साथी के इस व्यवहार को बुरा नहीं समझता था। वह नम्रता के साथ इसे स्वीकार करता और अच्छे काम करके हेनरी को प्रसन्न करने के प्रयत्न करता। जिमी के इस रवैये से खुश होकर हेनरी कभी-कभी बालक को बगधी के पहियों को स्पञ्ज से धोने का आनन्द उठाने देता, यद्यपि अपने अपराधों के कारण बालक के मन के घाव अभी हरे ही रहते थे।

जब हेनरी की डॉट-फटकार ज्यादा देर चलने लगती, तब जिमी उससे रुठ जाता। यह उसकी आयु और परिस्थिति का औचित्य था। इसे वह नहीं समझता था। फिर, हेनरी तो घोड़े को हॉकना जानता था। उसकी इस महानता का जिमी को पूरा ज्ञान था। जब चाँद बाहर निकलते थे, तब हेनरी ही तो उन्हें देहात की उन सड़कों पर से ले जाता था, जिनके दोनों तरफ दूर-दूर तक खेत दिखायी देते थे, उनमें भेड़ें और गायें चरती रहती थीं और कई विलक्षण चीजें नजर आती थीं।

स्पञ्ज को उठाते हुए हेनरी ने कहा—“कहो जिमी!” बगधी से पानी टपक रहा था। कभी-कभी अस्तबल के घोड़े लकड़ी के फर्श पर जोरों से पाँव पटकते थे। घोड़ों की घास और उनके चमड़े के साज-सामान की बू वहाँ की हवा में बिखरी हुई थी।

क्षण भर जिमी ने किसी भी चीज की ओर ध्यान नहीं दिया। वह बहुत उदास था। बगधी धोनेका आनन्द भी उसे आकृष्ट नहीं कर सका। काम करते हुए भी हेनरी इस पर गौर कर रहा था।

आखिर उसने कहा—“तुम्हारे पिता ने तुम्हें खूब डाँटा है, है न?”

अपना बचाव करते हुए जिमी ने कहा—

“नहीं, बिल्कुल नहीं!”

उस सहज भाषण के पश्चात् हेनरी बड़ी क्लान्त मुद्रा बना कर अपना काम करता रहा। फिर उसने कहा—“मैंने कई बार तुम्हें समझाया कि उन फूलों के साथ ऊधम मत किया करो। तुम्हारे पिता को यह पसन्द नहीं है।” वास्तव में हेनरी ने फूलों के बारे में जिम से कभी कुछ नहीं कहा था।

जिमी दुःखित भाव से खामोश रहा, इसलिए हेनरी ने कई आकर्षक तरीकों से गाड़ी धोना शुरू किया। आखिर जब वह एक पहिये को घुमा-घुमा कर धोने लगा और पानी की बूंदें चारों ओर उड़ने लगीं, तब बालक का मन डोल गया। अब तक वह अस्तबल की देहली पर बैठा हुआ था, पर इस आकर्षण के शुरू

होने पर वह उठा और घूम कर बग्घी के पास जा पहुँचा। कुछ देर पहले के अपमान का दुख उसके मन के कौतूहल में धीरे-धीरे खत्म होने लगा।

अब जानसन को उस मनुष्य का बड़प्पन दिखाने का अवसर मिला, जो जिमी को पानी की बौछार से बचाने के लिए जिम्मेदार था। “होशियार, जिमी होशियार रहो। अपने कपड़े खराब मत कर लेना। मैं जानता हूँ तुम्हारी माता को ऐसी मूर्खता पसन्द नहीं। मुझे यह पसन्द नहीं कि तुम अपने कपड़े खराब कर लो और तुम्हारी माता आकर मुझ पर बिगड़ें।”

वह ऐसे बोल रहा था, जैसे बहुत नाराज हो। वास्तव में वह नाराज जरा भी नहीं था। यह स्वर तो उसके बड़प्पन का एक भाग था। दरअसल जब बालक अस्तबल में आकर वहाँ का काम-काज देखता था, तब हेनरी को खुशी होती थी, क्योंकि जब हेनरी जिमी को बताता कि घोड़े का साज किस खूबसूरती से चमकाया गया है या घोड़े की कैसी ठाट की मालिश की गयी है, तब जिमी का मन उसके प्रति आदर की भावना से भर जाता था। हेनरी बड़ी गम्भीरता से एक-एक बात उसे समझाता था और जिमी से प्रशंसा पा कर खुशी में फूल उठता था।

— ३ —

रसोई-घर में भोजन करने के पश्चात् जानसन ने अस्तबल के ऊपर अपनी अटारी में जाकर सिंगार किया। कोई राजनर्तकी भी क्या जानसन की तरह अपने को सँवारती होगी ! या यों कह सकते हैं कि जानसन अपना साज-सिंगार ऐसे करता था, जैसे कोई पादरी गिरजाघर के किसी समारोह के लिए अपने को सँवारता हो। जब वह अपने कमरे से निकल कर टहलता हुआ चला, तब किसी को यह शंका भी नहीं हो सकती थी कि उसने जीवन में कभी बग्घी धोयी होगी।

इसका श्रेय बढ़िया रंगीन पतलून और चमकदार रेशमी पट्टी वाली टोपी को नहीं था। बल्कि यह परिवर्त्तन हेनरी के अंतर में कहीं हुआ था। उसमें कहीं कोई बनावट नहीं दीखती थी। यही मालूम होता था कि कोई शान्त, सुसभ्य, धनवान एवं गृहस्थ या सम्भ्रान्त व्यक्ति शाम को घूमने निकला है और उसने जिन्दगी में कभी गाड़ी नहीं धोयी है।

• सुबह जब कि वह अपने काम के समय के कपड़े पहने हुए था, एक दोस्त से उसकी भेंट हुई और दोनों ने एक दूसरे को पुकारा—“कहो पीटर !” “कहो

हेनरी !” अब इस ठाठ-बाठ में फिर उसी दोस्त से उसकी भेंट हुई, तो जिस तरह उसने झुक कर उसका अभिवादन किया, उसमें गर्व की भावना नहीं थी। उसमें कोई भाव था, तो नम्रता और उदारता का ही। “नमस्कार, मि. वार्शिंगटन !”—जानसन ने कहा। पीटर आलू के खेत में काम करते रहने के कारण मैला-कुचैला ही बना हुआ था। उसने अपनी न्यूनता और जानसन के प्रति आदर की मिली-जुली भावना से प्रत्युत्तर दिया—“नमस्कार मि. जानसन !”

नगर की बड़ी सड़क बिजली की तेज बत्तियों की नीली रोशनी से जगमगा रही थी। जगह-जगह दुकानों में प्रकाशित गैस की बत्तियों की पीली रोशनी उसे मात कर रही थी। उस प्रकाशित रास्ते पर चलनेवालों ने डाकघर के सामने भीड़ लगा दी थी, क्योंकि शाम की डाक बटनेवाली थी। बीच-बीच में कोई बिजली की गाड़ी कर्कश आवाज करती हुई आ जाती थी, जिसका इंजन अपना अजीब शोर करता जाता था और जिसकी बड़ी-सी घंटी जितनी उसके आगमन की चेतावनी देती थी, उतना ही शोर भी करती थी। छोटे थियेटर में, जो वार्निश और लाल रंग से रंगा हुआ था तथा न्यूयार्क के मशहूर थियेटरों में से एक की छोटी प्रतिकृति था, घुमक्कड़ों की एक टोली ‘ईस्ट लीन’ नाटक खेलनेवाली थी। जगह-जगह नाकों पर लोग छोटे-छोटे झुंड बना कर खड़े थे। ये दल आपसी दोस्ती के ही प्रतीक थे, सामाजिक वर्गों के नहीं। हर बात पर वे गौर से चर्चा कर रहे थे। सारा शहर सड़क पर उनकी आँखों के सामने गुजर रहा था। जब कानों को बिजली की गाड़ियों की कर्कश ध्वनि से राहत मिलती थी, तब पत्थर की सड़क पर आराम से चले जानेवाले लोगों की भीड़ की पदचाप साफ सुनायी देने लगती थी, जो बैसी ही मालूम देती थी जैसे संध्या के शान्त वातावरण में झील की लहरें किनारों से टकरा रही हों। पहाड़ी के तले, जहाँ सड़क के दोनों किनारों पर वृक्षों की कतारें खड़ी थीं, उनकी शाखाओं के बीच एक बत्ती जगमगा रही थी, जिससे सड़क पर छाया की अजीब-अजीब आकृतियाँ बनी हुई थीं।

जब जानसन उस भीड़ भरी सड़क पर पहुँचा, तब एक नाके की चौकड़ी के एक सदस्य ने अपने साथियों को तुरन्त उसके आगमन की सूचना दी। एक ने उसका स्वागत करते हुए कहा—“कहो हेनरी, घूमने निकले हो ?”

दूसरा बोला—“क्या ठाठ है आपके !”

तीसरे ने कहा—“जरा सीना निकाल कर चलो।”

इन फन्तियों और तरीकों से जानसन जरा भी विचलित नहीं हुआ। उसने

जवाब में केवल साधु स्वभाव प्रकट करने वाली हँसी हँस दी। उस हँसी में श्रेष्ठता की झलक छिपी थी।

नवयुवक वकील ग़िसकाम सन्तोष के साथ अपनी ठोड़ी पर हाथ फेरता हुआ रेफ्सनीडर नाई की दुकान से निकल ही रहा था। सीढ़ियों पर आते ही उसका हाथ नीचे गिर गया और उसने आँखें फाड़कर भीड़ की ओर देखा। एकाएक वह वापस दुकान में घुसा और वहाँ जमी हुई पार्टी से बोला—

“जरा देखो तो, कौन चला आ रहा है।”

रेफ्सनीडर और उसके सहायक ने तुरन्त अपने उस्तरे चलाना रोक कर खिड़की में से झाँका। साबुन के फेन से भीगे दो चेहरे भी कुर्सी पर से उठे। रेफ्सनीडर की दुकान की पीली रोशनी में खिड़की के शीशे से बाहर देखने पर सड़क की बिजली की रोशनी में पानी की छटा दिखायी देती थी। वास्तव में ऐसा मालूम होता था, जैसे बाहर लोग एक बड़े से मत्स्यालय में चले जा रहे हों और दुकान की खिड़की उसमें देखने के लिए ही बनी हो।

रेफ्सनीडर और उसके सहायक तुरन्त अपना काम और ग्राहकों को छोड़कर खिड़की की तरफ बढ़ आये। रेफ्सनीडर ने ताज्जुब के साथ कहा— “है न बड़ा अजीब ?”

परन्तु पहली कुर्सी वाले ग्राहक ने शिकायत-भरे स्वर में कहा—

“यह तो हेनरी जानसन है, बेवकूफ कही के। रेफ, चलो इधर और मेरी दाढ़ी बनाओ। तुमने मुझे समझ क्या रखा है— कोई ममी ?”

रेफ्सनीडर उत्तेजित होकर पीछे घूमा। “मैं शर्त लगाता हूँ, वह हेनरी जानसन नहीं था। वह तो पुलमैन रेलगाड़ी का आदमी या ऐसा ही कोई दिखता था। हेनरी जानसन वह कैसे हो सकता है ? आपका दिमाग फिर गया है।”

पहली कुर्सीवाले ग्राहक ने आगबबूला हो कर नाई की ओर देखते हुए कहा—

“उसे यह रंगीन पतलून मैंने ही तो दी थी !”

और नवयुवक ग़िसकाम, जो अब तक ध्यान से खिड़की के बाहर देख रहा था, बोला—“हां, मेरे खयाल से वह हेनरी ही था। उसके जैसा ही दिखायी दे रहा था।”

रेफ्सनीडर अपना काम फिरसे शुरू करते हुए बोला—“खैर, तुम ऐसा समझते हो, तो जाने दो।” उसकी आवाज में यह भाव प्रकट था कि वह केवल झगड़ा न करने की गरज से ही यह बात स्वीकार कर रहा है।

आखिर दूसरी कुर्सीवाला ग्राहक सारे मुंह पर साबुन लगा होने के कारण

बुदबुदाते हुए बोला—

“वह हेनरी जानसन ही था। जब उसे दिखावा करना होता है, तब वह ऐसे ही सजकर निकलता है। सभी जानते हैं कि शहर का सबसे बड़ा छैला है वह !”

हेनरी इस बात से हर्गिज अपरिचित नहीं था कि उसके बारे में कई अटकल-बाजियाँ हो रही हैं। पहले भी वह इन चीजों से ऐसा ही आनन्द उठा चुका था और वह हमेशा इन्हें ताड़ा करता था। चेहरे पर खुशी की चमक लिये हुए और अपने बारे में लोगों के विचारों को झकझोरता हुआ वह एक सँकरी गली में मुड़ा, जिसमें बिजली की बत्ती अब भी ऊँचाई पर लगी हुई थी और उसकी रोशनी में लकवे से मारे हुए रोगियों जैसे कुछ जर्जर मकानों की एक कतार दिखायी देती थी।

केसरिया रंग की सूती फ्राक पहने मिस बेला फरागट अपने मकान के आगे बैठी हुई दूर से ही किसी पड़ोसिन से बातें कर रही थी। फिर भी, उसने मेहमान को आते दूर से ही देख लिया। वह घोड़े की तरह भाग कर घर के पिछवाड़े चली गयी। हेनरी ने यह सब देखा, लेकिन वह उस मेहमान की तरह अविचल बना रहा, जिसके कपड़ों पर 'वेटर' से शराब गिर गयी हो। इस कठिन परिस्थिति में भी उसका आचरण पूर्णतया नम्र और सुसभ्य बना रहा। जानसन का सत्कार करने का काम मिसेज़ फरागट पर आया क्योंकि बेला दूसरे कमरे में जल्दी-जल्दी अपनी सबसे बढ़िया फ्राक पहनने में लगी थी। मोटी और बूढ़ी मिसेज़ फरागट ने दाँत निकाल कर मुस्कराते हुए दरवाज़ा खोला और पीछे हटते हुए झुक कर मेहमान का अभिवादन किया।

“आइये, अन्दर आ जाइये, मि. जानसन ! कैसे मिज़ाज हैं आपके ?” —उसने कहा।

हेनरी ने भी उसी तरह मुस्करा कर और सर से पाँव तक झुकते हुए प्रतिवादन किया और कहा—“नमस्कार, मिसेज़ फरागट, नमस्कार। आप कैसी हैं ? आपके यहाँ सब अच्छे तो हैं ?”

इस तरह के लम्बे सवाल-जवाब के बाद वे दोनों ड्राइंग-रूम में एक दूसरे के सामने दो कुर्सियों पर बैठ गये। फिर, तब तक वे अत्यन्त शिष्टाचार की बातें करते रहे जब तक कि बेला भी वहाँ न आ गयी। उसके आते ही फिर कुशल-मंगल के सवाल-जवाब की झड़ी लग गयी और मुस्कराहटों में बत्तिसियाँ खिल गयीं।

खाना बनाने की सिगड़ी इसी कमरे में थी और उस पर कोई चीज चढ़ी हुई थी। श्रीमती फरागट को बार-बार उठ कर उसे सम्हालना पड़ता था। उसी बीच छोटा सिम आकर एक कोने में अपने बिस्तर पर सो गया, परन्तु उन सब घरेलू बातों की तरफ से तीनों अपनी आँखें और मुँह बन्द किये रहे। बहुत रात गये तक वे एक-दूसरे के प्रति आदर प्रकट करते हुए झुकते-झुकते रहे, मुस्कराते रहे, एक-सी ही चेष्टाएँ करते रहे और कई चीजों की उपेक्षा भी करते रहे। किसी अत्यंत शानदार जगह में भी वे तीन बन्दर ही जान पड़ते।

हेनरी के जाने के बाद बेला, जिसे आलंकारिक भाषा का उपयोग करना बहुत पसन्द था, बोली—“माँ, वह बिलकुल देवोपम है; है न ?”

— ४ —

शनिवार की शाम को मुख्य सड़क पर लोगों की भीड़ और ज्यादा रहती थी। गर्मियों में रात के दस बजे तक छोटे से उद्यान में बैण्ड बजा करता था। नगर के ज्यादातर नवयुवक बैण्ड को उपेक्षा की दृष्टि से देखने का दिखावा करते थे, यहाँ तक कि मानो वे उससे घृणा करते हों, परन्तु संध्या के शान्त और मनोरम समय में निश्चित रूप से झुंड के झुंड बना कर वे उधर आते थे क्योंकि लड़कियाँ संगीत सुनने अवश्य ही आती थीं। दो-दो, तीन-तीन की टोलियों में, वे हाथ-में-हाथ डाले अपने जन्मजात स्वभाव-वश विचित्र प्रकार से सार्वजनिक रूप में एक-दूसरे का सहारा लिये, घास पर टहलती रहती थीं। इस जमात का कोई सामाजिक महत्त्व नहीं था; महत्त्व था तो इतना ही कि मौन रहकर एक झुंड दूसरे झुंड को कौतूहल से देखता था। कभी-कभी कोई लड़की दूसरी को कोहनी मार कर संकेत करते हुए कहती — “देखो वह गर्टी हाजसन और उसकी बहन है।” और इस पर वे ऐसी गम्भीर हो जातीं, मानो कोई महत्त्वपूर्ण घटना घटी हो।

एक रोज संध्या को बाग से लगी हुई सड़क पर नवयुवकों का एक बड़ा-सा झुंड जमा था। वे आमोद-प्रमोद से इसलिए दूर खड़े थे कि उनकी शान उन्हें यह इजाजत नहीं देती थी कि जो चीज कम उम्र के लड़कों को रिझा रही थी, उसमें वे भी हिस्सा लें। कम उम्र के लड़के भीड़ में इधर-उधर भाग रहे थे, जिससे बीच-बीच में छोटी-छोटी दुर्घटनाएँ हो जाती थीं, लेकिन कोई उन्हें

पकड़कर सजा दे पाये, इससे पहले ही वे हवा की तरह निकल जाते थे ।

बैण्ड पर 'वाल्ज' की धुन बज रही थी, जिसमें 'बास' के बाजे की प्रधानता थी। उसे सुनकर एक नवयुवक बोला कि यह बाजा मुझे उस इंजिन की आवाज की याद दिलाता है, जो जलाशय से पानी डालने के लिए पहाड़ी पर लगाया गया था। वास्तव में देखें, तो कोई भी समानता नहीं थी, परन्तु उसने यह बात इसलिए नहीं कही थी कि उसे बैण्ड का संगीत नापसन्द था। बैण्ड के विषय में ऐसी बातें कहना फैशन में शामिल था, इसीलिए उसने ऐसा कहा। बैण्ड के एक वादक, बिली हैरिस को लड़के हमेशा घेरे रहते थे। उसकी अदाकारी पर वे फ़िदा थे।

न्यूयार्क और रोचेस्टर की डाक बॉट जाने के बाद डाकघर के पास की भीड़ भी उसी बाग में आकर जमा हो गयी। हवा के झोंकों से वृक्षों के पत्ते झूम रहे थे और ऊपर हवा में जलती हुई बत्तियों के नीले प्रकाश से जमीन पर तरह-तरह के बेलबूटे बन रहे थे। जब प्रकाश किसी लड़की के उठे हुए चेहरे पर पड़ता, तब वह एक अजीब सुनहरी आभा से चमक उठता। अचानक एक सिपाही कहीं अँधेरे में से निकला और ऊधम करनेवाली बच्चों की टोली को उसने खदेड़ दिया। दूर से वे उसे चिढ़ाते रहे। टोली के नेता के हाव-भाव कुछ महान संगीतज्ञों जैसे थे और निस्तब्धता के समय भीड़ ने जब उसे दुख के साथ अपने हाथ को माथे पर फेरते हुए देखा, तब लोग मुस्करा उठे। उस प्रकम्पित प्रकाश में, जिसने उद्यान को 'हाल'-सा बना रखा था, भीड़ बढ़ जाती थी, कपड़ों की मुलायम सरसराहट होने लगती थी और बोल-चाल का स्वर बढ़ने लगता था।

तभी एकाएक बिना किसी पूर्व-सूचना के एक कारखाने की कर्कश सीटी की आवाज गूँज उठी। उसकी कर्कश आवाज तेज होती गयी और अन्त में रात की हवा में उसकी आखिरी चीख सुनायी दी, जिससे उद्यान की भीड़ निश्चल और निस्तब्ध खड़ी रह गयी। बैण्ड के नेता ने एक प्रयाण-गीत की धुन शुरू करने के लिए अपना हाथ ऊपर उठाया ही था कि इस जबर्दस्त आवाज के आघात से वह हाथ धीरे-धीरे गिर गया; उसका मुँह खुला-का-खुला रह गया और वह अवाक् अपने साथियों को ताकने लगा। वह कर्कश आवाज क्षीण होती हुई निस्तब्धता में विलीन हो गयी। रास्ते पर खड़े हुए नवयुवकों की मौसपेशियाँ ढीली पड़ गयीं; अब तक वे पत्थर की मूर्तियों की तरह तने हुए इस आवाज को सुन रहे थे। सब ने एक साथ घूमकर एक-दूसरे को देखा और विस्फोट की-सी आवाज में एक साथ बोल उठे—“एक !”

आवाज रात में एक बार फिर उठी और देर तक संकट की सूचना देती रही। फिर उसके शान्त होते ही नवयुवक एक-दूसरे की ओर देख कर एक साथ चिल्लाये— “दो !”

एक क्षण मौत के इंतजार की-सी खामोशी में बीता और फिर वे सब के सब चिल्लाये— “दूसरा क्षेत्र।” पलक झपकते ही वे काहिल और दिखावा-पसन्द नवयुवक वहाँ से ऐसे गायब हुए, जैसे बारूद के विस्फोट से बर्फ का गोला।

— ५ —

जेक राजर्स सब से पहले टसकारोरा होज कम्पनी नम्बर ६ के घर पहुँचा। उसने भाग कर रास्ता तय करते हुए ही चाबी अपनी जेब से निकाल ली थी। आँधी के वेग से उसने चाबी ताले में लगायी। उसके हाथों ने दरवाजे को जैसे ही धक्का दे कर खोला, उसने अन्दर कूद कर गाड़ी के पहियों के नीचे लगी हुई रोकों को ठोकर मार कर अलग किया। दमकल कम्पनी के आगे लगी हुई बत्तियों की रोशनी में लोगों ने देखा कि वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति से गाड़ी को खींच कर बाहर ला रहा है। गाड़ी धीरे-धीरे दरवाजे पर आ रही थी। एक साथ चार आदमी उसके साथ जुट गये और गाड़ी लेकर जैसे ही वे रास्ते पर उतरे, कई लोग बत्तियों के पिछवाड़े के अन्धकार से निकल कर तेजी से उनकी ओर आये। कइयों ने वही अनिवार्य प्रश्न किया— “किस क्षेत्र में ?”

कई आवाजों ने एक साथ जवाब दिया— “दूसरा।” टसकारोरा होज कम्पनी नम्बर छः की गाड़ी खतरनाक ढंग से नियागरा एवेन्यू पर पहुँची। लोग जोश के साथ रस्ता बाँध कर उसे खींचे लिये जा रहे थे। उसके नीचे लगा हुआ घंटा तेजी से बजता जाता था और कभी-कभी वही आवाज गूँज उठती थी— “कौन-सा क्षेत्र ?”

“दूसरा।”

एक ढलान पर जोनी थोप गिर पड़ा; लेकिन इसके पहले कि गाड़ी का पहिया उस पर चढ़ जाय, वह फुर्ती के साथ उसके रास्ते से एक ओर लुढ़क कर खड़ा हो गया। उसके कपड़े बिगड़ गये थे। वह शिकायत और निराशा के भाव से उस गहरी भीड़ को देखने लगा, जो गाड़ी के पीछे भागी जा रही थी। ऐसा प्रतीत होता था, मानो गाड़ी उस विशाल लहर का अग्रभाग हो, जो किसी

बाँध के टूटने पर वेग के साथ बही जा रही है। थार्प के पीछे घास के मैदान थे और उस तरफ लोग अपने मकानों के दरवाजों को जल्दी से खोल कर चिल्लाते—“कौनसा क्षेत्र?”, गले फाड़कर पूछते—“किस विभाग में?”

उन्हीं में से एक मकान में एक औरत बत्ती लिये हुए दरवाजे पर आयी। उसने अपनी आँखों को रोशनी की चकाचौंध से बचाने के लिए अपना हाथ मुँह के सामने कर रखा था। कटी हुई घास के उस पार सड़क उसे जल की एक विशाल लहर की तरह दीख रही थी, जिस पर आश्चर्यजनक रूप से कई लोग साइकिलों पर चले जा रहे थे। उसे पता नहीं था कि नुक्कड़ पर की ऊँची बत्ती हर रात की तरह आज भी विलाप कर रही थी।

अचानक एक छोटा बच्चा घर के पिछवाड़े से इस प्रकार प्रकट हुआ, मानो जीने के ऊपर से किसी ने गुल्लक से उसे फेंका हो। बड़ी मुश्किल और मेहनत से उसने घर के सामने अपने पाँवों को रोका और हाँफते हुए अपनी माता से कहा—“माँ, मैं भी जाऊँ? जाऊँ मैं भी, माँ?” एक माँ की जवाबदारी और बड़प्पन महसूस करके वह सीधी तन कर खड़ी हो गयी, किन्तु उसका बत्तीवाला हाथ कुछ काँप रहा था। उसने कहा—“नहीं विली, तुम चलकर सो जाओ।”

बालक आवेग में जंगली घोड़े की तरह उछल-कूद करने लगा। अपने शरीर को ऐंठते हुए वह बोला—“माँ, माँ, क्या मैं जा नहीं सकता? माँ, मेरी माँ, क्या मैं जा नहीं सकता?”

“विली, इस समय साढ़े नौ बजे हैं।”

उसने रोते हुए एक बीच का प्रस्ताव रखा—“बस माँ, उस नुक्कड़ तक! सिर्फ नुक्कड़ तक माँ।”

सड़क पर लोग भागते हुए चले जा रहे थे और पागलों की तरह चिल्ला रहे थे। कोई गिर्जाघर के घंटे की डोरी को खींच रहा था। आसमान से उस घंटे की गम्भीर और भयानक आवाज सारे शहर में गूँज रही थी।

अपने शान्तिपूर्ण कार्य में विघ्न पड़ने से उस घंटे ने उस मनहूस रात एक नयी आत्मा धारण की और उसके प्रत्येक निनाद से हृदय हिल जाता था।

“माँ, बस उस नुक्कड़ तक, माँ? उस कोने तक ही जाने दो?”

“विली, साढ़े नौ बज रहे हैं।”

डा. ट्रेस्काट का मकान शाम के धुंधलके में विलीन हो गया था; काले आसमान में वह छिप-सा गया था। पड़ोस का इलाका इतना शान्त और निष्कण्टक था कि हैविगन के कुत्ते को निषिद्ध क्षेत्र में जाने का मौका मिल गया। अपने को अत्यन्त शक्तिशाली समझता हुआ वह ट्रेस्काट के 'लान' पर पहुँचा और गुर्राता हुआ घास को पंजे से नोचने लगा।

थोड़ी देर में पीटर वाशिंगटन मकान के पास से गुजरा और उसने सीटी बजायी; लेकिन हेनरी की अटारी में रोशनी दिखायी नहीं दी और वह अपने रास्ते चला गया। घास पर रुपहली लहरों की तरह सड़क से जो प्रकाश पड़ रहा था, उससे घर के अन्दर रास्ते के किनारे लगी हुई झाड़ियों की गहरी छाया पड़ रही थी।

मकान के परले सिरे की एक खिड़की से जरा-सा धुआ निकल कर एक वृक्ष की शाखाओं में खो गया। उसके पीछे उसके और साथी अधिकाधिक संख्या में निकलने लगे और अन्त में अदृश्य किनारों में बँधा हुआ उसका निरन्तर प्रवाह वृक्ष की ओर होने लगा। ऐसा जान पड़ता था, मानो धुंधले और निस्तब्ध बन्दरों का दल किसी अदृश्य बेल के सहारे बादलों में चढ़ रहा हो।

एक क्षण पश्चात् खिड़की ऐसे चमक उठी जैसे उसके चारों शीशे खून से रंगे हुए हों। कोई तेज कान वाला व्यक्ति तुरन्त सुन लेता कि अग्नि के दूत पुकार रहे हैं और उनके झुंड पर झुंड जमा हो रहे हैं। तथापि सड़क से मकान में अँधेरा और शान्ति दिखायी देती थी। गुजरनेवाले लोग उसे देखकर यही समझते कि इस मकान के लोग जल्दी सो गये हैं और सुन्दर सपने देख रहे हैं। अग्नि-दूतों के जमघट और उनकी पुकार किसी को सुनायी नहीं देती।

एकाएक खिड़कियों के शीशे तड़खे और जमीन पर गिर कर चूर-चूर हो गये। दूसरी खिड़कियों में और लपटें दीखने लगीं, मानो किसी भूतहे मकान के अन्दर खूनी भूत हों। यह सब ऐसे हुआ, मानो पेशेवर क्रान्तिकारियों की कोई योजना हो।

एकाएक कोई चिल्लाया—“आग, आग, आग !” हैविगन ने अपना पाइप घबरा कर दूर फेंक दिया। उसके फेफड़ों को हवा की सख्त जरूरत महसूस हो रही थी। हैविगन अपनी जगह से तेजी के साथ उठा और बाढ़ को लाँघ कर चिल्लाता हुआ ट्रेस्काट के घर के सामनेवाले दरवाजे की तरफ भागा।

उसने अपने हाथों से दरवाजे को ऐसे पीट डाला, जैसे उस पर हथौड़े चला रहा हो। श्रीमती ट्रेस्काट फौरन दूसरी मंजिल की एक खिड़की पर आयीं। उन्हें बाद में याद आया कि वे पुकार कर यही कहने वाली थीं कि डाक्टर घर पर नहीं हैं; आप अपना नाम बता दीजिये, उनके लौटते ही मैं उन्हें खबर कर दूंगी।

हैविगन एक मिनट तक बिल्कुल बेसिलसिला कुछ चिल्लाता रहा। इससे श्रीमती ट्रेस्काट इतना जरूर समझ गयीं कि यह कोई रोगी डाक्टर की तलाश में नहीं आया है।

खिड़की को ऊपर उठाते हुए उन्होंने पूछा—“क्या है?”

“तुम्हारे घर में आग लग गयी है। सारा घर जल रहा है। जल्दी से निकलो नहीं तो—” उसकी पुकार सड़क पर टकरा-टकरा कर लौट रही थी। पत्थर की सड़क पर कई तेज कदमों की आवाज आने लगी।

एक व्यक्ति कल्पनातीत गति से भागा। उसने रंगीन पतलून पहन रखी थी। चमकदार रेशमी पट्टीवाला टोप उसके एक हाथ में कुचला जा रहा था।

हेनरी जब मुख्य दरवाजे पर पहुँचा, हैविगन ने ठोकर मार कर ताला तोड़ा ही था। दोनों पर धुएँ का गहन बादल छा गया और हेनरी सर झुका कर उसके अन्दर घुस गया। हैविगन की चिल्ल-पुकार से एक ही बात उसकी समझ में आयी, लेकिन उसी से वह डर के मारे पीला पड़ गया। हाल में आग की एक लपट उस डोरी पर पहुँच गयी थी, जिससे अमरीकी स्वतंत्रता की घोषणा पर दस्त-खत करने की तस्वीर दीवार पर टँगी थी। तस्वीर झूलने लगी और फिर जमीन पर इस जोर से गिरी जैसे कोई बम फटा हो। आग इस कदर शोर के साथ फैल रही थी, मानो ऊँचे-ऊँचे पेड़ों में सदियों की तेज हवा चल रही हो।

जीने के ऊपर श्रीमती ट्रेस्काट अपने दोनों हाथों को डंडों की तरह हिला-हिला कर चिल्ला रही थी—“जिमी, जिमी को बचाओ।” हेनरी कूदता हुआ उनके पास से गुजर कर कहीं अन्दर गायब होगया। ऊपर की मंजिल के कमरों में, जिनमें कभी वह घर की सहायक नौकरानी की तरह राज किया करता था, अपने जाने-पहचाने रास्ते से वह चला।

हैविगन उसके पीछे-पीछे जीना चढ़ा। उसने विक्षिप्त-सी श्रीमती ट्रेस्काट की बाँह कस कर पकड़ी। उसका मुँह गुस्से से लाल हो रहा था। वह चिल्लाया—“चलो नीचे!”

वे जवाब में चिल्लाती रही—

“जिमी! जिमी!! जिमी को बचाओ।” और हैविगन उन्हें खींचते हुए

नीचे ले गया।

जैसे ही वे खुले में पहुँचे, एक आदमी घास पर दौड़ते हुए आया और उसने एक खिड़की का एक पल्ला खींच कर तोड़ा और दूर फेंक दिया। फिर वह एक के बाद एक खिड़की पर इसी तरह हमला करने लगा। यह एक प्रकार का अस्थायी पागलपन था।

हैविगन उस पर चिल्लाया—“तुम श्रीमती ट्रेस्काट को पकड़ो और यह सब बन्द करो।”

यह खबर एक पड़ोसी ने नुक्कड़वाले आग के डिब्बे को तोड़कर अपनी कलाई के एक मोड़ से तार की तरह दूर तक पहुँचा दी थी। हैविगन और श्रीमती ट्रेस्काट मकान से जिस समय बाहर निकले, उसी समय रात को चीरती हुई कारखाने की कर्कश सीटी जोर से चीख उठी, जिससे उद्यान की भीड़ पर बज्रपात-सा हुआ और बैण्ड के नेता का ऊपर उठा हुआ हाथ, जिससे वह प्रयाण-संगीत शुरू करवानेवाला था, धीरे-धीरे नीचे गिर गया।

— ७ —

ऊपर के कमरों में हेनरी अंधों की तरह हाथ मार रहा था। उसने दीवारों के सहारे-सहारे आगे बढ़ने की कोशिश की थी, लेकिन दीवारें बहुत गर्म थीं। उन पर का कागज झुलसा जा रहा था और उसे लगा कि उसके हाथों के नीचे दीवार में से तुरन्त आग की लपट फूट पड़ेगी।

“जिमी!” — उसने आवाज तो दी, लेकिन धीरे से, मानो उसे भय हो कि नीचे शोर करने वाली ज्वालाएँ कहीं सुन न लें।

“जिमी! ओ जिमी!”

हाँफते और ठोकर खाते हुए वह तेजी से जिमी के कमरे के दरवाजे पर पहुँचा और उसने दरवाजे को धक्का देकर खोला। उस छोटे से कमरे में धुँए का निशान भी नहीं था। मकान को जला डालनेवाली आग का प्रकाश घूम-फिर कर उस कमरे में पहुँच रहा था जिससे कमरे में मनोरम गुलाबी रोशनी हो रही थी। लड़का हो-हल्ले के कारण अभी जागा ही था। वह बिस्तर पर बैठा था। उसके ओंठ खुले थे, आँखें फैली हुई थीं, और उसके सफेद कपड़ों तथा शरीर से आग का प्रकाश आँखमिचौनी खेल रहा था। दरवाजा खुलते ही उसने अपने सामने अपने साथी को भूत की तरह देखा। वह हब्सी डर से

बेहाल था, उसका साज-सिगार बिगाड़ गया था, उसके गर्म कपड़े झुलस गये थे। वह उछल कर ज़मीन के पास पहुँचा और उसे एक कम्बल में लपेट कर ऐसे ले चला, मानो डाकुओं का कोई सरदार किसी बच्चे को उड़ाये ले जा रहा हो।

हमेशा तो ज़मीन रोने से पहले अपना मुँह पूरी तरह बिगाड़ लेता था; लेकिन इस समय ऐसा किये बिना ही वह इस प्रकार चिल्ला पड़ा, जैसे कोई बछड़ा अत्यन्त भयभीत होकर रंभाता है। उसे उठाये हुए जैसे ही लड़खड़ाते पावों से धुँए से परिपूर्ण हवा में जानसन पहुँचा, ज़मीन ने अपनी दोनों बांहें उसके गले में जोर से डाल दीं और अपना मुँह कम्बल में छिपा लिया। दो बार उसमें से उसकी दबी हुई आवाज़ निकली—“मॉ... आ ! मॉ... आ !”

जानसन अपना भार उठाये हुए जब सीढ़ियाँ उतरने के लिए जीने पर पहुँचा, तब तुरन्त उसे एक कदम पीछे हटना पड़ा। ऊपर उठते हुए धुँए के बादल के पार उसने देखा कि नीचेवाला ‘हाल’ धू-धू करके जल रहा है। वह उसी तरह चीख पड़ा, जैसे थोड़ी देर पहले ज़मीन चीखा था। उसके पाँव जवाब देने लगे। वह अपनी पतली-पतली टाँगों के सहारे लड़खड़ाता हुआ ऊपरवाले ‘हाल’ के बराबर-बराबर लौटने लगा। जान पड़ता था कि इस जलते हुए मकान से बचकर निकलने की उम्मीद उसने छोड़ दी है और साथ ही बच निकलने की इच्छा भी। उसके जन्मजात संस्कारों के कारण उसके मस्तिष्क ने आग के सामने घुटने टेक दिये; उसने आग से हार मान ली।

उसने ज़मीन को अनजाने ही उसी तरह जोर से भींच लिया जैसे उसने चमकदार रेशमी पट्टेवाले टोप को घर की तरफ भागते हुए भींच रखा था।

एकाएक उसे वह छोटा-सा अन्दरूनी जीना याद आया, जो शयनकक्ष से मकान के उस निचले हिस्से को जाता था, जिसमें डाक्टर ने प्रयोगशाला बना रखी थी, जहाँ वे कभी आराम भी करते थे और जहाँ बैठकर उस समय काम किया करते थे, जब कि वास्तव में उन्हें सोना चाहिए था।

जैसे ही जानसन को इस जीने की याद आयी, उसकी हार की भावना तुरन्त गायब हो गयी। वह इस जीने से भली-भाँति परिचित था, परन्तु धबराहट में उसकी याद उसके दिमाग से उतर गयी थी।

अपनी क्षणिक निराशा में उसे लेशमात्र भी डर नहीं व्यापा था, परन्तु सुरक्षा का मार्ग दिखायी देते ही जबदरस्त डर ने उसे घेर लिया। आग का गुलाम अब वह नहीं था; किन्तु उससे लड़ने से वह डरता था। भावनाओं का अनोखा उतार-चढ़ाव था यह! दो बार वह डर कर आग की लपटों से जलने

को तत्पर हुआ और एक बार निडर होकर उनके सामने आत्मसमर्पण करने को। लड़खड़ाते पाँवों से आगे बढ़ते हुए उसने एक बार धीमे से पुकारा—“जिमी।” वह चाहता था कि वह नन्हा बेजान-सा शरीर भय से उसके साथ काँप उठे, लेकिन जानसन की इन सारी कोशिशों के समय वह निढाल ही पड़ा रहा। जीवन का कोई लक्षण उसने प्रकट नहीं किया।

दो कमरे पार करके जानसन जीने पर पहुँचा। दरवाजा खोलते ही उसमें से धुँए के बादल उठने लगे, लेकिन जिमी को और जोर से पकड़ कर वह उनमें कूद पड़ा और सीढ़ियाँ उतरने लगा। तरह-तरह की गन्धों ने उस पर आक्रमण किया। प्रतीत होता था, मानो उनमें घृणा, ईर्ष्या और दुर्भावना भरी थी। प्रयोगशाला के दरवाजे पर उसने एक अजीब दृश्य देखा। कमरा एक बाग जैसा दिखायी दिया, जिसमें फूल जल रहे हों। बैंगनी, लाल, हरी, नीली, नारंगी, और जामुनी रंग की लपटें चारों ओर उठ रही थीं। एक जगह मूंगे का ढेर दिखायी देता था तो दूसरी जगह चमकता हुआ पन्ने का ढेर; परन्तु ये सब चमत्कार मंडराते हुए भयंकर धुँए के बादलों के पार ही दिखायी दे रहे थे।

जानसन क्षणभर को देहली पर रुका। उसके अन्तर का हृषी एक बार फिर रो उठा। दलदलों की उदासी उसमें निहित थी। फिर वह कमरे के पार भागा। एक नारंगी लपट बाघ की तरह उसकी रंगीन पतलून पर झपटी। उस जानवर ने उसको गहरा घाव लगाया। एक तरफ एक विस्फोट हुआ और एकाएक उसके सामने परियों जैसी एक नाजुक, नीली आकृति खड़ी हो गयी। उसने मुस्कराते हुए रास्ता रोक कर जिमी और जानसन के भाग्य का फैसला कर दिया। जानसन चिल्लाया और अपने जाति-भाइयों की तरह उसने भाग कर निकलने की कोशिश की। उसने उस नीलम परी की बायीं ओर से निकल जाना चाहा, लेकिन उस परी में गजब की फुर्ती थी और जब जानसन उसके पास से गुजरा तब उसने उसे अपने पंजों में दबोच लिया। चोट खाये हुए व्यक्ति की तरह जानसन तड़प कर इधर-उधर घूमा, लेकिन पीठ के बल गिर पड़ा। उसका निढाल भार छिटक कर दूर जा पड़ा और लुढ़कता हुआ एक सिरे पर खिड़की के नीचे जा पहुँचा।

जानसन ऐसे गिरा कि उसका सर एक पुरानी डेस्क के पाँवों से जा लगा। डेस्क पर कई घड़े रखे थे। इस सारी ऊहापोह के बीच में घड़े शान्त भाव से खड़े थे, किन्तु एक घड़े में एक सौंप-सा लहरा रहा था।

अचानक वह घड़ा तड़ख कर टूट गया और माणिक के रंग की एक सौंप

जैसी चीज उसमें से निकल कर डेस्क पर लम्बी हो गयी। गेंडुली मारते हुए वह एक बार ठहरी और फिर ढलवाँ डेस्क पर आहिस्ता-अहिस्ता तैरने लगी। सिरे पर पहुँच कर एक बार वह नीचे पड़े हुए मनुष्य की बन्द आँखों को देखकर लहरायी। तब एक क्षण में मानो विवश होकर वह आगे बढ़ी और फिर वह लाल साँप सीधे जानसन के खुले हुए चेहरे पर गिरने लगा। इसके बाद जिस रास्ते वह गुजरा था उससे एक बदबू उठती रही और आग की लपटों तथा छोटे-छोटे विस्फोटों के नीचे उसकी बूंद तपे हुए लाल हीरों की तरह धीरे-धीरे नीचे गिरती रही!

- ८ -

अचानक सभी रास्तों से लोग डा. ट्रेस्काट के घर की ओर आने लगे। एक ही गंतव्य स्थान था सबका। उधर चिपवे होज कम्पनी नम्बर एक बड़ी कठिनाई से ब्रिज स्ट्रीट हिल की चढ़ाई पार करती हुई आ रही थी; इधर टसकारोरा की गाड़ी नियागरा अवेन्यू के ढलान को तेजी से पार करके आ पहुँची। सीढ़ियों और काँटों के विशेषज्ञ अपनी मशीन लिये खाड़ी के पार से चले आ रहे थे। अग्नि-शामक विभाग के प्रमुख बिटली के सिगार स्टोर में ताश खेल रहे थे, परन्तु कर्कश सीटी की पहली आवाज कान में पड़ते ही वे तीर की तरह वहाँ से भागे।

व्हिलोमविल में ऐसे अवसरों पर कई लोग तुरन्त ही गिर्जाघरों और स्कूलों के घंटे बजाने में जुट जाते थे। इन घंटों से खतरे की सूचना को तो बल मिलता ही था, परन्तु उन लोगों की आदत थी कि आसमान में वे इन घंटों की आवाज तब तक गुंजाते रहते थे, जब तक कि आग लगभग बिल्कुल बुझ न जाती। उन लोगों में एक तरह की यह होड़ भी थी कि कौन-सा घंटा ज्यादा जोर से बजता है। चार मील दूर खेतों में खड़ा हुआ गिर्जाघर भी शहर के अपने भाइयों के घंटे सुन कर उनकी आवाज में अपनी आवाज मिलाने लगा।

डा. ट्रेस्काट धीमे-धीमे सिगार पीते हुए अपनी घोड़ा-गाड़ी में घर लौट रहे थे और बड़े प्रसन्न थे कि जिस मरीज को देख कर वे लौटे थे, उसके जंगली जानवर जैसे रोग को उन्होंने वश में कर लिया था। तभी उन्हें खतरे की पहली सूचना सुनायी पड़ी। न जाने क्यों उन्हें विश्वास था कि आग उनके मकान से कम-से-कम दो मील की दूरी पर नये और बड़े आदमियों के उपनगर, आकहर्स्ट में लगी

है। तभी वह कर्कश सीटी दूसरी बार बजी और चुप हो गयी। जब वह फिर नहीं बजी, तब वे जान गये कि आग का हमला उनके ही क्षेत्र पर हुआ है। उन्होंने चाबुक उठाकर धीरे से अपनी घोड़ी के छुआया। घोड़ी इस आकस्मिक आचरण से हैरान और परेशान हो कर अपने रास्ते पर झपटी, डाक्टर के हाथों में लगाम तक न गयी और उनका शरीर पीछे को झुक गया। घोड़ी हवा की तरह उन्हें बन्द फाटक तक ले गयी। जिस शस्त्र ने आग के डिब्बे को तोड़कर आग की सूचना दी थी, उसने चिल्ला कर कुछ कहा, लेकिन डाक्टर पहले ही सब समझ चुके थे। घोड़ी को उन्होंने उसकी मर्जी पर छोड़ा।

मकान के सामने एक औरत पागलों की-सी अवस्था में बदन पर कुछ लपेटे हुए खड़ी थी। उन्हें देखते ही वह चिल्लायी—“नेड ! जिमी, जिमी को बचाओ।”

डाक्टर कठोर और भाव-शून्य हो गये थे। “कहाँ?”—उन्होंने कहा—“कहाँ?”

अस्पष्ट आवाज में श्रीमती ट्रेस्काट ने कहा—“ऊपर-ऊपर ऊपर..।” अपना हाथ उन्होंने दूसरी मंजिल की खिड़कियों की तरफ उठा दिया।

हैविगन भी तब तक चिल्लाने लगा था—“इस रास्ते से मत जाओ ! तुम जा नहीं सकते इस रास्ते से।”

ट्रेस्काट भाग कर मकान की दूसरी तरफ पहुँचे और उनकी आँखों से ओझल हो गये। उन्होंने सामने के ‘हाल’ का जो दृश्य देखा, उसी से वे समझ गये थे कि उधर से ऊपर जाना असम्भव था। अब उनकी आस लगी थी उस जीने पर, जो उनकी प्रयोगशाला से ऊपर जाता था। प्रयोगशाला का जो दरवाजा ‘लान’ पर खुलता था, उसमें ताला लगा था। उन्होंने कसकर दरवाजे के दो लात लगायीं और वह एक धमाके साथ खुल गया। डाक्टर धुँए के बादल से एक बार घबरा कर पीछे हट गये; लेकिन फिर झुक कर वे जलते हुए फूलों के बाग में घुस गये। अपनी जलती हुई आँखों से उन्होंने देखा कि खिड़की के पास एक सुलगते हुए कम्बल में कोई आकृति लिपटी हुई पड़ी है। अपने बेटे को उठाकर जब वे दरवाजे की ओर लौटे, तब उन्होंने देखा कि सारा ‘लान’ पुरुषों और लड़कों से भरा था। सारे शहर ने आग पर जो हमला बोल रखा था, उसके वे नेता थे। उन्होंने डाक्टर और कम्बल में लिपटी हुई आकृति को समझाला और उनको गीले कम्बलों में लपेट दिया।

परन्तु हैविगन चिल्ला रहा था— “जानसन अभी अन्दर ही है। हेनरी जानसन अब भी अन्दर है। वह बच्चे को बचाने गया था। जानसन अब भी अन्दर ही है।”

यह पुकार डाक्टर ट्रेसकाट की अर्द्ध निद्रित चेतना को पार करके उनके मस्तिष्क में पहुँची और वे विद्यार्थी-जीवन की समस्त गालियों को अनचाहे ही बकते हुए अपने हितचिंतकों से छुटकारा पाने के प्रयत्न करने लगे। वे खड़े हुए और फिर प्रयोगशाला के दरवाजे पर पहुँचे। लोग उनसे बहुत डर रहे थे। फिर भी, उन्होंने डाक्टर को रोकने की कोशिश की।

परन्तु रेलगाड़ी का एक नवयुवक कर्मचारी, जो वहाँ पास की एक गली में रहता था, प्रयोगशाला में पहले घुस गया और किसी चीज को लाकर उसने घास पर लिटा दिया।

— ९ —

मकान के सामने लोग भरपूर हुए गलों से हुक्म दिये जा रहे थे— “नम्बर पाँच, पानी छोड़ो !” “नम्बर एक और तेज !” भीड़ कभी इधर होती थी कभी उधर। ऊँची-ऊँची लपटों से एक प्रचंड लाल रोशनी लोगों के चेहरों पर पड़ रही थी। किसी पास के रास्ते से एक और घंटे की आवाज सुनायी दी। भीड़ चिल्ला पड़ी—“नम्बर तीन भी आ गया !” “यह आया नम्बर तीन !” हॉफते हुए लोगों की भीड़ आग बुझाने की एक गाड़ी खींचे ला रही थी। छोटे लड़के हँसी-से एक स्वर में चिल्ला उठे—“यह आया तीन !” लड़कों ने नेवर डाई होज कम्पनी नम्बर तीन का ऐसे स्वागत किया, मानो देवता स्वयं कोई रथ खींचे ला रहे हों। पसीने से तर-बतर लोग भगदड़ में शामिल हो गये। उन लोगों की कार्रवाइयाँ देखकर बच्चे खुशी से नाचने लगे। उन्होंने अपने शोर से नम्बर दो के आने की सूचना दी। नम्बर चार का हर्ष-ध्वनि से स्वागत किया। इस सारी हलचल से वे इतने उत्तेजित थे कि सीढ़ी और काँटों की टोली का देर से आना उन्हें बहुत खला। अपने भारी साज-सामान के कारण ब्रिज स्ट्रीट पर एक बार तो वह टोली चढ़ान पार करने से निराश हो गयी थी। लड़के आग से घृणा करते और डरते थे। वे यह हर्गिज नहीं चाहते थे कि किसी के घर में आग लगे, परन्तु टोलियों का जमाव और तमाम हो-हल्ले के बीच आग के विरुद्ध अपने प्रिय पात्रों के आश्चर्यजनक कारनामे देखना उन्हें पसन्द था।

विभिन्न टोलियों के पक्ष और विपक्ष में उनके दल बने हुए थे और अपनी-अपनी टोली के मान के लिए वे आपस में लड़ने तक से न डरते थे। उदाहरण

के लिए नगर के उस भाग में, जिसमें चार नम्बर का मुकाम था, किसी दूसरी टोली को श्रेष्ठ बताना बड़ी हिम्मत का काम था। इसी तरह एक और इलाके में अगर किसी अजनबी लड़के से पूछा जाता कि व्हिलोमविल में आग बुझाने वाली कौनसी कम्पनी सबसे श्रेष्ठ है, तो उससे इसी उत्तर की आशा की जाती थी कि नम्बर एक ही सर्वश्रेष्ठ है। मौके आते थे और चले जाते थे, महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटती थीं और खत्म हो जाती थीं; लेकिन उनके बारे में लड़कों का कोई-न-कोई झगड़ा नगर में हमेशा चला करता था।

अग्नि-शामक विभाग के प्रमुख जान शिप्ले के प्रति उनके मन में आदर का भाव नहीं था। यह सही है कि जहाँ आग लगती, वह तीर की तेजी से वहाँ पहुँचता था, लेकिन पहुँचने के बाद हमेशा ही वह ऐसा शान्त हो जाता था, मानो किसी और विचार में डूबा हो; सिगार के कश लगाता हुआ वह जलते हुए मकान को चारों तरफ से घूम-घूम कर देखता रहता। यह शान्त व्यक्ति, जो कई जानों पर खतरा आ बनने पर भी शायद ही कभी चिल्लाता था, उनके मन के मुताबिक नहीं था। इसके पहले प्रमुख था साइक्स हंटिंग्टन। वह बराबर सॉड की तरह चिल्लाता रहता था और पागलों की तरह हाथ-पोंव मारता रहता था। देखने में तो उसे मजा आता था; शिप्ले को देखने में क्या मजा आता! इसका भाव तो वैसा ही रहता था जैसा कि ताश के खेल में पैसों का ढेर बढ़ते देखकर रहता था। अधिकांश लड़कों की समझ में आता ही न था कि आखिर टोलियाँ बार-बार क्यों शिप्ले को ही प्रमुख चुनती थीं। फिर भी, कुछ इसे समझने का दिखावा करते थे और इस बहस में उनकी सबसे बड़ी यही दलील होती थी कि मेरे पिता कहते हैं और जहाँ तक पिताओं का सम्बन्ध था, लगभग सबके सब शिप्ले के हिमायती थे।

इस समय बहस यह चल रही थी कि आग पर सबसे पहले पानी किस टोली ने छोड़ा। ज्यादातर लड़कों का दावा था कि यह सम्मान नम्बर पाँच ने पाया है, लेकिन थोड़े-से लड़के अड़े हुए थे कि नहीं, यह श्रेय नम्बर एक को प्राप्त है। वे लड़के भी, जो वैसे दूसरी टोलियों के हिमायती थे, इस समय इन्हीं दो में से किसी एक का पक्ष लेने को मजबूर थे और उनकी बातचीत गर्मी पकड़ रही थी।

इसी समय एक जबर्दस्त अफवाह फैली। लोगों ने एक दूसरे के कान में कुछ कहा। लड़कों में भी एक आदर-भरी निस्तब्धता छा गयी। जिमी ट्रेस्काट और हेनरी जानसन आग की भेंट चढ़ गये थे और डा. ट्रेस्काट खुद भी बुरी तरह

जल गये थे। भीड़ को मालूम तक न हुआ कि पुलिस उसे धक्के मार कर पीछे हटा रही थी। लोग आँखें फाड़कर आग को देख रहे थे; उनमें भय व्याप्त था।

जो आदमी खबर लाया था, उसकी बड़ी पूछ थी। उसने धीमी-धीमी आवाज से सारा मामला बताया। “वहाँ, उस कोने में बच्चे का कमरा था। उसे खसरा निकली हुई थी या कुछ था। यह बेवकूफ जानसन उसके पास था। उसे शायद नींद आने लगी या क्या हुआ कि लैम्प उसने गिरा दिया। डाक्टर नीचे अपने आफिस में थे। वे भाग कर ऊपर पहुँचे और तीनों-के तीनों जल गये। किसी तरह खींच कर उन्हें बाहर निकाला है।”

एक और आदमी, जिसे हर मामले में आखिरी फैसला सुनाने की आदत थी, बोला—“तीनों में से कोई भी नहीं बचेगा। जलकर राख हो गये हैं। बचने का सवाल ही नहीं है। तीनों के तीनों! अंधा भी यह देख सकता है।” भीड़ और गौर से उन आग के झुण्डों को देखने लगी, जो काले आसमान के सामने मारे खुशी के लहरा रहे थे। नगर के घंटे-घंटियाँ बारम्बार बजे जा रहे थे।

‘लान’ से एक जुलूस-सा सड़क की तरफ चला। आग बुझानेवाले बारह आदमी तीन चारपाइयाँ उठाये हुए थे। पुलिस कड़ाई से आगे बढ़ी, लेकिन इस जुलूस के लिए रास्ता बिना उसकी मदद के आप ही बन गया। जिन लोगों ने चारपाइयाँ उठा रखी थीं, उन्हें सभी अच्छी तरह जानते थे, लेकिन घंटे-घंटियों की आवाज और हो-हल्ले के बीच और आसमान पर छायी आग की लाली के सामने इस गम्भीर जुलूस में वे बिल्कुल अपरिचित-से दिखायी दे रहे थे और विलोमविल उनके सामने श्रद्धा से नतमस्तक था। चारपाइयों के इस जुलूस के हर आदमी को क्षणिक सम्मान प्राप्त हो गया था। वे यम देवता के भारवाही थे और तीन कर्त्रे खुदने की सम्भावना ने उन्हें जो महानता प्रदान कर दी थी, उसे भीड़ ने गहन आदर के साथ देखा। पहली चारपाई के ढके हुए शरीर को देखकर एक औरत ने चीख कर अपना मुंह फेर लिया। एकाएक लोग मौन क्रोध की निगाह से उसे देखने लगे। इसके अतिरिक्त कहीं पत्ता खड़कने की भी आवाज नहीं हुई और बारह महत्त्वपूर्ण व्यक्ति अपना बोझ उठाये हुए नपे-तुले कदमों से भीड़ में से गुजर गये।

लड़के विभिन्न टोलियों की महानता पर बहस करना भूल गये। अधिकांश के होश-हवास गुम हो गये थे। उनमें जो अत्यन्त साहसी थे, उन्होंने ही पीले कम्बलों में लिपटी हुई तीन आकृतियों को गौर से देखा।

बूढ़े न्यायाधीश डेनिंग हैगेनथार्प ट्रेस्काट के घर के लगभग सामने ही रहते थे। आपत्तिग्रस्त परिवार को उन्होंने अपने यहाँ जगह दी। जब सब लोगों को पता चला कि डाक्टर, उनका बेटा और हब्बी, तीनों ही जिन्दा हैं, तब इतने सारे लोग बाढ़ फाँद कर घायलों से मिलने आने लगे कि सिर्फ उन्हें रोकने के लिए पुलिस का एक सिपाही तैनात करना पड़ा। एक बुढ़िया एक चमत्कारिक पुलिटिस लेकर आयी और जब पुलिसवाले ने उसे रोका, तब उसने उसे खूब खरी-खोटी सुनायी। कुछ बड़े लड़के, जिन्हें अपनी उम्र के कारण सहूलियत थी या उनकी माताओं को उन्हें अनुमति देनी पड़ी, किसी की मृत्यु या ऐसी ही कोई घटना होने के इंतजार में मकान के बाहर जमे रहे। 'मार्निंग ट्रिव्यून' का संवाददाता सुबह के तीन बजे तक एक-एक घंटे बाद अपनी साइकिल पर चक्कर लगाता रहा।

व्हिलोमविल के दस डाक्टरों में से छः न्यायाधीश हगेनथार्प के मकान पर मौजूद थे। उन्हें लगभग तुरन्त ही ज्ञात हो गया कि डा. ट्रेस्काट के जख्म बहुत खतरनाक नहीं थे। बालक के शरीर पर भयंकर दाग तो रह जायेंगे, लेकिन उसके जीवन को निश्चय ही कोई खतरा न था। हेनरी जानसन के जीवित रहने की कोई उम्मीद नहीं थी। उसका शरीर बुरी तरह जल गया था, लेकिन इससे भी खतरनाक बात यह थी कि उसका चेहरा एक प्रकारसे गायब ही हो गया था। वह जलकर खत्म-सा हो गया था।

डा. ट्रेस्काट रह-रह कर दोनों बीमारों की हालत पूछते थे। सुबह जब वे स्वस्थ मालूम हुए, तब उन्हें हेनरी की निराशाजनक अवस्था से परिचित कराया गया। वे विस्तरे पर पड़े-पड़े छटपटाये; डाक्टरों ने तुरन्त उनकी पट्टियों को सम्हाला।

ट्रेस्काट ने एक-एक करके सभी को जिस तरह देखा, उससे सबको लगा मानो ट्रेस्काट में सिंह जैसी शक्ति है; फिर भी, वे कुछ कर सकने में असमर्थ हैं।

सुबह अखबार में हेनरी जानसन की मृत्यु का समाचार छपा। एडवर्ड जे. हैबिगन के साथ एक मुलाकात का लम्बा विवरण भी छपा, जिसमें हैबिगन ने बताया था कि हेनरी ने आग का किस प्रकार मुकाबला किया था। सम्पादक-वर्ग को जो सुन्दर-से-सुन्दर शब्द-याद थे, उन सबका प्रयोग करके सम्पादकीय

लेख लिखा गया। नगर की सामान्य विचारधारा को एक झटका-सा लगा और उसने इस वीर सेवक का आदर के साथ स्मरण किया। बहुत से लोगों का दिल तड़प उठा कि वे हेनरी के जीवन-काल में उससे इतने घनिष्ठ ही नहीं हुए कि कभी उसकी कुछ सहायता या प्रशंसा करते। अपनी इस दीनता के लिए उन्होंने स्वयं को मूर्ख और निर्मम ठहराया।

छोटे लड़कों के लिए एकाएक हेनरी जानसन का नाम एक पूज्य संत का नाम हो गया। जिस लड़के को सबसे पहले यह विचार सूझा, उसने विषयांतर होते हुए भी, कविता की ये दो पक्तियाँ सुनाकर अपने विरोधी को पछाड़ा—
“हब्सी, हब्सी, कभी मरता नहीं,
काला चेहरा, चमकती आँख।”

जब हेनरी घूमने निकलता था, तब लड़के उसके पीछे यही अपमानजनक पक्तियाँ गाते थे, लेकिन इस बात को उन्होंने अपने दिल की गहराइयों में दबा दिया।

नम्बर ७, वाटर मेलन एली की कुमारी बेला फरागट ने दिन में बताया कि हेनरी जानसन से उसकी सगाई हो चुकी थी।

— ११ —

बूढ़े न्यायाधीश के पास एक डण्डा था, जिसकी मूठ हाथी-दाँत की थी। जब तक वे अपना कुछ भार इस डण्डे पर टेक कर अपने हाथों से मूठ को धीरे-धीरे सहलाते न रहते, तब तक वे किसी भी विषय पर अच्छी तरह विचार नहीं कर पाते थे। यह डण्डा उनके लिए एक नशे के समान था। अगर भूल से वे इसे कहीं इधर-उधर रख देते, तो तुरन्त वे चिड़चिड़ा उठते थे और अपनी उस बहन को डाँटने लगते थे, जिसकी मानसिक असमर्थता को वे तीस वर्ष से ओंटेरियो स्ट्रीट के पुराने मकान में सहन कर रहे थे। उसे यह पता न था कि उसके भाई उसके गुणों को कितना हीन समझते हैं। इससे यह कहा जा सकता है कि जज ने एक-चौथाई शताब्दी की अवधि में अपने विचारों को बड़ी खूबी से छिपाये रखा; उनके प्रकट होने का खतरा कभी पैदा होता था, तो केवल उस डण्डे के गुम हो जाने के समय।

एक दिन वे बरामदे में अपनी आराम-कुर्सी पर बैठे थे। धूप झाड़ियों से छन-छन कर आ रही थी, जिससे फर्श पर सिक्कों की वर्षा हो रही थी। सड़क

के किनारे के वृक्षों में चिड़ियाँ चहचहा रही थीं। जज किसी विचार में डूबे हुए थे और उनके हाथ डण्डे की हाथीदाँत की मूठ को बड़ी कोमलता से सहला रहे थे।

आखिर वे उठकर मकान में गये। गहन विचारों के कारण अब भी उनके माथे पर बल पड़े हुए थे। उनके डण्डे से बराबर ठक-ठक की आवाज़ आ रही थी। दूसरी मंज़िल पर वे उस कमरे में पहुँचे, जिसमें डा. ट्रेस्काट हेनरी जानसन के पलंग के पास बठे उसकी परिचर्या कर रहे थे। हब्बी का सर और चेहरा पट्टियों में छिपा हुआ था। उनके बीच में केवल एक आँख दिखायी देती थी। उस आँख से हेनरी एकटक जज को देखने लगा। उन्होंने हब्बी की हालत के बारे में डा. ट्रेस्काट से बातचीत की। स्पष्ट था कि वे कुछ और भी कहना चाहते थे, लेकिन वह एक आँख जो एकटक उन पर लगी हुई थी, उन्हें रोक रही थी और वे चोरी-छिपे उस आँख को देखते जाते थे।

जब जिमी ट्रेस्काट की हालत काफी सुधर गयी, तब उसकी माँ उसे कनेक्टीकट में उसके ननिहाल ले गयी। डाक्टर अपने रोगियों की देख-भाल के लिए वहीं रहे, लेकिन उनका ज्यादा-से-ज्यादा समय न्यायाधीश हैगनथार्प के यहाँ, जहाँ हेनरी जानसन पड़ा था, बीतता था। वहीं वे सोते थे और हेनरी की तीमारदारी करते हुए अक्सर खाना भी वहीं खाते थे।

भोजन के समय उस अपलक आँख की पहुँच से दूर, न्यायाधीश ने एकाएक कहा—“ट्रेस्काट, क्या तुम समझते हो कि...।” डाक्टर ने उनकी बात सुनने के लिए जैसे ही सर उठाया, न्यायाधीश छुरी को उंगलियों में नचाने लगे। उन्होंने विचारपूर्वक कहा—“ऐसे विचार प्रस्तुत करना कोई नहीं चाहता, लेकिन न जाने क्यों मेरा खयाल है कि उस बेचारे का मरने में ही भला है।”

डाक्टर के चेहरे पर ऐसा भाव उभर आया, मानो न्यायाधीश की बात ने एक पुरातन समस्या उनके सामने प्रस्तुत कर दी हो। वे ठंडी साँस लेकर बोले—“कौन जाने?” जिस गहराई के साथ उन्होंने ये शब्द कहे, उसने इनमें एक महत्त्वपूर्ण अर्थ भर दिया।

न्यायाधीश ने फिर से अपने पेशे का निर्लिप्त भाव अपना कर कहा—“शायद सम्यता के नाते हमें ऐसी कार्रवाई की बात नहीं करनी चाहिए, लेकिन मुझे कहना ही पड़ता है कि इस हब्बी की जान बचाने की जो उदारता तुम दिखा रहे हो, वह संदिग्ध है। जहाँ तक मैं समझता हूँ, अब वह एक दानव, पूर्णतया दानव का रूप लेकर ही जी सकेगा और सम्भवतया उसका दिमाग भी खराब

हो जायेगा। मैंने तुम्हें जितना देखा है, तुम्हें उतना देखने के बाद कोई भी व्यक्ति यह जाने बिना नहीं रह सकता कि यह तुम्हारे लिए अन्तरात्मा का प्रश्न है, किन्तु मेरे दोस्त, मुझे आशंका है कि यह पुण्य की बुराइयों में से एक है।” न्यायाधीश ने अपने ये विचार अपने स्वाभाविक जोरदार तरीके से प्रस्तुत किये। अन्तिम बात उन्होंने इस तरह जोर देकर कही, मानो यह मुहावरा पहली बार अभी-अभी उन्हें ही सूझा हो।

डाक्टर ने थके-हारे व्यक्ति की तरह कहा—“उसने मेरे बच्चे की जान बचायी है।”

न्यायाधीश ने तुरन्त जवाब दिया—“हाँ, मैं जानता हूँ।”

“मैं क्या करूँ?”—ट्रेस्काट ने कहा। उनकी आँखों में एकाएक इस प्रकार चमक आ गयी, जिस प्रकार सुलगती हुई लकड़ी में से अचानक लपट निकल जाती है। “मैं क्या करूँ? उसने अपनी जान की बाजी लगादी—जिमी के लिए! मैं उसके लिए क्या करूँ?”

न्यायाधीश ने इन शब्दों के सामने घुटने टेक दिये। क्षण भर को उनकी आँखें नीची हो गयीं। वे फिर भोजन करने लगे।

जरा-सी देर में उन्होंने फिर हिम्मत की और कुर्सी पर सीधे होकर बैठ गये। “तुम जानो, पर तुम्हारी ही कृति होगा वह, पूर्णतया तुम्हारी ही कृति। प्रकृति ने तो स्पष्टतः उसका परित्याग कर दिया है—वह मर चुका है। तुम फिर से उसमें प्राण डाल रहे हो। तुम उसकी रचना कर रहे हो और वह बनेगा दानव और वह भी विचार-शक्ति से शून्य।”

अचानक ट्रेस्काट को गुस्सा चढ़ आया, लेकिन वे नम्रतापूर्वक बोले—“आप जो चाहें, समझें जज साहब! उसका रूप कुछ भी बने, लेकिन ईश्वर जानता है, उसने मेरे बच्चे को बचाया है।”

न्यायाधीश ने भावातिरेक से काँपती हुई वाणी में टोका—“ट्रेस्काट, ट्रेस्काट! क्या मैं यह नहीं जानता?”

ट्रेस्काट अनमने-से हो गये और कटुतापूर्वक बोले—“हाँ, आप जानते हैं; किन्तु आपको मृत्यु के मुँह से अपने बेटे के निकाले जाने का अनुभव नहीं है।” यह न्यायाधीश के अविवाहित जीवन पर मूर्खतापूर्ण प्रहार था। ट्रेस्काट समझते थे कि बात बच्चों जैसी है, फिर भी इसमें उन्हें निराशाजन्य आनन्द का अनुभव हुआ।

परन्तु न्यायाधीश को इस प्रहार ने छुआ तक नहीं, अपनी अविवाहित

अवस्था का उन्हें एहसास ही नहीं था।

बहुत गम्भीरता के साथ सोचते हुए उन्होंने कहा— “मैं उलझन में पड़ गया हूँ; मेरी समझ में नहीं आता कि क्या कहूँ मैं।”

ट्रेस्काट को अपनी बात का पछतावा हो रहा था। “जज साहब, यह न समझिए कि मैं आपकी बात को अच्छी तरह समझता नहीं; परन्तु...” —उन्होंने कहा।

“नहीं, नहीं, नहीं, नहीं!”—न्यायाधीश ने तुरन्त उत्तर दिया।

ट्रेस्काट ने अपनी बात को जारी रखने की कोशिश की, लेकिन न्यायाधीश ने उन्हें टोक दिया—“ठीक है।”

दोनों चुप होकर भोजन करने लगे।

आखिर न्यायाधीश ने कहा—“आदमी के लिए सही रास्ते का पता लगा लेना बहुत मुश्किल है।”

“बहुत ही!”—डाक्टर ने उत्साह के साथ कहा। फिर कुछ देर चुप्पी रही। न्यायाधीश ने उसे तोड़ा—

“देखो ट्रेस्काट, तुम यह न समझना—”

“हर्गिज नहीं!”—डाक्टर ने अपने अन्तर से कहा।

“यह न समझना कि मैं कहूँगा कि— मेरा तो यह खयाल था कि तुम्हें सुझा सकूँ कि शायद यह मामला खतरनाक है।”

डाक्टर का वास्तविक मानसिक द्वन्द्व एकाएक उनके चेहरे पर उभर आया और वे बोले—“तुम मेरी जगह क्या करते? क्या तुम उसे मार डालते?” उन्होंने बिना किसी भूमिका के कठोरता से पूछा।

“ट्रेस्काट, मूर्ख हो तुम!”—न्यायाधीश ने बड़ी कोमलता से उत्तर दिया।

डाक्टर का मुँह लाल हो गया और नयी उत्तेजना के साथ वे बोले—“मैं जानता हूँ, जज साहब; लेकिन देखिये उसने मेरे बच्चे को बचाया— समझते हैं आप? उसने मेरे बच्चे को बचाया।”

“बेशक, उसने बचाया,”—न्यायाधीश ने उत्साह के साथ जवाब दिया— “बेशक, उसने बचाया।” दोनों कुछ देर एक दूसरे को आँखों में आँखें डाल कर देखते रहे। उनके चेहरे एक घटना की स्मृतियों से चमक रहे थे।

कुछ देर की चुप्पी के बाद न्यायाधीश ने कहा—“आदमी के लिए सही रास्ते का पता लगा लेना बहुत मुश्किल है :”

- १२ -

एक दिन संध्या बीत जाने के बाद डाक्टर ने एक मरीज को देख कर लौटते हुए अपनी घोड़ा-गाड़ी हैगनथार्प के घर के फाटक के सामने रोकी। घोड़ी को उन्होंने एक खंभे से बाँधा और मकान में दाखिल हुए। कुछ देर बाद वे एक और व्यक्ति के साथ बाहर निकले। यह व्यक्ति धीरे-धीरे और इतना सम्हाल-सम्हाल कर चल रहा था, जैसे अभी चलना सीख रहा हो। चोटी से एड़ी तक वह एक पुराने ढंग के लबादे से ढँका हुआ था। दोनों बगधी में बैठ कर चल दिये।

कुछ देर सपाट मड़क पर पहियों के घूमने की संगीतमयी ध्वनि के अतिरिक्त पूर्ण शान्ति रही। फिर डा. ट्रेस्काट ने कहा—

“हेनरी, मैंने बूढ़े अलेक विलियम्स के यहाँ तुम्हारे रहने का प्रबन्ध किया है। तुम्हें अपनी पसन्द का भोजन मिलेगा और सोने को अच्छी जगह। मुझे उम्मीद है कि वहाँ तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा। तुम्हारा सारा खर्च मैं उठाऊँगा और बराबर तुमसे मिलने आता रहूँगा। अगर तुम्हें कोई तकलीफ हो, तो फौरन मुझे बता देना। हम तुम्हारी तकलीफ दूर करने के लिए भरसक प्रयत्न करेंगे।”

डाक्टर के पास बैठी हुई काली आकृति ने प्रसन्नता की हँसी हँसते हुए कहा—
“ये बगधी के पहिये ऐसे तो नहीं लगते, जैसे मैंने इन्हें कल ही धोया था, डाक्टर।”

डाक्टर कुछ हिचकिचाये, फिर जोर देकर कहते गये—“मैं तुम्हें अलेक विलियम्स के यहाँ लिये जा रहा हूँ, हेनरी और मैं—।”

वह आकृति फिर हँसी—“नहीं, नहीं, सच, नहीं। अलेक विलियम्स घोड़ों के बारे में क्या जाने ! सच, कुछ नहीं जानता वह घोड़ों के विषय में। उसके लिए घोड़ा और गद्दा बराबर है।” फिर ऐसे हँसा मानो, कंकड़ खड़खड़ा रहे हों।

डाक्टर ने मुड़ कर अँधेरे में उस काली आकृति को क्षणभर कठोर और स्थिर भाव से देखा; फिर बोले—“हेनरी, मैंने घोड़ों के बारे में तो एक शब्द भी नहीं कहा। मैं कह रहा था.....।”

अंधकार में से काँपती हुई आवाज आयी—“घोड़े ? क्या मैं घोड़ों के विषय में सब कुछ नहीं जानता ? क्या मैं नहीं जानता !” फिर व्यंग्य-भरी हँसी गूँज उठी।

तीन मील चलने के बाद घोड़ी ने चाल धीमी कर दी। डाक्टर ने तनी हुई रास पकड़े हुए आगे झुककर अँधेरे के पार देखने का प्रयत्न किया। बग्गी के पहिये ऊबड़-खाबड़ पथरों पर उछलते-कूदते चले जा रहे थे। एक विशाल, काली पहाड़ी पर चौकोर पीले मणि की तरह एक खिड़की चमक उठी। चार कुत्ते तेजी से बग्गी पर झपटे और जब बग्गी उनके सामने पीछे नहीं हटी, तब उन्होंने साहस के साथ और गुरति हुए उसको बगल से घेर लिया। पहाड़ी में खिड़की के पास एक दरवाजा खुला और एक आदमी बाहर निकलकर पीली रोशनी के किनारे खड़ा हो गया।

“ठीक है, ठीक है। ए रोवर, ए सूसी, चलो इधर। फौरन चलो इधर।”
ट्रेस्काट ने घास के अँधेरे सागर के इस पार से पुकारा—“हल्लो, अलेक।”
“हल्लो।”

“यहाँ आकर गाड़ी के लिए रास्ता दिखाओ मुझे।”

वह व्यक्ति प्रकाश के किनारे से घास पर कूद पड़ा। उसके नम्र उत्साह-भरे शब्दों से ही डाक्टर को उसके आने का पता चला रहा था। कुछ ही क्षणों में विलियम्स ने आकर घोड़े की लगाम पकड़ी और डाक्टर का स्वागत करने के साथ-साथ कुत्तों को डाँटते हुए वह गाड़ी को प्रकाश की ओर ले चला।

दरवाजे के पास बग्गी के रुकने पर जब डा. ट्रेस्काट उसमें से उतरने लगे, तब विलियम्स ने चिल्लाकर पूछा—“यह खड़ी रहेगी, डाक्टर?”

“बिल्कुल खड़ी रहेगी, लेकिन तुम क्षण भर थामे रहो इसे। आओ हेनरी।”
डाक्टर ने घूम कर दोनों बाँहें उस अँधेरी आकृति की ओर फैला दीं। जैसे कोई सीढ़ी से उतरे, इस तरह बड़े कण्ट के साथ रेंगती हुई वह आकृति उनके पास आयी। विलियम्स ने घोड़ी को ले जाकर एक पेड़ से बाँधा और लौट कर उसने देखा कि वे दोनों दरवाजे के प्रकाश से दूर अँधेरे में खड़े हुए उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

जिस तरह कोई टोंटी एकाएक खुल जाय उस तरह वह चिल्ला पड़ा—

“हेनरी, हेनरी, मेरे पुराने दोस्त। मैं कितना खुश हूँ आज; कितना खुश हूँ!”

ट्रेस्काट ने इस निश्चल आकृति की बाँह पकड़ी और उसे पूर्ण प्रकाश में ले जा कर खड़ा कर दिया। “अलेक, अब तुम हेनरी को ले जा कर सुला दो और सुबह मैं—”

वाक्य के समाप्त होने से पहले ही बूढ़ा विलियम्स हेनरी के ठीक सामने

आ खड़ा हुआ था। उसकी ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की साँस नीचे रह गयी। फिर वह ऐसे चीख उठा, जैसे किसी ने उसकी छाती में छुरा भोंक दिया हो।

दम भर को ट्रेस्काट ऐसे रह गये, जैसे कहने के लिए शब्द ढूँढ़ रहे हों। फिर वे गरज उठे—“बूढ़ा, मूर्ख, काला आदमी—चुप रह—चुप रह! सुनता है?”

जहाँ तक चीखों का सम्बन्ध था, विलियम्स शान्त हो गया, लेकिन धीमी आवाज में कहता गया—“हे भगवान, दया कर! कौन सोच सकता था यह? हे भगवान, दया कर।”

डाक्टर ने फिर सेनापति की तरह कड़क कर कहा—“अलेक!”

बूढ़ा हब्स्री फिर चुप हो गया; लेकिन अपने आप फुसफुसाया—“हे ईश्वर!” उसका चेहरा फक हो गया था और वह काँप रहा था।

तीनों की छायाएँ घटती हुई जब सुनहरे दरवाजे के पास पहुँचीं, तब एक खुशमिजाज बूढ़ी हब्स्रियन प्रकट हुई और झुक कर उनका स्वागत करते हुए बोली—“नमस्ते डाक्टर, नमस्ते! आइये! अन्दर आइये!” प्रकट था कि वह जल्दी-जल्दी में कमरे को ठीक करने की कोशिश से निबटी ही थी, लेकिन अब वह बार-बार झुक रही थी।

डाक्टर ने कमरे में पैर रखते हुए कहा—

“तुम तकलीफ मत करो, मेरी। मैं हेनरी को तुम्हारी देख-भाल में छोड़ने को ले आया हूँ। मैं जैसे कहूँ, बस तुम वैसे ही करती जाना।” उस आकृति को अपने पीछे आती न देख कर डाक्टर दरवाजे की ओर मुड़ कर बोले—“अन्दर आओ, हेनरी!”

जानसन के प्रवेश करते ही श्रीमती विलियम्स चीख पड़ी—“हाय।” वह पीछे की ओर ऐसे कूदी, जैसे भूकम्प आ गया हो। विलियम्स-परिवार के छः बच्चे एक साथ झपट कर चूल्हे के पीछे जा छिपे और मिलकर रोने लगे।

— १३ —

“तुम अच्छी तरह जानते हो कि तुम्हें और तुम्हारे कुटुम्ब को अक्सर हफ्ते भर के लिए तीन डालर से भी कम मयस्सर होते थे; लेकिन जब से डा. ट्रेस्काट जानसन के खर्च के लिए तुम्हें पाँच डालर देने लगे हैं, तुम लक्षपतियों की तरह रह रहे हो। जब से जानसन तुम्हारे यहाँ रहने लगा है, तब से तुमने काम के

नाम पर हाथ भी नहीं हिलाया है—यह सभी जानते हैं। फिर तुम्हें शिकायत किस बात की है?”

न्यायाधीश बरामदे में अपनी कुर्सी पर बैठे हुए अपने डण्डे को सहला रहे थे। उनकी निगाह बूढ़े विलियम्स पर थी, जो नीचे झाड़ियों के पास खड़ा था।

हब्शी ने बड़ी उलझन के भाव से अपना सर हिलाते हुए कहा—“मैं जानता हूँ, जज साहब! मेरा मतलब यह नहीं कि जो कुछ डाक्टर साहब कर रहे हैं, उसकी मैं कद्र नहीं करता; लेकिन—लेकिन—देखिये जज साहब!”—वह नये जोश के साथ कहता गया—“यह—यह काम मुश्किल है। इस बूढ़े ने कभी इतना मुश्किल काम नहीं किया, भगवान जानता है।”

“ऐसी मूर्खता की बातें मत करो, अलेक!”—न्यायाधीश ने कठोरता से कहा—“तुमने जीवन में कभी मेहनत की ही नहीं; कम-से-कम इतनी मेहनत तो हर्गिज नहीं जिससे एक चिड़िया के परिवार का भी खर्च पूरा पड़ता। और अब जब कि तुम्हारी हालत हमेशा से कहीं ज्यादा अच्छी है, तुम आकर मूर्खों की सी बातें कर रहे हो।”

हब्शी अपना सर खुजलाने लगा। आखिर वह बोला—“देखिये जज साहब, मेरी बूढ़ी स्त्री किसी सहेली को अब घर बुला ही नहीं सकती।”

न्यायाधीश ने गुस्से में कहा—“भाड़ में जायँ सहेलियाँ। घर में खाने को आटा और गोश्त है, तो तुम्हारी पत्नी का काम बगैर सहेलियों के भी चल सकता है। क्या नहीं चल सकता?”

विलियम्स ने और अधिक नासमझ बन कर कहा—“लेकिन वे आती ही नहीं, जज साहब! क्या मेरी पत्नी की सहेलियाँ और क्या मेरे दोस्त! कोई भी हमारे घर के पास फटकता तक नहीं।”

“अगर वे इतने मूर्ख हैं, तो रहें अपने घर।”

बूढ़ा हब्शी इस दलील का जवाब खोजने लगा, परन्तु जब जवाब सूझा नहीं तब चुपचाप लौटने को हुआ। फिर भी कुछ रुका और कहने लगा—“जज साहब, मेरी बूढ़ी पत्नी लगभग पागल हो गयी है।”

“तुम्हारी पत्नी बज्र मूर्ख है।”—न्यायाधीश ने उत्तर दिया।

विलियम्स ने बहुत निकट आकर गम्भीरतापूर्वक झाड़ियों के पार देखते हुए कहा—“लेकिन बच्चे, जज साहब!”

“उन्हें क्या हुआ?”

अत्यन्त धीमी आवाज में विलियम्स ने कहा—“वे—वे खाना तक नहीं खा पाते।”

“खा नहीं पाते !”—न्यायाधीश ने जोर से व्यंग्यपूर्वक कहा—“खाना नहीं खा पाते । तुम मुझे अपने जैसा ही मूर्ख समझते हो ! खा नहीं पाते — बदमाश कहीं के ! कौन रोकता है, उन्हें खाने से ?”

उत्तर में विलियम्स ने बड़े दुख के भाव से कहा—“हेनरी ।” इस नाम का ऐसी दुखपूर्ण रीति से उच्चारण करने से सन्तोष प्राप्त करके वह जज की प्रतिक्रिया देखने के लिए उन पर नजर जमाये रहा ।

न्यायाधीश चिढ़ गये । “बूढ़ा, बदमाश कहीं का । उल्टी-सीधी बातें क्यों बना रहा है । साफ साफ कह, तेरी मंशा क्या है ? तू चाहता क्या है ? मर्द की तरह साफ बात कह और यह निरर्थक बातें बन्द कर ।”

“मैं उल्टी-सीधी बातें नहीं बना रहा हूँ, जज साहब,”—विलियम्स ने जरा गुस्से में कहा—“जी नहीं ; मुझे जो कहना होता है, मैं साफ-साफ ही कहता हूँ ।”

“तो कह डाल ।”

हब्शी ने अपना टोप उतार कर उससे अपने घुटने को फटकारते हुए कहा—“जज साहब, ईश्वर गवाह है कि पाँच डालर के बदले जितना काम मैं करता हूँ, उससे ज्यादा दुनिया में कोई नहीं कर सकता, लेकिन—लेकिन यह मामला एक मुसीबत है, जज साहब । सच मानिये, जब से डाक्टर उसे मेरे घर लाये हैं, तब से हम सब की नींद उड़ गयी है ।”

“तो अब उसके बारे में तू करना क्या चाहता है ?”

विलियम्स अपनी नजर धरती से उठा कर पेड़ों के पार दूर ताकते हुए बोला—“मेरा खयाल है कि मैं खूब खाना खा सकता हूँ और सो सकता हूँ, मुर्दों से बाजी लगा कर । उसने—उसने मुझे बेहाल कर दिया है— न भूख लगती है, न रातों सो सकता हूँ । मुझे उसकी—उसकी आवाजें सुनायी देती हैं और मैं चुपचाप पड़ा रहता हूँ—पड़ा रहता हूँ, यहाँ तक कि आखिर मुझे उठकर दबे पाँव जाकर दरवाजे को देखना पड़ता है कि ताला तो अच्छी तरह बन्द है ; वह बन्द तो है उसमें । उसके कारण रात भर मैं न जाने क्या-क्या सोचता रहता हूँ और करवटें बदला करता हूँ । जाने सड़ियों में कैसी गुजरेगी । जहाँ बच्चे सोते हैं, वहाँ तो उसे रख नहीं सकता । और जहाँ वह आज-कल रहता है, वहाँ वह ठिठुर कर मर जायगा ।” विलियम्स ये बातें ऐसे कहता रहा, जैसे स्वयं से कह रहा हो । कुछ देर वह ऐसे चुप रहा, जैसे किसी गहरे सोच-विचार में पड़ा हो ; फिर बोला—“लोग कहते फिरते हैं कि वह हेनरी जानसन है ही

नहीं। कहते हैं कि वह तो खुद शैतान उतर आया है।”

“क्या?”—न्यायाधीश चिल्ला पड़े।

“जी हाँ!”—विलियम्स ने आहत होकर कहा मानो उसे झूठा करार दे दिया गया हो—“जी हाँ, जज साहब, मैं आपसे साफ कह रहा हूँ। मेरी तरफ़ के बहुत से लोग कहते हैं कि वह शैतान है।”

“लेकिन तुम स्वयं तो यह नहीं समझते, या समझते हो?”

“वह शैतान नहीं है। है तो हेनरी जानसन ही।”

“तो फिर तुम्हें परेशानी क्या है? लोग मूर्ख हैं, जो चाहें कहें, तुम्हें क्या? अपने काम से काम रखो और इस बकवास पर ध्यान ही मत दो।”

“यह बकवास तो है, जज साहब; लेकिन वह दीखता है शैतान का अवतार ही।”

“वह कैसा दीखता है और कैसा नहीं, इसकी तुम्हें क्या फ़िक्र है?”—न्यायाधीश ने पूछा।

“मेरा किराया ढाई डालर माहवार है।”—विलियम्स ने धीरे-धीरे कहा।

“दस हजार डालर माहवार भी हो तो क्या। तुम देते ही कब हो किराया?”

विलियम्स वैसे ही विचारमग्न व्यक्ति की भाँति कहता गया—“और देखिये अगर उसका दिमाग ठीक होता, तो मैं चला भी लेता, लेकिन वह तो पागलों से भी ज्यादा पागल है और शकल उसकी है शैतान जैसी! मेरे साथियों को उसने मुझसे छुड़ा दिया, मेरे बच्चों की भूख उसके मारे हुराम हो गयी, मेरी बुढ़िया हर वक्त झगड़ा करती रहती है और मेरा किराया ढाई डालर माहवार है और फिर उसका दिमाग ठिकाने नहीं। इन सब बातों को देखते हुए लगता है कि पाँच डालर प्रति सप्ताह—”

न्यायाधीश ने एकाएक अपना डण्डा जोर से बरामदे के फर्श पर पटक़ा और कहा—“अब सही बात आयी सामने। मैं पहले ही समझ गया था, तेरा मतलब क्या है।”

विलियम्स ने अपनी जातिगत रीति से सर को नकारात्मक भावसे हिलाते हुए कहा—“एक मिनट मेरी बात सुनिये, जज साहब। मेरा मतलब यह नहीं कि डाक्टर ने जो कुछ किया है, मैं उसकी कद्र नहीं करता; यह बात नहीं है। डा. ट्रेस्काट दयालु व्यक्ति हैं और मेरा मतलब यह नहीं कि जो कुछ उन्होंने किया है, मैं उसकी कद्र नहीं करता; परन्तु—परन्तु—”

“परन्तु क्या? अब तुम्हारी सूरत देखना भी असहनीय हो रहा है। अच्छा

बताओ तो इससे पहले भी कभी जीवन में तुम्हें नियमित रूप से प्रति सप्ताह पाँच डॉलर मिले हैं ?”

विलियम्स फौरन शान के साथ तन कर खड़ा हो गया, परन्तु न्यायाधीश का सवाल पूरा हो जाने पर धीरे-धीरे उसका रुख फिर बबल गया। आखिर उसने बड़ी बीरता से कहा—“नहीं, जज साहब, कभी नहीं। और न मैंने यह कहा है कि मेरे जैसे आदमी के लिए पाँच डॉलर कुछ नहीं है; किन्तु इस तरह के काम के लिए मनुष्य को मिलना चाहिए वेतन; इस तरह के काम के लिए मनुष्य को वेतन मिलना चाहिए, जज साहब।” ‘वेतन’ शब्द पर उसने विशेष बल दिया।

न्यायाधीश हँसे। “इस बारे में डा. ट्रेस्काट के विचार मैं जानता हूँ, अलेक; अगर तुम अपने मेहमान से असंतुष्ट हो, तो डाक्टर उसे कहीं और रखने को बिलकुल तैयार हैं। इसलिए अगर तुम मुझसे कह जाओ कि तुम्हें यह व्यवस्था मंजूर नहीं है और इसे बदलना चाहते हो, तो डाक्टर आकर जानसन को ले जायेंगे।”

विलियम्स परेशानी में पड़कर सर खुजलाने लगा। अन्त में उसने कहा—“एक आदमी को रखने के लिए पाँच डॉलर बहुत होते हैं, लेकिन पागल आदमी को रखने और खिलाने के लिए वे बहुत नहीं होते।”

“तो तुम्हीं बताओ तुम्हें क्या मिलना चाहिए ?”—न्यायाधीश ने पूछा।

अलेक ने ऐसे उत्तर दिया जैसे ऊँच-नीच सब तौल रहा हो—“वह शैतान जैसा दीखता है, हर आदमी उसे देख कर डर जाता है, मेरे बच्चे खाना नहीं खा पाते और मुझे नींद नहीं आती और उसका दिमाग ठीक नहीं है और—”

“यह सब तुम मुझसे पहले ही कह चुके हो।”

अपना सर खुजलाते और घुटने को टोप से फटकारने तथा पेड़ों के पार देखने और जमीन पर नजर गड़ाने के बाद, फर्श को ठोकर मारते हुए विलियम्स ने कहा—“जज साहब, मैं समझता हूँ कि इस काम के लिए—” उसकी आवाज लड़खड़ाने लगी।

“इस काम के लिए ?”

“छः डॉलर मिलने चाहिए।”— विलियम्स ने घबराते हुए एक दम कह दिया।

जज साहब अपनी बड़ी-सी आराम-कुर्सी में लेट गये। उनका सारा शरीर ऐसे हिल रहा था, जैसे वे जोर से हँस रहे हों, लेकिन उनके मुँह से सिखा एक

बार खाँसने के कोई आवाज नहीं निकली। विलियम्स आशंका-भरी दृष्टि से उन्हें देख रहा था।

न्यायाधीश ने कहा—“तो छः डालर को तुम वेतन समझते हो?”

विलियम्स ने तुरन्त उत्तर दिया—“जी नहीं। यह वेतन नहीं है।” उसे ऐसा मूर्ख समझने वाले व्यक्ति को उसने कुछ क्रोध की दृष्टि से देखा।

“मान लो तुम्हारे बच्चे खाना न खा सकें?”

“मैं—”

“और मान लो वह शैतान जैसा दीखे? और मान लो ये सारी बातें ज्यों की त्यों बनी रहें? तो छः डालर प्रति सप्ताह से फिर तो तुम्हें कोई शिकायत नहीं होगी?”

इन सवालों से विलियम्स का मस्तिष्क कई स्मृतियों से भर गया और वह सन्देहपूर्ण स्वर में बोला—“बिल्कुल यही बात है, जिस आदमी का दिमाग ठीक न हो और जो शैतान जैसा दिखता हो—लेकिन ६ डालर।” एक वाक्य पूरा करने के लिए ये दो प्रयास करने के बाद विलियम्स किसी वक्ता की तरह दिखने लगा। अपनी चमकदार हथेली को हवा में घुमाते हुए उसने कहा—“मैं कहता हूँ, जज साहब, छः डालर छः डालर होते हैं, लेकिन अगर मुझे हेनरी जानसन को रखने और खिलाने के छः डालर मिलते हैं, तो वे मेरी खरी कमाई के होंगे, खरी कमाई के।”

“मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं कि हफ्ते भर तुम जितना काम करते हो, उससे छः डालर कमाते हो।”

विलियम्स जोर से चिल्लाया—“अगर हेनरी जानसन को रखने-खिलाने के मुझे छः डालर प्रति सप्ताह मिलें, तो वे मेरी खरी कमाई के होंगे, खरी कमाई के!”

— १४ —

रेफ्सनीडर का सहायक खाना खाने गया था। दुकान में चार ग्राहक एक साथ दाढ़ी बनवाना चाहते थे। मालिक उन्हें शान्त करने की कोशिश कर रहा था। रेफ्सनीडर बोलता बहुत था। यह बात बड़ी अजीब थी; क्योंकि परम्परा ने ठोक-पीट कर नाइयों की चुप्पी साधे रहना सिखा दिया है। आम तौर पर बोला करते हैं उनके ग्राहक।

रेफ्सनीडर एक ग्राहक की दाढ़ी बनाता जाता था और दूसरे ग्राहकों को शान्त रखने के लिए उनसे इधर-उधर की बातें करता जाता था, परन्तु उसको बातों पर ध्यान कोई नहीं दे रहा था।

उसकी बातों के जवाब में आखिर रेलवे के इंजीनियर बेनब्रिज ने कहा—“उन्हें चाहिए था कि उसे मर जाने देते। अच्छा रेफ, तुम जबान बन्द करो और हाथ तेजी से चलाओ।”

परन्तु रेफ्सनीडर ने उल्टे अपना हाथ बिल्कुल रोक लिया और बोलनेवाले की तरफ घूम कर पूछा—“मर जाने देते ? यह कैसे ? किसी आदमी को तुम मरने कैसे दे सकते हो ?”

“मरने दे कर, मूर्खानन्द !”—इंजीनियर ने कहा। लोग कुछ हँसे और रेफ्सनीडर उदास होकर फिर अपना काम करने लगा, मानो कई लोगों ने मिलकर उसकी खिल्ली उड़ायी हो।

“यह कैसे ?”—उसने फिर पूछा—“जिस आदमी ने तुम्हारे लिए इतना कुछ किया हो, उसे तुम मरने कैसे दे सकते हो ?”

“जब उसने तुम्हारे लिए इतना कुछ किया है ?”—बेनब्रिज ने दोहराया—“तुम दाढ़ी बनाओ, यही अच्छा है। यह कैसे ? यह शायद नाई की दुकान नहीं है ?”

एक आदमी जो अब तक चुप था, बोला—“अगर मैं डाक्टर होता, तो मैं भी यही करता।”

“क्यों नहीं !”—रेफ्सनीडर ने कहा—“हर आदमी यही करता। हर आदमी, जो तुम्हारे जैसा पत्थरदिल जानवर नहीं होता।” ये अन्तिम शब्द उसने बड़ी मेहनत से ढूँढ़ कर निकाले थे और इन्हें उसने विजयोल्लास के साथ बेनब्रिज पर दे मारा। इंजीनियर ने हँस दिया।

जिस व्यक्ति की दाढ़ी बन रही थी, वह जरा सम्हलकर बैठा और रेफ्सनीडर कुशलता के साथ उसके बालों में तेल चुपड़ कर उन्हें काढ़ने लगा। बातें करने का मौका पा कर इस व्यक्ति ने कहा—“कहते हैं कि बहुत ही भयानक है वह। जानी बर्नर्ड ने, जो मोदी की गाड़ी चलाया करता है, उसे अलेक विलियम्स की झोंपड़ी में देखा था और उसका कहना है कि उसके बाद दो दिन तक उससे मुँह में कौर नहीं रखा गया।”

“छः।”—रेफ्सनीडर ने कहा।

एक आदमी ने पूछा—“आखिर क्यों वह इतना भयानक दीखता है ?”

“क्योंकि उसके चेहरा है ही नहीं।”—नाई और इंजीनीयर ने साथ-साथ जवाब दिया।

“चेहरा ही नहीं है!”—उस व्यक्ति ने दोहराया—“चेहरे बिना उसका काम कैसे चलता है?”

“उसके सर के अगले हिस्से में चेहरा नहीं है, उस जगह, जहाँ कि चेहरा होना चाहिए!”

बेनब्रिज दुखपूर्ण भाव से ये पक्तियाँ गाते हुए उठा और अपना टोप खूँटी पर टंगा। कुर्सी पर बैठा हुआ ग्राहक उसके लिए कुर्सी खाली करने वाला था। उसने रेफ्सनीडर से कहा—

“चलो जल्दी करो। मुझे ७-४१ पर जाना है।”

रेफ्सनीडर इंजीनियर के गालों पर साबुन लगा रहा था, परन्तु जान पड़ता था कि वह किसी विचार में डूबा हुआ है। एकाएक उसने कहा—

“अगर तुम्हारे चेहरा न हो, तो कैसा लगे तुम्हें?”—उसने यह सभी से कहा।

एक ग्राहक बोला—“अगर कहीं तुम्हारे जसा चेहरा मुझे मिलता—”

साबुन के झाग के बीच से बेनब्रिज की आवाज आयी—“तुम बिगड़ इसलिए रहे हो कि अगर यों चेहरे गायब होने का रिवाज चल निकला, तो तुम्हारा तो धन्धा ही ठप हो जायेगा।”

“मेरे खयाल से यह रिवाज चलनेवाला नहीं है।”—रेफ्सनीडर ने उत्तर दिया।

एक और व्यक्ति बोला—“जिस तरीके से उसका चेहरा गया, उस तरीके से तो यह रिवाज प्रचलित नहीं होगा। किसी को बुरा लगे या भला, मैं तो अपने चेहरे को बनाये रखूँगा।”

किसी ने कहा—“मैं भी यही सोचता हूँ। जरा सोचो तो।”

बेनब्रिज को भी दाढ़ी बनवाने के बीच जरा मौका मिला। “मैं सोचता हूँ, डाक्टर क्या समझते होंगे। उन्हें शायद अफसोस होगा कि उन्होंने उसकी जान बचायी।”—उसने कहा।

एक व्यक्ति ने जवाब दिया—“वे और कुछ कर ही नहीं सकते थे।” जान पड़ता था कि और लोग उससे सहमत थे।

एक ने कहा—“मान लो तुम उनकी जगह होते और जानसन ने तुम्हारे बच्चे की जान बचायी होती, तो तुम क्या करते?”

“बिलकुल ठीक।”

“कोई कोशिश तुम उठा न रखते। जमीन और आसमान एक कर देते उसके लिए। अपनी कौड़ी-कौड़ी उस पर खर्च कर देते।”

रेफ्सनीडर ने सोचते हुए कहा—“बिना चेहरे के उसे कैसा लगता होगा?”

जो व्यक्ति पहले बोला था, यह समझकर कि उसने अपनी बात बड़े ढंग से कही है, फिर सारी बात दोहराई—“कोई कोशिश तुम उठा न रखते। जमीन और आसमान एक कर देते उसके लिए। अपनी कौड़ी-कौड़ी उस पर खर्च कर देते।”

रेफ्सनीडर ने कहा—“लेकिन जरा सोचो, अगर तुम्हारे चेहरा ही न हो तो?”

— १५ —

विलियम्स बूढ़े न्यायाधीश की आँखों से ओझल होते ही हाथ नचा-नचा कर स्वयं से बातें करने लगा। प्रकट था कि उसका अन्तर हर्ष से परिपूर्ण था और वह खुशी से फूलकर कुप्पा हो रहा था। हाथों को हवा में नचाते हुए वह सीटी में विजय-गान की धुन बजा रहा था। अपनी झोंपड़ी की ओर बढ़ते हुए वह कभी-कभी ऐसे कदम मारने लगता था, जैसे नाच रहा हो। बीच-बीच की उसकी बातों से पता चलता था कि वह अपने प्रयत्न में सफल और विजयी होकर लौटा था। वह अजेय अलेक्जेंडर विलियम्स था। आत्मविश्वास का उल्लास उसके उच्चारण से स्पष्ट था। उसकी शानदार चाल, उसका वीर-गान, उसका हाथों का नचाना—सभी से वह उस सफल व्यक्ति के समान दिखायी देता था, जो विश्व को जीत कर आया हो।

रास्ते में उसने जेक पीटर्सन को देखा। वह शहर जा रहा था। दोनों ने पचास गज के फासले से ही एक-दूसरे का अभिवादन किया।

“कैसे हो, भाई पीटर्सन?”

“कैसे हो, भाई विलियम्स?”

दोनों ही गिरजाघर के दीवान थे।

“तुम्हारे घर में सब अच्छे हैं, भाई पीटर्सन?”

“हाँ, ठीक हैं। तुम्हारे घरवाले कैसे हैं, भाई विलियम्स?”

दोनों ने अपनी चाल रत्ती भर भी धीमी नहीं की। काफी दूर रहते हुए

ही उन्होंने यह बातचीत शुरू की, एक-दूसरे के पास से गुजरते हुए उसे जारी रखा और उनके बीच फिर से बढ़ते हुए फासले के दौरान में कुशल-मंगल के प्रश्न चलते रहे। विलियम्स का मस्तिष्क गुब्बारे की तरह हो रहा था। वह इतना फूला हुआ था कि उसने इस पर गौर ही नहीं किया कि जब वे एक-दूसरे के बिल्कुल निकट पहुँचे, तब पीटर्सन उसके स्पर्श से बचने के लिए सड़क के किनारे मुखे नाले में उतर गया था।

अकेले अपने रास्ते पर वह फिर चल पड़ा और खुशी के मारे हाथ-मुंह बनाने लगा। उसके पैर सीधे नहीं पड़ रहे थे।

जब वह अपने मकान के पास पहुँचा, तब खेतों पर नीला धुंधलका छा गया था और उसकी खिड़की में नीला प्रकाश दिखायी दे रहा था। हर्ष से नाचता हुआ कुछ क्षण वह उस प्रकाश को देखता रहा। फिर एकाएक एक खयाल उसके मस्तिष्क में उठा और वह रुक गया। जैसे उसकी खुशी पर तुष्टारापत हो गया हो। आखिर वह अपने घर ऐसे पहुँचा, मानो शत्रु के किले में जा रहा हो।

कुत्ते एक क्षण के लिए उसके आगमन पर भौंक पड़े, लेकिन अपने मालिक को पहचान कर लौट गये। उसने दबी आवाज से उन्हें डांटा।

दरवाजे पर पहुँच कर उसने नौसिखिए चोर की तरह उसे खोला। बड़ी सावधानी से अपने सर को तिरछा कर के उसने अन्दर झाँका और उसे सामने ही अपनी पत्नी दिखायी दी, जो मेज के पास बैठी हुई थी। उसका आधा चेहरा अंधेरे में था और आधे पर लैम्प की रोशनी पड़ रही थी। उसने बेकार ही कहा—“श्. . श्. . श्. . श।” उसकी निगाह तेजी से उस बन्द दरवाजे पर पहुँची, जिसके पीछे शयन-कक्ष था। बच्चे फर्श पर इधर-उधर पड़े हुए धीमे-धीमे खरट्टे ले रहे थे। भरपेट खाना खाने के बाद इधर-उधर पड़कर वे सो गये थे। अपनी निश्चल और निस्तब्ध पत्नी से उसने फिर कहा—“श्. . . श्. . . श।” अभी तक उसने अपना सर ही कमरे के अन्दर दाखिल किया था। उसकी पत्नी अपना एक हाथ मेज पर और दूसरा अपने घुटने पर रखे आँखें और मुंह फाड़े ऐसे देख रही थी, जैसे वह कोई भूत हो। वह ऐसी दीखती थी जैसे भय उसका चिरंतन साथी बन गया हो और अपने परिचित चेहरे को भी दरवाजे में देख कर सिहर उठी थी, क्योंकि वह एकाएक प्रकट हुआ था।

विलियम्स ने गम्भीर निस्तब्धता को भंग किया। “वह ठीक है?”—उसने अपनी आँखें दरवाजे की ओर फेरते हुए पूछा। डरते-डरते

उसकी आँखों के साथ अपनी आँखें घुमाते हुए उसकी पत्नी ने सिर हिलाया और बहुत ही दबी आवाज में जवाब दिया —“मेरा खयाल है, उसे नींद आ गयी है।”

विलियम्स ने तब दबे पाँव अपने घर के अन्दर पाँव रखा।

उसने एक कुर्सी उठायी और अत्यन्त सावधानी के साथ उसे अन्दरवाले दरवाजे के ठीक सामने रखा। उसकी पत्नी भी जरा सम्हलकर दरवाजे के बिल्कुल सामने हो गयी। दोनों पर चुप्पी छा गयी। प्रतीत होता था, मानो दोनों किसी भीषण आपत्ति की प्रतीक्षा कर रहे हों।

विलियम्स आखिर मुँह के आगे हाथ करके खँसा। उसकी पत्नी चौक पड़ी और भयभीत हो कर उसकी ओर देखने लगी। उसने धीमे स्वर में कहा—“लगता है कि आज रात वह शान्त रहेगा।” वे रह-रह कर अपनी बातें और दृष्टि उस अन्दरवाले दरवाजे की दिशा में ऐसे फेरते जाते थे, मानो किसी शव या भूत के प्रति भय-मिश्रित सम्मान प्रकट कर रहे हों। इस एक वाक्य के बाद फिर लम्बी खामोशी छा गयी रही। उनके विस्फारित नेत्र सफेद-सफेद दिखायी दे रहे थे। दूर सड़क पर एक गाड़ी खड़खड़ाती हुई निकल गयी। अपनी कुर्सियों पर बैठे-बैठे ही उन्होंने खिड़की की ओर देखा। कैबिन की रोशनी से बाहर रात बहुत ही काली और गहरी दिखायी दे रही थी। श्रीमती विलियम्स ने वह भाव और तरीका अपनाया, जो वह गिर्जाघर में अन्त्येष्टि संस्कारों के समय अपनाया करती थी। कभी-कभी लगता था जैसे उसके मुँह से प्रार्थना के शब्द फूटने ही वाले हैं।

विलियम्स फुसफुसाया—“आज वह बहुत ही शान्त है। दिन में भी ठीक था?” जवाब में उसकी पत्नी ने परमात्मा से भीख माँगने की मुद्रा में अपनी आँखें छत की ओर उठा दीं। विलियम्स बेचैनी से कसमसाया। आखिर वह पंजों के बल चलता हुआ दरवाजे पर पहुँचा। धीरे-धीरे जरा-सी भी आवाज किये बिना उसने झुक कर अपना कान दरवाजे में जड़े हुए ताले के छेद के पास लगा दिया। अपने पीछे कोई शब्द सुनकर वह एकाएक घूमा। उसकी पत्नी आँखें फाड़कर उसे देख रही थी। वह चूल्हे के सामने खड़ी थी और उसकी बाँहें अपने सोते हुए बच्चों की रक्षा करने की स्वाभाविक मुद्रा में फैली हुई थीं।

लेकिन विलियम्स ने दरवाजे को छुआ तक नहीं और सीधा खड़ा हो गया। अपने कोट को सहलाते हुए वह बोला—“मेरा खयाल है कि वह सो रहा है।” उसने कुछ देर मन-ही-मन कुछ सोचा। इतनी देर उसकी पत्नी एक मोटी-ताजी

मूर्ति की तरह अपने बच्चों के सामने ढाल बन कर खड़ी रही।

प्रकट था कि उसके मस्तिष्क में साहस की एक लहर दौड़ गयी। एक कदम आगे बढ़ा कर वह दरवाजे पर पहुँच गया। उसकी उंगलियाँ ताले की घुंड़ी पर पड़ने ही वाली थीं कि वह अपने दोनों हाथों को सर के पीछे फटकारता हुआ कूद कर पीछे हट गया, मानो दरवाजे ने उसे बुरी तरह डरा दिया हो। चूल्हे के पास उथल-पुथल सी हो गयी क्योंकि श्रीमती विलियम्स के पैर पीछे हटने की कोशिश में फर्श पर पड़े हुए बच्चों से उलझ गये थे।

भय का आक्रमण बीत जाने पर विलियम्स के चेहरे पर लज्जा के भाव प्रकट हो गये। उसने फिर धावा किया। बायें हाथ से उसने घुंड़ी को कस कर पकड़ा और दायें हाथ से ताले की चाभी घुमा दी। दरवाजे को उसने धक्का दिया और उसके खुलने के साथ वह उछल कर उस गुलाम की तरह एक तरफ को हो गया, जो शेर को पिंजरे से आजाद कर रहा हो। चूल्हे के पास जमघट लगा था— भयभीत माँ अपनी बाँहें फैलाये थी और नींद से जागे हुए बच्चे डर के मारे उसके घाघरे में छिपे जा रहे थे।

दरवाजा खुलने के साथ प्रकाश अन्दर पहुँचा और छः फुट लम्बा छः फुट चौड़ा कमरा दिखायी देने लगा। इतना छोटा था वह कि उतने से प्रकाश में ही उसमें सब कुछ स्पष्ट दिखायी देने लगा। विलियम्स ने सतर्कतापूर्वक दरवाजे के पीछे झाँक कर देखा।

एकाएक वह आगे बढ़ा, पीछे हटा और चिल्ला कर फिर आगे बढ़ा। उसके भयग्रस्त परिवार का विचार था कि वह उछल कर पीछे आ रहेगा। उसके चिल्लाते ही वे सबके सब सिमट कर एक झुंड बनाकर खड़े हो गये, लेकिन विलियम्स उस छोटे से कमरे की खुली हुई खिड़की के सामने खड़ा-खड़ा चीखता रहा। “भाग गया ! वह भाग गया ! भाग गया वह !” उसकी आँखें और हाथों ने यह बात तुरन्त प्रकट कर दी थी। उसने छोटी-सी आलमारी भी खोल कर देख ली थी।

वह भागता हुआ बाहर निकला। उसने अपना टोप उठाया और झपट कर सदर दरवाजा खोला। और फिर रात के अँधियारे में विलीन हो गया। वह चिल्ला-चिल्ला कर पुकार रहा था —“डा. ट्रेस्काट ! डा. ट्रेस्काट !” पागलों की तरह वह खेतों में होता हुआ तेजी से नगर की ओर भागा जा रहा था। ट्रेस्काट को पुकारना बराबर जारी था, मानो ट्रेस्काट कहीं आस-पास ही हों। प्रतीत होता था, मानो डा. ट्रेस्काट उसकी पुकार को सुन सकने में समर्थ हों।

कैबिन में श्रीमती विलियम्स अपने बच्चों से बारी-बारी साहस पाकर पहरा दे रही थीं। आखिर पूर्व में सुबह का सुनहरा सत्य प्रकट हुआ। प्रकाश उनके लिए नयी कुमुक बनकर आया। बच्चों को उसने वीरता, उदंडता और साहस का बाना पहनाया; उनकी माँ असीम साहस का दम भरने लायक हुई।

- १६ -

टिरीजा पेज एक दावत दे रही थी। अपनी माँ से कई बार बहस करने के बाद वह इसका निश्चय कर पायी थी। बहस के कुछ भाग पिता ने भी सुने थे। आखिर उन्होंने पाँच शब्द कहे थे— “करने भी दो न उसे।” तब प्रसन्नतापूर्वक माँ मानी थी।

टिरीजा ने उम्मीस निमन्त्रण-पत्र लिखकर स्कूल में खाने की छुट्टी के समय अपनी सहेलियों और साथियों को बाँटे थे। उसकी माँ ने पाँच बड़े-बड़े केक बनाये और बहुत-सा नींबू का शर्बत भी।

इस तरह एक दिन नौ छोटी-छोटी लड़कियाँ और दस छोटे-छोटे लड़के बड़े करीने के साथ भोजन-कक्ष में आ कर बैठे। टिरीजा और उसकी माँ सबको केक, शर्बत और आइस्कीम खिलाने में व्यस्त थीं। बच्चों में वह शिष्टता और शान्ति कुछ अजीब मालूम देती थी। इसका कारण थीं श्रीमती पेज। कुछ देर पहले बाहरवाले कमरे में बच्चों ने आपस में खेलते-खेलते एक कुर्सी लुढ़का दी थी; लड़कों की शरारत उस समय लगभग पूरी तरह जाग्रत थी, लेकिन जिस समय शरारत करने की सम्भावनाएँ और बढ़ सकती थीं, उसी समय लड़कियों ने लड़कों को एक असहनीय गर्व का शिकार बनाया और बड़ी निर्भयता से उनकी काट कर दी। अतः वह भोजन-कक्ष ऐसा बन गया जैसे वहाँ कोई रविवार की पाठशाला लगी हो। अगर यह पता चलता था कि यह बच्चों की पार्टी है, तो केवल इस तरह कि बच्चे छिपे-छिपे कभी मुस्करा देते थे, इशारे करते थे, कभी लाग-डॉट भी हो जाती थी और मुंह भी चिढ़ाये जाते थे।

इस दबी हुई-सी पार्टी में दो लड़कियाँ बड़ी-सी खिड़की की तरफ पीठ किये बैठी थीं। वे एक-दूसरे को देखकर इस तरह मुस्करा रही थीं, मानो लड़कों का तिरस्कार कर रही हों।

पीठ पीछे खिड़की में कोई आवाज सुन कर एक ने उधर मुंह फिराया।

तुरन्त ही उसके मुंह से एक चीख निकली और वह अपने मुंह को हाथों से ढाँक कर एक ओर कूद पड़ी। सब कोई एक साथ चिल्ला उठे—“क्या था ? क्या था ?” बिलखती और कौपती हुई लड़की ने आँखों के एक इशारे से उनको बताया कि खिड़की में किसी को देखकर वह डर गयी थी। सबने तुरन्त उस निश्चल खिड़की की ओर मुंह किया और क्षण भर को निस्तब्धता छा गयी। एक चतुर लड़के ने सब तरफ नजर घुमा कर देखा कि लड़कों में कोई गायब तो नहीं है। पार्टी में से खिसककर खिड़की में भूत की तरह प्रकट होने की शरारत थी तो दाद के काबिल, लेकिन लड़के सब के सब मौजूद थे और हैरान थे।

फिर से विचार-शक्ति का उदय होते ही उन्होंने ऐसे आवाजें लगायीं, जैसे कहीं हमला बोल रहे हों और उस भय के कारण का मुकाबला करने के लिए एक दरवाजे से बाहर निकल गये। सब अपने-अपने साहस का सिक्का जमाने को आतुर थे।

वास्तव में कोई चाहता न था कि बाग के अँधियारे में उसका किसी भयानक जीव-जन्तु से सामना हो, परन्तु जब भोजन-कक्ष में महिलाएँ उपस्थित हों तब वीरता दिखाने में पाँव डगमगायँ कैसे ! कड़कती हुई आवाज में एक-दूसरे को पुकारते हुए उन्होंने ‘लान’ को छान मारा, अँधेरी जगहों में खोजा, लेकिन अपनी सुरक्षा के प्रति पूरी तरह सावधान रह कर। तथापि रात्रि की शान्ति में उन्हें कोई नयी चीज नहीं मिली। हाँ, एक लड़के ने एक बात जोरों की गढ़ी। उसने कहा कि एक डरावनी आकृति झुककर चलती हुई बाढ़ के पास गायब हो गयी थी। उसने इधर-उधर पढ़ी हुई कई बातों को दोहरा कर ऐसा नमक-मिर्च लगाया कि उसका झूठ और भी शानदार हो गया। उदाहरण के लिए उसका इसरार था कि वह आकृति बड़े अजीब ढंग से हँसी थी।

घर के अन्दर वह छोटी लड़की अब तक रो रही थी; उसे कँपकंपी चढ़ी हुई थी। श्रीमती पेज ने बड़ी मुश्किल से उसे कुछ शान्त किया। उसने तुरन्त घर जाने की माँग की।

इसी समय पेज ने घर में प्रवेश किया। वे घर से निकल गये थे और अब यह सोच कर लौटे थे कि दावत खत्म हो गयी होगी और बच्चे अपने-अपने घर चले गये होंगे। उन्हें उस छोटी लड़की को छोड़ने उसके घर तक जाना पड़ा क्योंकि दरवाजा खुलते ही बाहर रात देख कर वह फिर चीख उठी थी।

अपनी माँ को भी वह सिलसिलेवार कुछ नहीं बता पायी। वह कोई आदमी था ? नहीं, कोई चीज थी, बहुत भयंकर चीज।

- १७ -

वाटर मेलन एली में फरागट परिवार की स्त्रियाँ हमेशा की तरह छोटे-से बरामदे में बैठी संध्या की घड़ियाँ गुजार रही थीं। कभी-कभी वे दूसरे छोटे बरामदों में बैठे अन्य व्यक्तियों से एक-आध बात कर लेती थीं। पास के किसी मकान में एक बच्चा जोर से रो उठा। एक आदमी का अपनी पत्नी से जोरदार झगड़ा हो गया, लेकिन गलीवालों का इस तरफ जरा भी ध्यान नहीं गया।

एकाएक फरागट महिलाओं के सामने एक राक्षस प्रकट हुआ और शान से झुक कर उनका अभिवादन करने लगा। एक क्षण के लिए उन्हें लकवा-सा मार गया और फिर ऐसा दृश्य उपस्थित हुआ, जैसे भूकम्प आ गया हो। बूढ़ी स्त्री भय से चिल्लाकार पीछे की तरफ कूद पड़ी। सिम रेलिंग पर बैठा हुआ था। राक्षस को देखते ही वह धड़ाम से जमीन पर आ गिरा। उसके मुँह से आवाज़ नहीं निकली, आँखें फट कर रह गयीं; उसने बेजान हाथों से रेलिंग का सहारा लेने की कोशिश की और फिर गायब हो गया। बेला के बाल न जाने कैसे एकाएक बिखर गये और वह कुछ भयभीत होकर बुदबुदाती हुई घुटनों और हाथों के बल सीढ़ियाँ चढ़ने लगी।

वह राक्षस इस बिखरी हुई पारिवारिक गोष्ठी के सामने खड़ा हुआ झुक-झुक कर अभिवादन करता रहा। उसने उन्हें रोकने के लिए अपना पंजा भी ऊपर उठाया। “मेरे लिए कोई परेशानी मत उठाइए, कुमारी फरागट!”—उसने नम्रता से कहा— “नहीं-नहीं। मैं तो केवल आपका कुशल-मंगल पूछने चला आया हूँ। तकलीफ मत कीजिये, बिल्कुल मत कीजिये। कुमारी फरागट, मेरा अनुरोध है कि मेरे साथ नाच में चलें। क्या नृत्य में आपको संगिनी बनाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त होगा, कुमारी फरागट ?”

लड़की ने अपनी भयभीत दृष्टि पीछे की ओर डाली। अब भी वह चारों हाथ-पाँव के बल चली जा रही थी। बरामदे की बगल में सिम के मुँह से एक अजीब ऋन्दन निकला। बड़ी देर के बाद उसने साँस ली थी और उसका ऋन्दन उसके भय से ओत-प्रोत था। कुछ क्षणों में वह राक्षस शिष्टता के साथ युवती के पीछे सीढ़ियाँ चढ़ने लगा।

कमरे में जब वह जीव कुर्सी पर बैठने लगा, तब लड़की एक कोने में सिमट गयी। वह जीव बड़े ठाठ से कुर्सी के किनारे पर बैठ गया। एक पुरानी टोपी उसके हाथों में थी। “मेरे लिए तकलीफ मत कीजिये, कुमारी फरागट, तकलीफ

मत कीजिये। मैं तो सिर्फ यह बिनती करने आया हूँ कि क्या आप नृत्य में मेरी संगिनी बनने का मेरा आमंत्रण स्वीकार करके मुझे अनन्य गौरव प्रदान करेंगी, कुमारी फरागट ?”

लड़की ने अपनी आँखों को अपनी बाँहों से ढाँप कर उस जीव के पास से निकल जाने की चेष्टा की, परन्तु उस प्रसन्नचित्त राक्षस ने उसका रास्ता रोका। “मैं तो आपसे सिर्फ नाच के बारे में पूछने आया हूँ, कुमारी फरागट। मैं पूछता हूँ कि क्या उस अवसर पर आपको अपनी संगिनी बनाने का सौभाग्य आप मुझे प्रदान करेंगी ?”

आखिर पूरी तरह निराश होकर युवती रोते और थर-थर काँपते हुए फर्श पर मुँह के बल पड़ गयी। वह राक्षस उसी तरह शिष्टता के साथ कुर्सी पर बैठा-बैठा अपना नम्र आमन्त्रण दोहराता रहा। उसने अपना पुराना टोप बड़ी नजाकत से पकड़ रखा था।

मकान के पिछवाड़े श्रीमती फरागट, जिसका वजन बहुत बढ़ा हुआ था और जिसने पिछले आठ वर्ष केवल आराम-कुर्सी पर ही बैठकर बिताये थे और जो हमेशा अपनी शारीरिक व्यथाओं के ही बारे में शिकायतें करती रही थी, बड़ी तेज गति से बाड़े पर चढ़ गयी।

- १८ -

ट्रेस्काट के मकान की राख का ढेर ठंडा भी नहीं हुआ था कि नया मकान बनाने का काम शुरू हो गया। कल्पनातीत गति से वह ऊपर उठने लगा, मानो जादू के जोर से, राख के ढेर से नया मकान जन्म ले रहा हो। सबसे पहले डाक्टर का कार्यालय बनकर पूरा हुआ। अपनी नयी किताबें, औजार और दवाइयाँ उन्होंने उसमें लगा दीं।

ट्रेस्काट अपनी मेज के सामने बैठे थे, जब पुलिस-प्रमुख ने आ कर उन्हें सूचना दी—“हमने खोज लिया है उसे।”

“खोज लिया ?”—डाक्टर ने उत्तेजित होकर कहा—“कहाँ ?”

“आज सुबह ही हमने उसे गलियों में घूमते हुए पकड़ा। रात उसने कहाँ बितायी, इसका अनुमान करना मेरे बस के बाहर है।”

“अब कहाँ है वह ?”

“हमने जेल में बन्द कर दिया है। समझ में ही नहीं आता था कि और

क्या कहूँ। यही कहने मैं आया हूँ। निश्चय ही हम उसे जेल में रख नहीं सकते। कोई आरोप तो उस पर है नहीं।”

“मैं आकर उसे ले आऊँगा।”

पुलिस अधिकारी पिछली बातें याद करके मुस्कराया। “मैं इतना अवश्य कहूँगा कि जितनी देर वह बाहर रहा उतनी देर में उथल-पुथल मचा दी उसने। सबसे पहले तो पेज के यहाँ बालकों की दावत भंग कर दी। फिर वाटरमेलन एली पहुँचा। क्या कहते हैं! भगदड़ मचा दी वहाँ! मर्द, औरत और बच्चे सभी चीखते-पुकारते भाग निकले। सुना है, बाढ़ को फौदते हुए एक बुढ़िया की टाँग टूट गयी या पता नहीं क्या हुआ! फिर वह खास सड़क पर आ निकला और एक आयरिश लड़की को ऐसा दौरा पड़ा कि एक उपद्रव खड़ा हो गया। वह भागा और उसके पीछे हो गयी एक भीड़; लोग पत्थर फेंके जा रहे थे उस पर। किसी तरह कारखाने के पास वह उनकी आँखों में धूल झोंक कर निकल गया और रेल-यार्ड में जा पहुँचा। रात भर हम उसे खोजते रहे, लेकिन उसका निशान तक नहीं मिला।”

“चोट-बोट तो नहीं लगी उसे? किसी ने उसे पत्थर से मारा तो नहीं?”
—डाक्टर ने पूछा।

“अब और क्या चोट लगेगी उसके; लगेगी भला? जितनी हो सकती थी, उससे ज्यादा चोट खा चुका है वह। नहीं, उसके खरौंच तक नहीं आयी। उसे मारना चाहता भी कौन था? लेकिन आप तो जानते ही हैं कि भीड़ कसे भड़क उठती है। मानो-मानो...”

“जानता हूँ, जानता हूँ मैं।”

क्षण भर पुलिस के प्रमुख गौर से फर्श की ओर ताकते रहे! फिर हिचकिचाते हुए बोले—“आपको मालूम है, दावत में जिस लड़की को उसने डरा दिया था, वह जैक विंटर की लड़की थी। सुना है, बहुत बीमार है वह।”

“अच्छा? तो उन्होंने मुझे बुलाया क्यों नहीं? विंटर परिवार का इलाज तो हमेशा मैं ही करता हूँ।”

“बुलाया नहीं उन्होंने?”—अधिकारी ने धीरे-धीरे पूछा—“आप देखिये, विंटर—विंटर तो इस मामले को लेकर जैसे पागल हो गया है। वह चाहता था—वह चाहता था कि आपको गिरफ्तार करवा दे।”

“मुझे गिरफ्तार करवा दे? मूर्ख कहीं का। आखिर किस अपराध में मुझे गिरफ्तार करवा देता?”

“यही तो बात है। मूर्ख है। मैंने उससे कह दिया कि अपनी जबान को लगाम दीजिये; परन्तु आप तो समझते ही हैं, वह सारे शहर में अपना राग अलापता फिरेगा। मैंने सोचा, आपको खबर कर दूँ।”

“उंह! क्या रखा है उसकी इन बातों में! फिर भी, मैं तुम्हारा बहुत एहसानमन्द हूँ, सैम।”

“एहसान की इसमें कोई बात नहीं। तो आप रात को आकर उसे ले जायेंगे न? जेलर बड़े तपाक से आपका स्वागत करेगा। जो जिम्मेदारी उस पर आ पड़ी है, वह उसे तनिक भी पसन्द नहीं। उसका कहना है कि आप अपने आदमी को जब चाहें, आकर ले जायें। क्या करे वह उसका!”

“लेकिन यह विंटर की मुझे गिरफ्तार कराने की बात क्या है?”

“अजी सब बकवास है। वह कहता है कि आपको कोई अधिकार नहीं है कि उसे यों खुला छोड़ दें, लेकिन मैंने उससे कह दिया, अपने काम से काम रखो। मैंने यह जरूर सोचा कि आपको खबर कर दूँ और यह भी बता दूँ डाक्टर साहब, कि यह मामला सभी की जबान पर है। अगर मैं आपकी जगह होता, तो काफी रात गये उसे जेलखाने से ले जाता क्योंकि सम्भवतया वहाँ दरवाजे पर काफी भीड़ हो और अपने साथ-अपने साथ कोई नकाब जैसी चीज भी लेकर आता।”

— १९ —

मार्था गुडविन अविवाहित थी और अपनी उम्र के बहुत बरस पार कर चुकी थी। व्हिलीमविल में वह अपनी विवाहिता बहन के यहाँ रहती थी। जीवित रहने की सुविधा के बदले घर का सारा काम-काज उसके जिम्मे आया था। सभी लोग उसकी मेहनत को उसके मँगेतर की अकाल मृत्यु के मुआवजे के रूप में देखने लगे थे। मँगेतर की मृत्यु शीतला से हुई, परन्तु यह रोग उसे मार्था से नहीं लगा था।

अपने जीवन में हर रोज लगातार कठिन परिश्रम करते हुए उसने अपने मस्तिष्क को ढीला नहीं छोड़ा था। आर्मीनिया की परिस्थिति, चीन में औरतों की दशा, नियागरा अवेन्यू की श्रीमती मिस्टर और युवक ग्लिस्काम की पिछली मुहब्बत, बैटिस्ट रविवारीय पाठशाला की बाइबल-कक्षा के आपसी मतभेद, क्यूबा के विद्रोहियों के प्रति अमरीका के कर्तव्य तथा कई अन्य बड़े-बड़े विषयों

पर उसने अपना एक अडिग मत बना रखा था। जीवन में हिंसा का सबसे बड़ा और कटु अनुभव उसे एक कुत्ते को डंडों से मारे जाते देख कर हुआ था, परन्तु दुनिया के सुधार के लिए अपनी योजना में वह अत्यन्त उग्र उपायों की सिफारिश करती थी। उदाहरण के लिए, उसका कहना था कि तुकों को समुद्र में धकेल कर मिटा देना चाहिए और श्रीमती मिस्टर और ग्रेस्काम को एक-साथ बराबर-बराबर दो फाँसियों पर लटका देना चाहिए। वास्तव में यह शान्तिवादी औरत, जिसने जीवन में हमेशा शान्ति ही देखी थी, निरन्तर अपरिमेय क्रूरता की हिमायत करती रहती थी। इन बातों में कोई उससे जीत नहीं सकता था क्योंकि अन्त में वह सारे विरोधियों को एक घृणा-भरी फुफकार से परास्त कर देती थी। यह फुफकार बड़ी ताकतवर होती थी और उसके विरोधियों के लिए सर पर हथौड़े की चोट का काम करती थी। कोई माँ की जाई ऐसी न थी, जो घृणा की इस करारी चोट के बाद सर ऊँचा रख सकी हो। सभी दम तोड़ देती थीं और हार मान लेती थीं। फिर कभी यह चोट झेलने की उन्हें हिम्मत न होती थी। और मार्था भौंहों को तेरेरे हुए नेपोलियन जैसे अजित व्यक्ति की तरह अपने रसोईघर में घूमती थी।

तथापि उसके हाथों पराजय का अपमान सहनेवाली उसकी परिचित स्त्रियाँ अन्दर ही अन्दर उससे विद्रोह कर रही थीं। यह कोई षड्यंत्र नहीं था क्योंकि अपने विद्रोह को खुलकर प्रकट करने की सामर्थ्य किसमें थी? लेकिन यह बात तय थी कि जो भी स्त्री मार्था से सहमत न हो सके, वह उस छोटे-से गिरोह के समर्थन की अधिकारी होगी। यों समझिए, उन्होंने यह तय कर रखा था कि जिस विचारधारा का मार्था पक्ष ले, उस पर वे किसी तरह विश्वास न करें, परन्तु यह चीज उन्हें उसके मस्तिष्क के प्रति आदर प्रकट करने से नहीं रोकती थी।

उसकी सामर्थ्य का भार दो व्यक्तियों को उठाना पड़ता था। उसकी बहन केट तो स्पष्टतया उससे डरती थी और कैटी डंगन अपने रसोईघर से फुर्सत पाकर आदर भाव से मार्था के चरणों में बैठकर दुनिया के तौर-तरीकों के ज्ञान प्राप्त करती थी। यह जरूर है कि बाद में कहीं और जाकर वह मार्था पर हँसती थी और उसके विचारों की खिल्ली उड़ाती थी, परन्तु उसकी शाही उपस्थिति में हमेशा ही या तो वह चुप रहती या उसकी प्रशंसा करती। उसकी बहन केट का तो होना, न होना बराबर था। उसे सबसे बड़ी गलतफहमी यह थी कि मकान में ऊपरवाले कमरों का सब काम वह करती है और मार्था नीचेवाले

कमरों का। वास्तविकता को सिर्फ उसका पति पहचानता था और मार्था के साथ उसका व्यवहार सज्जनता का रहता था—उसमें थोड़ी-बहुत छेड़खानी रहती थी और थोड़ा-बहुत आदर भाव। मार्था को यह वहम भी नहीं था कि उस घर का आधार-स्तम्भ वही थी। परिस्थिति पूर्णतया अनिश्चित थी। निश्चित थीं तो मार्था की विचारधाराएँ और वे पूर्णतया ग्रीष्काम और चीनियों तथा दूसरे राष्ट्रों से सम्बन्धित थीं। अपने शुरू के दिनों में उसने भी सपने देखे थे—प्रेम, हरी-हरी घास के मैदान, पेड़ों की सघन छाया और एक पुरुष के प्रेम के सपने; परन्तु अब वे सपने धुँधले पड़ गये थे और रसोईघर में क्यूबा, गर्म पानी की केतली, आर्मीनिया, बर्तन धोने, इत्यादि के साथ घुल-मिल गये थे। ये सब-की-सब बातें एक अजीब खिचड़ी बनकर रह गयी थीं। जहाँ तक सामाजिक दुराचार का सम्बन्ध है, यह स्त्री, जो घुटे हुए अरमानों की समाधि ही थी, शायद नगर में सबसे कटु आलोचक थी। इस बेनाम स्त्री का, जो अपने रसोईघर में इस तरह बन्द थी जैसे कुँए में, किसी न किसी रूप में नगर के जीवन पर प्रभाव पड़ना निश्चित था। यदि इस नगर का जीवन एक गज आगे बढ़ता, तो उसमें एक इंच उसका व्यक्तिगत योग रहता ही। किसी भी प्रस्ताव के मुखद्वार पर वह इस जोर से प्रहार कर सकती थी कि चाहे दरवाजा जोड़ों से टूट कर उस पर ही गिर जाय, परन्तु अचल नहीं रह सकता था। वह एक इंजन थी और चूँकि उसे पता नहीं था कि वह इंजन है, इसलिए इसका असर और भी होता था। उससे मुकाबला करना असम्भव था। इसका एक कारण यह था कि वह स्वयं नहीं जानती थी कि उससे मुकाबला करना असम्भव है। वह दुर्बल, निष्पाप और अडिग स्वभाव की स्त्री थी; यदि वह समझती कि दुनिया गलत राह पर है, तो अकेली सारी दुनिया से भिड़ जाती।

एक रोज कैरी डंगन बड़ी जल्दी-जल्दी अपने रसोईघर से आयी। वह काफी मोटी थी। उसने तेजी से कहा—“देखो तो, हेनरी जानसन को जहाँ रखा था न, वह वहाँ से निकल भागा और कल रात शहर में आ पहुँचा और लोगों की जान सुखा दी।”

मार्था एक बर्तन को जोर-जोर से मल कर चमका रही थी। क्यों वह ऐसा कर रही थी, यह कोई समझ नहीं सकता था, क्योंकि वह बर्तन पहले ही चौंकी की तरह चमक रहा था। वह बोली—“अच्छा ! ” इस एक शब्द में उसने गहन अर्थ भर दिया—“भेरी यह भविष्यवाणी सच हो कर रही।” उसकी यह आदत

सी थी ।

कैरी अपनी बात कहने को बेताब थी, परन्तु इस उतावलेपन ने उसकी जवान को रोक दिया । क्षण भर के प्रयत्न के बाद उसने कहना शुरू किया—“और नहीं सैडी विंटर की तबीयत बहुत खराब है । सुना है कि सुबह जैक विंटर डा. ट्रेस्काट को गिरफ्तार कराने के लिए दौड़-भाग कर रहे थे । और बेचारी बुढ़िया, श्रीमती फरागट बाढ़ फाँदने गयी, तो उसकी एड़ी में मोच आ गयी । जेल के बाहर चौबीसों घण्टे भीड़ लगी रहती थी । हेनरी को जेल में इसलिए डाला कि किसी की समझ में नहीं आया कि उसका क्या करें ! कहते हैं कि वह बहुत ही भयानक है ! ”

मार्था ने आखिर हाथ का बर्तन नीचे रखा और तन कर करी के सामने खड़ी हो गयी । पालिश करने के मैले चिथड़े वाले हाथ को उठा कर उसने कहा—“अच्छा ! ” कैरी की उत्तेजित आवाज कंठ के कानों में पड़ चुकी थी । अतः उपन्यास एक तरफ रख कर वह भी रसोईघर में आ पहुँची । दुबली-पतली औरत थी वह । उसके कंधों की हड्डियाँ बर्फ की दो परतों के समान दीखती थीं और वह उन्हें हिलाती ही रहती थी । वह एकाएक ऐसे बोली, जैसे किसी के खून की प्यासी हो—“उसके सब मरीज उसे छोड़कर चले जायें, यही उसकी उचित सजा है । ” उसके मुँह से एक-एक शब्द ऐसे निकला, जैसे होठ न हों, कोई कैंची हो ।

“यही होनेवाला है । ”—कैरी डंगन चिल्लाकर बोली—“नहीं कह रहे हैं कई लोग कि वे अब उसके पास नहीं जायेंगे ! अगर कोई बीमार और घबराया हुआ हो, तो डा. ट्रेस्काट तो उसका दम ही खुशक कर देगा, नहीं ? मेरा तो कर दे । मैं हर वक्त परेशान ही रहूँ । ”

मार्था विचारपूर्ण मुद्रा में माथे पर बल डाले हुए इधर-उधर आती-जाती कभी-कभी उन दोनों औरतों को घूर लेती थी ।

— २० —

जिमी कनेक्टीकट से लौटने के बाद पहले तो उस दानव से डरता रहा, जो अस्तबल के ऊपरवाले कमरे में रहता था । वह किसी तरह उसे पहचान ही नहीं पाया, लेकिन धीरे-धीरे एक विलक्षण आकर्षण के कारण उसका डर दूर होने लगा । उस दानव के साथ उसके सम्बन्ध निकटतर होने लगे ।

एक बार वह दानव अस्तबल के पीछे एक बक्स पर बैठ कर दोपहर की धूप

सेवन कर रहा था। उसका मुँह मोटी क्रेप के नकाब से ढँका हुआ था।

जिमी और उसके कई साथी उस तरफ आये। सभी नन्हें बच्चों की कक्षा में पढ़ते थे। इसलिए उनकी छुटी और बच्चों से आधा घण्टा पहले हो जाती थी। बक्स पर बैठी हुई आकृति को देखकर उनके पाँव एकाएक बँध गये।

“वह बैठा है!”—उसने कहा।

“ओ—ओ—ओ!”—सबके सब बच्चे बोले—“ओ—ओ—ओ।” उनकी आवाज सुनकर दानव ने जैसे ही मुँह फेरा, वे डर कर पीछे हट गये और अनुभव अथवा साहस के अनुसार अलग-अलग दल बनाकर खड़े हो गये। जिमी सबसे आगे अकेला रह गया। “डरो मत। मैं उसे तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ने दूँगा।”—उसने खुश होकर कहा।

“उँह!”—उन्होंने लापरवाही के साथ जवाब दिया—“हम उससे डरते नहीं।”

दुनिया के एक आश्चर्य का स्वामी और प्रदर्शक होने के नाते जिमी को बहुत आनन्द आ रहा था और दर्शक भयभीत, मूर्तिवत् और ईर्ष्या करते हुए कुछ दूर खड़े थे।

एक ने उदास स्वर में कहा—“मैं शर्त लगा सकता हूँ कि तुम उसके पास नहीं जा सकते।” वह उम्र में जिमी से बड़ा था और अपनी आदत के अनुसार कुछ हद तक उस पर रोब जमाया करता था। अपने से छोटे लड़के की यह सामाजिक उन्नति उसे क्रान्तिकारी लगी।

“उँह!”—जिमी ने घृणा-मिश्रित स्वर में कहा—“मैं नहीं जा सकता? हैं, जा नहीं सकता मैं? क्यों, मैं जा नहीं सकता?”

बच्चों में उत्तेजना की लहर दौड़ गयी। सबकी आँखें उस लड़के पर जम गयीं, जिससे जिमी ने यह बात कही थी। उसने जवाब दिया—“हाँ.. हाँ; नहीं जा सकता तू।” अपनी हार सामने देखकर उसने चुनौती का स्वर अपनाया। हठपूर्वक उसने फिर कहा—“नहीं जा सकता तू।”

“अच्छा!”—जिमी ने कहा—“देख अपनी आँखों से, देख अपने आप।”

चुप्पी छा गयी। जिमी दानव की तरफ बढ़ा, लेकिन शायद लड़कों के स्वाभाविक डर ने उसे भी कुछ प्रभावित किया था, जो उसके पूर्व अनुभव से ज्यादा जोरदार था। इसीलिए वह दानव के पास पहुँच कर एकाएक ठिठक गया। उसके साथियों ने तुरन्त ही उसका मजाक उड़ाना शुरू किया और उसे आगे ढकेला। दानव के पास पहुँचकर उसने आहिस्ते से अपना हाथ उसके कंधे पर रखा। “कहो हेनरी!”—वह बोला। उसकी आवाज कुछ

काँप रही थी। दानव हड्डियों का एक मनोहर गीत गुनगुना रहा था। बहुत ही बारीक थी उसकी आवाज। उसने किसी भी तरफ जरा भी ध्यान नहीं दिया।

जिमी गर्व के साथ अपने दोस्तों के पास लौटा। उन्होंने उसका हर्षध्वनि से स्वागत किया और उसके विरोधी का मजाक उड़ाने लगे। इस हो-हल्ले में बड़े लड़के के लिए अपनी शान और शान्ति को कायम रखना मुश्किल हो गया।

“नहीं जा सकता मैं, नहीं जा सकता?”— जिमी ने उससे कहा—“तुम बड़े बहादुर हो, तो देखें जरा तुम्हारी बानगी!”

इस चुनौती पर उस पर तानों की बौछार होने लगी। उससे बड़े लड़के ने गाल फुलाये और चिढ़ कर बोला—“मैं डरता नहीं हूँ।” वह अपनी चाल में मात खा गया था और छोटे-छोटे लड़के उसके दुश्मन बनकर उसकी शान की धज्जियाँ उड़ा रहे थे। और भी कई तरह की आवाजें करके वे उसे अपमान और उपहास में डुबोये दे रहे थे। उस हल्ले में उसने फिर उन्हें समझाने की कोशिश की—“मैं डरता नहीं।”

भीड़ का वीर नेता जिम निर्दयता से बोला—“डरता नहीं है?” उसने फन्ती कसी—“नहीं डरता, तो जा कर दिखा उसके पास!”

“मेरी मर्जी होगी, तो जाऊँगा।”— उसने उत्तर दिया। उसकी आँखों में वेदना छलक रही थी, लेकिन वह अपनी वीरता के दिखावे को कायम रखने के लिए पूर्णतया प्रयत्नशील था। वह एकाएक अपने एक शत्रु की ओर घूमा—“अगर तू ही ऐसा बहादुर है, तो जाता क्यों नहीं उसके पास?” यह शत्रु तुरन्त भीड़ में सबसे पीछे जा छिपा। इस घटना से उस हारे हुए खिलाड़ी को साँस लेने का मौका मिला और कुछ क्षण के लिए तानों की बौछार उस दूसरे लड़के पर पड़ी। इस मौके से उसने फायदा उठाया। उसने घोषणा की—“अगर कोई और जाने को तैयार हो, तो मैं भी तैयार हूँ।”

इस दुस्साहस के लिए कोई उम्मीदवार आगे नहीं आया। इस जवाबी हमले से अपने को बचाने के लिए लड़के फिर उस पर फन्तियाँ कसने लगे और शोर करने लगे। कुछ देर तो उन्होंने उसकी बात सुनी ही नहीं। उसने कई बार मुँह खोला, लेकिन उस शोर-गुल में भाषण करना असम्भव सिद्ध हुआ। अन्त में उसे अपनी यह चुनौती दोहराने का मौका मिला कि इस मामले में अगर कोई और लड़का कुछ हिम्मत दिखाये, तो उतनी ही हिम्मत दिखाने को वह भी तैयार था।

उन्होंने चिल्लाकर कहा—“पहले तुम जाओ।”

जिमी ने उस बड़े लड़के के विरुद्ध फिर छोटे लड़कों का नेतृत्व किया—“तुम बहुत बहादुर हो— हो न ? तुमने मुझे ललकारा और मैंने करके दिखा दिया— नहीं दिखाया ? तो अब डर किसे है ?” दूसरों ने इस विचार पर जोरों से हर्ष-ध्वनि की और वे तुरन्त फिर उस बड़े लड़के के पीछे पड़ गये ।

वह लज्जित भाव से अपने दायें पाँव से बायाँ पैर खुजलाने लगा । उसने एक नजर दानव पर डाली और कहा—“मैं डरता नहीं ।” शोर करनेवाले अपने प्रपीड़कों को घृणा और क्रोध से देखते हुए उसने एक बड़े निश्चय की घोषणा की—“तुम सर पर चढ़े जा रहे हो, तो लो ; मैं अभी दिखाता हूँ ।”

वह कठोर मुद्रा बनाकर जैसे ही बक्स पर बैठी हुई उस निश्चल आकृति की ओर मुड़ा, बच्चों के दल में चुप्पी छा गयी । वह बड़ा लड़का आगे बढ़ा, लेकिन उसकी प्रगति साहस के प्रदर्शन से बराबर अधिकाधिक हिचकिचाहट में बदलती जा रही थी । आखिर दानव से कुछ गज की दूरी पर वह ठहर गया, मानो उसके सामने पत्थर की दीवार आ गयी हो । दूर खड़े हुए लड़कों ने तुरन्त उसका मजाक उड़ाना शुरू कर दिया । इससे गुस्सा होकर वह फिर डरते-डरते दो गज आगे बढ़ा । वह उस छोटी बिल्ली की तरह झुक कर खड़ा हो गया, जो पीछे कूदने को तैयार हो । पीछे खड़ा हुआ बालकों का दल उसके इस प्रदर्शन से प्रभावित होकर उसे बढ़ावा देने लगा । एकाएक वह अपना सारा साहस बटोर कर तेजी से आगे भागा । कुछ दूर से ही अपनी बाँह बढ़ाकर उँगली के सिरे से उसने दानव के कन्धे को छुआ और तेजी से लौट आया । उसकी तीखी और तेज हँसी में गर्व का भाव निहित था ।

लड़कों का दल तुरन्त उसके प्रति आदर की भावना से भर गया और उसके पास जमा होकर उसे देखने लगा और उसका प्रशंसक बन गया । क्षण भर को जिमी मुश्किल में पड़ गया, लेकिन जिमी और उस लड़के के बीच एक शब्द बोले बिना ही एक तरह की संधि हो गयी और वे दोनों एक हो कर बाकी के बच्चों के सामने अपनी श्रेष्ठता का प्रदर्शन करने लगे ।

बड़े लड़के ने कहा—“यह तो बायें हाथ का खेल है— है न जिमी ?”

जिमी बोला—“और क्या ! बिल्कुल आसान है ।”

वे अन्य श्रेणी में आ गये थे । अगर उन्हें लड़ाई के दर्जन भर मैदानों में भी वीरता के पुरस्कार दिये जाते, तो भी बाकी लड़के इतना न शरमाते, जितना मौजूदा परिस्थिति में शरमा रहे थे ।

दोनों लापरवाही के साथ अपने महान कार्य का ब्यौरा बयान करने लगे

अब भी जो लड़का हिम्मत न कर सके, उसके प्रति उन्होंने घृणा प्रकट की। “है क्या इसमें! वह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ेगा।” — उन्होंने बड़े उकताये हुए भाव से कहा।

एक बहुत ही छोटे लड़के ने यह महान गौरव प्राप्त करने की इच्छा के लक्षण प्रकट किये। दोनों उसकी ओर मुड़े और उसके कंधे पकड़ कर उसे आगे धकेलने लगे। वह उनसे दूर हटने लगा और हिचकिचाने लगा। आखिर उसने डरते-डरते चढ़ाई करने की हिम्मत दिखायी; लेकिन वह कुछ गज ही जा पाया। फिर वह रुक गया और निश्चल होकर दानव को ताकने लगा। जिमी और उस बड़े लड़के का चिल्ला-चिल्ला कर बढ़ावा देना बिल्कुल काम न आया; वे उस छोटे बच्चे को एक कदम भी आगे बढ़ा नहीं सके।

श्रीमती हैविगन पानी की बाल्टी लिये अपने मकान के पिछवाड़े आयीं। वहाँ से उन्हें ट्रेस्काट के अस्तबल के पिछवाड़े का हिस्सा साफ नजर आता था। उन्होंने लड़कों के दल और बक्स पर बैठे हुए दानव को देखा। उन्होंने गौर से देखने के लिए आँखों पर हाथ से छाया की और फिर ऐसे चिल्लायीं जैसे कोई उन्हें मार डाल रहा हो। “एडी! एडी! चलो घर फौरन!” — उन्होंने अपने पुत्र को पुकारा।

एडी ने घबरा कर पूछा—“क्यों?”

“चले आओ फौरन; सुनते हो?”

बाकी लड़के ऐसे खड़े थे, मानो अपने एक साथी पर यह हमला होते देख कर उनके लिए कुछ देर अपराधियों के दल की तरह सर झुकाये खड़ा रहना आवश्यक था और वे तब तक अपराधियों की तरह चुपचाप खड़े रहे, जब तक चिल्लाते हुए हैविगन-बालक को उसकी माँ ने धकेल कर घर में बन्द नहीं कर दिया। श्रीमती हैविगन ने एक तीखी नजर बालकों के दल पर डाली, कटुता-पूर्वक ट्रेस्काट के घर की तरफ देखा, मानो वह नया और खूबसूरत मकान उनका अपमान कर रहा हो और फिर वे भी घर के अन्दर चली गयीं।

बच्चों का दल दुविधा में पड़ गया। अपने किसी सदस्य पर ऐसा हमला होने पर वे हमेशा ही दूर तक सावधानी से देखते थे कि कोई और तो उधर नहीं आ रहा है। जिमी ने गर्व से कहा—“यह मेरा मकान है। तुम लोगों को यहाँ से निकलने की कोई जरूरत नहीं।”

दानव ने अपना नकाब से ढँका चेहरा आसमान की तरफ कर रखा था और हाथ हिला-हिला कर वह अपने एक धार्मिक गीत पर ताल दे रहा था। छोटा

लड़का चिल्लाया—“देखो उसे।” सब उधर घूमे और उसकी मुद्राओं की गम्भीरता तथा रहस्य देख कर मूर्तिवत् खड़े रह गये। उसके गाने की लय उदास और धीमी थी। बालक पीछे हट गये। लगता था, जैसे गाना उन पर जादू डाल रहा हो। वे उसमें इतना डूबे हुए थे कि डाक्टर की बगधी के आने की आवाज भी उनके कानों में नहीं पड़ी। ट्रेस्काट ने बगधी से उतर कर घोड़ी को बाँधा और बच्चों की जमघट की तरफ आये। सबसे पहले जिमी ने उन्हें देखा और उसके मुख पर भय के चिन्ह देखकर बाकी के लड़कों की नजर भी उधर ही उठ गयी, जिधर वह देख रहा था।

“यह सब क्या है?”—ट्रेस्काट ने आश्चर्य से पूछा।

जिमी अपने साथियों के आगे आकर खड़ा हो गया; लेकिन बोला कुछ नहीं। सब कुछ देखने के बाद ट्रेस्काट का चेहरा कुछ गम्भीर हो गया।

“क्या कर रहे थे तुम, जिमी?”

“हम खेल रहे थे।”—जिमी ने भरी हुई आवाज में उत्तर दिया।

“क्या खेल रहे थे?”

“खेल रहे थे।”

ट्रेस्काट ने गम्भीरता से और बच्चों की तरफ देखा और उनसे नम्रता के साथ अपने-अपने घर चले जाने को कहा। वे ऐसे चल दिये, जैसे खून करते हुए पकड़े गये हों। किसी लड़के के बुलावे पर भी उसके घर जाना आखिर एक अपराध ही था। माँ या बाप के आ जाने पर कई लोगों के बागों से निकाले जाने का उन्हें कई बार अनुभव हो चुका था। जिमी कातरता के साथ उनका जाना देखता रहा। यह उसके लिए मान का प्रश्न था; अपने बाप की जमीन पर आखिर कुछ उसका भी तो अधिकार था, लेकिन वह यह भी समझता था कि एक साथ इतने सारे लड़कों को बुला लाने का उसे कोई हक न था।

लड़के सड़क पर पहुँचते ही दूसरे के घर जाने की अनधिकार चेष्टा के अपने अपमान को भूल गये और वह बड़ा लड़का फिर साहस की परीक्षा में अपनी सफलता का बखान करने लगा। सब-के-सब तेजी से चले जा रहे थे कि वह छोटा लड़का, जिसने डरते-डरते अपने साहस की धाक जमाने का असफल प्रयत्न किया था, बोल उठा—“और मैं भी तो लगभग उसके पास चला गया—गया न विली?”

बड़े लड़के ने तुरन्त उसके उल्लास की हत्या कर दी—“हाँ! जरा-सी दूर तो गया था, तू। मैं तो उसके बिल्कूल पास गया था।”

बाकी लड़के इस फुर्ती से कदम उठा रहे थे कि वह छोटा-सा लड़का भागते-भागते भी पिछड़ा जा रहा था।

आगे की पंक्ति में पहुँच कर कुछ महत्त्व कमाने की कोशिश में वह अपने से बड़े लड़कों की टाँगों के बीच फँस जाता था। कभी इधर से, कभी उधर से आगे निकलने की कोशिश करते हुए वह बराबर अपना दावा पेश किये जाता था।

- २१ -

डाक्टर ट्रेस्काट ने अपने दफ्तर के दरवाजे से भोजन-कक्ष में झाँकते हुए कहा—
“देखो प्रेस, जरा जिमी को स्कूल जाने से पहले मेरे पास भेजना।”

जिमी इतना दबे पाँव आया कि पहले तो डाक्टर को पता ही नहीं चला। एक आलमारी के पास से घूमकर उन्होंने कहा—“आ गये बेटा, आ गये?”
“जी हाँ।”

ट्रेस्काट एक कुर्सी पर बैठ गये और विचार की मुद्रा में मेज को उँगली से ठाँकते हुए बोले—“जिमी, कल पिछवाड़े बाग में क्या कर रहे थे तुम—तुम और तुम्हारे साथी—हेनरी के साथ?”

“हम कुछ नहीं कर रहे थे, पिताजी।”

ट्रेस्काट ने कड़ाई के साथ अपने बेटे की आँखों से आँखें मिलायीं। “सच बोल रहे हो? तुम उसे किसी तरह तंग तो नहीं कर रहे थे? ठीक बताओ, क्या कर रहे थे तुम?”

“देखिये, हम—देखिये—हम—विली डेलज़ल ने कहा कि मैं उसके पास नहीं जा सकता, तो मैंने उसके पास जा कर दिखा दिया; फिर वह भी उसके पास गया; और फिर—दूसरे लड़के डर रहे थे और फिर—आप आ गये।”

ट्रेस्काट के मुँह से एक कराह निकल गयी। उनके चेहरे पर भी पीड़ा का भाव इतना घनीभूत हो गया कि लड़का बगैर कुछ समझे-बूझे एकाएक रोने लगा। “रोओ मत, रोओ मत, जिम!”—ट्रेस्काट ने कुर्सी से उठकर उसके पास जाकर कहा। एक बड़ी-सी कुर्सी पर बैठ कर उन्होंने जिम को अपनी गोद में बिठाया और कहने लगे—“मैं तो तुम्हें यही समझाना चाहता था—”

जिमी के स्कूल चले जाने के बाद जब ट्रेस्काट मरीजों को देखने के लिए निकलने लगे, तभी उन्हें डा. मोजर का सन्देश मिला। उन्होंने लिखा था कि उनकी बहन बीस मील दूर अंतिम साँसें ले रही है, सो वे वहाँ जा रहे हैं। अपनी अनुपस्थिति में कम-से-कम एक दिन के लिए उन्होंने डा. ट्रेस्काट से उनके

मरीजों को सम्हालने की प्रार्थना की थी। इस सन्देश के साथ उन्होंने अपने हर मरीज की हालत और अब तक के इलाज का ब्यौरा भी लिख भेजा था। ट्रेस्काट ने संदेशवाहक से कहला दिया कि वे खुशी से देख-भाल कर लेंगे।

उन्होंने देखा कि मोजर के मरीजों में सबसे पहले नाम विंटर का था; लेकिन इसमें उन्हें कोई खास बात नजर नहीं आयी। वे मरीजों को देखते हुए विंटर के यहाँ भी पहुँचे। दरवाजे पर उन्होंने घंटी बजायी। दरवाजा खुला। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक श्रीमती विंटर को नमस्कार किया और बोले—“डा. मोजर जरूरी काम से बाहर गये हैं, और उन्होंने अपने बदले मुझे भेजा है। आज कैसी है, आपकी लड़की?”

श्रीमती विंटर आश्चर्य से पत्थर की मूर्ति की तरह उन्हें देख रही थीं। आखिर उन्होंने कहा—“अन्दर आइये। मैं अपने पति को बुला लाऊँ।” वह भाग कर अन्दर अदृश्य हो गयीं। ट्रेस्काट हाल में आये और बायीं तरफ के कमरे की ओर जाने लगे।

उसी समय विंटर दरवाज में से निकले। उनकी आँखों में क्रोध झलक रहा था। उन्होंने कमरे में बढ़कर ट्रेस्काट के पास आने की चेष्टा नहीं की। वहीं से पूछा—“क्या चाहिए आपको?”

“मुझे क्या चाहिए? मुझे क्या चाहिए?”—ट्रेस्काट ने अपना सर ऊँचा करते हुए जवाब दिया। उन्हें विंटर का प्रश्न जंगल की रात में एक नयी चुनौती की तरह लगा।

विंटर ने तेजी से कहा—“हाँ, यही तो मैं पूछ रहा हूँ। क्या चाहिए आपको?”

ट्रेस्काट एक क्षण चुप रहे। उन्होंने मोजर की सूची देखी। फिर कहा—“मैं समझता हूँ कि आपकी लड़की की हालत कुछ ज्यादा खराब है। मेरी सलाह है कि जल्द ही किसी डाक्टर को बुलवा लें। डा. मोजर का भेजा हुआ ब्यौरा मैं छोड़े जाता हूँ। आप जिस डाक्टर को भी बुलायें, उसे यह दिखा दीजियेगा।” उन्होंने वह ब्यौरा अपनी डायरी के एक पन्ने पर उतारा और दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए वह पन्ना फाड़ कर विंटर की तरफ बढ़ाया। विंटर पीछे हटकर दीवार से सट गये। उन्होंने सर नीचा करके कागज लेने को अपना हाथ बढ़ाया। उनका हाथ कागज तक नहीं पहुँचा और ट्रेस्काट ने उसे छोड़ दिया, जिससे उड़ता हुआ वह विंटर के पैरों के पास गिर गया।

ट्रेस्काट ने हाल से नमस्कार किया और रवाना हो गये। उनके इस तरह शान्ति के साथ चले जाने से विंटर का पारा मानो आसमान पर चढ़ गया। उन्हें

वे सब अपमानजनक बातें याद हो आयीं, जो उन्होंने ट्रेस्काट को सुनाने के लिए सोच रखी थीं। इसलिए वे उनके पीछे-पीछे 'हाल' में होते हुए दरवाजे तक आये, दरवाजे से बरामदे में पहुँचे और दूर से ही कुत्ते की तरह भौंकते रहे।

— २२ —

ट्रेस्काट ने अविचलित भाव से अपनी घोड़ी का मुँह सड़क की तरफ फिराया। विंटर अब तक बरामदे में खड़े भौंक रहे थे। घेरे में कुत्ते जैसे ही वे लग रहे थे।

“तुमने सुनी यह खबर?”—कैरी डंगन चिल्लाती हुई मार्था के रसोईघर की तरफ आ रही थी। “तुमने सुनी यह खबर?” उसकी आँखें हर्ष से चमक रही थीं।

“नहीं तो।”—मार्था की बहन केट ने उत्सुकता के साथ आगे झुकते हुए जवाब दिया—“क्या बात है? क्या बात है?”

कैरी विजयोल्लास के साथ दरवाजे के अन्दर दाखिल हुई। “अरे, डा. ट्रेस्काट और जैक विंटर का जोरदार झगड़ा हो गया। मैं नहीं समझती थी कि जैक विंटर में इतनी हिम्मत है; लेकिन आज सुबह उसने डाक्टर को खूब खरी-खरी सुनायी।”

“क्या सुनायी उसने?”—मार्था ने पूछा।

“दुनिया भर की बातें सुना डालीं। श्रीमती होवर्थ ने अपनी खिड़की से एक-एक शब्द सुना। वे कह रही थीं, बड़ा जोरदार मामला था। बात सारे शहर में फैल गयी है। सभी को मालूम हो गया है।”

“डाक्टर ने पलट कर नहीं कुछ कहा?”

“नहीं! श्रीमती होवर्थ कह रही थीं कि उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा। वे अपनी बग्गी तक गये और बड़ी शान्ति के साथ उसमें बैठकर चले गये, लेकिन जैक ने उनकी खूब खबर ली। सुना तो यही है।”

“लेकिन उन्होंने कहा क्या?”—केट ने उत्तेजित होकर तीखी आवाज में पूछा। लग रहा था मानो वह किसी शानदार दावत का आनन्द ले रही हो।

“यही कहा कि जब से सैडी को टिरीजा पेज की दावत में हेनरी जानसन ने डराया है, तब से वह ठीक नहीं है और उसके लिए डाक्टर ही जिम्मेदार हैं, और कैसे उन्होंने उनके घर में कदम रखने की हिम्मत की, और—और—और—”

“और क्या?”—मार्था बोली।

एक बीभत्स प्रसन्नता के साथ केट ने पूछा—“उन्होंने उन्हें गालियाँ भी दीं?”

“नहीं, बहुत तो नहीं दीं; थोड़ी ही दीं— जैसा कि गुस्से से पागल हो जाने पर हर मर्द दिया करता है।”— श्रीमती होवर्थ कह रही थीं।

केट ने लम्बी साँस लेते हुए कहा—“और क्या-क्या कहा उन्होंने ?”

मार्था अपने काम में लगी, कुछ देर से गम्भीरता के साथ विचार कर रही थी। अब वह दोनों के बीच में बोली—“लगता तो नहीं कि जिस दिन हेनरी जानसन छूट गया था, उस दिन से सैडी बीमार है। तब से वह करीब-करीब हमेशा ही स्कूल जा रही है—क्यों, नहीं जा रही है ?”

दोनों क्रोधपूर्वक एक साथ बोली—“स्कूल ? स्कूल ? मैं तो कहती हूँ कि नहीं। तुमने यह कैसे समझ लिया ? स्कूल !”

मार्था काम छोड़कर पलटी। उसके हाथ में लोहे की कलछी थी और लगता था, जैसे वह इन पर हमला कर देगी। “तब से कई बार सैडी विंटर अपना बस्ता उठाये सुबह इधर से गुजरी है। कहाँ जाती थी वह ? कहीं शादी में ?”

दोनों एक लम्बे समय से इस मानसिक यातना की अभ्यस्त थीं; तुरन्त हार मान गयीं।

“जाती थी ?”—केट ने हकलाते हुए कहा—“मैंने कभी देखा नहीं।”

कैरी डंगन ने एक भीरुतापूर्ण भावाभिव्यक्ति की। मार्था ने जोर से कहा—“यदि मैं डाक्टर ट्रेस्काट होती, तो मैं उस पाजी जेक विंटर का सिर ही उड़ा देती।” केट और कैरी ने नजरें मिलायीं और हवा में ही कैरी ने बड़े साहस से उत्तर दिया—“मैं नहीं समझती कि तुम ऐसा क्यों कह रही हो, मार्था !” केट की मुस्कराहट से उसे समर्थन और सहानुभूति मिली। “अगर किसी लड़की की डर के मारे जान निकल जाय और वह इससे बीमार पड़ जाय और यही सब हो और इस पर उसके पिता को गुस्सा आये, तो मैं तो नहीं समझती कि उसे दोषी ठहराया जा सकता है। फिर, सब लोग यही तो कहते हैं।”

“सब लोग जो कहते हैं उसकी मैं परवाह नहीं करती।”—मार्था ने कहा।

“तुम सारे शहर का विरोध नहीं कर सकती।”—कैरी ने एकाएक विद्रोह के स्वर में कहा।

“नहीं मार्था, तुम सारे शहर का विरोध नहीं कर सकतीं।”—केट ने अपनी नेता का अनुसरण करते हुए शीघ्रतापूर्वक कहा।

“सारा शहर !”—मार्था चिल्लायी—“मैं पूछती हूँ तुम ‘सारा शहर’ कहती किस को हो ? ये मूर्ख लोग जो हेनरी जानसन से डरते हैं, क्या उन्हें ही तुम, ‘सारा शहर’, कहती हो ?”

कैरी ने तर्कपूर्ण वाणी अपनाते हुए कहा—“क्यों मार्या, तुम तो ऐसे बोल रही हो, जैसे तुम उससे नहीं डरती !”

“नाम को भी नहीं।”— मार्या ने जवाब दिया।

“कैसी बातें करती हो, मार्या !”— केट ने कहा— “जरा सोचो तो, सभी तो उससे डरते हैं।”

कैरी मुस्कराने लगी—“तुमने कभी उसको देखा नहीं—देखा है ?”

“नहीं।”— मार्या ने स्वीकार किया।

“फिर तुम्हें क्या मालूम कि उससे डरोगी नहीं ?”

मार्या उसके ठीक सामने आकर बोली—“तुमने उसे देखा है ? नहीं ! तो तुम्हें क्या मालूम कि तुम उससे डरोगी ही ?”

दोनों ने एक साथ कहा—“लेकिन मार्या, सभी यह कहते हैं। सब लोग यही कहते हैं।”

“सब लोग क्या कहते हैं ?”

“जिस-जिस ने उसे देखा है, उसी का कहना है कि उसकी जान सूख गयी। औरतें ही नहीं, मर्द भी। बड़ी भयंकर बात है यह।”

मार्या ने गम्भीरतापूर्वक सर हिलाते हुए कहा—“मैं कोशिश करूँगी कि डरूँ नहीं।”

“लेकिन मान लो कि तुम्हारा कुछ बस न चले तो ?”— केट ने कहा।

कैरी बोली—“हाँ और देखो, मैं तुम्हें एक बात और बताऊँ। उनके पड़ोसी हैविगन हैं न, वे घर छोड़कर जा रहे हैं।”

“उसका कारण ?”— मार्या ने पूछा।

कैरी ने सर हिलाया—“श्रीमती हैविगन ने खुद कहा है।”

“बहुत अजीब बात है।”— मार्या बोली—“मकान छोड़ रहे हैं, हैं ! क्या कहने हैं ! कहाँ जाकर रहेंगे ?”

“आर्चर्ड एवेन्यू पर।”

“खूब रही। मकान अच्छा है ?”

“यह तो मुझे नहीं मालूम। मैंने सुना नहीं। लेकिन आर्चर्ड पर बहुत से अच्छे मकान हैं।”

“हैं तो, लेकिन वे सब भरे हुए हैं।”— केट ने कहा—“आर्चर्ड एवेन्यू पर एक भी मकान खाली नहीं है।”

“है, खाली है।”—मार्या ने कहा—“पुराना हेम्पस्टेड मकान खाली पड़ा है।”

“हाँ, वह है!”—केट ने कहा—“परन्तु मुझे यकीन है कि वहाँ श्रीमती हैविगन को बिलकुल अच्छा नहीं लगेगा। मेरी समझ में नहीं आता कि कहाँ जाकर रहेंगे वे लोग।”

“मैं तो हर्गिज नहीं बता सकती।”—मार्था ने लम्बी साँस लेते हुए कहा—“कोई ऐसी जगह होगी, जो हम नहीं जानते।”

बहुत देर तक विचारपूर्ण निस्तब्धता रखने के बाद डंगन ने कहा—“खैर, पता लगाना कोई मुश्किल थोड़े ही है।”

“इस तरफ किसी को मालूम है?”—केट ने पूछा।

“श्रीमती स्मिथ को मालूम है। वह रही वे अपने बाग में!”—कैरी ने उबलते हुए उत्तर दिया। वह भाग कर बाहर निकल गयी और केट तथा मार्था खिड़की में आकर खड़ी हो गयीं। सीढ़ियों पर से कैरी की आवाज गूँज उठी—“श्रीमती स्मिथ! आपको मालूम है कि हैविगन परिवार कौन-से मकान में जा रहा है?”

— २३ —

पक्षियों पर शरद् ऋतु का आक्रमण हुआ। द्विलोमविल के पेड़ लाल और पीले रंग से ढँक गये। तेज हवाएँ चलने लगी। रात्रि की उदासी में किसी घर की प्रकाशमान खिड़की बहुत सुन्दर लगती थी। वृक्षों से सूखे और उदास-पत्तों को झड़ता देख कर छोटे बच्चे उन दिनों के सपने देखने लगे, जब वे गलियों में ढेर-के-ढेर पत्ते जमा कर संध्या को उनकी होली जलाया करेंगे।

तीन आदमी नियागरा एवेन्यू पर चले जा रहे थे। जब वे जज हैगनथार्प के मकान के करीब आये, तब जज उनसे मिलने इस तरह अपने मकान के फाटक की तरफ चले, जैसे उनका इंतजार कर रहे थे।

“आप तैयार हैं, जज साहब?”—एक ने पूछा। “बिल्कुल!”—उन्होंने जवाब दिया।

अब चारों आदमी ट्रैस्काट के घर गये। डाक्टर अपने दफ्तर में बैठे पढ़ रहे थे। वहीं उन्होंने सबको बुला लिया। चार कर्मठ और प्रभावशाली नागरिकों को आया देख कर उन्हें आश्चर्य हुआ, लेकिन उन्होंने कहा कुछ नहीं।

सब लोगों के बैठ जाने पर डा. ट्रैस्काट प्रश्नसूचक मुद्रा में एक-एक का मुँह ताकने लगे। कुछ देर सब चुप रहे। थोक किराना-व्यापारी, जान ट्वेल्व ने निस्तब्धता को तोड़ा। चार लाख डालर का असामी था वह; लेकिन लोग

समझते थे कि उसकी सम्पत्ति दस लाख डालर से ज्यादा है।

वह कुछ हँसता हुआ बोला—“देखो डाक्टर, मैं पहले ही कह दूँ कि हम एक ऐसी बात में दखल देने आये हैं, जिससे हमारा वास्तव में कोई सम्बन्ध नहीं है।”

“क्या बात है?”—डाक्टर ने फिर एक-एक की तरफ देखते हुए पूछा। लगता था मानो वे खासतौर से जज हैगनथार्प से कुछ अनुरोध कर रहे हों, लेकिन उस बूढ़े व्यक्ति ने कुछ सोचते हुए अपनी ठोड़ी अपने डंडे पर जमा रखी थी और डाक्टर की तरफ देखते ही न थे।

“बात उस विषय में है, जिसकी लोग ज्यादातर चर्चा नहीं करते।”—ट्वेल्ब ने कहा—“हेनरी जानसन के बारे में है।”

ट्रेस्काट कुर्सी में सीधे होकर बैठ गये और बोले—“कहिये।”

बातचीत की इस तरह शुरुआत करके ट्वेल्ब की बेचैनी कुछ कम हुई और वह नम्रतापूर्वक बोला—“हम उसी के बारे में कुछ बातें करना चाहते हैं।

“कहिये।”—ट्रेस्काट ने कहा।

ट्वेल्ब एकाएक मुख्य विषय पर उतर आया। “देखो ट्रेस्काट, हम तुम्हारा भला चाहते हैं और इस विषय में साफ-साफ बात करने आये हैं। यह ठीक हो सकता है कि हमारा इससे कोई सम्बन्ध नहीं है और जहाँ तक मेरा सवाल है, अगर तुम यही कहो कि तुमसे मतलब, तो मैं बुरा नहीं मानूँगा; लेकिन मैं तुम्हें अपने-आप को बरबाद करते देखकर चुप बैठा नहीं रह सकता। हम सब यही महसूस करते हैं।”

“मैं तो अपने को बरबाद नहीं कर रहा हूँ।”—डाक्टर ने जवाब दिया।

“ठीक है, तुम अपने को बिल्कुल बरबाद तो नहीं कर रहे हो”—ट्वेल्ब ने धीरे-धीरे कहा—“लेकिन अपना नुकसान बहुत कर रहे हो। शहर में तुम सबसे प्रमुख डाक्टर थे। अब तुम्हारा स्थान लगभग सबसे नीचे पहुँच गया है। मुख्य कारण यह है कि हर जगह मूर्खों की गिनती ज्यादा रहती है, लेकिन इससे असलियत तो नहीं बदलती।”

एक आदमी जो अब तक चुप बैठा था, गम्भीरतापूर्वक बोला—“औरतें हैं जो।”

ट्वेल्ब ने फिर कहा—“मुझे कहना यह है कि दुनिया में बेवकूफ बहुत हैं तो क्या; उनका विरोध करके तुम अपने को बरबाद कर लो, यह उचित नहीं है। तुम उनका मत नहीं बदल सकते।”

“मैं उनका मत बदलने की कोशिश ही नहीं कर रहा हूँ।”—ट्रेस्काट ने थके हुए व्यक्ति की तरह मुस्करा कर कहा—“मैं— यह मामला तो—”

“बहुत से लोग इसके लिए आपकी प्रशंसा करते हैं।”—ट्रेवल्ब ने बीच में ही टोक कर कहा—“लेकिन इससे उन सब मूर्खों की मति तो नहीं बदल सकती।”

वह दूसरा व्यक्ति फिर बोला—“औरतें हैं जो।”

ट्रेवल्ब ने कहा—“मुझे इतना ही कहना है कि हम चाहते हैं, तुम इस मुसीबत से झुटकारा पाकर फिर पुरानी रफ्तार अपनाओ। अपने इस नारकीय हठ के कारण तुम अपनी ‘प्रेक्टिस’ की हत्या कर रहे हो। यह बात मामूली नहीं है, लेकिन कोई-न-कोई तरीका तो होगा ही, जिससे तुम नुकसान उठाने से बच जाओ। हमने इस बारे में खूब विचार किया है—हमने यानी लगभग बारह व्यक्तियों ने—और जैसा मैं अभी कह चुका हूँ, अगर तुम यही कहना चाहो कि तुमसे मतलब, तो बेशक कह दो; परन्तु हमने अच्छी तरह विचार किया है और इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि इसका एक ही उपाय है—वह यह कि जानसन को कहीं और भेज दिया जाय, और—”

ट्रेस्काट ने थके हुए व्यक्ति की तरह कहा—“तुम समझते नहीं, मेरे दोस्त ! हर आदमी उससे इस कदर डरता है कि कोई भी उसकी अच्छी तरह देख-भाल नहीं कर सकता। कोई उसकी इस तरह देख-भाल नहीं कर सकता, जैसे मैं करता हूँ।”

“किन्तु ब्लेरेन्स माउन्टेन के परे मेरा एक ‘फार्म’ बेकार पड़ा है, जो मैं हेनरी को देना चाहता हूँ।”—ट्रेवल्ब ने शिकायत-भरे स्वर में कहा—“और अगर तुम—अगर तुम—अपना मकान जल जाने के कारण या और किसी कारण—हम सब तुम्हारे कंधों से उसका बोझ हल्का करने को तैयार हैं—और—और—”

ट्रेस्काट उठकर खिड़की के पास जा खड़े हुए। उनकी पीठ मेहमानों की तरफ थी। वे चुप बैठे रहे। जब ट्रेस्काट लौटे, तब उन्होंने अपने चेहरे को प्रकाश से परे रखा। वे बोले—“नहीं, जान ट्रेवल्ब, यह नहीं हो सकता।”

फिर निस्तब्धता छा गयी। एकाएक एक व्यक्ति कुर्सी में कसमसाया।

“तो किसी सार्वजनिक संस्था में”—उसने कहना शुरू किया।

“नहीं!”—ट्रेस्काट ने उत्तर दिया—“सार्वजनिक संस्थाएँ बहुत अच्छी होती हैं, परन्तु मैं उसे वहाँ नहीं भेजूंगा।”

जज हैगनथार्प विचारमग्न बैठे हुए अपने डंडे की मूँठ सहला रहे थे।

- २४ -

ट्रेस्काट ने पाँव पटक कर और कंधे हिलाकर बर्फ झाड़ी। घर में घुसते ही वे भोजन-कक्ष में पहुँचे और फिर बैठने के कमरे में जिम बड़ी मेहनत से जिराफों, बाघों और घड़ियालों की कोई पुस्तक पढ़ रहा था।

“तुम्हारी माँ कहाँ है, जिमी?”—ट्रेस्काट ने पूछा।

“मुझे मालूम नहीं, पिताजी। शायद ऊपर है।”—बच्चे ने कहा।

ट्रेस्काट ने जीने के पास जाकर आवाज दी, लेकिन कोई जवाब नहीं आया। ‘ड्राइंग रूम’ का दरवाजा खुला देख कर वे उसमें गये। अलाव की आग से कमरे में मामूली रोशनी हो रही थी। उनकी आँखें जब अँधेरे की अभ्यस्त हो गयीं, तब उन्होंने देखा कि उनकी पत्नी सिमटी हुई एक कुर्सी पर बैठी थी। उसके पास जाकर वे बोले—“क्यों ग्रेस, मैं तुम्हें आवाज दे रहा था, तुमने सुना नहीं?”

पत्नी ने कोई उत्तर नहीं दिया और वे उसके ऊपर झुके, तो उन्होंने उसे गद्दी में सिसकियों को दबाने का प्रयत्न करते हुए सुना।

“ग्रेस!”—वे बोले—“तुम रो रही हो।”

पत्नी ने मुँह ऊपर किया। “मेरे सर में दर्द है, सर फटा जा रहा है, नेड।”

“सर में दर्द?”—डाक्टर ने आश्चर्य और अविश्वास के साथ दोहराया।

उसके पास ही एक कुर्सी खींच कर वे बैठे गये। धुंधले प्रकाश में नजर दौड़ा कर उन्होंने देखा कि एक छोटी मेज अलाव के पास लगी थी, उस पर छोटे-छोटे प्याले और केक बिना कटे रखे थे। उन्हें याद आया कि आज बुधवार था—जिस दिन उनकी पत्नी की सहेलियाँ उससे मिलने आती थीं।

“आज कौन आया था, ग्रेस?”—उन्होंने पूछा।

उनके कंधे से दबी हुई आवाज आयी—“श्रीमती ट्वेल्ब।”

“अच्छा! और एना हैगनथार्प क्यों नहीं आयीं?”—उन्होंने पूछा।

उनके कंधे से फिर दबी हुई आवाज आयी—“उनकी तबीअत खराब थी।”

प्यालों की तरफ देखते हुए ट्रेस्काट ने यों ही उन्हें गिना। पन्द्रह प्याले थे।

“नहीं-नहीं। रोओ मत, रोओ मत, ग्रेस।”—उन्होंने कहा।

बाहर हवा जोर-जोर से चल रही थी और बर्फ खिड़कियों को पीट रहा था। कभी-कभी अलाव में कोई कोयला तड़तड़ा कर शान्त हो जाता था और अलाव की लाल रोशनी चमक उठती थी। अपनी पत्नी के सर को अपने कंधे पर टिकाये हुए ट्रेस्काट कभी-कभी प्याले गिन लेते थे। कुल पन्द्रह थे वे।

भूरी आस्तीन

“लगता है कि आज दोपहर को कदाचित् पानी बरसे।”—तोपखाने की सैनिक टुकड़ी के लेफ्टिनेंट ने कहा।

“ऐसा ही दिखता है।”—पैदल सेना के कप्तान ने सहमति प्रकट की और अकस्मात् ही आकाश की ओर दृष्टि कर दी। फिर जब उसकी आँखें अपने सामने फैले हुए हरित भू-भाग पर आ ठहरीं, तब उसने तनिक चिढ़ कर कहा—“मैं सोचता हूँ कि वे दूरस्थ लोग, हम पर आक्रमण करके जायेंगे। वे वहाँ पर मध्याह्न से हैं।”

विस्तृत मैदान के उस पार, सघन कुंज के सिरे पर, काले आकाश में, जैसे प्रकट हो रहा था कि पानी बरसेगा ही, कभी-कभी धुँएँ के गहरे बादल दिखायी दे जाते थे, मैदान में, जहाँ दूरी पर निशानेबाजों की गोलियाँ लगातार चल रही थीं, नीले और इस्पाती रंग की व्याकुल-सी धारा उठती दिखायी दे रही थी। यह लोग अपनी-अपनी राइफलों पर झुके हुए सघन कुंज की ओर ताक रहे थे। एक बार जब एक और सरकारी कर्मचारी अपने सहचर से तम्बाकू मांगने के लिए पिछली पंक्ति की ओर मुड़ा, तब अपने हाथ को फैलाये हुए भी वह अपने सिर को सहलाता और दूर पर खड़े वृक्षों को देखता रहा। उसे भय था कि जब वह बेखबर होगा, तभी शत्रु उसे गोली मार देगा।

तभी, अकस्मात् तोपखाने की सैनिक टुकड़ी के अधिकारी ने कहा—“देखो, वह क्या आ रहा है?”

पदाति सेना के पिछले भाग की ओर अश्वारोहियों की एक टुकड़ी बड़ी तेजी के साथ बढ़ रही थी। एक लेफ्टिनेंट, जो टुकड़ी की दायीं ओर कुछ फासले पर चल रहा था, झंडे के पीछे चल रहे चार घुड़सवारों पर गरजा। वे लोग कुछ पीछे रह गये थे, लेकिन लेफ्टिनेंट के चीखने पर उन्होंने अपने घोड़ों को आगे बढ़ा दिया। बिगुल बजानेवाले ने, जो दल के कप्तान के पीछे-पीछे दौड़ रहा था, बड़ी कठिनाई से अपने उन्मत्त घोड़े को टुकड़ी से दूर जाने से रोका।

घास के हरे-भरे मैदान में अनगिनती टापों की आवाज बड़ी भयानक हो उठी। अश्वारोहियों के कत्थई चेहरों में उनकी आँखें गरम इस्पात के टुकड़ों की भाँति लग रही थीं।

पदाति सेना की लम्बी पंक्ति, जो आराम के साथ खड़ी हुई थी, उस दल की तीव्र गति से एक साथ संभल गयी। पैदल सैनिकों ने घोड़ों और सवारों का वेग देखने के लिए अपना-अपना सिर पीछे की ओर घुमा लिया।

झंडे की पीली तहें इस प्रकार फड़फड़ायीं, जैसे वह अपनी अनिच्छा प्रकट कर रही हों। कभी-कभी घोड़े की छलांग अपने पर सवार दृढ़ और मजबूत व्यक्ति को इस तरह उछाल देती थी कि उसका सिर और कंधे अपने साथियों से ऊपर उठ जाते थे। टापों की आवाज के अलावा घोड़ों के चमड़े के बने साजों की चरचराहट, इस्पात की झनझनाहट और सवारों द्वारा अपने घोड़ों को दी जा रही आज्ञाएं, दबी-दबी मनुहारें भी सुनायी दे रही थीं। और घोड़े भी पागलों की भाँति दौड़ रहे थे। मजबूत निचले जबड़े मुड़ कर इस तरह सीधे हो गये थे कि लगाम में लगे हुए लोहे के टुकड़े दाँतों पर कीलों की तरह दृढ़तापूर्वक चिपक गये थे और गर्दन में दृढ़ निरोध के उपरान्त भी हाथों में थमी लगामों के खिचाव से टेढ़ी हो गयी थीं। क्रोध के कारण उनके सिर हिल रहे थे और लाचारी की दशा में उनके क्रोध और जोश को निर्दिष्ट दिशा और निर्दिष्ट मार्ग पर चलना पड़ रहा था और उनकी उड़ान सुसज्जित दानवों की उड़ान जैसी लग रही थी।

कप्तान का घोड़ा दल के आगे-आगे चल रहा था और उसे अपने पीछे आते हुए साथियों का नेता होने का अभिमान था। कप्तान की दृष्टि उस सघन कुंज पर स्थिर थी, जहाँ शत्रु के निशानेबाज नीली रेखा के पास एकत्र थे। उसके चेहरे से प्रकट हो रहा था कि वह गम्भीरता के साथ किसी बात पर विचार कर रहा था। वह घोड़े की छलांगों के साथ ही उठा और गिरा, बिल्कुल इस तरह जैसे अचेतनावस्था में हो। उसके चेहरे पर उस समय गिर्जे में बैठे पादरी की-सी उदासीनता परिलक्षित हो रही थी और इस बात से कि यह अधिकारी उस समय भी जब कि उसका दल उसके पीछे बाढ़ की तरह गरजता-उमड़ता चला आ रहा था, शान्त और गम्भीर रह सका, पदाति सेना के अनेक सैनिकों को आश्चर्य हुआ।

अश्वारोहियों का दल, एक चहारदीवारी के टूटे भाग में कटार की भाँति प्रवेश कर गया और एक सड़क पर निकल आया। एक बार तस्ते के एक छोटे पुल पर चढ़ाई हुई थी और उस पर टापों की आज्ञा बिल्कुल ऐसी लगती थी जैसे अनवरत रूप से नगाड़े बजते रहे हों। पदाति सेना के एक वृद्ध कप्तान ने अपने प्रथम लेफ्टिनेंट की ओर मुड़ कर कुछ कहा, जो कि साधारण रूप में

अश्वारोहियों की कड़ी निंदा थी और इस दल विशेष की सैनिक-गुण-प्रशस्ति थी।

अकस्मात् ही बिगुल बज उठा और अश्वारोहियों का दल एक झटके के साथ हलकी चीखों के बीच रुक गया। कुछ ही क्षणों पश्चात् सवार घोड़ों पर से उतर पड़े और हाथों में खड्ग लेकर सामूहिक रूप में सघन कुंज की ओर दौड़ने लगे। सड़क पर चार सवारों में से एक, जिसके पैरों में पट्टी बँधी हुई थी, चारों उन्मत्त घोड़ों की लगामों को थामे खड़ा रह गया।

कप्तान बुरी तरह से दौड़ रहा था। उसकी कटार नीचे की ओर थी और इस बात का भय होता था कि कहीं वह घास में ही न घुस जाये, उसके मुंहले बाल टोपी के बाहर निकल आये थे। “तेजी के साथ अन्दर घुस जाओ।”—वह कर्कश स्वर में गरजा। उसका चेहरा खूब लाल हो रहा था।

सवार उस कुंज पर इस तरह टूट पड़े, जैसे भेड़िये किसी बड़े पशु पर टूट पड़ते हैं। उस समय जंगल के सामने आग की चमक दिखाती हुई बंदूकों के छूटने की आवाज सुनायी दे रही थी और किसी प्रेत छाया की तरह धुँआँ उठ रहा था। सवारों ने तेजी के साथ चीखते हुए, पत्तों के शुरमुट में गोलियाँ दाग दीं।

जब वे लोग जंगल के पास पहुँचे, तब क्षण भर के लिए रुके। कुछ समय तक उनके मन में इस तरह का संघर्ष चलता रहा, जैसे किसी बड़ी तरंग का मुकाबला करते समय तैराकों को अनुभव होता है। और तब बड़ी तेजी के साथ वे लोग आगे बढ़ने लगे। उन्होंने पागलों की भाँति कुंज पर आक्रमण कर दिया। उस कुंज पर, जिसके पत्तों का झुंड किसी दीवार की भाँति दुर्बोध था।

और तब शान्त वृक्षों की हर बारीकी स्पष्ट हो गयी और कुछ ही देर में वे लोग घने जंगल में पहुँच गये। वहाँ पर जले हुए कागज की-सी दुर्गन्ध आ रही थी। भूरे रंग का धुँआँ ऊपर की ओर उठ रहा था। वे लोग रुक गये और गंदे कपड़ों के साथ पसीने में तर और हाँफते हुए उन्होंने उत्सुक और डरावनी दृष्टि से सारा जंगल छान डाला। दूर पर कुछ आकृतियाँ हिलती हुई दीख रही थीं। एक दर्जन खड्ग बड़ी तीव्रता के साथ उन पर टूट पड़े।

इस बीच कप्तान पंक्ति के साथ-साथ डग भरता रहा। उसके चेहरे पर संतोष की मुसकान झलक रही थी। “जब वह इस भीड़ को कुछ भी करने के लिए भेजता है, मैं समझता हूँ कि वह यही पायेगा कि हम उसे भली प्रकार कर देते हैं।”—उसने हँसते हुए लेफ्टिनेंट से कहा। “कहा जा सकता है कि वह एक भी

मिनट उस तेंजी का सामना नहीं कर सकते। क्या वह कर सकते हैं?"—कप्तान के सहायक ने कहा। दोनों ही अधिकारियों के कपड़े धूल में सन गये थे और दोनों के ही चेहरे पिशाचों जैसे लग रहे थे। उनके पीछे घास में तीन शान्त आकृतियाँ और थी।

तभी दल आगे बढ़ा। वे लोग प्रत्येक वृक्ष तक शिकारियों की तरह बढ़ते गये। दल की बायीं ओर के कुछ लोग कभी-कभी गोली भी दाग देते थे और जो लोग दायीं ओर थे, उस दिशा में उत्सुकता के साथ देखने लगते थे। मैदान को पार करने के बाद अब तक उनकी साँस फूली हुई थी।

अचानक ही एक सवार रुक गया और बोला—"अरे, वहाँ एक मकान है।" प्रत्येक व्यक्ति रुक कर अपने नेता की ओर देखने लगा।

कप्तान ने अपनी गर्दन सीधी की और सिर को इधर-उधर हिलाया। "कसम जार्ज की, वह तो मकान ही है।"—उसने कहा।

घनी पत्तियों के झुंड में से एक विशाल और सफेद मकान दृष्टिगोचर हो रहा था। ये सवार, जिनके मुँह कई दिनों के परिश्रम से मलिन हो गये थे, किंतु फिर भी जिनकी आकृति आत्मविश्वास और साहस प्रकट कर रही थी, इस मकान को अचानक ही देख कर अनायास ठहर गये थे। वहाँ कुछ अद्भुत बात जरूर थी, किसी अनजान वस्तु की कहानी, जो वे लोग नहीं जानते थे कि कहाँ से उन पर दृष्टि रखे हुए थी।

लोहे की छड़ों की चहारदीवारी ने एक विस्तृत मैदान को घेर रखा था। मार्ग के सहारे देवदार के सात वृक्ष खड़े हुए थे, जो गिरे हुए फाटक के दोनों खम्भों से दिखायी देते थे। नीली वर्दी वाले सवार आगे बढ़ते गये और चहार-दीवारी के पास आकर रुक गये और दूसरी ओर झाँकने लगे।

कप्तान ने एक हाथ सब से ऊपरवाली छड़ पर रखा और वह चहारदीवारी पर चढ़ने को ही था कि अचानक ही वह हिचकिचा गया और धीमे स्वर में बोला—"वाट्सन, तुम्हारा क्या विचार है?"

लेफ्टिनेंट ने मकान की ओर घूर कर देखा। "कोई रहस्यपूर्ण बात लगती है।"—उसने उत्तर दिया।

कप्तान मन-ही-मन कुछ सोचने लगा। लगता था कि सभी लोग उस मकान पर, जो उनके सामने खड़ा था, बड़ी संदेह भरी दृष्टि से ताक रहे थे, परन्तु वे लोग शांत थे।

अंत में कप्तान ने गाली देते हुए कहा—"हम लोग वाकई निरे बुद्ध हैं।

एक रहस्यपूर्ण पुराना और निर्जन मकान, यूनियन अश्वारोहियों के दल को रोके खड़ा है और हम लोग बच्चों की तरह आँखें फाड़े उसे देख रहे हैं।”

“हाँ, लेकिन वहाँ कुछ है... कुछ है...” — कप्तान के सहायक ने हकलाते हुए कहा।

“अच्छा, यदि वहाँ कुछ है... कुछ वहाँ है, तो मैं उसे बाहर निकालूँगा।” — कप्तान ने कहा— “शार्प को लगभग बारह आदमियों के साथ घुमा कर दूसरी ओर भेज दो, जिससे हम तुम्हारे ‘कुछ’ को पा सकें... और मैं कुछ छोकरो को लेकर जाऊँगा और पता लगाऊँगा कि उस पुराने मनहूस मकान में क्या है?”

उसने अपने समीप खड़े लोगों में से आठ को चुन लिया और जब सब लोग अपना-अपना स्थान ग्रहण कर चुके तब वह बोला— “आगे आओ !” और अपने आठों साथियों के साथ चहारदीवारी पर चढ़ गया।

घास के मैदान में फैले हुए प्रकाश में सब कुछ स्पष्ट दिखायी दे रहा था और उसे अचरज होने लगा कि कहीं उस मकान में कोई विचित्र वस्तु न हो, जो उसे आमंत्रण दे रही हो। उसके साथी चुपचाप उसके पीछे चले आ रहे थे। वे लोग खिड़कियों को ताक रहे थे और अनेक अनुमान लगा रहे थे कि वहाँ क्या होगा ? उस परदे के पीछे आँख होंगी, तीक्ष्ण और शत्रुतापूर्ण।

तभी एक ‘कारपोरल’ (एक छोटा अफसर) के मुँह से कुछ शब्द निकले और उसने अपनी बंदूक को आगे की ओर कर दिया। कप्तान तेजी के साथ पीछे की ओर मुड़ा और ‘कारपोरल’ ने कहा— “मैंने अभी एक हाथ को परदा हटाते हुए देखा है। एक हाथ, जिस पर भूरे रंग की आस्तीन चढ़ी हुई थी।”

“जोन्स, अपनी मूर्खता मत जाहिर करो।” — कप्तान ने तेजी से कहा।

“मैं कसम खाकर...” — ‘कारपोरल’ ने आगे कहना चाहा, लेकिन कप्तान ने उसे शांत कर दिया।

और जब वे लोग मकान के सामने पहुँचे, तब कुछ समय के लिए रुके और कप्तान धीरे-धीरे सीढ़ियों पर चढ़ गया। वह उस विशाल द्वार पर खड़ा रहा और कुछ गौर करता रहा। कुछ टिड्डे लम्बी घास में उछल-कूद रहे थे और समीप का देवदार लम्बी-लम्बी साँसे लेता हुआ लग रहा था। एक गैर-सरकारी कर्मचारी व्याकुलता के साथ हिला और उसके पैर ने एक कंकड़ को चूर-चूर कर डाला और तभी कप्तान ने गालियाँ देते हुए द्वार पर जोर से लात दी और द्वार खुल गया।

जब कप्तान ने क्रोधपूर्वक लात मार कर द्वार खोला तब दिन की चमकीली किरणें उस पुराने मकान में प्रवेश कर गयीं। एक गलियारा, जिस पर कालीन बिछा हुआ था, अन्दर तक चला गया था। वहाँ एक अखरोट की लकड़ी का हैट रखने का पुराना 'रैक' भी था और एक मेज भी, जिसका ऊपर का भाग संग-मरमर का बना हुआ था और जिसके ऊपर एक चमकदार बर्तन और दो किताबें पड़ी हुई थीं। पीछे की ओर एक बड़ा अग्नि-कुंड था, जिसके अंगारों पर राख की परतें चढ़ गयी थीं।

लेकिन कप्तान के ठीक सामने एक जवान लड़की खड़ी थी। द्वार के अचानक ही खुल जाने से वह आश्चर्यचकित हो उठी थी और वहीं बीच में एक ही स्थान पर खड़ी रह गयी थी और विस्फारित नेत्रों से कप्तान को घूर रही थी।

वह उस समय उस बालक के समान लग रही थी, जो खाने की वस्तु चुराते समय पकड़ लिया गया हो। उसने थोड़ा इधर-उधर हिलते हुए अपने हाथों को पीछे कर लिया। जैसे ही उसने मैली नीली वर्दीवाले जवान कप्तान को, जिसका रंग लाल था, देखा वैसे ही उसकी आँखों में दो बातों के कारण भय झलक उठा था, उसके सुनहले बालों और खुली हुई चमकदार कटार से।

कुछ समय तक दोनों एक-दूसरे को घूरते हुए खड़े रहे।

कप्तान को अनुभव हुआ कि उसका क्रोध धीरे-धीरे दूर होता जा रहा है और उसने अपने मस्तिष्क को भी शिथिल छोड़ दिया। पहले उसे अत्यधिक क्रोध आ रहा था क्योंकि इस मकान ने उसे हिचकिचाने और अप्रसन्न होने के लिए लाचार कर दिया था। वह अप्रसन्न होना अच्छा न समझता था, उसे आत्मविश्वासी और निश्चित रहना पसंद था। इसीलिए उसने धक्का मार कर द्वार को खोला था और एक सैनिक की भाँति प्रवेश करने के लिए तैयार हो गया था।

लेकिन अब वह एक और ही बात को लेकर आश्चर्य कर रहा था कि उसकी वर्दी बड़ी गन्दी और देखने में बड़ी पुरानी थी। और उसे यह भी अनुभव हो रहा था कि उसका मुँह मिट्टी, मैल और पसीने से सना हुआ था। वह एक कदम आगे बढ़कर बोला—“मैं तुम्हें भयभीत करना नहीं चाहता था।” परन्तु उसका स्वर बड़ा रूखा-सा था, युद्ध की चीत्कार से भी अधिक। उसको लगा जैसे उसके गले में खराशें पड़ गयी हों।

लड़की ने जल्दी-जल्दी साँस ली और उसकी ओर ऐसे देखा, जैसे किसी सॉप को देख रही हो।

“मैं तुम्हें भयभीत नहीं करना चाहता था।”—उसने दुबारा कहा।

लड़की, जिसके हाथ अभी तक पीछे ही थे, पीछे की ओर खिसकने लगी।

“क्या मकान में कोई और भी है?”—लड़की के साथ ही आगे बढ़ते हुए कप्तान ने कहा—“मैं तुम्हें तंग करना नहीं चाहता। जंगल में कुछ विद्रोहियों के साथ हमारा युद्ध हो गया था। मैंने सोचा कि उनमें से कोई यहाँ न आ गया हो और मुझे इस बात का विश्वास भी था। क्या उनमें से कोई यहाँ है?”

लड़की ने उसकी ओर देखा और बोली—“नहीं।” उसे इस बात से आश्चर्य हुआ कि क्रोध कुछ औरतों की आँखों को इतना साफ और चमकदार क्यों बना देता है।

“तुम्हारे पीछे कौन है?”

अब तक वह हाल के अंत तक पहुँच गयी थी और वह अपनी पीठ को दीवार की ओर किये हुए खड़ी रही। उसके हाथ अभी तक उसके पीछे ही थे। जब उसने इस प्रश्न का उत्तर दिया, तब उसने कप्तान की ओर नहीं देखा, बल्कि फर्श की ओर देखती रही। उसने अपने गले को साफ किया और बोली—“कोई भी नहीं है।”

“कोई नहीं?”

उसने कप्तान की ओर इस तरह देखा कि उससे प्रभावित होकर मानव पेड़ों को गिराने, पत्थर को चूर करने और समुद्र में तूफान उत्पन्न करने की क्षमता पा जाये। फिर बोली—“नहीं, नहीं, यहाँ कोई भी नहीं है।” कप्तान को साफ दिखायी दे रहा था कि वह कांप रही थी।

तभी उसने विचार किया कि उसने लगातार अपने हाथों को पीछे की ओर रखा था। पहली बार दिखायी देने पर जब उसने साँस ली थी, तब ऐसा प्रतीत हुआ था कि जैसे कोई बालक अपराध करने की दशा में पकड़ लिया गया हो। सोचा कि वह जरूर ही कोई ऐसी वस्तु छिपाने का प्रयास कर रही है, जो मकान में शत्रु के होने का सबूत है।

“तुमने अपने पीछे क्या छिपा रखा है?”—उसने यकायक पूछा।

सुनकर वह एकदम दुखी हो उठी, ठीक इस तरह जैसे किसी भयानक हाथ ने उसे कस कर जकड़ लिया हो।

“तुमने अपने पीछे क्या छिपा रहा है?”

“कुछ भी तो नहीं... मैंने अपने पीछे कुछ भी नहीं छिपा रखा है। वाकई मैंने कुछ भी नहीं छिपा रखा है।”

“अच्छी बात है। तो फिर अपने हाथों को आगे की ओर फैला दो।”

“वाकई मैंने अपने पीछे कुछ भी नहीं छिपा रखा है। वास्तव में नहीं।”

“अच्छा”—उसने कहना शुरू किया। फिर वह रुका और संदिग्ध दशा में खड़ा रहा। अंत में वह हँस पड़ा—“अच्छा तो मेरे आदमी मकान की तलाशी लेंगे। इस बात का मुझे दुःख है, लेकिन मुझे विश्वास है कि कोई-न-कोई यहाँ ऐसा आदमी जरूर है, जिसे हम चाहते हैं।” वह ‘कारपोरल’ की ओर मुड़ा। ‘कार-पोरल’, अन्य आदमियों के साथ चुपचाप आँखें फाड़े द्वार के पास खड़ा था। “जोन्स, मकान की तलाशी ले डालो।”—कप्तान ने कहा।

जहाँ तक उसका सम्बंध था, वह जड़ की तरह लड़की के सामने खड़ा रहा; न उस लड़की को ही हिलने का और अपने हाथों में छिपायी हुई वस्तु को दिखाने का साहस हो रहा था। इसलिए वह उसकी कैद में थी।

आदमियों ने मकान की निचली मंजिल की तलाशी लेना आरम्भ किया। कभी-कभी कप्तान कह उठता—“वह कमरा भी देखो, क्या कोई तहखाना भी है?” लेकिन उन्हें मिला कोई भी नहीं और आखिरकार वह दूसरी मंजिल को जाने के लिए सीढ़ियों के पास जा पहुँचे।

परन्तु आदमियों की इस कार्यवाही पर लड़की एक साथ चीख उठी। उस चीख में भय और विनय की कुछ ऐसी झलक थी कि आदमी रुक गये। “ओह, वहाँ मत जाओ। कृपा करके ऊपर न जाओ। कृपया। वहाँ कोई भी नहीं है। वास्तव में, वास्तव में वहाँ कोई भी नहीं है। ओह कृपा करो।”

“जोन्स, तुम अपना काम करो।”—कप्तान ने शांति के साथ कहा।

आज्ञाकारी ‘कारपोरल’ आगे बढ़ा ही था कि लड़की सीढ़ियों की तरफ दुबारा चीखती हुई दौड़ी।

और जैसे ही वह कप्तान के पास से गुजरी, कप्तान ने देख लिया कि वह अपने पीछे क्या छिपाये हुए थी और जिसको वह इस समय बिल्कुल ही भूल गयी थी। वह एक पिस्तौल थी।

वह दौड़कर पहली सीढ़ी पर खड़ी हो गयी, आदमियों के सामने एक हाथ आगे बढ़ाकर और दूसरे में पिस्तौल थाम कर।

“ओह। कृपया ऊपर न जायें। वहाँ कोई भी नहीं है। वास्तव में वहाँ कोई नहीं है। कृ. . . प. . . या।” और तभी वह सीढ़ी पर गिर गयी और बालकों की भाँति रोने लगी। पिस्तौल उसके हाथ से छूट कर फर्श पर जा गिरी।

आदमियों ने चकित होकर अपने चकित खड़े कप्तान की ओर देखा। उस

समय वहाँ पूर्ण शांति व्याप्त थी।

अंत में कप्तान ने आगे बढ़कर पिस्तौल को उठा लिया। उसका नमूना बिलकुल सेना का जैसा था। उसने पता लगा लिया कि वह खाली था।

वह काँपती हुई लड़की की ओर झुका और नम्रता के साथ उसने पूछा—“तुम मुझे बता सकोगी कि तुम इस पिस्तौल से क्या करनेवाली थी?”

उसने अपने इस प्रश्न को कई बार दुहराया, लेकिन अंत में लड़की ने दबी हुई आवाज में कहा—“कुछ नहीं।”

“कुछ नहीं?”—उसने नम्रता के साथ आगे जानना चाहा। कप्तान की वाणी की कोमलता को लक्ष्य कर, ‘कारपोरल’ ने अपने बराबर वाले की तरफ आँख मारी।

“मुझे नहीं बताओगी?”

लड़की ने अपना सिर हिला दिया।

“बता भी दो।”

शांत खड़े गैर-सरकारी कर्मचारी व्याकुलता के साथ अपने पैरों को हिला-डुला रहे थे और आश्चर्य के साथ सोच रहे थे कि कब तक उन्हें इंतजार करना पड़ेगा।

कप्तान ने कहा—“मुझे नहीं बताओगी?”

तब लड़की ने सुबकते हुए कहा—“यह बाबा की है। वह... वह... वह... यहाँ किसी भी आनेवाले को गोली मारने वाले थे, ऐसा उन्होंने कहा था। उन्हें, यदि आनेवाले हजारों भी होते, तब भी चिंता न थी। और इसीलिए.... और.... इसीलिए.... मैंने उनकी पिस्तौल को चुरा लिया।.... और मैं उसे छिपाने ही जा रही थी कि तुमने द्वार को धक्का देकर खोल दिया।”

आदमियों ने चौंक कर एक-दूसरे की ओर देखा। लड़की ने दुबारा रोना शुरू कर दिया।

कप्तान ने अपनी भौंह को सिकोड़ा। उसने लड़की पर निगाह डाली। उसने दुबारा अपनी भौंह को सिकोड़ा। फिर अकस्मात् ही वह बोला—“आह, इस तरह मत चीखो।”

वह व्याकुलता के साथ चहलकदमी करने लगा और बार-बार अपने जूतों को देखता रहा। उसने फिर से अपनी भौंह को सिकोड़ा।

तब उसने ‘कारपोरल’ की भौंह पकड़ कर, उसे दूसरों से कुछ गज दूर कर दिया। “जोन्स”—वह बोला—“क्या तुम बता सकते हो कि अब मैं क्या करने

वाला हूँ ?” उसकी आवाज एकदम गम्भीर थी ।

यह देखकर कि उसको अपने से बड़े अधिकारी को सलाह देने के लिए कहा गया है, ‘कारपोरल’ को विचित्र प्रकार का संतोष अनुभव हुआ। वह कुछ देर तक सोचता रहा, फिर बोला—“मैं समझता हूँ कि वह भूरी आस्तीन वाला जरूर ही ऊपर होगा। लड़की को हटा कर हम को किसी भी प्रकार ऊपर चलना चाहिए। मैं उसकी बाँह पकड़ कर”

“क्या ?”—कप्तान ने दाँत पीस कर कहा और जैसे ही वह ‘कारपोरल’ की ओर से मुड़ा, उसने कंधों को झटक कर कहा—“अगर तुमने उस लड़की को छुआ, तो मैं तुम्हारी खोपड़ी तोड़ दूँगा।”

‘कारपोरल’ ने कप्तान की तरफ आश्चर्य, दुःख और दर्शन के भाव से देखा। वह शायद खुद से ही कहना चाहता था कि ऐसा भी समय आता है, जब व्यक्ति अपने विश्वासपात्र पर भी विश्वास नहीं करता। जब वह अपने दिल में आकर शामिल हुआ, तब उसने कप्तान को लड़की पर झुका और कहता हुआ पाया—

“क्या कारण है कि तुम ऊपर की तलाशी नहीं लेने देती ?”

लड़की का सिर उसकी बाँह में था। उसके बालों की लटें खुलकर उसके कंधों पर आ गिरी थीं।

“मुझे नहीं बताओगी ?”

‘कारपोरल’ ने इस बार भी बराबर वाले साथी की तरफ आँख मारी।

“क्योंकि”—लड़की ने दुखी होकर कहा—“क्योंकि वहाँ कोई है ही नहीं।”

कप्तान ने तब जैसे डरते हुए कहा—“तब मुझ डर है. . . . तब मुझे डर है कि कहीं हमें तलाशी न लेनी पड़े।”

लड़की एक दम उठ कर खड़ी हो गयी और हाथ फैला कर याचना करने लगी। उसने कप्तान की आँखों में झाँक कर इस तरह कहा, जिस तरह कोई हिरण शाबक किसी शिकारी से कहता है—“मुझे पर दया करो।”

दोनों एक-दूसरे को देखते खड़े रहे। कप्तान का पैर अंतिम सीढ़ी पर था, लेकिन वह कांप-सा रहा था। उसे बड़ी लज्जा अनुभव हो रही थी। सब कुछ शांत था।

तभी ‘कारपोरल’ ने दबी, किन्तु तेज आवाज में कहा—“कप्तान, वह देखो !”

सभी की आँखें एक साथ ऊपर की ओर उठ गयीं। वहाँ एक नवयुवक भूरी पोशाक में खड़ा था। वह उनकी ओर उत्तेजनारहित ढंग से देख रहा था। अश्वारोहियों ने कुछ भी न कहा। लड़की ने विषादपूर्ण स्वर में कहा—“ओह

हैरी !”

वह धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतरने लगा। उसका दाहिना हाथ सफेद पट्टी में लटका हुआ था और उस पर खून के कुछ ताजे धब्बे दिखायी दे रहे थे ॥ उसका चेहरा बड़ा सख्त और पीला था, लेकिन उसकी आँखों में बत्ती की-सी चमक थी। लड़की अब भी बुरी तरह विलाप कर रही थी। नवयुवक धीरे-धीरे शांत खड़े लोगों की ओर, जो नीली वर्दी में थे, बढ़ रहा था।

जब नीचे की ओर से छः सीढ़ियाँ शेष रह गयीं, तब वह रुक गया और बोला—“मैं समझता हूँ कि आप लोग मुझे ही खोज रहे हैं।”

वे लोग कुछ आगे बढ़कर इकट्ठे हो गये थे और अशान्त-से उसको बिल्लियों की तरह ताक रहे थे। कप्तान बिना हिले-डुले खड़ा रहा। नवयुवक के प्रश्न पर उसने केवल अपना सिर हिला दिया और कहा—“हाँ।”

भूरी पोशाक वाले नवयुवक ने लड़की पर दृष्टि डाली और क्रोधित स्वर में बोला—“और इसका भी कोई कारण है कि तुम मेरी बहिन का अपमान करो ?”

यह सुन कर लड़की भूरी पोशाकवाले नवयुवक और नीली वर्दीवाले अधिकारी के बीच में आ गयी। “ओह ! नहीं, हैरी, नहीं। नहीं। उसका व्यवहार बड़ा अच्छा था। उसका व्यवहार बड़ा अच्छा था, हैरी। वास्तव में !”

नवयुवक शांत और सीधी तरह से आगे आता गया और उनके बीच में इतना फासला रह गया कि लड़की उन दोनों में से किसी को भी छू सकती थी। कप्तान अभी तक पहली सीढ़ी पर पैर रखे हुए खड़ा था। लड़की लगातार कहे जा रही थी—“ओह हैरी ! ओह हैरी !”

भूरी पोशाक वाले नवयुवक ने कप्तान की आँखों में सैनिकोचित कुटिलता से झाँका और फिर लड़की के एक कन्धे के ऊपर से और फिर दूसरे कन्धे के ऊपर से झाँक कर कहा—“तुम्हारे पास हथियार हैं और तुम घायल भी नहीं हो और मेरे पास न तो हथियार ही है और मैं घायल भी हूँ, लेकिन . . .।”

कप्तान ने पीछे हटकर अपनी कटार म्यान में रख ली। दोनों की आँखें आग उगल रही थीं, लेकिन कप्तान फिर भी गम्भीर था। उसने कहा—“तुमको गलतफहमी हुई है। कोई कारण नहीं कि तुम”

“तुम झूठ बोलते हो।”

केवल कप्तान और भूरी पोशाकवाले नवयुवक को छोड़ कर अन्य सभी को जैसे बिजली छू गयी। ये शब्द वातावरण में टूटे हुए शीशे की भाँति बज

उठे, परन्तु कोई कुछ बोला नहीं।

कप्तान ने अपने गले को साफ किया। उसकी दृष्टि में असाधारण भयानकता और निर्दयता की झलक थी, परन्तु उसने शांत होकर कहा—“मैं समझता हूँ कि तुमने जो कुछ कहा है, वह तुम्हारा मतलब नहीं है।”

और तभी उसने अपनी बाँह पर छोटी-छोटी अंगुलियों का दबाव अनुभव किया। लड़की दीवार के सहारे झुकी जा रही थी, जैसे अपने-आप को संभाल न पा रही हो, लेकिन वे अंगुलियाँ... कप्तान ने अपनी बाँह को स्थिर रहने दिया। लड़की बुदबुदायी—“ओह, हैरी, नहीं। उसका व्यवहार बड़ा अच्छा था—वास्तव में।”

‘कारपोरल’ आगे बढ़ते-बढ़ते एक प्रकार से भूरी पोशाकवाले नवयुवक के सामने आ गया था, क्योंकि उसने कप्तान की बाँह पर उन अंगुलियों को देख लिया था और वह जानता था कि ऐसी दशा में बड़े-बड़े बलिष्ठ व्यक्ति भी हाथ या पैर नहीं हिला पाते।

नवयुवक अकस्मात् ही कमजोर दिखने लगा था। उसने लम्बी साँस ली और छड़ के सहारे झूल गया। वह कप्तान की ओर कुटिलता से ताक रहा था और अपनी पूरी इच्छा-शक्ति के साथ कमजोरी पर काबू पाने की कोशिश कर रहा था। ‘कारपोरल’ ने स्पष्टता के साथ उससे कहा—“मूर्ख मत बनो।” सुनकर वह नवयुवक उसकी ओर इतनी तीव्रता के साथ घूमा कि ‘कारपोरल’ ने उस बालक की तरह, जो घूँसा खाने से बचना चाहता है, अपनी बाँह आगे कर दी।

लड़की ने कप्तान से निवेदन किया—“तुम उससे कुछ कहना नहीं, क्या तुम कहोगे? वह यह नहीं जानता कि वह कह क्या रहा है। तुम देख रहे हो कि वह घायल है। तुम उसकी बात का बुरा मत मानो।”

“मैं उसे छुँगा भी नहीं।”—कप्तान ने असाधारण उत्साह के साथ कहा—“तुम उसकी चिंता न करो। मैं उससे कुछ न कहूँगा।”

तब उसने उसकी ओर देखा और लड़की ने शीघ्रता के साथ अपनी अंगुलियाँ उसकी बाँह पर से हटा लीं।

‘कारपोरल’ ने सीढ़ियों के छोर की ओर ध्यान देते हुए, बिना आश्चर्य प्रकट किये कहा—“उनमें से एक और आ रहा है।”

एक बुढ़ा बड़ी शीघ्रता के साथ नीचे की ओर आ रहा था। उसने जंगली-पने से बेंत को हवा में घुमाया—“चोरो, मेरे मकान से बाहर निकल जाओ।

बाहर निकल जाओ; तुम में से एक भी देहली को पार न कर पायेगा।”

“बाहर निकल जाओ।”—उसने क्रोध में अपने सिर को कई बार हिलाया। वास्तव में ही उसका इरादा उन लोगों पर आक्रमण करने का था।

और तब यह हुआ कि वह जवान लड़की उस बलिष्ठ कप्तान को, जो हथियारों से सुसज्जित था और जिसके साथ उसके आठ साथी थे, एक बुढ़े आदमी के आक्रमण से और वह भी बेंत द्वारा, बचाने के लिए बीच में आ गयी।

कप्तान लज्जा के मारे लाल हो उठा। वह बड़ा भयानक और थका हुआ लगने लगा। लड़की के प्रयत्नों के उपरांत भी वह बुढ़े के सामने आ गया।

“देखिये !”—उसने रोब के साथ कहा—“हम यहाँ इसलिए आये हैं कि दूर पर जंगल में हम युद्ध कर रहे थे और हमने यह अनुमान लगाया कि कुछ शत्रु यहाँ पर आ छिपे होंगे, विशेष रूप से तब, जब कि हमने खिड़की पर भूरे रंग की आस्तीन देखी, लेकिन यह नवयुवक घायल है और मुझे उससे कुछ भी नहीं कहना है। मैं यहाँ तक मानने को तैयार हूँ कि अब और इस जैसे यहाँ नहीं हैं। हम तुम्हारे इस भद्दे मकान को उसी दशा में छोड़कर चले जायेंगे, जिस दशा में पाया था। और हम तुम्हारे जैसे चोर और उचक्के भी नहीं हैं।”

बुढ़ा केवल चीखा—“अरे मेरे पास न तो गाय है, न सूअर है और न मुर्गियाँ हैं। तुम्हारे सैनिकों ने जो कुछ वे चुरा सके, चुरा लिया। यहाँ तक कि उन्होंने जलाने के लिए मेरी चहारदीवारी तक को तोड़ डाला। आज दोपहर को तुम्हारी कुछ गोलियों ने मेरी खिड़की के शीशों को तोड़ डाला।”

लड़की कहे जा रही थी—“बाबा, बाबा।”

कप्तान ने लड़की की ओर देखा। लड़की ने बुढ़े व्यक्ति के कन्धे की परछाई से उसकी दृष्टि का उत्तर दिया। क्षण भर तक लड़की का चेहरा देखने के बाद कप्तान ने कहा—“अच्छा अब हम लोग चले जायेंगे।” और वह द्वार की ओर मुड़ गया; साथ ही उसके अन्य साथी भी।

तभी बाहर से सीढ़ियों पर दौड़ने और चिल्लाने की आवाज सुनायी दी। द्वार झूलकर एक साथ खुल गया और तमाम नीली-नीली बर्दियाँ ही दिखायी देने लगीं। ये लोग लेफ्टिनेंट के सरंक्षण में थे। “अरे। तुम यहाँ हो।”—उसने चीखकर कहा, वह हाँफ भी रहा था—“हमने समझा... ओह, तनिक लड़की को तो देखो।”

कप्तान ने तेजी के साथ कहा—“मुँह बंद करो, बेवकूफ।”

धीरे-धीरे सभी लोग थम गये। बाहर अभी तक टापों की धीमी आवाज

सुनायी दे रही थी।

“तुमने घोड़ों को लाने की आज्ञा दी थी?”— कप्तान ने पूछा।

“हाँ, हमने सोचा.....”

“अच्छी बात है, अब हमको यहाँ से चल देना चाहिए।”—कप्तान ने बीच में ही चिढ़ कर कहा।

आदमी बाहर खुली हवा में निकलने लगे। वह भूरी पोशाकवाला नवयुवक अभी तक छड़ के सहारे झूल-सा रहा था। अब वह धीरे-धीरे दूसरी मंजिल की ओर जाने लगा था। बुढ़ा अपने आप ही ‘कारपोरल’ से बातें कर रहा था।

“यहाँ एक भी मुर्गी नहीं है।”— वह चीखा।

“लेकिन मैंने तुम्हारी मुर्गियाँ नहीं लीं। क्या ली थीं?”

“नहीं, हो सकता है कि तुमने न ली हों, लेकिन.....”

कप्तान ने ‘हाल’ को पार किया और लड़की के सामने अपराधी की तरह खड़ा हो गया। “तुम मुझ से नाराज तो नहीं हो? बताओ!”— उसने डरते हुए पूछा।

“नहीं”— वह बोली। फिर सकुचाते हुए उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया—“तुमने अच्छा व्यवहार किया। और मैं.....बड़ी अहसानमंद हूँ।”

कप्तान ने उसका हाथ थाम लिया और तब वह शर्मिदा हो उठा, क्योंकि परिस्थिति के अनुसार वह एक भी वाक्य न कह पाया।

लड़की ने भी कुछ समय तक उस हाथ की ओर ध्यान दिया।

तभी कप्तान ने हाथ ढीला छोड़ दिया क्योंकि उसे कुछ भी कहे बिना हाथ का थामे रहना अच्छा नहीं लगा। अंत में बड़ी कोशिश के बाद उसने कहा—“अब मैं तुम्हें भयभीत करने या दुःख देने के अतिरिक्त और कोई काम करूँगा।

उसके ललाट पर पसीना झलक रहा था और वह अपनी मैली वर्दी और धूल से भरे चेहरे को छिपाने का प्रयास भी करना चाह रहा था।

उसने कहा—“मुझे खुशी है कि कोई और न होकर तुम ही हुए, अन्यथा हैरी भाई और बाबा को जरूर ही चोट पहुँचती।”

कप्तान बोला—“मैं भला उन्हें चोट क्यों पहुँचाता?”

फिर थोड़ी देर शांति रही।

“अच्छा, विदा!”— अंत में उसने कहा।

“विदा!”

कप्तान बुड्डे के पास से, जो अभी तक 'कारपारल' की आकृति मात्र को ही गालियाँ दे रहा था, गुजरा और द्वार की ओर चल दिया। उसने पीछे मुड़ कर देखा। वह अभी तक उसकी ओर ही निहार रही थी।

बिगुल बजने पर सवार अपने-अपने घोड़ों पर चढ़ गये। लेफ्टिनेंट ने प्रथम सार्जेंट से पूछा—“विलियम्स, वे पहले भी कभी मिले थे?”

“मैं नहीं जानता।”

“अच्छा, कुछ.....”

कप्तान ने एक खिड़की का परदा हिलते हुए देखा। अपना स्थान छोड़कर वह दल के आगे आ गया और घोड़े को फूलों की दो क्यारियों के बीच में ले गया।

“अच्छा विदा!”

उन्होंने अपने हाथ हिलाये।

वह कुछ कहना चाहता था और उसके विचार में वह बड़ी मंहत्वपूर्ण बात थी, लेकिन वह कह नहीं पा रहा था। उसने वीरतापूर्वक संघर्ष किया। घोड़े ने भी कंधे से ऊपर उठ कर लड़की को देखा।

कप्तान ने एक देवदार को गौर से देखा। लड़की ने खिड़की के नीचे वाली घास को देखा। कप्तान ने भरे गले से कहा—“मैं नहीं समझता... मैं नहीं समझता....कि....अब...मैं तुम्हें कभी देख सकूँगा!”

उसने उसकी ओर भयभीत दृष्टि से देखा और खिड़की में पीछे की ओर हट गयी। कप्तान ने अपने इस प्रश्न का उचित स्वागत होने की बात सोची थी। उसने लड़की की ओर याचनापूर्ण दृष्टि से देखा।

लड़की ने कहा—“नहीं, मैं नहीं समझती हूँ कि हम मिल सकेंगे।”

“कभी नहीं?”

“नहीं, यह असम्भव है। तुम... तुम... अमरीकी हो?”

“ओह, मैं यह जानता हूँ, लेकिन...”—उसने आगे कहा—“... “किसी न किसी दिन तो जरूर युद्ध बन्द हो जायेगा। शायद हम मिल सकें।” उसने लक्ष्य किया कि लड़की दुबारा छाया में हो गयी थी। इसलिए उसने कहा—“अच्छा, अलविदा।”

जब उसने लड़की की अंगुलियों को पकड़ा, तब उसने अपना सिर झुका लिया। कप्तान ने उसके गालों और गर्दन पर लज्जा की लहर दौड़ती हुई अनुभव की।

“क्या मैं तुम्हें दुबारा न देख सकूँगा?”

उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

“कभी नहीं?”— कप्तान ने दुहराया।

लम्बे समय के बाद एक हलकी आवाज सुनायी दी—“कभी, जब पड़ोस में सैनिक टुकड़ियाँ न होंगी... बाबा को इसमें कोई एतराज नहीं होगा कि दोपहर को मैं उस दूरस्थ बलूत के वृक्ष तक चली जाऊँ।”

कप्तान की पकड़ बड़ी कड़ी थी क्योंकि तभी लड़की के मुँह से आह निकल गयी और उसने अपनी अंगुलियों की तरफ इस तरह देखा जैसे उसे उनके टुकड़े हो जाने की आशा थी। कप्तान चला गया।

घोड़े ने फूलों की क्यारी को लांघ लिया और वे पूरी गति पर आये ही थे कि लड़की बुरी तरह चीख उठी।

कप्तान ने तेजी के साथ घोड़े की लगाम खींच ली और लौटते में एक क्यारी में होकर चला गया।

लड़की ने अपनी मुट्ठियों को कस कर बाँध रखा था। उसने उन्मत्त की भाँति कप्तान की ओर देखा—“ओह। उस पर विश्वास मत करो। मैं उस पुराने बलूत के पेड़ तक कभी नहीं गयी। वास्तव में कभी नहीं। मैं वहाँ कभी कभी... कभी नहीं जाती।”

घोड़े की गर्दन पर लगाम का तनाव कम हो गया। कप्तान का शरीर शिथिल हो गया। निराशा और गहन अन्धकार के बीच उसने उस ओर देखा जहाँ सुरमई आकाश काले हरे जंगल की पंक्ति से मिल रहा था। बड़ी देर से रुकी हुई वर्षा पट्-पट् करती हुई गिरने लगी और वहाँ शांति छा गयी।

अन्त में एक धीमे स्वर ने कहा—“हाँ, मैं कभी... मैं कभी... शायद ... लेकिन बस एक बार... दोपहर तक उस पुराने बलूत के वृक्ष तक जा सकूँ।”

मृत्यु और बालक

यह स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि पहाड़ी मार्ग से जा रहे वे किसान अपने तीव्र भय में गिनने की क्षमता भी खो बैठे थे। पशुओं और बड़े-बड़े उन गोल गठ्ठरों में तीन के जूथ भी उन्हें दो ही दीख पड़ रहे थे। मनुष्यों का यह भूरा मटमैला प्रवाह जान-माल की निरन्तर क्षति के साथ आगे बढ़ता जा रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि भय जैसे एक नदी हो और यह काफिला उसकी बाढ़ में फंस गया हो। आदमी जानवरों से और जानवर आदमियों से टकरा रहे थे। सब ऐसे निरुपाय थे जैसे वे लट्ठे, जो परस्पर टकराते और आवाजें करते हुए जंगली प्रदेश के जलमार्गों से बहते जा रहे थे।

जहाँ भूमि के समस्त मोह-बंधन विच्छिन्न करके यह एक पूरी-की-पूरी मानवता एक दिशा-विशेष में भाग रही थी, वहाँ एक नवयुवक भी था, जो आसपास की भीड़ से बचता हुआ एक तरफ तेजी से चल रहा था। अपने साथ ही प्रत्येक वस्तु को वह अशांति और करुणा की दृष्टि से देखता जा रहा था। कभी वह उन प्रलापी भगोड़ों को धिक्कारता-फटकारता, कभी वह इस समाज के अविचलित व्यक्तियों को घूरता-निहारता। यहाँ भाग रहा मानव-समाज उसे ऐसा लग रहा था, मानो वे सब उन पथरों की तरह हों, जो पहाड़ी से नीचे लुढ़क रहे थे। उसकी करुणापूर्ण दृष्टि में विस्मय और भय भी प्रायः प्रस्फुटित हो उठता था।

एक बार जब उसने पीछे देखा, तब उसे पैदल सेना का एक वर्दीधारी लेफ्टिनेंट नजर आया। वह भी उसी रास्ते से जा रहा था। वह रुककर उसकी प्रतीक्षा करने लगा। उसकी अवचेतना में सहसा यह इच्छा जाग्रत हो उठी कि जो भावनाएँ अभी तक आँखों में ही व्यक्त हो रही थीं, उन्हें वह शब्दों में प्रकट करे। निकट आने पर वह उस अफसर से धारावाहिक फ्रेंच भाषा में अपनी बाहों को इधर-उधर फेंकता हुआ बोलने लगा और इस बातचीत के वक्त वह अपनी उंगली से नाटकीय संकेत करता हुआ यह कहता भी जा रहा था—“आह! यह सब कितना निर्मम है, कितना निष्ठुर! अत्यधिक निष्करण! मैं इसे इतना बुरा नहीं समझता था। सचमुच, मेरी धारणा ऐसी नहीं थी। भगवान् ही दया करे। महाशय, मैं यूनानी हूँ अथवा मैं यों कहूँ कि मेरे पिता यूनानी थे। मैं यहाँ युद्ध में शरीक होने नहीं आया हूँ। दरअसल,

मैं तो पत्र-संवाददाता हूँ। मुझे इटालियन पत्र के लिए लिखना था। मेरी शिक्षा इटली में हुई थी। मेरी सारी ज़िंदगी इटली में गुज़री है, स्कूलों और विश्व-विद्यालयों में। युद्ध के बारे में मेरी जानकारी कुछ भी नहीं। मैं तो एक विद्यार्थी था। मेरे पिता यूनानी थे, इसलिए यहाँ मैं आया था और उन्हीं के कारण यूनान के बारे में मैं सोचने लगा। मुझे यूनान से प्रेम है, लेकिन मैंने स्वप्न में भी.....”।

उस अफसर का दृष्टिकोण इस भाषण को सुनकर एकदम बदल गया। उसने कहा—“हाँ, भाई ठीक कहते हो। ये गरीब लोग, आह! बेचारे! ये निरीह जीवन! भगवान ही इनकी रक्षा करे।” उस नवयुवक ने फिर कहा—“सचमुच, मुझे तो कल्पना तक नहीं थी कि ऐसा भी होगा। यह सब तो बड़ा निर्मम है। उफ! बड़ा निष्ठुर! मेरी इच्छा है कि मैं अब सिपाही बनूँ। मैं अब लड़ना चाहता हूँ। मैं अपनी पितृभूमि के लिए युद्ध करना चाहता हूँ।” उसने एक तीव्र संकेत उत्तर-पश्चिम की तरफ किया।

वह अफसर भी जवान था, किंतु वह मन से दृढ़ और संतुलित था। वह लाल फौजी कालर पहने हुए था, जिसमें चांदी का सितारा जड़ा हुआ था और उसकी मुद्रा में काफी आत्मविश्वास एवं गहरी एकाग्रता थी। स्वभाव से ही वह ऐसा व्यक्ति था, जो पराई निन्दा-स्तुति का खयाल किये बिना, जो सामने आये, उसको निभाना अपना कर्तव्य समझता था। उसके कपड़ों में धूल लगी हुई थी। दरअसल, वे धूल में ऐसे सन गये थे कि गर्द के भीतर शोले की तरह उसका वह लाल कालर ही चमकता था। अपने साथी की तेज चिल्लाहट सुनकर वह मानो मन-ही-मन मुसकराया, मगर साथ ही उसकी नजर सामने भी सधी हुई थी।

अकस्मात् तोप के गोलों के विस्फोट तेज हो गये और ऐसे मिल-जुल गये कि उन्हें गिनना मुश्किल हो गया और इस गड़बड़ में बंदूकों की आवाज़ें भी धीरे-धीरे आने लगीं। शीघ्र ही ये आवाज़ें चिंताप्रद स्थिति पैदा करने लगीं। बड़ी अजीब हालत थी। इस कभी धीमी और कभी तेज गोलंदाजी से सबका मन विक्षुब्ध-सा ही हो रहा था। उस लेफ्टिनेंट ने अपनी उंगली उठायी और कुछ इंगित किया। ब्रह्म परेशान स्वर में बोला, इस तरह मानो इस सारे शोरगुल की जिम्मेदारी उस संवाददाता पर हो। उसने कहा—“देखिये, यदि आप युद्ध में जाना चाहते हैं, तो वहाँ चले जाइये। मेरे खयाल में, इससे बढ़िया अवसर आपके लिए दूसरा नहीं आ सकता।”

संवाददाता अपने अंगूठों पर खड़ा हो गया और उसने विषादपूर्ण गर्व के साथ अपनी छाती ठोकी। उसने कहा—“हाँ, वहाँ युद्ध हो रहा है। मैं युद्ध में भाग लेना चाहता हूँ। मैं अपने को उस आग में झोंकूँगा। मैं एक यूनानी हूँ, यूनानी, जनाब ! सुनते हैं न आप ? मैं अपने देश के लिए लड़ना चाहता हूँ। आप युद्धस्थल का रास्ता जानते हैं। चलिये, मुझे वहाँ ले चलिये। मैं युद्ध में अपनी सेवाएँ अर्पण करना चाहता हूँ।” फिर सहसा उसने अपनी जेब से एक डिब्बी निकाली और उसमें से एक कार्ड निकाल कर आदरसहित अफसर को दिया। “मेरा नाम पेजा है।”— उसने सरलता से कहा।

सैनिक के चेहरे पर एक विचित्र मुसकान छिटक गयी। उस मुसकान में ग्लानि और गौरव का आभास था। उसने संवाददाता के अभिवादन का उत्तर देते हुए कहा— “बहुत अच्छा। यदि मेरी टुकड़ी बीच युद्ध में होगी, तो मुझे तुम्हारे साथ युद्ध में रहने में बड़ी खुशी होगी। यदि मेरी टुकड़ी लड़ाई के बीच में नहीं होगी, तो मैं तुम्हारे लिए दूसरा प्रबंध कर दूँगा।”

पेजा ने फिर अभिवादन किया, बड़ी चुस्ती से और उसे धन्यवाद दिया। मृत्यु के इस सामीप्य पर पहुँच उसे लगा कि लेफ्टिनेंट के स्वर से उसे पीड़ा पहुँची है। इस अनुभूति ने शीघ्र ही राई से पर्वत का रूप ले लिया। युद्ध का वह भीषण दर्दनाक दृश्य उसकी नजर में एक किरकिरी जैसा हो गया। वह उस लेफ्टिनेंट से उसके विचित्र व्यवहार का अर्थ जानना चाहता था। वह फिर एक विचित्र नाटकीयता के साथ झुका। लेफ्टिनेंट ने भी अभिवादन किया। तोप के गोलों में कौपती उस धरती पर उनके इस शिष्टाचार ने दोनों के मन के भीतर के किन्हीं अभावों को अवश्य पूरा कर दिया था, ऐसा प्रतीत हो रहा था।

इस बीच भागनेवाले व्यक्तियों की वह नदी क्षीण होती-होती इक्के-दुक्के व्यक्तियों तक ही सीमित रह गयी थी, जो कुछ बकते-झकते भागते जा रहे थे। अब वह सैनिक और संवाददाता एक पहाड़ी की चोटी पर आ गये थे। उनके सामने समुद्र-सा सुशांत एक हरा मैदान था। वह उत्तर की तरफ काफी लम्बा जाकर सफेद कुहरे में मिल गया था। इस मैदान में दो भूरे वृक्षविहीन पर्वतों पर काली-काली पंक्तियाँ थीं, जहाँ से धुँएँ के बादल उठ रहे थे। वह रोमांचकारी लड़ाई नहीं थी। कोई भी उसे बिना किसी भावुकता के देख सकता था, किंतु पेजा के लिए तो यह एक भीषण युद्ध ही था। वह आत्मगर्बित, चकित रुका। उसे अपने बचपन के वे सपने याद आये, जिनमें युद्ध की रौद्र विभीषिकाएँ वह

देखा करता था। प्रेम की शक्ति से भी वह परिचित था, किंतु युद्ध के सामने प्रेम तो एक कणमात्र था और हवा का वह झोंका जो उसकी पेशानी पर लगा, तो उसे प्रतीत हुआ, मानो उसके स्पर्श में चालीस हजार आदमियों का हृत्कम्पन हो।

उन लोगों की हताश आँखें देख पेजा का मन भर आया और उसके उद्गार निकल पड़े—“हे प्रभो !” फिर वह लेफ्टिनेंट की तरफ मुड़ा और बोला—“कितने निरीह हैं ये लोग. . . एकदम निरीह। क्या आप इनके लिए कुछ नहीं कर सकते ?”

लेफ्टिनेंट कुछ क्रुद्ध होकर बोला—“अगर आपके पास समय है, तो मेरे साथ चलिये। इस प्रकार करुणा में पिघलने का समय मेरे पास नहीं है।” पेजा ने तत्काल आज्ञा का पालन किया, पूरी विनम्रता के साथ। क्षण भर में उसके अहंकार का कुछ अंश तिरोहित हो गया और वह अपनी विनम्रता में ही यह अनुभव करने लगा कि यह सारा संसार उसके इस कृत्य को कितनी मान्यता दे रहा है। यह नर-संहार का रंगमंच तो धरती की अपरिहार्य आवश्यकताओं के कारण बना है। वस्तुतः कितना बड़ा कांड है यह। और फिर वह विचार करने लगा कि पेजा नाम के किसी एक व्यक्ति का अकस्मात् मिलन इस विराट संहार के अनुपात में क्या कोई मान्यता रखता है ?

लेफ्टिनेंट के साथ वह तेजी से अर्द्धचंद्राकार खंदकों की कतार के साथ-साथ चल रहा था और खंदक में सिपाही थे, जो बड़े शांत भाव से लेटे हुए चाय पीते थे। यद्यपि ये लोग लड़ने में संलग्न नहीं थे, तो भी पेजा को लगा कि वह बहुत ही शूरवीर व्यक्तियों के बीच से गुजर रहा है। शूरवीर नहीं तो क्या ? उसने मन में सोचा, मृत्यु की इस भीषण विभीषिका में भी ये सैनिक कितनी शांति और सावधानी के साथ चाय पीते जा रहे हैं। निश्चित है कि सामना होते-होते वहाँ पर भयानक हमले होंगे।

वह लेफ्टिनेंट बड़ी तेजी से चलता जा रहा था। पेजा को भी बरबस उसके साथ कदम मिलाने पड़ रहे थे। जोर से तोपों की भयानक आवाज पेजा के कानों में आ रही थी। ये तोपें सामने दायीं ओर की पहाड़ी पर खड़ी हुई थीं। कुछ देर चलने के बाद वे अकस्मात् एक जंगल में घुसे। घास की लम्बी-लम्बी ढलानों में हरियाली से लदे हुए पेड़ अपनी शाखाएँ फैलाये हुए थे। एक हल्की-हल्की बयार उन शाखाओं को क्रन्दित करती हुई गार बह जाती थी।

कुछ और आगे बढ़ने पर वे उस स्थल पर आये, जहाँ तुर्कों के गोले बरस

रहे थे। हवा में विस्फोटों की आवाजें तथा गोले यहाँ-वहाँ जाते नजर आ रहे थे। पेजा की दृष्टि में ये गोले अभी तक उन बमों की तरह से थे, जो उस सेना के मित्र अफसरों ने लड़ाई के जहाज पर बताये थे।

ये गोले उसके सामने उस कारखाने की याद जगा गये, जिसमें आग की बड़ी-बड़ी भट्ठियाँ चल रही थीं और धुएँ से. चेहरे व आदमी जल रहे थे। उसे खयाल आया कि यदि वह वहाँ मर जाय, तो क्या उसकी स्थिति भी उस लोहे के टुकड़े की तरह न होगी, जो अकस्मात् आग की इस भट्ठी में गिर गया है।

- २ -

पहाड़ पर एक बालक खेल रहा था। पास मैदान में जो लड़ाई चल रही थी, उसका कोई अहसास उसे नहीं था। उसके पीछे उसके भाग गये माँ-बाप की जीर्ण-शीर्ण झोपड़ी थी। इस झोपड़ी में अब एक गाय खड़ी थी, जो बड़ी करुणापूर्ण, गंभीर दृष्टि से अंधेरे के आरपार झाँक रही थी। बालक लकड़ियों को पकड़ता और पत्थरों के छोटे-बड़े खिलवाड़ बनाता हुआ इधर-उधर दौड़ा। वे लकड़ियाँ उसके लिए कभी टट्टू, कभी गाय, कभी कुत्ते थीं और वे पत्थर भेड़ें। वह एक बड़ी खेती और पशु-पालन के व्यवसाय का संचालन कर रहा था। वह अपने इस क्रीड़ा-प्रमोद में इतना लीन था कि चार मील दूर जो युद्ध चल रहा था, उस पर ध्यान देने की उसे कोई आवश्यकता नहीं थी। उसे युद्ध की ध्वनि ऐसी लग रही थी, मानो चट्टानों से समुद्र की लहरें टकरा रही हों। कभी-कभी तोप के गोले की तेज आवाज उसे चौंका देती थी और वह प्रश्नभरी दृष्टि से युद्ध की तरफ देख उठता था और ऐसे वक्त उसके हाथों में एक लकड़ी होती, जिसे वह कुत्ता बनाकर अपनी भेड़ों के पीछे भेजने का उपक्रम करने ही वाला था। मैदान में तांडव करती मृत्यु के प्रति उसकी अचलता ऐसी ही अपराजेय थी, जैसी उस पर्वत की, जिस पर वह बैठा था।

यह स्पष्ट था कि माँ-बाप भय की ऐसी तेज आँधी में बह गये थे कि वे घर से भागते वक्त अपने पहले बच्चे को भी भूल गये थे। झोपड़ी बिल्कुल साफ थी। गाय ने भी अपने मालिकों के आवास पर किसी प्रकार की गंदगी नहीं फैलायी थी। इस धुएँ के रंग के गंधमय घर में एक चहकती चिड़िया के अतिरिक्त और कोई निवासी नहीं था। दरअसल, इन भागे हुए लोगों पर भय अपनी

पूरी कटुता में हावी हुआ था। छोटी-छोटी बातें पहाड़ हो गयी थीं और बड़ी-बड़ी बातें एक दम नगण्य। कोट को भूल कर आदमी को बटन की याद रह गयी थी, लोगों को काफी के ट्रे-कप की याद आ जाती या अपने तमाकू के पाइप को सुरक्षित रखने की फिक्र पड़ती, मगर अपने बच्चे की याद उन्हें न आती।

बालक ने एक बार मैदान की ओर देखा और उसे कुछ व्यक्ति मैदान के पार जोर के साथ भागते हुए दिखायी दिये। उसने लोगों को जिद्दी पशुओं का इस प्रकार पीछा करते हुए देखा था और उसके दिमाग में तत्काल यह बात आयी कि यह एक पुरुषोचित बात है तथा वह इसे अपने खेल में शामिल करेगा। फलतः वह क्रुद्ध भाव से अपनी पत्थर की भेड़ों की ओर दौड़ा। वह एक डंडा घुमा रहा था और भेड़िहारों की भाँति चिल्ला रहा था। वह मैदान में लड़ते हुए सैनिकों से ढंग सीखने के लिए बहुधा रुक जाया करता था। मनुष्यों के व्यवसाय, अपने पिता के परम्परागत और प्रतिष्ठित जीविकोपार्जन भेड़-पालन के भले सिद्धान्त के लिए वह सैनिकों की जिस किसी गतिविधि को तर्क-संगत समझता था, उसका वह एक अंश तक अनुकरण करता था।

- ३ -

पेजा ने महसूस किया, मानो वह धरती पर नहीं सागर की गहराई में विचरता हुआ एक मृत व्यक्ति है! सामने दिखायी देने वाले खेत, लता-कुञ्ज, घास-पात, व्यक्तियों के चेहरे और उनकी आवाजें—सब पेजा को मानों अपने साथ ही सागर तल की चीजें प्रतीत हो रही थीं। युद्ध, जाति का यह विचित्र कार्य, उसके समक्ष एक ऐसा दृश्य उपस्थित कर रहा था, जो जानी-पहचानी वस्तुओं से भरा हुआ था—और ये जानी-पहचानी वस्तुएँ अपनी समानता को शांत, निर्भीक भाव से धारण किये हुए थीं। उसे महान् आश्चर्य हुआ।

रास्ता दो यूनानी रक्षा-पंक्तियों द्वारा निर्मित कोण के शीर्ष भाग की ओर जाता हुआ प्रतीत हो रहा था, जहाँ घायल और चोट खाये हुए लोग पड़े कराह रहे थे; लेकिन किसी के मुँह पर भय के चिन्ह नहीं थे। बड़ी शांति से वे इधर उधर आ-जा रहे या गप्पें लगा रहे थे। पेजा उनका वर्णन करना चाहता था। शायद युद्ध के बीच उनकी सारी शक्तियों का ह्रास हो चुका था और वे उत्तेजना की अंतिम सीमा पार कर वापस आ चुके थे। उसने उन बातों को भूलने के लिए, उनसे मुक्ति पाने के लिए सिगरेट जलायी और

शीघ्रता से वह एक चाय-घर की ओर बढ़ गया। संसार खोखला, तत्व-हीन-सा प्रतीत होने लगा।

यह स्थिति एक दूसरे ही प्रकार की थी, किन्तु उसने अपने विचार में स्वीकार किया कि इन बन्दूक-हीन यात्रियों में से अनेक ने उन्हीं कारणों से ऐसा किया होगा। इन लोगों ने भी ऐसे ही स्वप्न देखे होंगे और उस समय तक देखते रहे होंगे, जब तक कि स्वप्न देखने की क्षमता ही समाप्त न हो गयी होगी। वह इनकी ओर देखता हुआ सिगरेट का धुँआँ उड़ाता आगे बढ़ा। बीच ही में एक सैनिक ने क्रोध से उसे इस तरह रोक लिया, जैसे वह इन स्वप्नों को पुष्ट करना चाहता हो और विनीत स्वरों में उसने एक दियासलाई की माँग की। पेजा ने आदमी को घूरा, फिर कागज में लिपटे हुये तम्बाखू को जलाया और मजे में धुँआँ उड़ाता चल पड़ा।

अब पेजा घायल व्यक्तियों को देख कर दुःखी नहीं हो रहा था। वह जान गया था कि कष्ट की एक शाब्दिक सीमा होती है और उस सीमा को पार करने पर संवेदना दूसरा रूप धारण कर लेती है। वह इन बातों पर सोच कर अपने को सौभाग्यशाली समझने लगा। जैसे ही वह आँधे गिरे हुए लोगों के बीच से गुजर रहा था, उसने एकबारगी ही चेतावनी के स्वर सुने। उसकी सारी दृष्टि स्वयं पर केन्द्रित हो गयी और वह इन टूटे-फूटे खिलौनों की तरह पड़े घायल लोगों को भूल गया।

लेफ्टिनेंट एकाएक रुक कर बोला—“देखो, मेरी ड्यूटी दूसरी ओर है, मुझे उधर जाना है। अगर तुम को लड़ना है, तो तुम्हें आगे जाना पड़ेगा और मुठभेड़ में खड़ी पहली पंक्ति का कोई भी अफसर तुमको लड़ने का अवसर दे देगा।” यह कहते हुए उसने शिष्टाचार स्वरूप अपनी टोपी ऊँची की। पेजा ने भी अपना सफेद टोप उठाया। दोनों अनजान व्यक्तियों ने एक-दूसरे को धन्यवाद दिया और झुकते हुए एक-दूसरे को शिष्ट नेत्रों से देखा।

लेफ्टिनेंट दूर खेतों की ओर शांति से चला गया। एक क्षण के लिए पेजा के मन में यह बात उठी कि भागना विश्वासघात होगा। अफसर ने उसको मंजधार में असहाय अवस्था में छोड़ दिया है। एक बार तो उसके मन में आया कि वह अफसर पर जोर से चीख पड़े।

एक क्षण के लिए उसे अनुभव हुआ, जैसे वह सारे युद्ध की विभीषिकाओं के नीचे से गुजर रहा है, बिना किसी निर्देशक के; अकेला न जाने कहाँ। उसने फिर अनुभव किया, जैसे वह एक तंग कोठरी में फुदक रहा हो। उसके भाव

इस बात को स्पष्ट कर रहे थे कि हर-एक को युद्ध का प्रारम्भ देखना चाहिए क्योंकि उस समय युद्ध में प्रवेश करना बहुत कठिन होता है जब कि वह अपनी चरम सीमा पर चल रहा हो। पेड़ों के नीचे से टुकड़ी गुजर रही थी। उसने गुजरते हुए सैनिकों से प्रबल प्रश्न पूछे। कुछ ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया और कुछ दुःख से सिर हिला कर चले गये। वे केवल इतना ही जानते थे कि युद्ध एक बहुत कठिन कार्य है। यदि कभी वे बात करते थे, तो केवल इस बात की कि वे बखूबी लड़े। वे यह नहीं जान पाते थे कि फौज आगे बढ़ने जा रही है या ठहरेगी, या पीछे लौटेगी। वे सब शान्त, थके हुए थे।

एक लम्बी नुकीली गोली हवा में बिजली की चमक की तरह आयी और एक पेड़ में आ कर टकरा गयी। पेजा ने घूम कर देखा। पेड़ अभी तक सिर से पैर तक झनझना कर कांप रहा था। वह छेद इस तरह से बना था, जैसे वह दुःख का प्रदर्शन कर रहा हो, गहरा आश्चर्यजनक दुःख। जैसे-जैसे वह घाटी से बढ़ा, गोलियों की आवाजें और हवा में चलने के सी-सी करते हुए स्वर बढ़ने लगे। सारी भूमि जंगलीपन, व्यथा और भयानकता से बरसती हुई गोलियों का शिकार हो रही थी।

ऊँची चोटी के बायीं ओर से बराबर गोले आ-आ कर फट रहे थे और सामने तोपखाने से आग की तरह गोलियाँ बरस रही थीं। पेजा ने अनुभव किया कि उसका अहम विचित्र तरह की चालाकी खेल कर उसे इस स्थिति में आगे बढ़ा रहा है, जो अज्ञात, एकाकी और आश्चर्यजनक है। पेजा ने अपने टोप के नुकीले भाग को माथे पर थोड़ा झुकाया। वह लेफ्टिनेंट से घृणा करता था। उसने निश्चय किया कि वह आने वाले समय में कभी किसी सामाजिक समारोह या स्थल पर उससे बदला लेगा। उसे बहुत देर तक यह बात याद नहीं आयी कि वह मुख्यतः इस कारण लड़ाई में जा रहा था कि पहले एक समय एक व्यक्ति-विशेष मुस्कराया था।

- ४ -

सड़क छोटी-सी पहाड़ी के चारों ओर घूम कर नीचे उतर रही थी और इसी पहाड़ी पर एक ओर बन्दूकचियों की एक टुकड़ी गोलियों की वर्षा कर रही थी। ऊँचे सुरक्षित स्थल पर खच्चर अपने बोझ से लदे घास चर रहे थे। टेढ़े रास्ते से पेजा पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगा। उसने अनुभव किया कि उसके

हृदय की गति बढ़ गयी है। एक बार इस चोटी पर वह सब-कुछ प्रत्यक्ष देखेगा। वह इस रहस्यपूर्ण भावना के साथ जल्दी-जल्दी चलने लगा कि वह इस प्रकार अपनी उपस्थिति को युद्ध के पुनः बड़े पैमाने पर प्रारम्भ होने का एक संकेत नहीं बनने देगा। वह इस रसपूर्ण भावना के साथ जल्दी-जल्दी चलने लगा।

सैनिक खच्चरों को देख रहे थे और प्रतीत होता था कि वे किसी भी महान वस्तु से प्रभावित नहीं थे। उनमें से दो सैनिक अगल-बगल बैठकर आनन्द से बातें कर रहे थे। तीसरा लेटा हुआ नीले आकाश में आँखें गड़ा कर मन की कल्पना में तल्लीन था। वर्दी पहने और बंदूकों के बावजूद वे शांति से ऐसे बातें कर रहे थे, जैसे छात्रावास में रह रहे हों। फिर भी रह-रह कर गोलियों सनसना कर पहाड़ की चोटी पार करती हुई घाटी की तरफ बढ़ जातीं, जहाँ पेड़ थे, फूल थे और घास थी। पेजा ने गोलियों को देखा, उनकी आवाजें सुनीं और फिर शांति से चरते हुए खच्चरों को देख कर उसने पुनः विश्वास का अनुभव किया। वे युद्ध की परिस्थिति को इस तरह से स्वीकार कर चुके थे, जैसे एक नाविक तम्बाकू की दूकान-पर आराम से गद्दी पर बैठ जाता है या यह कुछ इस तरह का था जैसे खेतिहर लड़का समुद्र-यात्रा के लिए चल पड़ता है और सारी सामुद्रिक परिस्थितियों को तुरंत ही स्वीकार कर लेता है।

जब उसकी आँखें उस पठार की परिधि से ऊपर उठीं, तब उसने देखा कि कुछ तोपची अफसर बातों में व्यस्त थे। वे एकदम से घूमे और प्रश्न-सूचक दृष्टि से उसकी ओर देखने लगे। एक क्षण बाद ही अगली सैनिक टुकड़ी की पंक्ति, जो दूर खाई की तरफ थी, घूमकर उसकी ओर देखने लगी। पेजा अफसरों की ओर देख कर झुका। उसने शांति से विनम्रता प्रदर्शित की थी और उस पर वह स्वयं चकित था, उसकी साँस रुक-रुक कर चल रही थी और उत्तेजना में वह कठिनाई अनुभव कर रहा था। वह अपने को नशे की अवस्था में अनुभव कर रहा था और कांपते हाथ-पैरों को सामने खड़े हुए लोगों से छिपाना चाहता था। अफसरों ने भी अनदेखा किया, जैसे उनको इसका कोई ज्ञान नहीं था। वे लोग भी झुके। उनके झुकने पर पेजा ने तीन पंक्तियों में खड़ी फौज को देखा। पहली पंक्ति धुँएँ से आच्छादित थी। इस पहाड़ी के बायें ओर दूसरा बड़ा पहाड़ था, जहाँ से गोलों के चलने का मंद-मंद स्वर आ रहा था। उसकी चोटी सफेद धुँएँ से ढकी थी। पेजा ने पहली बार इस उठते हुए समुद्र के दर्शन किये।

उसने कुछ दूर से आता हुआ एक स्वर सुना—“श्रीमान् ! आप को क्या

चाहिए ?” वह घूमा और उसने एक नाटे, किन्तु चपल कप्तान को देखा और झुक कर कहा— “क्षमा कीजिये, क्या कहा आपने ?”

प्रत्युत्तर में अफसर भी झुका और ध्यान से नवागंतुक की ओर देखा । “क्या आप संवाददाता हैं ?”— उसने पूछा ।

पेजा ने अपना कार्ड बढ़ाया । “हाँ, मैं एक संवाददाता की स्थिति में आया हूँ ।”— उसने कहा—“लेकिन अब मेरे विचार बदल गये हैं । मैं आप की मदद करना चाहता हूँ । आप देखते हैं, मैं मदद करना चाहता हूँ...।”

“आप का आशय क्या है ?”— कप्तान ने कहा—“क्या आप यूनानी हैं ? क्या आप लड़ने के इच्छुक हैं ?”

“हाँ, मैं यूनानी हूँ और मैं लड़ना चाहता हूँ ।” पेजा की आवाज ने उसको स्वयं चकित कर दिया और उसने घमंड से सोचा, वह बड़ी कुशलता से पेश आ रहा है । एक दूसरी गोली हवा में मार्ग बनाती हुई आयी और जमीन के समानांतर निकल गयी, इस तरह जैसे वह कभी भी जमीन को नहीं छुएगी और आकाश में एक काली धारी खिंच गयी ।

“आह हा !”— जोरों से चीख कर हँसते हुए कप्तान ने कहा—“मैं नहीं जानता कि मैं तुम को अभी इस अवसर पर जगह दे सकूंगा या नहीं, लेकिन .” कहते हुए वह इधर-से-उधर बातें करते हुए पेजा के साथ-साथ घूमा । बातों के बीच उसने यूनानियों के युद्ध-विशेषज्ञों की चर्चा की तथा दूसरे अफसरों ने पेजा से युद्ध की राजनीतिक बातें कीं । बातों के बीच राजा, जर्मनी, इंग्लैंड, रूस जैसे बड़े-बड़े प्रतीकात्मक शब्द उनकी जिब्हा पर टँके रहते थे । “और एथेन्स के रहने वाले थे वे . . .”—बकवादी लोगों ने कहा । पेजा एक शस्त्र के बक्स पर बैठा आकाश में आँखें गड़ाये एक-के-बाद दूसरी गोलियों को आकाश में इस ओर से उस ओर जाते हुए देख रहा था ।

वे अफसर इस तरह के थे, जैसे वे किसी जंगल में हफ्तों से खो गये हों और किसी प्रकार के समाचार पाने के भूखे हों । वे एक-दूसरे से इस बात के लिए उलझ पड़े कि इस विषय में सर्विया का क्या मत है ? नहीं, नहीं; फ्रांस और रूस कभी इसे नहीं मानेंगे । पेजा सोच रहा था । इन गोलियों से किसी की हत्या नहीं हुई । युद्ध इतना खराब नहीं है । यह सब कुछ ऐसा ही है, जैसे वह किसी राजदूतावास के भूम्रपान-कक्ष में बैठा काफी पी रहा हो और बातचीत के बीच देशों के नाम लिये जा रहे हों ।

खाई के सैनिकों के बीच यह अफवाह चुपके-चुपके फैल गयी थी कि सफेद

टोप वाला कोई मशहूर अस्वारोही सेना का अफसर है, जो सेना को अपनी कीमती सलाहों से लाभ पहुँचाने आया है। उन लोगों ने अफसरों से घिरे इस व्यक्ति की ओर घूर कर देखा। पेजा ने उन लोगों की दृष्टि का तथा उनकी फुसफुसाहट का आशय लगाया कि उसका आगमन एक घटना है, एक महत्व की बात है।

अंत में उसने विचार किया कि वह भी कुछ भला काम कर सकता है। उसने पहाड़ के उस ओर देखा, जहाँ यूनानी फौज की टुकड़ी काम कर रही थी और उस ओर इशारा करते हुए कप्तान से कहा—“मैं अभी वहाँ जा कर लोगों का हाथ बँटाने का कार्य करना चाहता हूँ।” उसके मुख पर देश-भक्ति के भाव झलक आये। कप्तान ने चकित होकर कहा—“अभी कुछ क्षण में यहीं पर युद्ध शुरू हो जायगा; आप हमारे ही साथ रहें।” और अफसरों ने उसे अलग जाने से रोक दिया।

पेजा ने अनुभव किया कि वह अपनी उच्च देशभक्ति की भावनाओं को व्यक्त करता हुआ समझदार व्यक्तियों के एक रेगिस्तान में घूम रहा है। इन अफसरों ने उसकी घोषणाओं पर कोई ध्यान नहीं दिया। वे बहुत अधिक थके हुए थे और अपने विरोधियों से युद्ध कर रहे थे। वे उन आदमियों में से नहीं थे, जो हमेशा केवल बातें ही करते हैं।

पेजा को विश्वास था कि वे सब उसके साथ बड़ी नम्रता का व्यवहार कर रहे हैं और उसके अनुभवहीन होने की छूट उसे मिल गयी है। युद्ध की विभीषिका नम्रता में बदल गयी थी और पेजा सोच रहा था कि अभी तक के उसके विचार गलत थे। उनके मना करने पर भी उसने वीरतापूर्वक सब को अंतिम नमस्कार किया और सब से बिदा ले ली।

अंत में उसने देखा कि वे लोग अपने कार्य में, जिसे वे बहुत ही सुन्दर समझते हैं, बच्चों की तरह जुट गये हैं और निर्भय हो कर उसे पूरा करने में लगे हैं।

- ५ -

पैदल सेना के ऊँचे स्थान पर धीरे-धीरे चढ़ते हुए पेजा को एक ऐसे सैनिक से मिलकर विस्मय हुआ, जिसका आधा जबड़ा गोली से उड़ गया था। उसे सहारा दे कर उसके दो साथी गीली आँखों से सीढ़ियाँ उतर रहे थे। आदमी की छाती खून से लथपथ थी। अपने घाव को वह जिस कपड़े से दबाये हुए था,

उससे बूंद-बूंद कर रक्त मार्ग के पत्थरों पर चूता जाता था। उसने पेजा की तरफ एक क्षण के लिए घूर कर देखा। यह एक रहस्यमयी दृष्टि थी, जिसे पेजा कठिनाई से समझ सका। दृष्टि का यह आदान-प्रदान भयावह था। घायल सैनिक का वह हृदय-विदारक दृश्य देखते हुए भी वह आगे बढ़ा। सहायता देने वाले एक सहयोगी ने जोरों से चीख कर पुकारा—“इसकी मदद के लिए आओ, इस दुःख में साथ दो।” लेकिन पेजा की अंगुलियों ने विद्रोह किया। वह इस दृश्य से भय खा रहा था, उसको छूने का उसमें साहस नहीं था। वह उस काफिले के विरुद्ध जा रहा था—शीघ्रता से, तेजी से, छटपटाते हुए।

पहाड़ की चोटी पर वह एकदम से उस पंक्ति के बीच आ गया, जो मार करने में जुटी हुई थी। पहाड़ी तोपची की एक दूसरी टुकड़ी भी पास में थी, जो नीचे सामने के मैदान में मार कर रही थी। सामन कतार-की-कतार खाइयाँ थीं और जिनमें गोलीबारी करते हुए आदमी भरे थे। मैदान उतनी दूर तक फैला हुआ था, जहाँ तक आँख पहुँच सकती थीं और उसके आगे हरी घास का वह अथाह समुद्र था, जो नीले आकाश में जा कर समा जाता है और इनके बीच में दुश्मन की पंक्ति थी, पेड़ों का एक झुंड था, एक गाँव था और फैली हुई सड़कें थीं और उस बड़े चित्र में जो कुछ आ सकता था, सब दिखलायी पड़ रहा था। पहली पंक्ति धुँएँ के बादलों में समायी-सी लग रही थी; लेकिन दूर तक सब कुछ दिखायी पड़ रहा था। पेजा ने कभी नहीं सोचा था कि मनुष्य मनुष्य के लिए इतना भयानक हो सकता है और प्रकृति उसको इस बात की हर सुविधा प्रदान करती है कि वह अपने दुश्मन की कमजोरी को जान पाये, जिससे एक-दूसरे का वे विनाश कर सकें, अंत कर सकें। गोलाबारी पूर्ण वेग से हो रही थी और भयानक आवाज सारी घाटी में गूँज रही थीं। पेजा पीला पड़ गया था, उसकी साँस रुक गयी थी और वह अनुभव कर रहा था कि वह मानो एक ऊँचे खम्भे पर मानवता की अंतिम निशानी बन कर बैठ गया है। इसी बीच उसकी आँखों में गर्द पड़ गयी और उसने हमाल निकाल कर आँखें पोंछीं।

एक अफसर, जिसकी पतलून पर दो हरी धारियाँ थीं, तोपों के समूह के पीछे चहलकदमी कर रहा था। उसके हाथ में एक बेंत थी, जिसे वह हिला रहा था। कभी-कभी वह अपने चश्मे द्वारा युद्ध-क्षेत्र का अध्ययन करने के लिए अपनी चहलकदमी को रोक देता था। पेजा के निकट पहुँचने पर वह उत्साह-पूर्वक जोर से चिल्ला कर बोला—“क्या ही अच्छा दृश्य है, साहब।” उसका कथन स्वयंसेवक के सीने पर जोर से पड़े हुए मुक्के की तरह लगा। इससे उसे

एक दृष्टिकोण का परिचय मिला।

“हाँ साहब। यह बहुत अच्छा दृश्य है।”—उसने उत्तर दिया।

वे लोग फ्रांसीसी भाषा में बातें कर रहे थे। “मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि मेरे थोड़े सुन्दर अम्यास से आप का मनोरंजन हुआ है!”—अफसर ने कहना जारी रखा— “आप देख रहे हैं, हम लोग उस टुकड़ी पर किस तरह से आग बरसा रहे हैं— उस तरफ दाहिनी ओर. . . । देखिये, वे लोग दूसरे हमले के लिए तयार हो रहे हैं।”

पेजा मुस्कराया। उसने पुनः शिष्टाचार का, मौत की बगल में खड़े होकर, प्रदर्शन किया।

दाहिनी ओर की तोपें गरजीं, आग और धुएँ की लपटें चारों ओर फैल गयीं। गोलियाँ तेजी से सनसना कर फैल गयीं। आँख नहीं देख सकीं, केवल कानों ने भयानक आवाजें सुनीं। गोला छूटते ही होविजर तोप अपनी पहियों पर पीछे हटीं। सैनिक झपट कर उसकी ओर बढ़े और पुनः दूसरे हमले की तैयारी होने लगी। उनकी गरज इतनी तीव्र थी कि मरणासन्न सैनिक भी एक बार चिहुंक उठे। यह होविजर तोपों की पकित इस तरह से पीछे हटती थी, जैसे कायर आदमी भागने की चेष्टा में रत हों और उनको पेटियाँ बाँध कर, पकड़ कर रखा गया हो। तोपों को अनवरत रूप से एकत्र किया जाता था, उनकी खुशामद की जाती थी और उनको उपयोग में लाया जाता था। एक-एक कर के उनको निरन्तर आगे खींच कर लाया जाता था, वे फौलाद और लकड़ी का अत्यधिक प्रकम्पन प्रदान करती थीं, उनसे लपट निकलती थीं और वे गर्जन करती थीं, जिससे सैनिकों को महत्वपूर्ण प्रसन्नता प्राप्त होती थी।

पास की टुकड़ी ने बहुत ही अच्छा निशाना लगाया और उसकी खुशी में वे फूट कर हँस रहे थे, बातचीत कर रहे थे।

“इधर देखिये, जनाब!”—एक बार एक अफसर ने पेजा से कहा। धुएँ की पतली तह पेजा के मुँह पर से गुजर रही थी। उसने आँखें फाड़ कर उस ओर देखने की चेष्टा की, जिधर अफसर की अंगुली इशारा कर रही थी। दुश्मन की टुकड़ी हमले के लिए बढ़ रही थी। फैली हुई रोशनाई की तरह के झुंड से एक काली पकित उमड़ी और मनुष्य की जिब्हा की शकल में आगे बढ़ी। यह धीरे-धीरे सधी हुई अमिट सम्भावनाओं के साथ बढ़ रही थी।

यह सारा प्रचण्ड कार्य रक्षक दल द्वारा किया जा रहा था।

अफसरों ने आवाजें दीं। सैनिकों ने एक-दूसरे की बांहें पकड़ कर खींचीं।

वहाँ खूब हल्ला तथा गति हुई। सारी आँखें स्याही की तरह फैले हुए झुंड पर टिक गयीं, जो धीरे-धीरे पहाड़ की तलहटी की ओर बढ़ रहा था।

पेजा हर एक से प्रश्न पूछ रहा था। मार्ग में, इधर से ढकेल कर, या रास्ते में वह बार-बार दोहरा रहा था—“क्या तुम लोग हमले के लिए अपनी-अपनी जगह बना सकते हो?” वह बहरे आदमियों के उस झुंड को सम्बोधित कर के कह रहा था। हर आँख हर हाथ के कार्य को देखने में लगी हुई थी। सैनिकों को अवकाश नहीं था कि वे अपने नवागंतुक को देखें या उसकी चीख-पुकार की ओर ध्यान दें।

अंत में कप्तान ने शीघ्रता से उसका उत्तर दिया—“नहीं, महाशय नहीं, नहीं, यह असम्भव है।” वह जोरों से गुस्से में चीखा। उसके हावभाव से यह स्पष्ट था कि यदि थोड़ा-सा और समय मिल जाता, तो वह पेजा की इज्जत उतारे बिना न छोड़ता। पेजा बिना कुछ चीं-चपड़ किये एकदम से यूनानियों की उस टुकड़ी की ओर बढ़ गया, जिस ओर हमला होने वाला था।

— ६ —

जब पेजा पहाड़ की चोटी की ओर दौड़ता हुआ जा रहा था, तब उसे विश्वास था कि उसके कार्य की ओर बहुत से शत्रुओं की कोपपूर्ण दृष्टि है। वह उन सीढ़ियों पर चढ़ रहा था और घृणा से हजारों आँखें उसे देख रही थीं क्योंकि उसे वहाँ से पुकार कर वापस बुलाना एक बेवकूफी ही थी। उसका कार्य उस बच्चे की तरह था, जो अपने साथियों के उकसाने पर पाठशाला में उत्पात कर बैठता है। वह शर्मिन्दा था और दौड़ते हुए अगर उसे किसी ने जरा-सा भी टोका होता, तो वह फूट कर रो पड़ता। उसे अनुभव हुआ, जैसे इस कार्य के समय युद्ध की सारी विधि रुक गयी है। अतः वह इस कष्टदायक अग्नि-परीक्षा को रोकने की जल्दी में बड़ी तीव्र गति से चट्टानों पर दौड़ने लगा। जब वह उस गढ़े में पहुँचा, जहाँ ढेर से बंदूकची भरे थे, तब उसकी इच्छा हर्ष के मारे चिल्ला पड़ने की हुई। पैदल सेना के एक नवयुवक अफसर को छोड़ कर किसी ने उसे नहीं देखा। उस अफसर ने उससे पूछा—“महाशय, आप क्या चाहते हैं?” यह स्पष्ट था कि लोगों का कुल ध्यान स्वयं उनकी ही समस्याओं पर केन्द्रित था।

पेजा ने यूनानी भाषा में जोर दे कर कहा कि कुछ भी हो जाय, मैं पितृ-भूमि के लिए लड़ना चाहता हूँ। अफसर ने सिर हिलाया। उसने मुस्कराकर कम्बल से ढँके हुए मरे हुए व्यक्तियों की ओर इशारा किया।

“हाँ, हाँ मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ”—पेजा चीखा। उसने सोचा कि अफसर नम्रतापूर्वक खतरे की ओर इशारा कर रहा है।

“नहीं!”—अफसर ने एकदम से कहा—“मेरा मतलब कारतूसों से है—कारतूसों की एक पेटी से। तुम उनमें से एक के पास से कारतूसों की एक पेटी ले लो।”

पेजा सम्हल कर एक लाश की तरफ गया। उसने एक कम्बल की ओर हाथ बढ़ाया। वहाँ वह क्षण भर के लिए झिझका, जैसे उसके हाथ किसी पट्टी को खोलने के लिए जा रहे हों। अपने पीछे कुछ खड़खड़ाहट सुन कर वह पलट पड़ा। खाई के तीन सिपाही उसके पीछे आ खड़े हुये थे। अफसर ने उसके कंधे थपथपाये—“क्या तुम्हारे पास तम्बाकू है।” पेजा ने घबड़ा कर उनकी ओर देखा। उसका हाथ अभी तक उस कम्बल की ओर बढ़ा हुआ था, जिसके नीचे लाश ढकी थी।

“हाँ”—उसने कहा—“मेरे पास तम्बाकू है।” उसने अफसर को थोड़ी-सी तम्बाकू दी। जैसे उसके एवज में अहसान की पूर्ति के लिए अफसर ने एक दूसरे सैनिक को आज्ञा दी कि वह लाश से कारतूस की पेटी निकाल कर उसको दे दे। कारतूस की पेटी छाती पर बांधकर पेजा ने अनुभव किया, जैसे मृत व्यक्ति ने अपनी बाहों से उसे जकड़ लिया हो।

एक दूसरे सैनिक ने मुस्करा कर सिर हिलाते हुए पेजा को एक राइफल तथा दूसरी आवश्यक वस्तुएँ मृत व्यक्ति के शरीर से उतार कर दीं। इस तरह उसने अनुभव किया कि मृत व्यक्ति ने उसकी गर्दन ही नहीं जकड़ ली है, बल्कि राइफल भी कब्रों में रहने वाले सौंप जैसे एक अमानुषीय खौफनाक वस्तु है। दोनों ही मृत व्यक्तियों की आवाज उसके कानों में भनभनाती हुई प्रतीत हुई, जैसे वे मौत की खूँखार विभीषिका का वर्णन कर रहे हों। उसका दम घुटने लगा और बचाव के लिए उसने बाहें उठा कर गले को जोर से पकड़ लिया। राइफल में उसे एक प्रकार की सरसराहट-सी प्रतीत हुई, जैसे विषैला सौंप फुफकारता हुआ चढ़ रहा हो।

उसके चारों ओर वे ही किसान थे। उनके चेहरों पर दिलचस्पी का भाव था और वे युद्ध के सम्बन्ध में अनाप-शनाप बातें कर रहे थे। कभी-कभी कोई

सैनिक आधे मजाक से भरे पश्चाताप के स्वर में अपनी प्यास की भी चर्चा कर बैठता था। एक दाढ़ी वाला आदमी बैठा हुआ सूखी-सी कड़ी रोटी चबा रहा था। पेजा ने अस्पष्ट रूप से अनुभव किया कि इस आदमी में तथा उस विद्यार्थी में अंतर है, जो गीत लिख सकता है और पियानो बजा सकता है। यह बूढ़ा मूर्ख आनन्द से रोटी चबा रहा था जबकि पेजा का गला उन मृत आदमियों की बाहों से फँस रहा था।

उसने पीछे की ओर घूम कर देखा कि किसी संयोगवश एक सिर कम्बल से बाहर निकल गया था। तरल पदार्थ की तरह चमकती हुई दो आँखें उसके चेहरे को घूर रही थीं। सिर बगल की ओर इस तरह घूम गया था, जिससे खोज-बीन करने का और अवसर मिल जाय। पेजा अपने को कमजोर अनुभव करने लगा था। ये मृत व्यक्ति मानो पेजा को धीरे-धीरे दृढ़तापूर्वक पृथ्वी के नीचे किसी रहस्यमय कक्ष की ओर खींचे ले जा रहे थे, जहाँ वे भयंकर, फूली हुई, रक्त-रंजित आकृतियाँ चल-फिर सकें। वह आज्ञा-पालन कर रहा था; उन्होंने उसे आदेश दिया था, वह जा रहा था, जा रहा था, जा रहा था।

जब वह नये सफेद टोप वाला आदमी पीछे की तरफ जाने लगा, तब उसे देखकर खाई के कई सैनिकों ने सोचा कि उसे चोट लग गयी है, लेकिन जो उसके निकटतम थे, वे सारी परिस्थिति से परिचित थे, अन्यथा उन्होंने गोली की रेशमी, थरती हुई, कोमल आवाज और उसके प्रहार से गिरने वाले व्यक्ति द्वारा की जाने वाली आवाज को सुना होता। उन्होंने उसको गालियाँ दी, उन्होंने अपने आप को बधाई भी दी और गर्व भी प्रकट किया। इस कायरतापूर्ण कार्य की प्रमुखता के बावजूद उन्हें इस प्रदर्शन में स्वयं अपने साहस की एक सुन्दर आलोचना दिखायी दी। दूसरे सैनिकों ने सोचा कि पेजा की गर्दन में कहीं चोट लग गयी है क्योंकि वह दोनों हाथों से गर्दन दबा कर चीखता हुआ भाग रहा था। जो सैनिक रोटी खा रहा था, उसने जल्दी-जल्दी ग्रास गले में ठूस लिया और उसके भागने की व्यग्रता देख कर टिप्पणियाँ करने लगा। •

एक अफसर जोरों से चिल्लाया। नीचे दुश्मन हमले की परिधि में आ गये थे। सभी आदमियों ने आँखें घुमा कर सामने देखा और अपने-अपने स्थान पर तैयार होने लगे। रोटी खाने वाले बूढ़े ने सहेज कर रोटी को कागज में लपेटा और कूद कर खाई में घुस गया।

अपराहन के अन्तिम भाग में बच्चे ने पर्वत पर अपने कुत्तों और मवेशियों के साथ खेलना समाप्त किया। युद्ध का एक हिस्सा बढ़ते-बढ़ते पहाड़ की तलहटी में आ गया था और शोर बढ़ गया था। कभी-कभी धुँएँ में टेढ़ी मेढ़ी शकलें एवं आकृतियाँ ठीक उसी तरह दिखायी पड़ जाती थीं, जैसी समुद्र के ऊपर बादलों में मालूम पड़ती हैं। मैदान में निश्चय ही सफेद वृत्तों और भौरों की आकृतियाँ बनी हुई थीं, मानों वह किसी विशाल लहर की ढलान हो। बच्चा एक पत्थर पर बैठ गया और युद्ध देखने लगा। वह आश्चर्यचकित होने लगा। उसने कभी इस तरह जानवरों को एकत्र किया जाता हुआ नहीं देखा था। आग की लपट जहाँ-तहाँ चमक उठती थीं। यह सब रहस्यमय लग रहा था।

एकांत में बिना किसी कारण के वह रोने लगा। यदि मैदान में युद्ध-रत सैनिकों के पास समय और कल्पना-शक्ति होती, तो वे एक चट्टान पर बैठ कर उनका सर्वेक्षण करने वाली, जबकि उसके नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित हो रही थी, इस विचित्र छोटी-सी आकृति को देख सकते थे। यह आकृति ऐसी सरल थी, जैसे कोई शक्तिशाली प्रतीक।

जब दिन का प्रकाश पहाड़ों के बीच धुंधला पड़ गया, दूरस्थ स्थान और मैदान मद्धिम नीले वस्त्र की तरह चमकने लगे, जिसमें कहीं-कहीं गोलीबार के लाल धागे दिखायी देते थे, तब बच्चा उठ कर अपने घर के निष्ठुर द्वार की तरफ गया। उसने कोमल स्वर में अपनी माँ को पुकारा और सदा की भाँति भूख की शिकायत की। मोती के रंग वाली गाय ने जुगाली करते हुए बड़ी-बड़ी आँखें फाड़कर उसकी ओर देखा।

पहाड़ी के एक ओर गिरते हुए पत्थर के गड़गड़ाने का स्वर बच्चे को सुनायी पड़ा। उस आवाज की ओर मुँह कर के उसने देखा। एक आदमी थोड़ी देर में ऊपर आया, लेकिन सामने आते-आते वह धड़धड़ा कर गिरा। अपनी माँ और भूख को भूलकर बच्चा भाग कर उस ओर बढ़ा और रुचि से, घर में बँधी गाय की तरह, उसने भी आँखें फाड़ कर देखा।

तनिक-सी शांति के बाद उसने पूछा—“क्या आप आदमी हैं?”

पेजा शीघ्रतापूर्वक घूमा तथा उसके निर्भीकतापूर्ण और गोल-मटोल चेहरे की ओर घूरने लगा। उसने उत्तर देने का प्रयास नहीं किया। वह इस तरह से सॉस ले रहा था, जैसे प्राण शरीर त्याग देने के लिए तत्पर हो उठे हों। वह धूल

में सना था, जगह-जगह पर उसका शरीर कट गया था तथा चेहरा खून से लथपथ था। जैसे किसी भूचाल में चोट खा कर चीजों की दशा बिगड़ जाती है और उन्हें पहिचानना कठिन हो जाता है, ठीक वैसी ही दशा उसकी हो रही थी। उसने निश्चल भाव से अपनी आँखें बालक की ओर कर दीं। वे तब तक इसी स्थिति में रहे, जब तक बालक ने अपने इस प्रश्न को नहीं दुहराया—
“क्या आप आदमी हैं?”

पेजा एक मछली की भाँति तड़फड़ा गया। उसमें हिलने-डुलने की शक्ति नहीं रह गयी थी, उसकी साँस रुक गयी थी और उसकी दशा दयनीय हो रही थी। उसके सामने आदिकालीन साहस, सार्वभौम बालक, पहाड़ों का भाई, आकाश और समुद्र थे और वह जानता था कि उसके दुख की परिभाषा घास की एक पत्ती पर लिखी जा सकती है।

वीरता का रहस्य

दोनों फौजों की लगातार मूठभेड़ से सैनिकों की पोशाक इस तरह धूल-धूसरित हो उठी थी कि रेजिमेंट मिट्टी के उस किनारे-सी प्रतीत हो रही थी, जो गोलों से उनकी रक्षा करता था। पहाड़ की चोटी पर एक तोप बड़ी गरज के साथ चुनौती दे रही थी और शस्त्र, सैनिक, तोपें एवं घोड़े स्पष्ट दिखायी रहे थे। जब कोई गोला फेंका जाता था, तब ऐसा प्रतीत होता था, जैसे आकाश में बड़ी तीव्रता से बिजली चमकी हो। तोपची अपने पैरों का महत्व दिखाने के लिए सफेद मोजे पहिने थे। ये उस क्षण और भी भले प्रतीत होते थे, जब वे चिल्लाते हुए अफसरों की भीड़ में भागते-दौड़ते नजर आते थे।

एक टुकड़ी का सैनिक फ्रेड कालिन्स कह रहा था—“बड़ी गर्जना है ! मैं चाहता था पानी मिल जाता, तो अच्छा था। यहाँ कहीं पानी नहीं। है क्या ?” तभी कोई चीखा—“वह देखो बिगुल वाला जा रहा है।”

मशीन की तरह, झटके से लगभग आधे फौजियों की आँखें उस ओर घूम गयीं, जहाँ एक क्षणिक दृश्य दिखायी पड़ा—एक घोड़े ने घायल हो मृत्यु की गोद में सोने के लिए एक तेज कुदान भरी और अश्वारोही अँगुली से मुँह ढके उलट पड़ा था। भूमि पर एक गोले के फटने का आतंकपूर्ण दृश्य उपस्थित था। गोले के फटने से लाल-लाल बछीं के समान लपटें निकल रही थीं। हाथ से छूट कर गिरा हुआ बिगुल आदमी और घोड़े के सिर के थोड़ा आगे पड़ा चमक रहा था। हवा में इस युद्ध की वीभत्सता का आतंक छाया था।

कभी-कभी फौजी क्षणिक दृष्टि से पैरों के नीचे उगी हुई सुन्दर घास की ओर देख लेते थे। हरी लम्बी घास बड़ी शालीनता से हिल रही थी। दूर पर भूरे रंग के एक अधगिरे मकान का ढाँचा-सा दिख रहा था, जो गोलियों की बौछार में तथा फौजियों की कुदाल से नष्ट हो चुका था। कहीं-कहीं पर गड़ी लकड़ी या इधर-उधर लटक रहे तारों से उसकी घिरी हुई चौहट्टी धुंधली दिख रही थी। दूर उठती हुई भूरे रंग के धुँएँ की पतली-पतली रेखाएँ बता रही थीं कि खत्तियाँ वहाँ थीं।

दूर हरे जंगलों के पीछे से तेज रगड़ की आवाज आ रही थी और ऐसा प्रतीत होता था कि द्वीप के आकार के दो जानवर लड़ रहे हैं। थोड़ी दूर पर रह-रह कर शीघ्र गति से जा रहे आदमियों की, घोड़ों और झंडों की झलक दिख

जाती थी। इन्हीं के बीच स्मिथ और फर्ग्युसन नामक दो सैनिक तेज विवाद में उलझे हुए थे, जिसका मुख्य विषय था, राष्ट्रीय अस्तित्व।

पहाड़ पर तोपें अभी तक भयानक स्वरों को उत्पन्न करने में संलग्न थीं। सफेद मोजे वाले तोपचियों के पैर इधर-उधर भागदौड़ कर रहे थे। सैनिक अधिकारियों ने द्रुत स्वरों में चिल्लाना आरम्भ कर दिया था। तोपें अपने उत्साह और शक्ति में अद्वितीय थीं तथा उनमें कुछ अनोखापन था, जिससे वे सारी पहाड़ी पर छापी हुई थीं।

इधर-उधर भागने वाली एक टुकड़ी एकाएक अपनी रक्षा के हेतु जमीन में पड़ गयी और उसके पागल हुए सैनिक भय और खतरे से बचने के लिए चोट खाये हुए भी अपने शरीर को खींचने-सिकोड़ने लगे। एक नवजवान सैनिक ने उठने की चेष्टा करते हुए कुछ कहा। इसके पूर्व कि उसकी बात समाप्त हो, एक अफसर जोरों से आज्ञा देते हुए चीखा और उसकी चीख इतनी तेज थी कि पहले वाली बात दब गयी।

फौज की अग्रिम टुकड़ी के पैर उखड़ चुके थे और कर्नल ने पूरी सावधानी से पहाड़ की तलहटी में धीरे-धीरे बढ़ने की आज्ञा दी। वहाँ केवल एक लोहे की दूसरे लोहे से टकराने की ही आवाज आ रही थी।

एक लैफ्टिनेण्ट अपने घोड़े से उतरा और अपने दाहिने हाथ को बायें हाथ से कस कर पकड़े हुए उसे पार कर गया। यह इस तरह हुआ जैसे उसका यह हाथ उसके शरीर का हिस्सा ही न हो बल्कि किसी दूसरे आदमी का हाथ हो। उसके बाद उसका तोपची भी गया। अधिकारी का चेहरा भयातुर हो गया था और कपड़े इस तरह अस्तव्यस्त हो गये थे जैसे वह दुश्मन के हाथों में आमने-सामने पड़ गया है। जब सैनिकों ने उसे धूर कर देखा, तब वह हँसा। उसने अपना घोड़ा चरागाह की ओर घुमाया।

एक टुकड़ी के सैनिक कालिन्स ने कहा—“यदि पानी मिलता, तो अच्छा होता। मैं बाजी लगा सकता हूँ, उधर कुआँ है।”

“हाँ। पर तुम वहाँ किस तरह पहुँच सकते हो?”

क्योंकि सामने का थोड़ा-सा मैदान, जो बीच में पड़ता था, वह इस समय गोलियों की बौछार से मौत का मुँह बना हुआ था। इसकी हरियाली और शान्ति लुप्त हो चुकी थी। भूरी जमीन जैसे दैत्यों के हाथों में पड़ गयी थी। घास की हरी पंक्तियाँ मसली जा रही थीं। उन्हें टुकड़े-टुकड़े किया जा रहा था, जलाया जा रहा था और नष्ट किया जा रहा था। युद्ध ने इस

चरागाह को गोलियों की रक्तिम घृणा का लक्ष्य बना दिया था।

घोड़े पर सवार होकर इस क्षेत्र को पार करने वाले घायल अफसर ने अपने-आप से कहा—“यदि सारी फौज यहीं इकट्ठी कर दी गयी थी, तो वे और अधिक गहरी मार क्यों नहीं कर सके?”

एक गोला घर के भूरे खंडहर से आकर टकराया और जब गरज के बाद दीवाल टुकड़े-टुकड़े होकर गिरी, तब एक ऐसी आवाज हुई, जैसी आवाज जाड़े की रात में भीषण तूफान के समय दरवाजों के भड़भड़ाने से होती है। निश्चय ही किनारे की शरण में आकर रुके हुए सैनिक ऐसे लग रहे थे, जैसे समुद्र के किनारे पर खड़े इस मानव-समुद्र के एक पागलपन पर विचार कर रहे हों। विनाश का देवता पहाड़ी पर स्थित तोपों को देख रहा था। सफेद पैर वाले तोपचियों की संख्या कम हो गयी थी और वे तोप को संवारने में लगे थे। एक को गोली आ कर लगी, एक झटके के बाद धुंआँ उठा, गर्द उठी और आवाज की झनझनाहट समाप्त हो गयी। फिर भी, पैर जमीन पर सीधे जमे रहे। मध्य में दूर पर खड़े हुए घोड़े आकाश की ओर मुँह सीधा किये खड़े आज्ञाओं का आसरा देख रहे थे कि कब बंदूकें निकलें और सारा विनाश समाप्त हो जाय। घायल पड़े हुए लोगों के बीच दूर सैनिकों ने देखा कि खून से लथपथ एक घोड़ा कठिनाई से अपने अगले पैरों पर जोर दे कर खड़ा हो रहा है, पर असफल होकर अपने मुँह को किस तरह जमीन में रगड़-रगड़ कर नीले आकाश को देखता रह गया।

कुछ साथियों ने प्यासे कालिन्स से मजाक किया—“अगर तुम्हें प्यास लगी है, तो चले जाओ न वहाँ तक और पी लो पानी।”

“हाँ मैं जाऊँगा पीने, पर पहले तुम चुप तो हो जाओ।”

एक लेफ्टिनेण्ट ने पहाड़ी पर से अपना घोड़ा इस तरह उतारा, जैसे वह एक मैदान पर चल रहा हो। जैसे ही वह गुजरा, कर्नल ने फौजी सलाम मारा। “हमें यहाँ से निकल जाना है”—गुस्से में उसने कहा। वह काली दाढ़ी वाला अफसर था और उसकी आँख एक खूँखार अफसर की तरह चमक रही थी। अफसर अपने घोड़े के साथ छलांग मारता निकल गया।

मोटे शरीर वाला मेजर दोनों पैर फैलाये और पीठ पीछे तलवार लटकाये उस अश्वारोही को खड़ा देखता रहा और हँसा—“लगता है, यह शीघ्र ही कुछ आज्ञाएँ लेकर वापस आना चाहता है, नहीं तो यहाँ कोई भी तोप बाकी नहीं रह जायगी।”

द्वितीय कम्पनी के नवयुवक बुद्धिमान कप्तान ने लेफ्टिनेण्ट से साहसपूर्वक

कहा कि शत्रु की सेना सम्भवतः शीघ्र ही पहाड़ी पर धावा बोलेली और लेफ्टिनेण्ट ने उसे डाँट दिया।

पीछे की कम्पनियों में से एक सैनिक ने चरागाह की ओर देख कर अपने एक साथी से कहा—“उधर देखो जिम।” वह घायल आदमी वही था, जो इस चरागाह के पार शान से अपने बायें हाथ को दाहिने से पकड़ कर गया था। उस आदमी को गोली लगी, तब किसी ने उसे नहीं देखा और वह मुँह औंधाये अपने मरे हुए घोड़े के साथ पड़ा था। तोपची का पैर उसी तरह सीधा और लकड़ी की तरह कड़ा हो गया था। इस निर्जीव जोड़े के चारों ओर गोले अब भी शोर मचा रहे थे।

कम्पनी में झगड़ा होने लगा। हँसते हुए साथियों के आगे मुठ्ठी बाँध-बाँधकर कालिन्स कह रहा था—“जाने भी दो, मुझे इसका डर नहीं है। तुम अगर ज्यादा कहोगे, तो मैं चला जाऊँगा।”

“अवश्य, अवश्य, तुम चले जाओगे। तुम उस चरागाह के बीच से भाग कर पार कर जाओगे—क्या नहीं जा सकते तुम?”

कालिन्स ने कड़े स्वरों से कहा—“अब देखो तुम।”

इस अशुभ घमकी को सुनकर उसके साथी पुनः उसका मजाक उड़ाने लगे।

कालिन्स ने उनकी ओर देखा और अपने कप्तान की तलाश में चल पड़ा।

“कप्तान”! —कालिन्स ने कहा और सलाम किया —“कप्तान, मैं उस पार वहाँ जाकर कुएँ से पानी पीने की इजाजत चाहता हूँ।”

बात करते हुए कप्तान और कर्नल ने चरागाह की ओर आँखें घुमायीं और कप्तान हँसा—“बड़ी तेज प्यास लगी है, कालिन्स?”

“हाँ साहब।”

“ओ!”—कप्तान ने कहा—“तुम कुछ देर ठहर नहीं सकते?”

“नहीं महाशय!”

कर्नल कालिन्स का चेहरा देख रहा था। “देखो मेरे लड़के!”—उसने बड़े संयम से कहा—“देखो मेरे लड़के।” पर कालिन्स लड़का नहीं था। “तुम यह नहीं देख रहे कि जरा-सा पानी कितना मँहगा पड़ेगा, तुमको।”

“मैं नहीं जानता।”—कालिन्स ने परेशानी के साथ कहा। अपने साथियों के प्रति उसका क्रोध, जिसके कारण वह सम्भवतः इस मामले में पड़ा था, कुछ कम होने लगा था। उसने पुनः कहा—“मैं नहीं जानता कि यह मँहगा पड़ेगा या नहीं।” कर्नल और कप्तान उसे कुछ देर तक समझाते रहे।

“ठीक है।”—कप्तान ने अन्तिम रूप से कहा।

“ठीक है—” कर्नल ने कहा—“यदि तुम जाना ही चाहते हो, तो जाओ।”

जैसे ही वह आगे बढ़ा, कर्नल ने पुकार कर कहा—“अपने साथ और लड़कों को भी ले जाओ और शीघ्र वापस आना।”

“हाँ साहब, जल्दी चला आऊँगा।”

कर्नल और कप्तान ने एक-दूसरे को देखा और उनको ऐसा लगा, जैसे वे यह नहीं जान सके कि कालिन्स जाना चाहता था या नहीं।

वे समझने लगे थे कि कालिन्स अपने सहयोगियों से घिरा हुआ है और कर्नल ने कहा—“ऐसा लगता है, जैसे वह जा रहा है।”

ऐसा मालूम हुआ, जैसे कालिन्स सपना देख रहा हो। प्रश्नों, परामर्श चेतानियों और कम्पनी के अपने सहयोगियों की समस्त उत्तेजित बातचीत में उसने एक विलक्षण मौन बनाये रखा।

सभी उसे उसकी अग्नि-परीक्षा के लिए तैयार करने में व्यस्त थे। जब उन्होंने सावधानी के साथ उसकी जाँच की, तब वह जाँच कुछ इस तरह की थी, जैसी कि घुड़सवार अपने घोड़े को दौड़ में लाने के पूर्व करते हैं। वे सारी बातों को देखकर आश्चर्यान्वित हो उठे थे। वे अपने विस्मय को बारम्बार विचित्र रूप से एक ही बात को दोहरा कर व्यक्त कर रहे थे।

“क्या तुम सचमुच जा रहे हो?”—उन्होंने बारम्बार पूछा।

“अवश्य, मैं जा रहा हूँ।”—कालिन्स तेजी से बोला।

वह निराशापूर्ण क्रोध और मौन के साथ उनसे दूर चला गया। वह पाँच या छः कैण्टीनों (जलपात्रों) को झुला रहा था। ऐसा लगता था कि उसकी टोपी उसके सिर पर नहीं रह सकती और वह अक्सर उसे खींचकर अपनी भौंहों के नीचे कर लेता था। सधी हुई टुकड़ी में एक सामान्य-सी गर्मी फैल गयी और सभी की आँखें उसकी ओर खिंच आयीं।

किसी ने कहा—“साहब क्या यह बड़े साहस की बात नहीं है? मैं नहीं जानता था कि इस तरह का काम करने का कालिन्स में माद्दा है।”

“फिर भी वह करने क्या जा रहा है?”

“वह वहाँ उस कुएँ से पानी लेने जा रहा है।”

“हम लोग पानी के बिना मर नहीं रहे हैं। यह बेवकूफी है।”

“ठीक है। किसी ने तो उसे उकसाया है और वह उसी के लिए जा रहा है।”

“मैं कहता हूँ, वह बड़ा ही हठीला आदमी होगा।”

चरागाह की ओर मुँह कर के जब वह चला, तब उसे इस बात का अस्पष्ट ज्ञान था कि अकस्मात् उसके तथा उसके साथियों के बीच एक खाई—समस्त दर्पों की एक गहरी खाई उत्पन्न हो गयी थी। यह सब कुछ अस्थायी था, पर सब से महत्वपूर्ण बात यह थी कि वह विजयी होकर वापस आये। वह भावनाओं के पीछे अंधे की तरह भाग रहा था और जानते हुए मौत के मुँह में चला जा रहा था।

वह नहीं जानता था कि वह अपनी परिस्थितियों से समझौता कर सकता है और उसे शर्म नहीं आयेगी। वास्तव में वह अपनी बातों को सच नहीं समझ रहा था और उसे सब कुछ आश्चर्यजनक लग रहा था।

फिर भी वह इसके अतिरिक्त किसी भी बात को पूरी तौर से नहीं समझ पा रहा था कि वह वास्तव में जानता था कि उसे मूर्ख बनाया जा रहा है।

उसका दिमाग घटनाओं का निकट से सर्वेक्षण कर रहा था। वह आश्चर्य कर रहा था कि क्यों वह ऐसा अनुभव नहीं करता जैसे वह चाकू से अपने को काट रहा हो। वह आश्चर्य कर रहा था क्योंकि सदियों से मानव की अनुभूतियों ने चीख-चीख कर कहा था कि मनुष्य कई चीजों से डरता रहता है और वह सारे आदमी जो डरते नहीं हैं, वीर होते हैं।

तब वह वीर था। उसे निराशा की उसी भावना की अनुभूति हुई, जो निराशा हम सभी को इस बात का पता चलने पर होती है कि इतिहास और पुराण में जिन कार्यों की हम सबसे अधिक तारीफ करते हैं, उन कार्यों को हम स्वयं भी कर सकते हैं। तब वह एक वीर था। आखिरकार वीरों की संख्या कुछ अधिक तो होती नहीं।

नहीं, यह सच नहीं हो सकता। वह वीर नहीं था। वीरों के जीवन में शर्म नाम की कोई चीज नहीं होती। उसे याद आया कि उसने एक बार एक मित्र से पंद्रह डालर उधार लिया था और वादा किया था कि कल वापस कर देगा और फिर उस मित्र को दस महीने तक टालता रहा। घर पर जब उसकी माँ उसे खेतों पर जाने के लिए उठाती, तब वह तेजी से चीखता और आज जब वह लड़ाई पर आ गया था, तब उसकी माँ स्वर्ग सिधार गयी थी।

वह देख रहा था कि कुएँ पर इस गोलीबारी में जाना एक महत्वपूर्ण काम था। वह अपने सहयोगियों से बीस कदम दूर आ गया था और सारी रेजिमेंट उसी की ओर देख रही थी।

भयानक स्वरो के जंगल के बीच से थोड़े से सैनिकों की एक विषम पंक्ति

सामने आयी और उन्होंने लगातार गोलियाँ चलायीं। साथ ही पहाड़ी पर से तोपों ने आग उगली। सैनिकों की छोटी टुकड़ी आगे बढ़ी। एक रंगवाला सारजेंट झंडे के साथ इस भाँति चौरस गिर पड़ा, जैसे वह बर्फ पर फिसल पड़ा हो।

कालिन्स को लगा कि दो राक्षसी अंगुलियाँ उसके कान में घुस गयी हैं। वह अग्नि-बाणों के सिवा और कुछ नहीं देख सकता था, किन्तु वह मकान की ओर पागलों की भाँति तेज रफ्तार से बढ़ा। उसे मकान ऐसा दिखायी दे रहा था, जैसे पानी की उबलती हुई धारा में गले तक डूबे हुए व्यक्ति को किनारा दिखायी देता है। हवा में गोलों के छोटे-छोटे टुकड़े शोर मचाते हुए नाच रहे थे और भूचाल के समान गर्जन करने वाले विस्फोटों ने अपने गर्जन की भयंकरता से उसे पागल बना दिया। जब वह दौड़ता, तब कैण्टीनें (जलपात्र) आपस में टकरा कर एक सुरीली आवाज उत्पन्न करतीं।

जब वह मकान के निकट पहुँचा, तब समस्त दृश्य उसके सामने हो गया। उसने देखा कि चिमनी की टूटी हुई ईंटें सामने ढेरों पड़ी थीं और किवाड़ एक कब्जे के सहारे लटक रहा था।

जब वह कुएँ तक आया, तब उसने अंधकार की ओर देखा। सामने कुछ दूर पर चाँदी-सा कुछ चमक रहा था। उसने डोर खोल कर बर्तन लटकाया और पानी गड़गड़ा कर भरा।

अब उसका मुँह जैसे ही घूमा, वह भय से डर गया। उसके दिल को ऐसा लगा, जैसे पंजों ने उसका कलेजा दबोच लिया हो। उसके शरीर की सारी ताकत समाप्त हो गयी थी और वह एक क्षण के लिए मरे हुए आदमी की तरह हो गया था। कैण्टीनों में पानी बहुत धीरे-धीरे भर रहा था, जैसे सभी बोटलों में भरता है। उसने पुनः शक्ति संचित कर ली और जोर से एक गाली दी। वह तब तक झुका रहा, जब तक उसे ऐसा प्रतीत नहीं होने लगा कि वह मानों कैण्टीनों में अपने हाथों से पानी डालने का प्रयत्न कर रहा है। जब उसने कुएँ में झाँक कर देखा, तब उसकी आँखें धातु के दो टुकड़ों की तरह चमकती हुई प्रतीत हुईं और उनकी अभिव्यक्ति में एक महान् अतीत और एक महान् अभिशाप था। मूर्ख पानी उसका उपहास कर रहा था।

वहाँ एक गोले के फटने की भयानक आवाज हुई। तीव्र गति से उबलते हुए धुँएँ से एक लाल रंग का प्रकाश निकला और कुएँ की दीवार के एक भाग पर उसका गुलाबी रंग का प्रतिबिम्ब पड़ा। कालिन्स ने खींच कर अपना हाथ इस तरह हटाया, जैसे भट्ठी से कोई मुँह खींच लेता है।

वह बहुत तेजी के साथ सीधा खड़ा हो गया। धरती पर पुरानी बाल्टी पड़ी थी, जिसमें पुरानी डोरी बंधी थी। उसने उसे उठा कर शीघ्रता से कुएँ में छोड़ा। बाल्टी पानी में जाकर टकरायी, उलटी तथा डूब गयी। तब हाथ पर हाथ बढ़ा कर उसने खींचा। खींचते हुए बाल्टी कुएँ की दीवाल से कई बार टकरायी और पानी छलक कर इधर-उधर गिरा।

इस भयानक वातावरण में कालिन्स इस बाल्टी को ले कर ऐसे भागना चाहता था, जैसे कोई साँड़ पीछा कर रहा हो। कल्पनाएँ करते हुए उसका चेहरा सफेद हो गया। वह अपने पास जमीन पर एक गोला गिरने की कल्पना करने लगा। वह उसी तरह गिर पड़ेगा, जिस तरह उसने दूसरे व्यक्तियों को गिरते हुए देखा था। उनमें जीवन इतने आकस्मिक रूप से निःशेष हो गया था कि उनके घुटने और सिर एक साथ ही धराशायी हो गये थे। उसने नीली पंक्ति में खड़ी रेजिमेंट देखी। उसके साथी इस तरह देख रहे थे, जैसे उसके वहाँ पहुँचने की कोई सम्भावना नहीं थी।

तोपखाने का अफसर, जो इस चरागाह में घायल पड़ा था, आवाजों के तूफान में दौतों को बजाता हुआ कराह रहा था। उसकी पीड़ा के कारण निकलती हुए ये कराहें केवल गोलों और गोलियों को ही सुनायी देती थीं। जब जंगली आँखों वाला कालिन्स दौड़ता हुआ आया, तब इस अफसर ने अपने को ऊपर उठाया। पीड़ा से उसका चेहरा विकृत हो गया था और वह जोर से चीख कर कोई अनुरोध करने वाला था, किन्तु अचानक उसने अपना मुँह सीधा किया और कहा—“नौजवान, मुझे थोड़ा पानी पिला दो, पिलाओगे?”

कालिन्स की भावनाओं के बीच आश्चर्य के लिए कोई स्थान नहीं रह गया था। विनाश के भय से उसके होश-हवाश गुम हो चुके थे।

“नहीं..।”—वह चीखा। उसका उत्तर उसके कँपा देने वाले भय को पूर्ण रूप से व्यक्त कर रहा था। उसकी टोपी उड़ गयी, कपड़े अस्तव्यस्त हो गये और उसे लगा जैसे उसे कोई कमीज पकड़ कर खींच रहा है। वह दौड़ने लगा।

अफसर का सिर लुढ़क गया और एक कोहनी टेढ़ी हो गयी। उसका एक पाँव अभी तक रिकाब में फँसा हुआ उसके घोड़े के शरीर के ऊपर फैला हुआ था और दूसरा पाँव नीचे था।

किन्तु कालिन्स घूमा। वह तेजी से पीछे आया। उसका चेहरा भूरा पड़ गया था और उसकी आँखों में भय समाया हुआ था। उसने कहा—“यह लो पानी, यह लो पानी।”

अफसर शराब पीकर मरे हुए आदमी की तरह हो गया था। उसका हाथ टहनी की तरह मुड़ गया। उसका सिर इस तरह लटक गया मानो उसकी गरदन लचकीली लकड़ी की बनी हो। वह जमीन में धँसा रहा था और उसका चेहरा नीचे की ओर था।

कालिन्स ने उसका कंधा पकड़ कर कहा—“यह लो। यह पानी है, पिओ भगवान के लिए ले लो।”

कालिन्स उसके कंधे पर चीख रहा था। अफसर का शरीर मरोड़ खा कर गिर पड़ा। उसके चेहरे पर मुस्कान की एक पतली रेखा छा गयी थी, जैसे वह कालिन्स को देखने की व्यर्थ चेष्टा कर रहा हो।

कालिन्स ने बर्तन को जोर से पकड़ रखा था।

पर कांपते हुए हाथ से पानी छलक-छलक कर मरते हुए आदमी के चेहरे पर फैल गया था। तब वह उसे फेंक कर भाग खड़ा हुआ।

रेजिमेंट उसके आगमन में तेजी से चिल्लायी और सिकुड़न पड़े हुए चेहरे हँसी से भर गये।

कप्तान ने हाथ उठा कर कहा—“यह इन आदमियों को दे दो।”

दो सुन्दर चहचहाते हुए नवयुवक लेफ्टिनेण्टों को पानी पाने में सबसे पहले सफलता मिली। वे अपने ढंग से उसके साथ खेलते रहे।

जब एक ने इसे पीना चाहा, तब दूसरे ने कोहनी मारी। “नहीं बिल्ली, इस तरह पानी गिर जायगा।”—उसने कहा और पहला हँसने लगा।

अकस्मात् वहाँ पर लकड़ी के गिरने की आवाज हुई और सब लोग चकित होकर बातें करने लगे। दोनों लेफ्टिनेण्ट एक-दूसरे की तरफ द्राकने लगे और पानी की बाल्टी खाली पड़ी थी।

